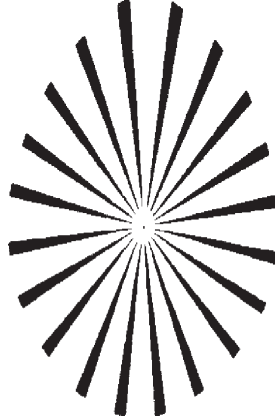


ज्ञान आश्रिता

भाग - ७

प्रवचन संग्रह - 1999-2000

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, दादी हृदयमोहिनी जी
दादी जानकी जी, तथा भ्राता जगदीशचन्द्र जी के द्वारा
वर्ष 1999-2000 में दिये गये
मुख्य प्रवचनों का सार-संग्रह



प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राजस्थान)

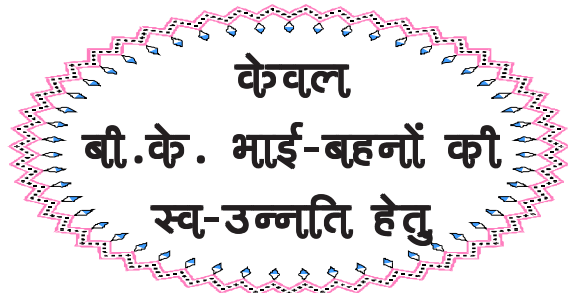
प्रथम संस्करण :
फरवरी, 2001

प्रतियाँ : 5000

प्रकाशक एवं मुद्रक:
साहित्य विभाग,
ओमशान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड - 307 510
☎ - 28124, 28125

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501

कापी राइट :
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501
राजस्थान, भारत ।



अमृत-सूची

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी के प्रवचन

1. नियम संयम जीवन का शृंगार है, मर्यादायें संगमयुग का ताज है,
जितना मर्यादा सम्पन्न बनो उतनी सेफ्टी है। (27.2.90) 8
2. श्रेष्ठ धारणा तब बनेगी जब बुद्धि क्लीयर हो, भटकना छोटे,
श्रेष्ठ धारणा खुशमिज़ाज बनाती है,
दिमाग फालतू सोचना बन्द कर देता है। (6.3.90) 15
3. एक रस स्थिति बनाने के लिये रूहानियत की खुशबू चाहिए,
देखते हुए न देखना यह बहुत ऊँची साधना है। (23.3.90) ... 19
4. मीटिंग में दादी जी का क्लास (10.4.90) 23
5. छोटी-मोटी बातों के प्रभावों से बचने के लिये अन्तर्मुखी बनो,
अन्तर्मुखी – बाप की सब शिक्षायें सहज ही
धारण कर सकता है। (12.8.90) 26
6. टेन्शन से मुक्त होने के लिये बैलेन्स से चलो,
हर कर्म त्रिकालदर्शी होकर करो। (14.9.90) 31
7. मर्यादाओं का पालन करने में खामियां विघ्न रूप बनती हैं,
खामियाँ खत्म करो तो
तपस्या सहज हो जायेगी। (25.11.90) 36
8. मन बुद्धि से बाबा के सामने स्वाहा हो जाओ तो स्वतः
पुरानी दुनिया से वैराग्य हो जायेगा (26.12.90) 39
9. तपस्या द्वारा फीलिंग के फ्लू को समाप्त करो,
किसी भी बात के कारण

खुशी की मात्रा कम न हो। (1.4.91)	42
10. योग तपस्या द्वारा स्वयं में साइलेन्स की शक्ति जमा कर विश्व को सकाश दो (14.12.99)	46
11. एकाग्रता के अभ्यास से विदेही स्थिति का अनुभव करो (30.12.99)	51
12. सम्पन्नता की समीपता का अनुभव करना माना फरिश्ता बनना (14.11.2000)	54

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी के प्रवचन

1. अपने समय, संकल्प और बोल की बचत की स्कीम बनाओ, यही अन्तिम तैयारी है (14.11.99)	59
2. योगी जीवन का आधार - सम्बन्ध और प्राप्ति (1.12.99)	65
3. सिर्फ योग लगाने वाले योगी नहीं लेकिन योगी जीवन वाले बनो (14.12.99)	70
4. विशेष अटेंशन देकर संकल्प शक्ति जमा करो और कार्य में लगाओ (17.1.2000)	76
5. प्राप्तियों की स्मृति से प्यार इमर्ज होता है, जहाँ प्यार है वहाँ याद की मेहनत नहीं (13.2.2000)	84
6. सहजयोगी बनने के लिये अपने स्वरूप को और प्राप्तियों को इमर्ज करो (2.3.2000)	92
7. व्यर्थ और निगेटिव से बचने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ (3.4.2000)	99

राजयोगी ब्रह्माकुमार जगदीशचन्द्र जी के प्रवचन

1. निजी गुण, कर्म और स्वभाव की समानता के आधार पर
--

महानता (24.7.98)	107
2. बाप, टीचर और सद्गुरु से पूरा वर्सा कैसे लें? (26.7.98) ..	115
3. मम्मा के स्मृति दिवस पर	
जगदीश भाई का अनुभव (24.6.2000)	129
4. निश्चयात्मक भावना ही	
सर्व प्राप्तियों का आधार है (25.6.2000)	134
5. समझदार वह है जो समय के पहले अपनी जीवन-नय्या	
प्रभु हवाले कर दे (26.6.2000)	141
6. परीक्षाये व परिस्थितियाँ जीवन में आगे बढ़ाने के लिए आती हैं,	
निश्चय वाला सदा निश्चित रहता है (27.6.2000)	150
7. योग में मगन स्थिति अथवा आनन्द की अनुभूति करना ही	
जीवन का सबसे श्रेष्ठ लक्ष्य है (29.6.2000)	159
8. उपराम स्थिति का अलौकिक अनुभव (4.7.2000)	166
9. कर्म अटल होते हैं – हर कर्म का फल अवश्य मिलता है	
(अनुभव) (5.7.2000)	171
10. निश्चय में विजय है, निश्चय बुद्धि	
सदा निश्चित रहता है (19.8.2000)	178
11. बीमारी का पेपर भी टाइम को सफल करने का गोल्डन चांस	
(अनुभव) (18.9.2000)	182
12. भगवान क्या करता है और	
क्या नहीं करता है (20.9.2000)	184
13. इस निश्चित ड्रामा में बाबा का वण्डरफुल पार्ट है जो वह	
अपने बच्चों को गुप्त मदद करता है (21.9.2000)	

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी के प्रवचन

1. निश्चय के आधार पर स्वयं को बाबा हवाले कर देना अर्थात्
निश्चित बनना (7.2.2000) 206
2. अपनी पर्सनैलिटी में रूहानियत और सच्चाई हो
तब राहत मिलेगी (11.2.2000) 208
3. जीवन को श्रेष्ठ बनाना है तो श्रीमत को सिरमाथे पर रखो,
मनमत-परमत के प्रभाव से मुक्त रहो (12.2.2000) 214
4. पवित्रता और सत्यता के आधार से स्वयं को स्वच्छ साफ बनाओ
तो विजय माला में आ जायेंगे (13.2.2000) 221
5. अव्यभिचारी याद की शक्ति
समस्या मुक्त बना देती है (14.2.2000) 228
6. निमित्त बनने वालों को नियम, मर्यादा, नीति और
सभ्यता का पूरा ध्यान रखना है (15.2.2000) 235
7. हम ब्राह्मण बने हैं विकर्माजीत बनने के लिए इसलिए
साधारण संकल्प, बोल, कर्म न हों (16.2.2000) 242
8. सेवा में सब साथी बनते लेकिन स्व-उन्नति के लिए
खुद को सोचना है (22.2.2000) 248
9. हर बात में बुद्धि चलाना तो सहज है लेकिन बुद्धि को शान्त रखना
यह बुद्धिवान का काम है (23.2.2000) 253
10. कर्मातीत बनने के पहले विकर्माजीत बनना है (19.3.2000) .. 259
11. डर, निराशा और नाउम्मीदी को छोड़ सदा हिम्मत,
सच्चाई और विश्वास से सदा विजयी बनो। (24.3.2000) ... 262
12. सहनशीलता को सखी बनाओ तो
सब काम सहज हो जायेंगे (31.3.2000) 268
13. सुखमय जीवन का अनुभव करने के लिए
सेवा के विस्तार में सार को देखो (1.4.2000) 273

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, जो कि देश-विदेश में चल रहे 5000 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों का संचालन कुशलतापूर्वक करते हुए सभी ब्रह्मा वत्सों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। अनेक सशक्त, गुह्य, आध्यात्मिक

रहस्यों को मधुर व सरल शब्दों में स्पष्टतापूर्वक चित्रित करने का विशेष वरदान आपको प्राप्त है। अति व्यस्त रहते हुए भी ज्ञान सागर की तह में जाकर अनेक ज्ञान रत्नों को निकाल ब्रह्मा वत्सों को सजाने-संवारने को आप भूलती नहीं हैं। ईश्वरीय सेवा ही इनका श्वाँस है। परन्तु ज्ञान के अन्य विषयों में भी आप अग्रिम स्थान पर हैं। इनके मुखार्विन्द से निकली ज्ञान-धारा ने अनेकों के जीवन में उमंग-उत्साह भरा है। आपके प्रवचनों से तीव्र पुरुषार्थ करने का प्रोत्साहन मिलता है। आपके अनेक प्रेरणादायी प्रवचनों में से कुछेक अंशों को यहाँ प्रकाशित किया गया है। हमें विश्वास है कि निश्चित ही इनके पठन-पाठन से आप अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ में श्रीवृद्धि कर पायेंगे।

नियम-संयम जीवन का शृंगार है, मर्यादाएं संगमयुग का ताज है, जितना मर्यादा सम्पन्न बनो उतनी सेफ्टी है

1. हम सभी बच्चों को पहला निश्चय है कि स्वयं ज्ञान सागर बाबा हमें पढ़ाता भी है, वर्सा भी देता है तो मुक्ति-जीवनमुक्ति भी देता है। जब यह निश्चय है तब नशा है और जब नशा है तब उनकी आज्ञाओं पर हम चलते हैं। तीनों रूपों से बाबा हमें रोज शृंगारता है। सतगुरु रूप से वरदान देता है, जिन वरदानों से हम सभी भरपूर होकर आगे बढ़ते हैं। ज्ञान रत्नों से हमारा शृंगार करता है। प्यार का सागर हमें कितनी पालना देता है, आज्ञायें करता है, उससे भी हम आगे बढ़ते हैं। दुनिया के लोग भौतिकवाद में रहते हैं और हम सबको बाबा ने सारी दुनिया की भौतिक बातों से दूर कर दिया है। किसी की बुद्धि में यह नहीं है कि हमें वापस घर जाना है। हमें मूलवतन बुद्धि में याद है। सूक्ष्म वतन भी संगमयुग पर हम बच्चों के लिए है। हम यही पुरुषार्थ करते हैं कि बाप समान फ़रिश्ता बनें, सम्पन्न बनें और

सम्पन्न बनकर वाया सूक्ष्मवतन घर चलें। तभी छोटे-बड़े को बाबा ने यही लक्ष्य दिया है कि बाप समान सम्पूर्ण बनना है। चाहे कोई 25 वर्ष का हो, 5 वर्ष का हो या 5 मास का। सबकी बुद्धि में यही लक्ष्य है कि हमें बाप के समान सम्पूर्ण-कर्मातीत बनना है। जब यह लक्ष्य है तो चेक करना होता है कि हमारी स्थिति ऐसी बनी है या अभी हम बाप से कितना दूर हैं। क्या हम एवररेडी हैं? हम सर्व बंधनों से मुक्त, ईश्वरीय नशे में, एक ही की लगन में इतना मस्त रहते हैं जो आज भी शरीर छूटे तो हमारे कर्मों का हिसाब पीछे न हो। हमने जिस मंजिल पर पाँव रखा है, उसे पार करना है।



हम रोज़ सोचते हैं कि आखिर हमें इतनी ऊँची मंज़िल पर ले जाने वाला कौन? जो दुनिया को नहीं मिला, न मिल सकता है – वह है हमारा बाबा। जो हमें इतनी सहज नालेज देकर अपने समान बना रहा है।

2. बाबा हमें चार सब्जेक्ट के चार लेसन देता है - हम कितने भी कार्य में रहें लेकिन हमें देह के भान से परे रहना है। देह-अभिमान का भी त्याग हो - यह कहना तो सहज है लेकिन इसी में ही मेहनत है। देह के भान से परे रहो तो सर्व समस्यायें हल हो जायेंगी। खुद लाइट हो जायेंगे। यही है कर्मातीत स्थिति बनाने का पहला साधन वा पहली साधना। यही अभ्यास है, यही बाबा की रोज़ की आज्ञा है। अपने से पूछो - रोज़ मैं सवेरे से रात तक इस आज्ञा का पालन करती हूँ? जो इस आज्ञा को रोज़ पालन करते, फुल अटेन्शन रखते उनकी सब प्रकार की धारणाएं अच्छी होती है। जिसेने इस राज़ को समझा कि मुझे इस देह के भान से डिटैच रहना है, उनकी इस दुनिया में किसी भी बात से अटैचमेन्ट नहीं रहती। बाबा ने जो हमें 4 सब्जेक्ट दी हैं - उन चारों का ही बैलेन्स चाहिए। लेकिन कभी-कभी सर्विस में तो बहुत इन्ट्रेस्ट बढ़ जाता है। बाकी पीछे की तीनों सब्जेक्ट में अटेन्शन कम हो जाता है। लेकिन चारों सब्जेक्ट एक बैलेन्स में रहें यह है पढ़ाई का सार। कोई कहते - मेरा बाबा पर बहुत विश्वास है, लेकिन बाबा से विश्वास माना आज्ञाओं पर विश्वास। बाबा की पहली-पहली आज्ञा है कि इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी नहीं देखो। इस देह में रहते भी देह से ममत्व नहीं रखो। किसी भी व्यक्ति, वैभव से अटैचमेन्ट न रहे। तो अपने आपसे पूछो किसी भी बात में रिचक मात्र भी बुद्धि का अटैचमेन्ट है? अगर स्वयं की स्वयं से भी अटैचमेन्ट है तो भी राँग है। दूसरे से है तो भी राँग है। अगर कोई कहे हम सर्विस के बिगर रह नहीं सकते, बेचैन हो जाते हैं तो यह भी अटैचमेन्ट हो गई। यह भी नहीं चाहिए। क्योंकि बाबा हमें बहुत-बहुत दूर चैन की दुनिया में ले जा रहा है। किसी भी प्रकार की बेचैनी न हो। अगर कभी यह बेचैनी का शब्द भी आता है तो समझना चाहिए कि आज स्थिति नीचे ऊपर है। हम सबको चैन देने वाले हैं, चैन देने वाले अगर बेचैन हो जाएं तो समझो गड़बड़ है। बाबा की आज्ञा है - हर बात में डिटैच रहो। सब कुछ करो लेकिन करते हुए भी डिटैच रहो। बुद्धि के



अभिमान का त्याग, सेवा का त्याग, साथियों का त्याग, अन्दर से हुआ पड़ा हो। लेकिन कोई त्यागी माना वैरागी नहीं है। हम आपस में इतने प्यारे भी हैं। बाबा ने कहा है कि हम अकेले आये, अकेले जाना है... लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अकेले मौज करें। यह भी ठीक नहीं। परिवार भी साथ में हैं। बाबा का बच्चों से प्यार कितना है! कितना प्यार से बाबा आते, हम बच्चों को सजाते, हम बच्चों का भी फिर इतना ही बाबा से प्यार है। इसमें बाबा सर्टीफिकेट देते हैं। मुरली से, सेवा से तो नम्बरवन प्यार है। लेकिन धारणाओं से भी नम्बरवन प्यार हो। सामने देखने वाले हमारी धारणाओं को देखते हैं। जितनी-जितनी धारणा की आकर्षण होगी उतनी सर्विस स्वतः होगी। इसलिए हमारी धारणा भी नम्बरवन चाहिए। हम सभी की पहली धारणा है - पावन बनना। काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करना। बाबा के सिवाए कोई यह दावा नहीं करता कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने। अगर इसी सबजेक्ट में आप नम्बरवन विजयी हो तो आप सबसे महान हो। इसके लिए दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, व्यवहार सबमें बिल्कुल पावन बनो। ऐसे पावन रहो जो दूसरों को भी पावन बनने की प्रेरणा मिल जाए। इसी में ही माया आती। इसी माया को जीतना ही मायाजीत बनना है। कई बार हम आप सबका दिल से यह गुण गाती कि आपने एक बाबा से वायदा रखा है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में बाबा को बसाया है। परन्तु जब कोई कहाँ थोड़ा भी किसी की अटैचमेन्ट में आते तो 5 मंजिल से नीचे गिर पड़ते। जब कोई 5 मार से गिरता है तो रहम पड़ता, तरस पड़ता है। इसके लिए मर्यादाओं को सदा साथ रखो। बाबा ने हम सबको ज्ञान दिया है कि हम आत्मायें भाई-भाई हैं। परन्तु यह नॉलेज है कि आत्मा भाई है, दृष्टि भाई की हो लेकिन व्यवहार भाई-बहन का हो। ऐसे नहीं बहन को कहो - आओ भाई जी। व्यवहार में ईश्वरीय मर्यादाओं का नियम रखना पड़ता। अगर नियमों में पक्के रहो तो कभी 5 मार से नहीं गिरेंगे। अगर कोई गिरता है तो पहले मर्यादा का किसी न किसी प्रकार से उलंघन करता है। वैसे तो बाबा ने हमें बहुत रमणीक गुह्य ज्ञान दिया है, हम उसी में मस्त रहें। लेकिन यह परिवार है, परिवार में हम सभी मिलकर रहते हैं, यह क्लास है, क्लास में एक तरफ भाई दूसरी तरफ बहनें बैठती, यह भी मर्यादा है। बाबा कहते—



आपस में रूह-रूहान करो तो यह रूह-रूहान क्लास के लिए दी गई है। ऐसे नहीं हम अकेले में बैठकर रूह-रूहान करें। माया देखती रहती है कि कहाँ से खिड़की खुली हुई है, उसी जगह से वह प्रवेश करती है। तो माया को आने का मौका न दो क्योंकि अकेले में बैठकर रूह-रूहान करेंगे तो थोड़ी-थोड़ी दिल की लेनदेन शुरू हो जायेगी। ऐसे में माया अन्दर घुस जायेगी। यह है माया का दरवाजा। इसलिए नीति से प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे। नहीं तो बुद्धि आज नहीं आयेगी, 4 मास नहीं जायेगी लेकिन 5वें मास जरूर जायेगी। बाबा ने कभी एक साथ टेबल पर बैठकर भाई-बहनों को खाने की छुट्टी नहीं दी। टेबल पर हँसी मजाक करने की छुट्टी नहीं दी। यह सब छोटी-छोटी बातें भी ध्यान पर रखना बहुत ज़रूरी है। भल हम आत्मा भाई-भाई हैं, नालेज है हम बिन्दु हैं लेकिन नालेज के साथ मर्यादायें भी रखना जरूरी है।

3. अपनी स्व-स्थिति की उन्नति का आधार है – ड्रामा। ड्रामा कहा माना फुल स्टाप आया। एक सेकण्ड बीता – फुल स्टाप। यह ऐसी नालेज है जो अपने को सदा निश्चिन्त रख सकते हैं। ड्रामा की नालेज ही हमें निर्मोही बनाती है। हर एक का अपना-अपना पार्ट है, इसलिए किसी के पार्ट से फीलिंग नहीं आती। हरेक की अपनी विशेषता है, अपनी खूबी है। वह गुण देखो, विशेषता देखो तो संस्कार नहीं टकरायेंगे। जो कई बार थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता, बुद्धि डिस्टर्ब होती – ड्रामा का फुलस्टाप लगाकर अपनी बुद्धि को डिस्टर्ब होने मत दो। ड्रामा कहा – बिन्दु लगा। बिन्दी स्थिति कभी अपनी स्थिति को ऊपर नीचे नहीं करेगी, अचल अडोल रखेगी। अपनी स्थिति अडोल हो, व्यवहार कुशल हो। आपस में बहुत स्वीट व्यवहार रखो लेकिन किसी की स्वीटनेस से प्रभावित न हो जाओ। यहाँ पर चाहिए सेफ्टी। यह बड़ा स्वीट है नहीं। ऐसे नहीं यह स्वीट है तो आप मक्खी बन जाओ। मधु भले बनो पर मक्खी नहीं बनो। अपने को भी स्वीट बनाओ। बाबा ने कोई हठयोग नहीं दिया है कि आपस में नहीं हँसो, हँसो बहलो, खुशी में नाचो परन्तु पर्सनल किसी के साथ हँसना बहलना यह राँग है। मुझे पर्सनल सर्विस चाहिए, सेन्टर चाहिए, साथी चाहिए... यह



रांग है। परिवार से इनडिपेन्डेंट नहीं रहो। हम सब एक दूसरे पर डिपेन्ड है। कोई-कोई कहते हैं हम तो मॉडर्न है। हम मॉडर्न रहना चाहते हैं लेकिन बी.के. माना बैकुण्ठ के वासी। वह मॉडर्न नहीं रह सकते। मॉडर्न तो रावण के हैं। बाबा ने हमें सफेद ड्रेस पहनना सिखा दिया, प्यूरिटी सिखा दिया। प्यूरिटी में रहना ही हमारे लिए मॉडर्न रहना है। बाबा ने पुरानी दुनिया के मॉडर्न से निकाल दिया। हम तो स्वर्ग के मॉडर्न, उसके माडल बन रहे हैं। किसी भी प्रकार का शौक है – चाहे पार्टियों में जाने का, चाहे दूर-दूर जाकर पिकनिक आदि करने का... यह सब शौक योग की स्थिति से नीचे ले आयेगे। यह योग की स्थिति में बाधक हैं। जितनी मर्यादा रखो उतना अच्छा है। आज माया नहीं है, कल किसी भी घड़ी माया आ सकती है। इसलिए एक दूसरे से प्राइवेट पत्र व्यवहार न रखो। प्राइवेट लेनदेन न करो। यह सब धारणाये बनाओ। नियम-संयम ही जीवन का आदर्श हैं। जितना प्यारे बनो उतना न्यारे बनो। जितना नियमों का पालन करेंगे उतना स्वधर्म की स्थिति में अच्छे रहेंगे।

4. हम सबका एक ही लक्ष्य है, हम एक परिवार के हैं। प्रेम के व्यवहार को जानते हैं, यहाँ न कोई गुरु की गद्दी है न कोई शिष्य है। किसी भी स्थान पर किसी का नाम नहीं है। न प्रापर्टी का झगड़ा है, न कुर्सी का झगड़ा है। हम सबका टाइटिल है बी.के.राजयोगी। जब कभी थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता - तो उसके दो कारण होते - एक तो अपने को सदा राइट समझते, और दूसरे को रांग समझ लेते। जब ऐसी भावना दिल में पैदा होती है तब टक्कर होती है। जैसे बाबा ने गुरु गद्दी नहीं दिया, ऐसे किसी को बाँस नहीं बनाया। सब शिक्षक हैं, कोई बड़ा कोई छोटा नहीं। व्यवहार में सिर्फ निमित्त मात्र रहते। जब स्व का भाव छोड़ देते, मधुर बोल नहीं बोलते, थोड़ा कडुवा बोल निकलता तब टक्कर शुरू होती है। क्योंकि कटुवचन दूसरे को काँटे की तरह पिंच होता है। इसके लिए स्व के भाव में रहो, स्व के अभिमान में नहीं आओ। दूरदेशी बनो लेकिन दिमाग का नशा नहीं रखो। प्रीत रखो लेकिन स्वार्थी नहीं बनो। जब इन्हीं बातों की कमी होती है तब एक दूसरे का संस्कार आपस में टकराता है। इसके लिए बहुत सहज विधि बाबा ने सुनाई है – “पहले आप” का पाठ पक्का रखो। यह एक ऐसी विधि है जिससे सब अपना बन जाते हैं। पहले



मैं – यह दूर करता, पहले आप - यह पास ले आता। दूसरा – जैसे बाबा जो कहे, हाँ जी करते, ऐसे एक दूसरे को भी 'हाँ जी' करो। ना, कभी नहीं करो। ओ.के. कहते चलो तो सब ओ.के. हो जायेगा। हरेक का उत्साह बढ़ाओ। उत्साह दूसरे के मन को प्रफुल्लित करता है। इसके लिए अपना सब कुछ त्याग चाहिए। बाबा ने हमें अष्ट शक्तियाँ दी हैं, उसमें सहनशीलता की शक्ति भी विशेष है। कोई भी बड़ा बना है तो उसने दुनिया की अनेक बातों को सहन किया है। तो हम भी जब एक दूसरे की छोटी-छोटी बातों को सहन करेंगे तब प्यारे बनेंगे।

5. एक बात की सबसे रिक्वेस्ट करती हूँ - ईश्वरीय मर्यादायें हम सबका धर्म है, इन्हें कभी भी लूज नहीं करो। माया को कहीं से भी घुसने न दो। हम मन मौजी नहीं है, बाबा के मौजी हैं। इसलिए मन की मौजों को त्याग दो। इसका करो त्याग और बाबा के अतीन्द्रिय सुख के झूलों में झूलो। कोई भी बात की राय लेना हो तो भले लो, सैलवेशन चाहिए भले पूछो - लेकिन आपस में पार्टि नहीं बनाओ। यदि किसी की एक्टिविटी अच्छी नहीं लगती है तो मीठे रूप से रूह-रूहान करके एक दो के ध्यान पर दो, राय दो लेकिन मास्टर बनकर, शिक्षक बनकर नहीं करो। उसका वातावरण, वायुमण्डल नहीं बनाओ। एक दो की कमियों का वर्णन न करके गुणों का वर्णन करो।

6. हमारा ईश्वरीय परिवार एक है, हमारे ईश्वरीय परिवार का झण्डा दुनिया में कायम होना है। इस एकता के झण्डे को कोई तोड़ नहीं सकता। हमारी एकता का झण्डा विश्व को एक बनायेगा। सदा आपस में एक होकर रहो। सर्विस भले कम हो लेकिन एकता को नहीं तोड़ो। एक मत, एक परिवार, एक बाबा, एक पढ़ाई, एक नई दुनिया बनानी है तो सब एक हो। सर्विस भी एकता से चले। दोनों हाथ मिलाकर चलो। चाहे कोई बड़ा हो, चाहे कोई छोटा हो, सब एक हैं। जैसे बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए हरेक जी जान लगा रहे हो - ऐसे ज्ञान-योग-धारणा सबमें महान रहो तो महानता से सहज प्रत्यक्षता हो जायेगी। अच्छा-

(दादी जी ने बड़े की कहानी सुनाई) जो बड़ा खाते हैं – उससे किसी ने पूछा ऐ बड़ा, तू बड़ा कैसे बना? तो बड़े ने उत्तर दिया – पहले मैं खेती में पैदा हुआ,



फिर मुझे चक्की में पीसा, फिर पानी में डाला, फिर पीसा, फिर गर्म कढ़ाई में डाला, फिर ठण्डे पानी में डाला, फिर पानी से निकाल दही में डाला तो मैं फूल गया। तो बड़ा बनना है तो कढ़ाई में जलना सीखना होगा। जब तक स्वयं जलता नहीं तब तक वो बड़ा नहीं होता। बड़ा बनना है तो कोई पीसेगा, कोई जलायेगा, कोई शीतल ठण्डा पानी भी देगा। कोई खाकर प्यार भी देगा - तब बड़ा बनेंगे। इसलिए यह कभी नहीं कहो कि कब तक सहन करेंगे? सहन करो तो बड़ा बनो। अच्छा, ओम् शान्ति।



श्रेष्ठ धारणा तब बनेगी जब बुद्धि क्लियर हो, भटकना छूटे, श्रेष्ठ धारणा खुशमिज़ाज बनाती है, दिमाग फालतू सोचना बन्द कर देता है

1. संगमयुग पर बाबा से हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का वर्सा मिलता है। भक्ति में यह तीनों भगवान से मांगते थे, ज्ञान में यह अपने आप बाबा दे रहा है। भक्ति में जब तक सामने कोई मूर्ति नहीं, मंत्र नहीं तब तक याद नहीं कर सकते। ज्ञान मार्ग में न कोई मूर्ति, न मंत्र, न कोई माला.. ज्ञान मार्ग में समझ मिल गई। विवेक कहता है भक्ति में बहुत मेहनत है, बुद्धि भटकती है, धक्के खाती है। वहमी बन जाते हैं। करते हैं तो कुछ प्राप्ति नजर नहीं आती, नहीं करते हैं तो डर लगता है, कुछ हो न जाये। बाबा ने ज्ञान देकर हमें निर्भय बना दिया है। भक्ति के बंधनों से छुटकारा पाने में बहुत बहादुरी चाहिए। देह के सम्बन्धों से, दुनियावी पदार्थों से छुटकारा पाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन भक्ति से छुटकारा पाना सहज नहीं है। यह ज्ञान नास्तिक के लिए सहज है, वह जल्दी समझ जायेगा लेकिन भक्त के लिए कठिन है। भक्ति में जो अल्पकाल की प्राप्ति है, उसमें वह फँसा रहता है। अब हमारी बुद्धि में भक्ति और ज्ञान का कान्द्रास्ट है, इसलिए अब भटकने की जरूरत नहीं। फालतू पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं। अब समझ आ गई कि एक बाबा को याद करना है, अपनी जीवन सफल करनी है।

2. कई पूछते हैं - हमारी धारणा श्रेष्ठ कैसे बनें। धारणा श्रेष्ठ तब बनेगी जब



पहले बुद्धि क्लीयर हो। बुद्धि का भटकना छूटे। बुद्धि एकाग्र होकर परमात्मा बाप को याद करे तो धारणा श्रेष्ठ बने। एक धारणा होती है गुणों की, दूसरी धारणा होती है ज्ञान वा योग लगाने की। गुण धारण करने की धारणा अलग है, योगयुक्त होने के लिए धारणा अलग है। योगयुक्त रहने के लिए अशरीरी होकर बाबा से लिंक जोड़ने की लगन हो। इसके लिए चाहिए अन्तर्मुखता और एकान्त। जिसे योगयुक्त होकर रहने की लगन है वह कभी यह नहीं कह सकता कि एकान्त में रहने का टाइम नहीं मिलता है। उसकी रात में भी कई बार आँख खुल जायेगी। नींद ऐसी नहीं होगी जो सोया सो खोया। कोई ऐसे कहते हैं कि क्या करें नींद ही नहीं खुली। कोई फिर कहते नींद आती ही नहीं। योगी के यह चिह्न नहीं है। ऐसे नहीं, नींद आये तो बहुत आये, न आये तो आये ही नहीं। जो फालतू ख्याल करते हैं उन्हें नींद नहीं आती। जो फालतू ख्यालात से फ्री रहते हैं वह बाबा की याद में सो जायेंगे। जो बाबाकी याद की गोली नहीं खाते उन्हें नींद के लिए गोली लेनी पड़ती है। योग के टाइम नींद आयेगी, वैसे नींद के समय नींद नहीं आयेगी। हमारी नींद ऐसी हो जो गुडनाइट की और बाबा की गोद में चले गये फिर आँख खुलने का समय आये तो अपने आप खुल जाए, दिल कहे उठकर बाबा को याद करूँ। जो उठते ही बाबा की याद में बैठता है, वह बाबा का प्यार पाता है। उस समय सुस्ती न आये। यदि सिर में दर्द भी होगा तो ठीक हो जायेगा। जो अच्छी तरह प्यार से बाबा को याद करता है, बाबा उसे कहता – बच्चे, मैं तुम्हारी माँ भी हूँ, प्रीतम भी हूँ... वह बहुत प्यार करता है। उस प्यार में उसी समय मन का दुःख व शरीर का दर्द सब चला जायेगा। यह धारणा है। कोई-कोई कहते हैं मुझे खुशी का अनुभव नहीं होता। लेकिन अनुभव तब हो जब ज्ञान को धारण करो और औरों को दान करो। समय पर जो सेवा सामने आये, उसे दिल से सच्चाई से, प्रेम से करो तो खुशी आयेगी। जो मजबूरी से काम करता उसे खुशी नहीं आती। जो काम दिल से करता, उसे खुशी आती है।

3. बाबा ने हम बच्चों को बता दिया है कि किसकी दबी रहेगी धूल में, किसकी राजा खाए, कभी अचानक आग लग जाती है, भूकम्प आ जाता है .. तो क्यों न हम अपना सब सफल कर लें। सफल तभी होता है जब बाप के नाम से करते हैं,



सफल करने से खुशी आती है। वह खुशी माइण्ड को हेल्दी बना देती है। मन भी हेल्दी, तन भी हेल्दी हो जाता है। क्योंकि मन का तन से गहरा कनेक्शन है। हमारा मन सदा हेल्दी हैपी रहे। जो मन से खुश है वह कभी नहीं कहेगा कि मैं बहुत बीमार हूँ, या तकलीफ है। सदा खुश रहने की पहले धारणा करनी है। ध्यान रखना है मैं एवर हैपी रहूँ, अन्दर से रहूँ किसको दिखाने के लिए न रहूँ बाबा का शुक्रिया मानते, अपने भाग्य को देखते दिल सदा खुश रहे। तुरन्त दान, महापुण्य के महत्त्व को समझ खुश रहे। तुरन्त दान अर्थात् जो संकल्प आये कर लो, कल किसने देखा है। वैसे दान पुण्य कहा जाता है। दान यथाशक्ति दिया जाता, पुण्य जितना चाहे करो। समय पर हमदर्दी से किसको मदद करो तो उसके दिल से दुआ निकलेंगी। दान किया तो कुछ-न-कुछ जमा किया, बीज बोया। बाबा के यज्ञ में कभी यह शब्द नहीं आता कि डोनेशन लेते हैं। यज्ञ सेवा अर्थ बीज बो रहे हैं, यह कर्म की खेती है, सत्य धर्म की स्थापना का कार्य है, बीज बो रहे हैं। इसका फल न केवल मुझे मिलेगा बल्कि अन्य भी खायेंगे। जितना जो तन-मन-धन सफल करता है उतना खुशी में रहता है। मात-पिता भी हमें खुशी में नाचता हुआ देख खुश होते हैं। हमारी खुशी में सब खुश। दुनिया की आत्मायें जो हमें नहीं जानती, वह भी सोचती हैं – यह इतना खुश कैसे रहते हैं! हमारी श्रेष्ठ धारणा खुशमिजाज बना देती है। दिमाग फालतू नहीं सोचता तो खुशमिजाज रह सकते हैं। बाबा को दिल से याद करने वाले को खुशी होती है। क्योंकि वह विजयी बनता जाता है। उसका मन पर, कर्मेन्द्रियों पर कन्ट्रोल आ जाता है। जो इच्छा-ममता के वश में हैं, कर्मेन्द्रियों के गुलाम हैं उसे खुशी नहीं हो सकती। जिसे कोई इच्छा न हो वह बहुत खुश है। जो संगठन में रहते गुणग्राही है वह खुश है। जरा भी निंदा करने वाला कभी खुश नहीं रह सकता। तो पहले हैपीनेस चाहिए फिर हेल्दी-वेल्टी रहेंगे। जिन बातों से खुशी गुम हो जाती है, वहाँ से रास्ता बन्द कर दो। जहाँ से खुशी आती है वह रास्ता खुला रखो। मेरी खुशी गुम क्यों होती है? चेक करना है - कोई गफलत है? बाबा ने जो इतना खज़ाना दिया है, वह कोई छीन न सके, इतना खबरदार केयरफुल रहना है। संगमयुग की यह खुशी सतयुगी राज्य का अधिकारी बना रही है। सेवा ब्राह्मण जीवन की शोभा है। ब्राह्मण सेवा न करें तो



देवता बन न सकें। सेवा तन-मन-धन को पावन बनाती है। जो तन-मन-धन से सेवा में लगता है वह सहज पावन बन जाता। नहीं तो हमारा तन-मन-धन सब पापी था। सेवा में तन-मन-धन को पावन बनाया है, उसकी खुशी आई है। जिसका तन-मन-धन पूरा पावन नहीं बनता वह खुश नहीं रह सकता। अगर सोचते हैं कि यथाशक्ति करेंगे... सोच कर देंगे, तो बाबा भी उसे सोच कर देता है। जिसे दिन-रात यह चिंतन रहता कि करना है तो अब, कल किसने देखा वह खुश रहते हैं। जितना अभी तन से करो उतना तन्दरुस्त बनेंगे। मधुबन में भी देखो जो 10-10 हज़ार रोटी बनाते, सब्जियाँ काटते उन्हें कितनी खुशी रहती है। कभी नहीं कहते रोटी बेलने से हाथ दर्द होने लगे हैं। फालतू सोचने से सिरदर्द होता है। सोच दर्द ले आता है। कुछ करने से दर्द चला जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो। वेल्दी बनना हो तो बाबा गरीब निवाज है, पैसा नहीं है, दिल तो बहुत है ना। अन्दर से देने की दिल हो तो खुशी बढ़ेगी। खुशी सच्चाई से आती है। सेवा करो, सदा मीठा बोलो, औरों की दुआयें लेते चलो तो सदा खुश रहेंगे। रफ बोलने से खुशी गायब हो जाती है। जो खुशी से पुरुषार्थ करते हैं वह उठते रहते हैं, भारी नहीं होते। जो समझते हैं मैं बाबा की गोद में बैठा हूँ, बाबा के कंधों पर बैठा हूँ, बाबा के सिर पर बैठा हूँ... उन्हें बहुत खुशी रहती। बाबा हमें अपना सिरमौर बनाता, डबल क्राउन देता है। जितना ऊँचा सोचो उतना ऊँचा बनेंगे। जितना फालतू सोचो उतना धारणा कम होती है। किसी को न देख बाबा ने जो खुशी का खज़ाना दिया है, जितना लूट सको लूटो और हेल्दी वैल्दी बन जाओ। अच्छा— ओम् शान्ति।



एक रस स्थिति बनाने के लिए रूहानियत की खुशबू चाहिए, देखते हुए भी न देखना - यह बहुत ऊँची साधना है

1. एकरस स्थिति बनाने के लिए - देखते हुए भी न देखो- यह अच्छी साधना है। कोई कहते देखते हुए भी न देखें फिर भी दिखाई पड़ता है। किन्तु इसका अभ्यास करने बिना एकरस स्थिति बन नहीं सकती। जिसे घर की याद होगी, उपराम वृत्ति होगी - वह देखते हुए भी नहीं देखेंगे। जिसके अन्दर पुरानी दुनिया से संन्यास की वृत्ति होगी, जो अन्दर से चेकिंग करते कि मेरा कहीं लगाव झुकाव तो नहीं है, वह भी देखते हुए नहीं देखेंगे। किसी के तरफ रग जाना ही नुकसान है। बगुले के तरफ रग है तो वह खींचकर अपने समान बनायेगा। यदि दिखाई पड़ता है - यह हंस है और रग गई तो भी फ़रिश्ता नहीं बन सकते। जब तक रीयल रूहानियत की खुशबू नहीं आई है तब तक एकरस स्थिति नहीं बन सकती। रूहानियत का रस सुख शान्ति देने वाला

रस है। रग है तो खुद भी उस रस में नहीं रह सकता है, जहां रग जाती है उसकी खींच होगी, बाबा से रूहानी रस खींच नहीं सकता। जैसे माँ के गर्भ में बहुत सूक्ष्म नाभी से बच्चे को खाना मिलता है। इतना सूक्ष्म सम्बन्ध जितना मात-पिता से है, उतना मात-पिता की सूक्ष्म शक्ति उसे जन्म देने वा पालना देने में मदद करती है। जिन्हें वह रस मिला है उनकी कहाँ रग नहीं जा सकती। यह रस अनुभव किये बिना ईश्वरीय सन्तान का नशा नहीं चढ़ेगा। शूद्र से ब्राह्मण बन गये बहुत अच्छा, पर ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। ब्राह्मण एक धामा खाने वाले होते हैं, गृहस्थी के हाथ का भी खा



लेते हैं। दूसरे पुष्करणी ब्राह्मण होते हैं कोई रास्ता दिखाने वाले पण्डे होते हैं, कोई जन्मपत्री वाचने वाले होते। कोई किसकी ग्रहचारी हटाने वाले, किसी की सगाई कराने वाले होते। जन्म-मृत्यु, शादी आदि किसी भी कार्य में ब्राह्मण के बिना काम नहीं चल सकता। तो देखना है कि हम ब्राह्मण किस योग्य हैं? कोई करनीघोर भी होते हैं, मरे हुए का कपड़ा पहन लेंगे। जैसे भूखे ब्राह्मण हैं। जैसा ब्राह्मण होता है उसको वैसा आफर करते हैं। उसे वैसी दक्षिणा, वैसा खाना मिलता है। अपने को देखना है – हम ब्रह्मा मुख वंशावली हैं, सो मेरी स्थिति कैसी है? पुरानी दुनिया से मुख मोड़ने में भी जो युद्ध करते वो सच्चे ब्राह्मण नहीं हैं, जिसकी पूरी इंगेजमेन्ट नहीं हुई है वो दूसरे की शादी क्या करायेंगे!

2. बाबा का बच्चा बनते ही अपनी स्थिति पर ध्यान हो। हमारी स्थिति कोई हिला नहीं सकता, नीचे ऊपर नहीं कर सकता। कितने भी विघ्न आयें, एकबल एक भरोसे के आधार पर स्थिति बहुत अच्छी बनती है। जिस आधार से स्थिति अच्छी बनती है वो लिस्ट अपने पास रखनी चाहिए। जिस बात का लक्ष्य रखकर अनुभव करना हो उसकी लिस्ट बनानी चाहिए। समझो मुझे एकरस स्थिति बनानी हो तो किस-किस बात की लिस्ट बनाऊँ? पहले अन्तर्मुख रहूँ। बाह्यमुखता घड़ी-घड़ी खींचे नहीं फिर एकाग्रचित्त रहने की आदती बनते जायेंगे। एकाग्रचित्त बनने के लिए समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सहनशक्ति चाहिए। कोई भी शक्ति की कमी है तो एकाग्रचित्त नहीं बन सकते। सहनशक्ति की कमी एकाग्रचित्त बनने नहीं देती। विस्तार से बोलने वाला, विस्तार से सोचने वाला एकाग्रचित्त नहीं बन सकता। समाने की शक्ति नहीं है तो मास्टर ज्ञान सागर नहीं बन सकते। एकाग्रचित्त बनने के लिए सहनशक्ति, समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति ऐसी हो जो बीती को बीती कर दे। पास्ट को पास्ट कर दे, फुलस्टाप लगा दे। एकाग्र होकर बाबा को याद करना शुरू कर दे। कुछ भी हो रहा है - रिंचक मात्र भी हलचल न हो। क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ, यह न हो। फुलस्टाप देने की जब तक आदत नहीं है तब तक एकाग्रचित्त नहीं बन सकते। एकाग्रचित्त नहीं बन सकते तो एकरस स्थिति दूर हो जाती है। एकाग्रचित्त रहने वाला बाबा से गुप्त शक्ति ले सकता है। फिर ऐसे फील होगा



कि यह शक्ति आत्मा को चला रही है। फालतू बातों में समय गँवाना छोड़ दो। बाबा से लिक जुटी हुई हो। आनन्दमय स्थिति बन सकती है। एकरस स्थिति बनाना माना आनन्दमय स्थिति को पाना, उस आनन्द में सुख शान्ति प्रेम तक समाया हुआ है। अलग नहीं है। जब आनन्दमय स्थिति में चले जाओ तो सुख शान्ति प्रेम सब आ जाता है। आनन्दमय स्थिति मात-पिता के समान बनने में मदद करती है। तो सब बातों को छोड़ पिता को फालो करो। जो एक बाबा को देखता है उसे और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। जो बाबा को फालो करता है उसके हर कदम में कल्याण है। हम कितने भाग्यशाली हैं जो कल्याणकारी बाबा के कदमों पर कदम हैं। देवताओं के कदमों में पदम इसीलिए दिखाये जाते हैं। क्योंकि उन्होंने हर कदम पर फालो फ़ादर किया है।

3. बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है – बच्चे, यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बनें। ब्राह्मण न बने तो देवता नहीं बन सकते। बाबा ने गोद में लिया, यज्ञ रचा सेवा कराने के लिए। बाबा का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये। जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण कर्तव्य पर नाम मिला— 'ब्राह्मण'। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। गृहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर। इन तीनों पर गृहचारी आती है। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की गृहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते। दाता के बच्चे हैं। ब्रह्मपति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है ज़रूर। 'मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ' – यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मामुखवंशावली हूँ तो सबकी जन्मपत्री देखने वाला हूँ। सफलता का सितारा हूँ— हमारे ऊपर गृहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए। हट सकती है। जो अच्छे ऊँचे ब्राह्मण हैं वो और की भी ग्रहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं जैलसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक दो से कम्पिटीसन करते रहेंगे, भेंट करना, क्रिटिसाइज करना – यह ऊँचे ब्राह्मणों का धंधा नहीं है। उनकी



एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी दुआयें मिल नहीं सकती। अगर स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख – एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा, न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है। क्या मुझे चेकिंग करने की ड्यूटी मिली हुई है? हरेक को ड्यूटी मिली है – अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई ड्यूटी नहीं देता। मुझे कोई नहीं सम्भाले, नहीं तो बर्डन (बोझ) हो जायेगा। मैं कोई छोटी बेबी थोड़े ही हूँ, जो घड़ी-घड़ी हमें कोई सम्भालता रहे। हमारा ध्यान रखे। इतना छोटा तो नहीं बनना है। तो मुख्य बात है अपनी स्थिति को अन्दर मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन रहे। लगन को कम न करे। तो एकरस स्थिति बनाने के लिए अन्तर्मुखी बनो।

4. बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं है। स्थिति नीचे ऊपर तब होती है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई। हमारी सदा शुभ भावना शुभ कामना रहे। ड्रामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई-झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है। मुख चलाना नहीं है। अगर मुँह बदल भी जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है। चेक वह कर सकता है जो अन्तर्मुखी है, जिसे एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो। सी फादर...। जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा भी नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है कि मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा। हमको कम्पलीट बनना है, बाबा को बनाना है। तो बाबा कोई कमी रहने नहीं देगा। अगर मुझे अपने में कोई कमी नहीं रखनी है तो कमी का पता जरूर चलेगा। सम्पूर्ण देवता बनने वाले बच्चे इशारे से समझते हैं। जिसको एकरस स्थिति बनानी है वह इशारे से समझ जायेंगे। विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। तो मुख्य बात है – सब बातों को छोड़ अन्दर से संन्यास वृत्ति रखो। सबसे बड़े संन्यासी तो हम हैं। सारी दुनिया को छोड़कर जा रहे हैं, इससे कोई भी प्रीत नहीं। अच्छा— ओम् शान्ति।



मीटिंग में दादी जी का क्लास

1. जितना ही बेहद सेवाओं के लिए दिल से उमंग-उत्साह रहता, बुद्धि चलती, दिन रात खुशी से सेवाओं में तत्पर रहते, उतना बैलेन्स में स्व पर अटेन्शन रहे तो सेवा सफल होती रहेगी। बाबा हम बच्चों को कहते – तुम शक्तियाँ, पाण्डव विघ्न-विनाशक हो। सबसे पहला विघ्न होता है स्व की स्थिति नीचे ऊपर होने से, अगर स्व की स्थिति महान है तो कोई विघ्न आ नहीं सकता। बाबा ने हमें नाम ही दिया है – ‘विघ्न-विनाशक’। इसलिए हमें विघ्नों से पार रहना है। कहा जाता कि जीवन भी एक इम्तहान है। तो हमारी इस पढ़ाई में सम्पन्न बनना भी एक इम्तहान है। जब बाबा ने कहा ही है कि बच्चे तुम पास विद् ऑनर होंगे तो मैं आप सभी को विशेष मार्क्स देकर प्राइज़ दूँगा। अगर इसी एक लक्ष्य को लेकर हरेक दृढ़ संकल्प करे कि मुझे पास विद् ऑनर होना है, हरेक स्व का चिन्तन करे। दूसरों के लिए रहमदिल बनने के साथ-साथ अपने प्रति भी रहम करें। स्वउन्नति के लिए रोज़ अमृतवेले दृढ़ संकल्प करे और रात को भी उसे चेक करे तो जो बड़ी छोटी बातें आती हैं वह

खत्म हो जायेंगी। हम दूसरों का कल्याण करने चलें और अपनी स्थिति, अपनी शक्ति को ही खो बैठें। तो यह बात विशेष ध्यान में रखो। हमें सेवा से भी वरदान लेना है, तो बाप वा अपने परिवार से भी वरदान लेना है। दुआयें लेनी हैं। सदा यह ध्यान रखना है कि हमें दुआओं का पात्र बनना है। मैं सबकी दुआओं से अपना खाता जमा करूँ, चाहे उसमें जो भी सेवा हो, जितनी भी सेवा हो, जैसी भी सेवा हो। मुझे अपना खाता जमा करना है क्योंकि मुझे पास विद् ऑनर होना है। ऐसे नहीं - इन्हें पास विद् ऑनर होने दो, मेरे को छोड़ दो... आखिर अन्त में हमें भी तो हिसाब देना होगा। तो अपने



स्व की चिंता हो। साथ-साथ साथियों को भी आगे बढ़ाना है। दिल में यही रहम हो कि सभी पास विद् ऑनर होने के लिए दौड़ें। इसके लिए अन्दर ए टू जेड सब धारणाएँ समाई हुई हों।

2. मीठे बाबा ने हमें ये चार मन्त्र दिये हैं कि अलबेले नहीं बनो, अलर्ट बनो। घृणा नहीं रखो, शुभ भावना रखो। ईर्ष्या नहीं रखो परन्तु अपने दिल में रेस करने की, उन्नति करने की दृढ़ता रखो। जब हम बाबा के ऊपर प्रभावित हो गये तो न व्यक्ति, न वैभव, न वस्तु... किसी पर भी प्रभावित हो नहीं सकते। अपनी सेवा से भी प्रभावित नहीं होना है। अगर अपनी सेवा से भी प्रभावित होते तो उसमें भी कभी ईगो आ जाता है। जब बाबा कहता कि मैं टच करके करा देता हूँ, तो फिर हमारी सेवा कहाँ? हम अपनी सेवा से प्रभावित हो कैसे सकते? खुशी है, सभी बहुत अच्छे उमंग से सेवा करें, दूसरों की सेवा देखकर खुद के नैन शीतल हों, ठण्डे हों। इससे अपार खुशी मिलती है। दूसरे करते हैं तो उसे देख नैन ठण्डे शीतल होते रहें। इससे अपने आपको बहुत बड़ा बल मिलता है। यह अलग बात है – जो ओटे सो अर्जुन, हर बात में उमंग इतना ही रखना चाहिए कि हमें 'हे अर्जुन' बनकर हर कार्य करना है। इसके साथ-साथ यह भी बैलेन्स हो, जो भी करे उसमें इतना ही खुशी का पारा रहना चाहिए। तो यह ग्रुप अगर संकल्प दृढ़ करके जाए कि हमें 'हे अर्जुन' बनना है, हमें पास विद् ऑनर होना है इसके लिए भले कुर्बानी करनी पड़े। यह भी कहने में कुर्बानी शब्द आता है। कुर्बानी भी किस बात की, हम तो हैं ही कुर्बान। कोई आगे जाये तो उसमें भी हमारी खुशी है।

3. कई पूछते हैं दादी आपके ऊपर इतनी बड़ी जवाबदारी है, बर्डन है, कभी फिक्र होती? नींद नहीं फिटती? मैं कहती – यही बाबा की मुझे बहुत बड़ी दुआयें हैं कि मैं तकिये पर कांध रखती और मिनट डेढ़ मिनट में नींद आ जाती, यह मुझे बड़ा वरदान है। कारण मैं ड्रामा, बिन्दु, ओम शान्ति, बाबा आप बैठे हो, आपको जो चाहिए कराओ। भक्ति मार्ग में भी एक प्रेयर है - शल सबको सुबुद्धि दे भगवान...। मैं कहती – बाबा, आपकी सबको श्रीमत है, सब श्रीमत पर चलें यही मेरी हरेक के प्रति शुभ भावना है। इसी श्रीमत से हम सबका कल्याण होता। श्रीमत



पर चलते चलो तो दूसरी कोई बातें है ही नहीं। जहाँ मनमत होती वहाँ विघ्न आता, जहाँ श्रीमत है वहाँ विघ्न आता ही नहीं।

4. मेरे मन में सदा एक बात रहती – बाबा यह सब आपका परिवार है, मुझे कभी आप सभी ड्यूटी देते, दादी आप प्रेजीडेन्ट हो, दादी आप ये हो... आपकी मेरे लिए इतनी भावना है उसका बहुत-बहुत थैंक्स। पर मैं बाबा को कहती- बाबा मुझे कोई प्रेजीडेंट कहे, मुझे बड़ा कहे.. यह मुझे नहीं चाहिए। परन्तु मुझे कोई सेवा देते भी हो तो उसकी योग्यता भी आप ही देना। बाबा, आप ही मुझे वरदान से चलाओ, मैं तो बहुत छोटी हूँ, न मैं इतनी पढ़ी, न मैं इतना भाषण करना जानती... आप सबने मुझे टोपी दी है जैसे मैं बहुत बड़ी अक्ल वाली हूँ, लेकिन मैं आप सबकी छोटी बहन हूँ। फिर भी आप सबका मेरे लिए प्यार है या शुभ कामना है तो यह भी आप सभी का थैंक्स। बाबा और आप सभी की दुआयें हैं। मैं तो आप सभी की दुआयें ही झोली में सदा मांगती। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। क्योंकि कार्य बाबा का है, मेरा नहीं है। जैसे भोलानाथ बाबा का भण्डारा है, भोलानाथ बाबा का यह यज्ञ है वैसे भोलानाथ बाबा का बेहद परिवार है। तो सभी उसके हैं न हम किसी के हैं न मेरा कोई है। हम सब उसी के हैं। इसलिए सब हमारे हैं, हम सबके हैं। ऐसी भावना में रहने से बुद्धि बहुत-बहुत हल्की रहती। बस इतना पुरुषार्थ जरूर रहता कि बाबा ने जो विल पावर दी है, वह सदा साथ रहे, सर्वशक्तियां साथ रहें, योग का ऐसा अपना चार्ट रहे जो अन्त में बैठे-बैठे उसी कर्मातीत स्थिति में यह तन चला जाए। बस सदा यह फुरना रहता कि बाबा आपकी यादों में सभी की अत्यन्त दुआओं से ऐसी स्थिति में बैठे जैसे कि हम सम्पन्न फ़रिश्ता हैं, यह पुराना तन छोड़कर फ़रिश्ता, कर्मातीत बनकर आपकी गोद में उड़कर आ जाएं। बस केवल यही पुरुषार्थ रहता। तो अपनी योग की ऐसी सूक्ष्म स्थिति हो। सेवा तो दिन रात है और चलेगी। पर सेवा के साथ-साथ सूक्ष्म स्वउन्नति पर इतना अटेंशन रखो जो पास विद् ऑनर हो जाओ। अच्छा।।



छोटी-मोटी बातों के प्रभाव से बचने के लिए अन्तर्मुखी बनो, अन्तर्मुखी- बाप की सब शिक्षायें सहज धारण कर सकता है

1. मुरली सुनते दो बातों पर ध्यान गया - एक साधारण पुरुषार्थ, दूसरा अन्तर्मुखता। अन्तर्मुखता में न रहने का कारण है अलबेलापन। जो अन्तर्मुखी नहीं रह सकते तो याद का चार्ट अच्छा नहीं रह सकता। पुरुषार्थ भी साधारण हो जाता है। भल पुरुषार्थ करते लेकिन सफलता इनती नजर नहीं आती और औरों के लिए प्रेरणादायक नहीं बन सकते। अन्तर्मुखता का रस वैरागी बना देता है, उन्हें बाहर की वस्तुएं खींचती नहीं हैं। बाह्यमुखता बाहर के रसों की ओर खींचती रहती है। अन्तर्मुखता हमको बाबा द्वारा मिली हुई मीठी शिक्षाओं को धारण करने में मदद करती है। अन्तर्मुखता इशारा देती - बाबा जो कहता है वह करना है। बाह्यमुखता में याद करना पड़ता, अन्तर्मुखता याद की ओर खींचती है। हमारा पुरुषार्थ नेचुरल हो। पुरुषार्थ का सही रूप है कि हमारे जीवन में नेचुरल दिव्यता और अलौकिकता हो।

2. ब्राह्मणों में हम सर्वोत्तम, कुल भूषण बनें, जब यह अटेन्शन होगा तब दिव्यता और अलौकिकता आ जायेगी। साधारण ब्राह्मण तो हजारों लाखों हैं, यह भी अच्छा है, अपवित्र जीवन से पवित्र बन गये, आहार-व्यवहार चेंज हो गया। बाहर वालों की भेंट में जीवन में परिवर्तन आ गया। लेकिन बाबा की भेंट में कहेंगे अभी इसका पुरुषार्थ साधारण है। तो क्या परिवर्तन चाहिए? जीवन में दिव्यता और अलौकिकता हो। संगमयुगी ब्राह्मण बनें, पतित विकारी जीवन से निकल आये यह बहुत अच्छा लेकिन ब्राह्मण सो देवता बनने के लक्षण हमारे में आ जायें। वो संस्कार



दिखाई पड़ें। अगर अभी तक वैश्य वा क्षत्रिय के संस्कार हैं तो साधारण पुरुषार्थ है। क्षत्रिय-वैश्य अर्थात् चिन्ता-फिकर। अवस्था बनाने की भी चिन्ता व फिकर न हो, सिर्फ अटेन्शन रहे कि साधारणता जीवन में न हो। ऊँचे ते ऊँचा बाप हमें ऊँचे ते ऊँचा बनाता है। इस बात को ख्याल में रखें तो हमसे कोई भी ऐसी बात हो नहीं सकती। जब हम अन्तर्मुखी होंगे तब ही ऐसी चेकिंग हो सकती है। हम अपना सच्चा चार्ट तब ही रख सकते जब अन्तर्मुखी हैं। बाह्यमुखता छोटी-छोटी बातों के प्रभाव में खींच लेती है। अन्तर्मुखता इनसे मुक्त रखती है। अन्तर्मुखता हमें मजबूत कर देती है। देखते हुए भी नहीं देख सकते। उनकी अटैचमेन्ट छूट जाती है। यह मरा हुआ व्यक्ति है, हमारे काम का नहीं है। अविनाशी आत्मा, अविनाशी बाप, यह ख्यालात अन्दर के पक्के हो जायें।

दूसरी बात – जितना-जितना हम आगे बढ़ते रहेंगे उतना परीक्षाएँ आती रहेंगी, लेकिन परीक्षा शब्द भी क्यों? यह बड़ी बात नहीं है। बाबा पढ़ा रहा है, हम पढ़ रहे हैं, जो करेगा सो पायेगा यह शब्द भी नहीं कह सकते। यह भी जैसे अन्दर से खराब शब्द बोलना है। अन्दर से जानते हैं कि हर एक के कर्म का हिसाब-किताब है। हम और ही सीखते हैं, मैं ऐसी गलती न करूँ। उनसे नफरत नहीं आती लेकिन हम सावधान हो जाते हैं।

3. ब्राह्मणों में लॉ होना चाहिए। लॉ से लव पैदा हो जाता है। जो ईश्वरीय कायदे में चलते हैं, कुदरती लवफुल बन जाते हैं। जो दूसरों को सच्चे प्रेम का अनुभव करायेंगे। अगर हम लॉ को तोड़ देते हैं तो प्यार नहीं मिल सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की शिक्षाओं पर हम नहीं चलते हैं तो लव नहीं मिलता। प्रेम भी रूखा-रूखा नहीं, लेकिन रिगार्ड सहित प्रेम हो।

तो ऐसे बच्चों को बाबा का दुआओं भरा प्रेम मिल जाता है। जिसने अपने पुरुषार्थ की लेवल अच्छी रखी है उनसे औरों को प्रेरणा मिलती है। हमारा बोलचाल, पुरुषार्थ साधारण न हो। हमारा लक्ष्य क्या है, यह अन्तर्मुखी होकर हम सोचें। सदा आगे बढ़ने की भावना हो। जब बाबा खींच रहा है तो कोई बात मुझे रोक नहीं सकती। पुरुषार्थ में याद का बल हो। मुख से कुछ न कहकर अन्दर से याद की सच्ची लगन हो,



तो जो होना चाहिए वही होगा। अन्दर शुद्ध संकल्प की दृढ़ता हो। आखिर हम सम्पूर्ण देवता बनने वाले हैं, आर्डीनरी नहीं हैं। हम सबके कल्याण की कामनायें पूर्ण करने वाले हैं। जिसमें कल्याण समाया हुआ है वह कार्य होना चाहिए। किसी को खुश करने का पुरुषार्थ न हो। जब इतनी ऊँची पढ़ाई है, इतनी बड़ी युनिवर्सिटी है तो रूप को चेंज करने का अटेन्शन रखना है। जब अलौकिकता आयेगी तब ही दिव्यता आयेगी। अन्तर्मुखता के बिना अटेन्शन नहीं रह सकता। अन्तर्मुखता से याद, धारणा वा ज्ञान का बल आ जाता है। और लोग क्या करते हैं यह मुझे नहीं सोचना है। करना है मुझे अपने लिए। मेरे लिए और कोई पुरुषार्थ नहीं करेगा। तो देखना है हमने अपने लिए कितना सोचा, औरों के लिए कितना सोचा। जो बहुत सोचते हैं दूसरों का, वह विश्व के मालिक कैसे बनेंगे? साइलेन्स से बादशाही मिलेगी, न कि सोचने से। साइलेन्स से ही हमारे बादशाही की स्थापना होती है। जो ज्यादा बोलचाल में आते उन्हें विश्व की बादशाही मिल नहीं सकती। बाबा ने हम बच्चों की पालना तपस्या से की है। आज तक भी मधुबन में बाबा की तपस्या के वायब्रेशन हैं। हमारे रग-रग में वो संस्कार डालने के लिए बाबा ने तपस्या की है, उसके लिए त्याग किया है। अन्तर्मुखता नहीं होगी तो त्याग तपस्या भी नहीं होगी। ऐसे ही चलते रहेंगे। जो हम चाहते हैं, जो बाबा चाहता है वह हमारे से मिस न हो जाय, यह ध्यान रखना है। इसलिए साधारण पुरुषार्थ न हो। जो लक्ष्य मिला है, उसे प्राप्त करने का पुरुषार्थ हो।

दूसरा क्लास -

1. बाबा हम बच्चों को कहते - बच्चे, तुम मेरे नूरे रत्न हो, नूरे जहान हो। जहान के नूर हो। इन महावाक्यों में कितना रहस्य भरा हुआ है। सदा यह ध्यान रहे कि जहान हमें देख रहा है। भक्ति में ख्याल करते कि भगवान देख रहा है लेकिन अभी हम कहते जहान हमें देख रहा है। प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि सारे जहान का ध्यान हम लोगों पर है। पवित्रता के योगबल से, दैवीगुणों के आधार से हम सतयुगी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। भगवान करा रहा है। यह आटोमेटिक मुख से निकलता है। पवित्रता के बल से करा रहा है। हमें एक को याद करके विश्व में एकता लानी है। यह कार्य भगवान करा रहा है, इंसान के बस की बात नहीं है। जास्ती



गोरखधन्धे में जाने से, व्यर्थ सोचने से माथा खराब होता, हर दम दिल खुश, दिमाग ठण्डा हो तो बाबा अपना काम अच्छा करा लेगा। दिल से बाबा का काम करो तो बाबा की और परिवार की मदद मिलती है। गर्म दिमाग वाला कभी कोई काम नहीं कर सकता। ठण्डे दिमाग से काम अच्छा होगा। गर्म दिमाग वाला खुद भी बिगड़ेगा, काम भी बिगड़ेगा। वह दिल को भी सुस्त, दुखी, निराश बना देगा। इसलिए कुछ भी हो जाए हमें दिलशिकस्त नहीं होना है, दिल को आराम में रखना है। ऐसा कोई काम नहीं करना है जो दिल खाये। आराम की नींद न आये। किया हुआ खाता है। इसलिए सिर्फ अपने दिल को खुश करने के लिए या जिसके साथ प्रेम है, उसको खुश करने के लिए नहीं करो लेकिन भगवान को खुश करने के लिए करो। मेरी दिल या फलाने की दिल खुश हो, यह सोचकर कुछ किया तो सूक्ष्म गलतियाँ हो सकती हैं। बाबा क्या कहता है, ज्ञान क्या कहता है, यह सोचकर किया तो कोई गलती नहीं हो सकती। आत्मा में शक्ति तब आती है जब राइट काम होता है- बिगड़ी को बनाने वाला, सत्य धर्म की स्थापना अर्थ कोई काम होता है। तो सदा याद रहे कि – मेरे से ऐसा कोई काम न हो जो बनी हुई बात भी बिगड़ जाए।

2. लोग समझते हैं जिसकी उम्र बड़ी होती है उसका दिमाग काम नहीं करता। लेकिन भगवान के जो बच्चे हैं, उनको भगवान की गुप्त शक्ति मिलती रहती है। जो सोचते हैं कि इनको इतना निर्भय, बड़ी दिल-वाला बनाने वाला कौन है। हमारे में इन्सानियत का भी अंश न हो। हम छोटी-मोटी आशायें रखकर अपने आपको खुश न कर लें। बुद्धि में जरा भी किसी चीज की आकर्षण न हो। इस संसार में कुछ भी अच्छा नहीं। अच्छा वह है जो कोई इच्छा न हो। घर जाना, उपराम रहना अच्छा है। बाबा के जो बच्चे गुम हो गये थे, जो मूर्छित हो गये थे, वह सुरजीत हो गये, यह अच्छा लगता है। यह फैमिली अच्छी लगती है, बाकी कुछ अच्छा नहीं। तो हर एक अपने दिल से पूछे कि मुझे क्या अच्छा लगता है? अच्छा यह लगता है कि योगयुक्त स्थिति रहे। कोई भी बात हो जाए हमें कोई हिला न सके। जो भगवान ने महावीर बनने का पार्ट दिया है वह अच्छा लगता है। पास विद् ऑनर होना अच्छा लगता है। ड्रामा की नालेज के आधार से अपने जीवन की इतनी रक्षा करो जो मान-अपमान



का लेश भी न आये। ड्रामा की नालेज इतनी अच्छी है जो एक सेकण्ड भी किसी बात का ख्याल नहीं चलता। अगर हम अपनी स्थिति को अचल बनाकर रखना चाहते हैं तो तीन बातें साथ हों – 1. सहनशक्ति। 2. समेटने की शक्ति और 3. समाने की शक्ति। यह तीनों शक्तियाँ साथ हैं तो ड्रामा पर अडोल रह सकते हैं। अगर एक भी शक्ति कम है तो स्थिति हिल सकती है। अच्छा ओम शान्ति।



टेन्शन से मुक्त होने के लिए बैलेन्स से चलो, हर कर्म त्रिकालदर्शी होकर करो

1. बाबा ने हम बच्चों को प्रवृत्ति में रहते निवृत्त रहने, कर्म करते भी कर्म से अकर्म बनने की पूरी नालेज दी है। जिस नालेज के आधार पर प्रवृत्ति में हम बैलेन्स रखकर चलते हैं। प्रवृत्ति को निभाते भी उससे निवृत्त रहने की शक्ति अपने पास जमा हो। निवृत्त रहने के लिए हर कर्म में आने से पहले अपने को डिटैच करो, एक सेकण्ड अशरीरी बनो फिर कर्म करो तो वह कर्म गलत नहीं हो सकता। देही-अभिमानि बने और फिर देह के भान में आकर कार्य व्यवहार शुरू किया तो उस कार्य का न अभिमान होगा न बोझ होगा। न रांग होगा, न डिस्टर्ब होंगे। क्योंकि यह नालेज है कि मैं आत्मा साक्षी बनकर इन कर्मइन्द्रियों से यह कार्य कराती हूँ तो साक्षी व दृष्टा बन इन कर्मइन्द्रियों के द्वारा ऐसे कर्म करेंगे जैसे ऊँची स्टेज पर बैठकर एक्टिंग देखते हैं। जो रांग कर्म होता है वह दिखाई पड़ता है। साक्षी हो कर्म करने से बैलेन्स आ जाता। लॉ और लव का बैलेन्स, परमार्थ और व्यवहार

का बैलेन्स... दोनों का सही-सही बुद्धि में जजमेन्ट रहे। अगर बुद्धि सही जजमेन्ट नहीं देती है, समय पर राइट टच नहीं होता है तो रांग कर्म हो जाता फिर बुद्धि पर बोझ होता। इसलिए अटेन्शन प्लीज। माना स्व की सीट पर अटेन्शन से रहो फिर कर्म में अटेन्शन दो। अटेन्शन से राइट कर्म होगा और टेन्शन रहित हो जायेंगे। कर्म में नीचे ऊपर होने के कारण अपने को त्रिकालदर्शी नहीं रखते। त्रिकालदर्शी बनने से हरेक बात की रिज़ल्ट का मालूम पड़ता है। त्रिकालदर्शी होने से सदा जवाब रहता—



नर्थिंग न्यू। जो हुआ कल्याणकारी हुआ। एकदम भविष्य का फायदा बुद्धि में टच होगा। जबकि हम जानते हैं कि स्थापना भी होनी है तो विनाश भी होगा, अनेक प्रकार के सृष्टि के खेल चलेंगे तो खिलाड़ी बनकर खेल देखें या रोयें? टेन्शन माना मन का रोना। खिलाड़ी होकर खेलना माना हंसते-हंसते नाचते रहना। तो हम बाबा के साथ इस सृष्टि रूपी खेल में खिलाड़ी हैं। खिलाड़ी बनकर खेल को देखते तो मजा ही मजा है। हम जो कर्म करते हैं उसके लिए हमें हर प्रकार की नालेज हो। नॉलेज इज पॉवर।

2. अपनी स्थिति को ऊँचा रखने के लिए बाबा ने हमें मन्त्र दिया है – मन्मना भव, मद्याजी भव और मामेकम् याद करो। यह मन्त्र ही अजपा-जाप है। फिर बाबा ने हमें 4 विशेष वर्से दिये हैं। पहली प्रापर्टी है ज्ञान रत्नों की, जिसका हम बच्चों के पास अविनाशी खज़ाना है। ज्ञान रत्न हमारा वर्सा है, अधिकार है। दूसरा वर्सा है सर्वशक्तियों का। और शक्ति के साथ-साथ हम बच्चों को अथार्टी दी कि तुम्हें अथार्टी है आलमाइटी की। जब आलमाइटी ने हमें शक्तियाँ भी दी, अथार्टी भी दी तो स्थिति कमजोर क्यों बनती? सब कारणों का निवारण है – शक्तियाँ। हम शिव शक्ति पाण्डवों के सामने यह माया क्या है? बाबा कहते कि यह माया है छुई मुई। इसे अंगुली दिखाओ तो मुरझा जायेगी। अगर संकल्प की सृष्टि बनाओ तो बड़ी माया है। संकल्प को शक्तिशाली बनाओ तो माया छुईमुई हो जायेगी। तो माया से बचने का साधन है - अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान के बच्चे समझो, शक्तिशाली रहने से माया की शक्ति छू नहीं सकती। पाई पैसे की रिद्धि-सिद्धि वालों के पास छू मन्त्र करने से सिद्धि आ जाती, कागज को छू मन्त्र से रुपया बना देते। तो हमारे पास बाबा की इतनी बड़ी शक्ति है फिर कोई कहे मेरे में सहन करने की शक्ति नहीं। आलमाइटी अथार्टी के बच्चे कहें कि मेरे में कमजोरी आई तो फिर तो नाम बदनाम हुआ। इसलिए बाबा कहते अपने स्वमान में रहो, नशे में रहो। अपनी स्वस्थिति स्वमान पर रखो तो हर प्रकार की माया से ऊपर रहेंगे। माया हमारी परछाई है, उसको पीठ दे दो तो पाँव पड़ेगी लेकिन उसका स्वागत करो तो सिर पर चढ़ेगी। हम तो देवता बनने वाली आत्मा हैं हमारे सिर पर लाइट का क्राउन है, रावण के सिर पर गधे का शीष है। बाबा हमें अपने गोल्डन हस्तों से रोज़ अमृतवेले लाइट माइट से सिर की मालिश



कर ताज पहना देता है। हम लाइट माइट का ताज पहने हुए महावीर-महावीरनियाँ हैं।

3. रोज़ अमृतवेले अपने आपसे विशेष संकल्प लो – अन्तर्मुखी रहो। स्वचिन्तन में रहो। बाह्यमुखता में नहीं आओ। किसी दिन संकल्प रखो कि आज कम बोलेंगे, धीरे बोलेंगे, मीठा बोलेंगे। फिर सारे दिन यह प्रैक्टिस करो। किसी दिन संकल्प करो आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गम्भीर धीर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज लौकिक से लेकर सबको साइलेन्स का दान देना है। कभी संकल्प करो आज हमें सब भक्तों का इष्ट देव बन उनकी मनोकामना पूरी करनी है।

ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के अमृतवेले के संकल्प से दिन भर खुशी में रहेंगे। सचमुच लगेगा कि हम कितने बड़े इष्ट देव हैं, कभी अपने सामने शक्तियाँ लाओ, कभी दैवीगुणों की माला जपो। लेकिन यह सब तभी होगा जब निश्चयबुद्धि होंगे। हमने जन्म लिया और बाबा ने कहा - आओ मेरे विजयी रत्न बच्चे। तो यह विजय का वरदान हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वरदानों का ताज सदा पहनकर रखो। हम विजयी थे, विजयी हैं, विजयी रहेंगे। फिर देखो कितनी शक्ति आ जाती। जब खेलने जाते हैं तो कभी यह संकल्प नहीं करते कि खेल में हार होगी। माया अगर शेरनी है तो हम शेर हैं लेकिन माया तो बिल्ली है। हम तो अवतरित हुई आत्मायें हैं। अवतार माना ही पवित्र। हम पवित्र आत्मा थे, हैं और रहेंगे। माया को चैलेन्ज करो तो माया मन्सा में भी तूफान ला नहीं सकती। हम सतयुग के बच्चे कोहिनूर हीरे हैं, आजकल के झूठे पत्थर नहीं हैं। अपने स्वमान में रहने की ऐसी कई बातें हैं उनकी स्मृति में रहो तो मन्सा शुद्ध हो जायेगी। विजयी माला के ऐसे मोती बनो जो दाना, दाने से मिल जाए। बीच में धागा बिल्कुल न दिखाई दे। इसके लिए यह भट्टी है। हम हैं बाबा के गले का हार। बाबा के गले का हार, कभी हार खा नहीं सकते, यह स्टैप्म लगाकर जाओ। नया जन्म है, विजयी रत्न हैं, माला के मोती हैं, वैजयन्ती माला में आने वाले हैं। तपस्वी कुमार हैं, अब हमें तपस्या करनी है। यह स्मृतियाँ पक्की करके जाओ। कल क्या था, उसको नहीं सोचो। कल कुछ भी थे राइट थे, राँग



थे, बुरे थे उसे आज लगा दो जीरो। जीरो लगाने से हीरो बन जायेंगे। तीन बिन्दु का तिलक लगाओ— मैं आत्मा बिन्दू, बाबा बिन्दू और ड्रामा बिन्दू। यह तीन बिन्दु साथ हैं तो न स्थिति नीचे आयेगी, न डिस्टर्ब होंगे। न अपने को डिस्टर्ब करो न दूसरों को।

4. बाबा ने कहा है — तुम छोटे बड़े सब वानप्रस्थी हो। वानप्रस्थी माना सब झंझटो से परे। हम कोई मौनी बाबा नहीं हैं, लेकिन बाहर के वातावरण से परे हैं। जब वानप्रस्थी होकर रहना है तो फालतू बातों में, व्यवहारों में टाइम वेस्ट नहीं करना है। अपने समय को, शक्ति को सफल करना है। न टाइम वेस्ट हो, न एनर्जी वेस्ट हो। शुभ भावना, शुभ कामना से हर कर्म करो। पॉजिटिव सोचो। वैर, विरोध, नफरत आदि की बातों में न जाओ। हम हैं उद्धार मूर्त, हमें तो पापियों का, अहिल्याओं का भी उद्धार करना है। अपने इस पॉजिटिव संकल्पों में रहो तो सदा ओ.के. रहेंगे। कोई भी क्वेश्चन नहीं आयेगा। किसी भी बात में न विचलित हो, न करो। योगी का गुण है अचल, अडोल, स्थिर, अखण्ड, निर्विघ्न। इसी लक्ष्य को सामने रखकर लक्षण धारण करो। हम जानते हैं स्थापना के कार्य में कई विघ्न आयेंगे। तो क्या मैं हर कर्म में अपनी स्थिति को विघ्न में लाऊँ? तो कर्म बड़ा या स्थिति बड़ी? परिस्थिति माना पराई स्थिति। उस परिस्थिति में मैं अपनी स्थिति नीचे क्यों लाऊँ? मुझे योगी को हर परिस्थिति में अपनी स्थिति अचल और अडोल रखनी है, संकल्प में भी मुझे खण्डित मूर्ति नहीं बनना है। फिर देखो कितना चित्त शान्त और शीतल रहता है। बुद्धि स्थिर रहती है। संस्कार ठण्डे पड़ जाते हैं। ज्ञान से पुराने स्वभाव को खत्म करो। स्व के भाव में रहो। गीता में कहा है कि मनुष्य स्वभाव के वश है। मनुष्य माना ही देह-अभिमानि। हम मनुष्य नहीं हैं। हम देही-अभिमानि रहने का पुरुषार्थ करते अर्थात् स्व के भाव में रहते हैं। इसलिए किसी भी आदत के वश नहीं बनो, लेकिन आदतों को वश करो। हम राजयोगी इन सबके ऊपर हैं। यह सब आदतें देह-अभिमान की हैं। चिंता को गेट आउट करो। आप मुये मर गई दुनिया। बाकी चिन्ता किसकी! सदा बेफिकर बादशाह रहो। बाबा कहते न यह देह चलनी है न दुनिया, न वैभव, सभी मिट्टी में मिल जाने हैं। तो इन सबको बुद्धि से भूलो — इसी में ही अतीन्द्रिय सुख



है। हम हैं गोप-गोपियाँ मस्ती में रहने वाली। मस्ती में रहो, विश्व-कल्याण की सेवा करो। सदा शुभ सोचों, शुभ देखो, शुभ बोलो। शुभ भावना आज नहीं तो कल हरेक तक पहुँचेगी। भगवान भी भावना का भूखा है। हमारी भावनायें सभी तक पहुँचनी है ज़रूर। अब समय दूर नहीं। अब बाबा के पास वतन में जाना है।
अच्छा - ओम् शान्ति।



मर्यादाओं का पालन करने में खामियाँ विघ्न रूप बनती है, खामियाँ खत्म करो तो तपस्या सहज हो जायेगी

1. तपस्या करने के लिए क्या करना होगा? तपस्या करनी है तो पहले त्यागमूर्त बनो। जो एक बार त्याग हुआ उसमें फिर आँख न डूबे। सम्बन्ध में भी खींच न हो। जब त्याग मूर्त बनते हैं तो ध्यान जाता है कि गुणमूर्त भी बनें। एक भी अवगुण न हो। एक होता है अवगुण, दूसरा खामी, तीसरा है कर्म। आसुरी अवगुण कई हैं। बैर, बदला, ईर्ष्या, गुस्सा करना यह बड़े अवगुण हैं। खामी किसे कहेंगे? बड़ा अवगुण नहीं है लेकिन खामी है। खामी खास होती है परचिन्तन से। जो स्वचिन्तन नहीं करने देती। खामी की बड़ी लिस्ट है। चेक करो - अन्दर कौन-कौन सी खामी है। ना उम्मीदी की खामी भी बड़ी नुकसान कारक है। मेरी इनसे बनती नहीं है, यह खामी है। खामी देही-अभिमानि बनने नहीं देती है। क्या करूँ, यह मेरा स्वभाव है, मुझे खुशी नहीं होती है, यह खामी है। सुस्ती है, अलबेलापन है यह खामी है।

जब चाहें खायें, सोयें, उठे - यह खामी हैं। यदि खामियाँ रह जायेंगी तो तपस्या कैसे होगी? इसलिए बाबा कहते हैं अन्तर्मुखी बनो। पहले ये गुण धारण करो तो अवगुण खत्म हो जायें लेकिन कोई खामी भी न रह जाए। इधर की बात उधर करना, उधर की इधर करना, छोटी बात को लम्बी करना, लम्बी बात है उसे स्पष्ट न करना यह सब खामियाँ हैं। पूरी महसूसता न होना भी खामी है। खामी अर्थात् खराबी। दाल में कुछ काला है। तो अन्दर चेक करके अपने आपको साफ स्वच्छ बनाना है। खामियाँ मर्यादा को पालन करने नहीं देती। ज्ञान



मार्ग में आने से पता चलता है कि हमारे में कितनी खामियाँ हैं। ज्ञान का अभिमान, सेवा का अभिमान आने से खामियाँ दिखाई नहीं पड़ती हैं। देही-अभिमानी स्थिति से, बाबा की याद से सूक्ष्म चेक करने से पता चलता है कि मेरे में क्या-क्या खामियाँ हैं। किसी-किसी में अवगुण वा खामी नहीं होती लेकिन थोड़ी कमी हो सकती है। घबराहट होना - यह भी कमी है। बाबा ने पहले क्यों नहीं बताया तपस्या करना है। हम गृहस्थी हैं, काम धन्धे वाले हैं, ऐसे संकल्प उठाना यह कमी है। अब बाबा का आर्डर मिला है तपस्या करनी है, अब नहीं करेंगे तो कब करेंगे? कल्प-कल्प की बाजी है। ऐसा न हो कि धर्मराज के सामने पश्चाताप करना पड़े। कयामत के पहले बाबा से पूरा वर्सा लेकर शान्ति सुख, बेहद का वर्सा लेकर शान्ति फैलानी है। जिसमें कोई भी खामी होगी वो शान्ति नहीं फैला सकते। तो सदा ध्यान रखना है कि हम ऐसा कोई कर्म नहीं करें, ऐसी कोई कमी न हो जो वातावरण अशान्त हो जाए। विश्व को आज शान्ति की जरूरत है। विश्व में शान्ति फैलाने वालों में ही अगर कमी होगी तो यह काम कौन करेंगे? अब विश्व की ऐसी हालत देख रहे हैं तो अभी तपस्या नहीं करेंगे तो कब करेंगे? अब माया के तूफानों से फ्री होकर, संकल्प विकल्प से भी मुक्त होकर तपस्या करो। सर्व गुण सब कलायें भरने के लिए अवगुण, खामी वा कमी को समाप्त करो।

2. ब्रह्मा माँ ने बड़े प्यार से हमें उठाया है। गन्दे कूड़े किचड़े में पड़े थे, हमको अपना बनाया है। न जात देखी, न गरीबी देखी... तरस माँ को पड़ता है। बाप तो ऊँचे ते ऊँचा है और धर्मराज भी है। हम कमजोर, अनाथ, भटकी हुई आत्मा थे। जो बेघर, अनाथ, दुःखी, गरीब होता है उस पर तरस पड़ता है। ब्रह्मा माँ द्वारा हमने बाप को पहचाना है। जब बाबा के बनते हैं तो देह-अभिमान, गरीबी, साहूकारी सबसे छूट जाते हैं। ब्रह्मा माँ के बच्चे बनने से देह, सम्बन्ध सब भूल जाता है। पहले जब आत्मा का ज्ञान मिला तो देह, सम्बन्ध सबसे डिटैच हो गये। फिर अन्दर से आता यह देह, सम्बन्ध हमारे नहीं हैं। लौकिक और अलौकिक में रात दिन का अन्तर है। हम बाबा के बने तो निश्चिन्त हो गये। बाबा का रथ ही भागीरथ है, हम सौभाग्यशाली हैं, अभी पुरुषार्थ करके पद्मापद्म भाग्यशाली बनना है। निराकारी, निरहंकारी,



निर्विकारी बनाने वाला हमारा बाबा है। वर्सा शिवबाबा से मिलता है लेकिन ब्रह्मा बाबा ने हमें वर्सा लेने का पात्र बना दिया। बाबा हमें कोई चेला वा दास नहीं बनाता। बाबा हमें अपना बच्चा समझता है। बच्चा समझकर सत्य ज्ञान देता है। हम जितना-जितना सत्य वचन सुनते जाते तो लगता है बरोबर यह वचन राजाओं का राजा बनाने वाले हैं। रायल्टी और पवित्रता के संस्कार भरते जाते हैं। गुलामी के संस्कार छूटते जाते हैं। अच्छी तरह से आत्मा महसूस करती है- सत्य बाप, सत्य टीचर और सतगुरु हमें सत्य रास्ता बता रहे हैं। बाबा घड़ी-घड़ी हमें महान-मन्त्र की याद दिलाता है और कहता है कि एक-एक महावाक्य को महा-मन्त्र मानो। कई पूछते हैं। हम बाबा को कैसे याद करें? हम कहते हैं बाबा को नहीं, बाबा के महावाक्यों को याद करो। यह महावाक्य ही मन को एकाग्र करने में मदद करते हैं। भक्ति में कितना भी राम-राम करते रहो मन एकाग्र नहीं होता। बाबा के महावाक्यों में मन टिक जाता है। सारे वेद शास्त्र पढ़ने वालों का मन शान्त नहीं होता। हम सार सुनते तो भी मन सहज ही एकाग्र हो जाता है। हमारे मन में और कुछ है ही नहीं। सार में बहुत शक्ति है। बाबा की शिक्षायें हमको स्वरूप बनने में प्रेरित करती हैं, शक्ति मिलती है। यह शिक्षाएं ऐसी मीठी प्रेम भरी हैं जो दिल में लग जाती हैं, हम छोड़ नहीं सकते। दिल चाहता है सारा दिन बाबा की शिक्षाओं की माला फेरते रहें। बुद्धि में अगर ज्ञान रत्न नहीं होंगे तो खाली-खाली लगेगा, भरपूर नहीं लगेगा, खुशी नहीं होगी। खुशी में नाचेंगे तो हल्के होंगे, हल्के होंगे तो नाचेंगे। व्यक्त भाव छूट जायेगा। अव्यक्त स्थिति का अनुभव होगा। उड़ती कला होती जायेगी। उड़ती कला में जाने के लिए ज्ञान रत्नों से खेलो, बेगर से प्रिन्स बन रहे हैं, इस नशे में रहो। बेगर अर्थात् जो फ्री है। जिसकी कहाँ भी इच्छा, ममता नहीं है। बाबा ने हमें बेगर बनाया ही है खुशी में नाचने के लिए। बाबा कहते हैं फकीरानों साहेब लंगदा प्यारा... साहेब को फकीर प्यारे लगते हैं। इसलिए सच्ची दिल से फकीर बन जाओ। फकीर अर्थात् सिम्पल, सच्चे। झूठ से वैराग हो। उसका त्याग हो। जब ऐसे त्यागी वैरागी बने तब तपस्वी बन सकेंगे।



मन-बुद्धि से बाबा के सामने स्वाहा हो जाओ तो स्वतः पुरानी दुनिया से वैराग हो जायेगा

1. अभी हम सभी इस बात के अनुभवी हैं कि योगी सदा प्रभु का प्यारा है। अर्थात् बाबा के प्यारे वहीं हैं जिसे एक बाबा ही प्यारा है और प्यारा वही है जो अपने को सदा राजयोगी समझता है। संगमयुग पर हम सबका उद्देश्य है— राजयोगी बनना। हमारा कुल ब्राह्मण है, लक्ष्य है देवता बनना। हम सभी राजयोगी सो राजऋषि हैं। ऋषि अर्थात् ब्रह्माचारी, गृहस्थी नहीं। हम ब्रह्मचारी सो ब्रह्माचारी हैं। हमारे सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं। हम उस सच्चे माशूक के आशिक हैं, हम सभी उस सच्चे माशूक के इश्क को जानते हैं। एक बाबा की लगन कितनी प्यारी, मीठी, सुखदाई है। ऐसी लगन में मगन रहने वाले कभी किसी दूसरे की लगन में नहीं जायेंगे। अगर किसी की आपस में बहुत-बहुत प्रीत होती है तो उसे तोड़ना मुश्किल होता है। ऐसे जब बाप से

हमारी पूरी लगन है, प्रीत है तो यह भी गुप्त खुशी वा नशा रहता है कि हमने तो उसी बाप को पाया है। सारी दुनिया कुछ भी नहीं है, एक तू इतना प्यारा है। हम उसी प्यार के समुद्र की नदियाँ हैं। इसी को ही हम कहते हैं – निरन्तर योग में रहना, यह मस्ती बड़ी निराली है। बाबा के प्यार का अनुभव करते उसी मस्ती में रहो तो दूसरी कोई भी बात सामने आ नहीं सकती। यह पुरुषार्थ की बहुत सहज विधि है।

2. कई योग लगाते, मेहनत करते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। कहते हैं मेरा एक बाबा दूसरा न कोई। यही पुरुषार्थ करते हैं कि मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा प्यारा



शिवबाबा है, मुझे बाबा की सेवा में तत्पर रहना है। जितना समय बाबा की सेवा में जाये उतना अच्छा है। लेकिन अनुभव हो कि मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, मैं आत्मा सुनती हूँ, आत्मा बोलती हूँ, यह मेरा शरीर है..। यह अभ्यास कम है। जब हमने कहा – मैं आत्मा आपकी हूँ, तो मेरा सब कुछ आपका है अर्थात् मैं बाबा को ही समर्पण हूँ। आप आत्मा एक बाबा पर समर्पण हो जाओ तो यह जो संकल्प वा बुद्धि इधर-उधर भटकती है, वह भी समर्पण हो जायेगी। फिर यह कम्पलेन खत्म हो जायेगी कि क्या करूँ मन भटकता है। विचार शक्ति, बुद्धि की शक्ति को समर्पण कर दो। फिर यह भी नहीं कह सकते कि यह मेरे संस्कार हैं। कभी यह नहीं कहा कि बाबा का यह संस्कार है। क्या कभी बाबा के लिए सुना है कि किसी ने कहा हो बाबा का संस्कार ऐसा है। तो हमें अगर बाबा के समान बनना है तो संस्कारों के वश होकर के नहीं चलना है। यह संस्कार भी बाबा के हो गये। जैसा बाप वैसी मैं... यही मेरा पुरुषार्थ है। फिर यह जो कहते कि मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार – ऐसी अनेक प्रकार की जो माया है वह समाप्त हो जाती है। बाबा भी कहते बच्चे, मोहब्बत में रहो तो मेहनत से छूट जायेंगे। जब कोई माया से युद्ध करते हैं तो तरस पड़ता है। रावण के एक-एक शीश को कब तक काटते रहेगे। एक मूल शीश को ही काट दो तो दसों कट जायेंगे। फिर घड़ी-घड़ी मुँह नहीं दिखायेगी।

3. बाबा कहते तुम सब हो कठपुतलियां और तुम कठपुतलियों को मैंने दी है श्रीमत की चाबी। तो बाबा ने जो श्रीमत की चाबी दी है उसी अनुसार बेफिकर बादशाह बन निश्चिन्त हो खेल करो। लेकिन सदा समझो हम राजऋषि, राजयोगी हैं। अपना आक्वूपेशन नहीं भूलो। योगी के लिए मूल चाहिए ज्ञान से पुरानी दुनिया का वैराग। हम हैं योगी लोग, न कोई अपना न कोई पराया। हमें कौन जानें! यह बहुत मस्ती थी। इसलिए कहती – हे आत्मा, तू बाबा को स्वाहा हो जाओ तो मन बुद्धि भी सब स्वाहा हो जायेगा। जब सब स्वाहा हो गया तो पुरानी दुनिया से वैराग हो ही जायेगा। पुरानी दुनिया तब तक खींचती है जब तक समर्पण नहीं हुए हैं। संकल्प शक्ति भी समर्पण है तो दूसरी कोई भी बात नहीं आ सकती। इसी का नाम है – ‘तपस्या’। तो पहले अपने आपका त्याग करो अर्थात् समर्पण हो जाओ। जब आत्मा



स्वयं समर्पण हो गई फिर तपस्या करना, अशरीरी बनना बहुत सहज है। अब हमारी तपस्या की दुनिया को भी दरकार है। तत्वों को भी इसकी दरकार है। हम सब देख रहे हैं दुनिया की हालत दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जाती है, यह दुनिया की गम्भीर बातें हमें और भी प्रेरणा देती हैं कि हमें तपस्या करके विश्व को अपने साइलेन्स की किरणें देना है।



तपस्या द्वारा फीलिंग के फलू को समाप्त करो, किसी भी बात के कारण खुशी की मात्रा कम न हो

प्यारे बापदादा ने हम बच्चों को इस वर्ष विशेष स्व के लिए अथवा सर्व के प्रति प्रेरणादायक बनने के लिए विधि दी है कि भिन्न-भिन्न रूप से तपस्या करो। इसके लिए बाबा तपस्या का अर्थ भी हम बच्चों को भिन्न-भिन्न रूप से समझाते हैं। तपस्या का मूल लक्ष्य है – व्यर्थ संकल्पों को, पुराने कड़े संस्कारों को समाप्त करना। किसी भी परिस्थिति के कारण जो संकल्प-विकल्प उठते हैं और हमारे बुद्धियोग को तोड़ते हैं, जिससे सारी शक्ति व्यर्थ हो जाती है। अब वह व्यर्थ संकल्प-विकल्प समाप्त हो जाएं। इसके लिए व्यर्थ संकल्प उठने का कारण क्या है, इसे भी समझना है। व्यर्थ संकल्प उठने का कारण है कोई-न-कोई सूक्ष्म में भी इच्छा। जैसे बाबा कहते हैं – बच्चे, तुम्हें कोई भी देहधारी याद नहीं आना चाहिए। अगर याद आता है तो उसका कारण है - जरूर उसके पीछे कोई इच्छा या स्वार्थ है। कहाँ भी बुद्धि जाती है तो सूक्ष्म चेक करो – जरूर उसके पीछे स्वार्थ होगा।

कईयों की बुद्धि में आता है मुझे मान मिले, मेरा शान हो, मेरी इज्जत हो...। मेरा नाम हो... यह सूक्ष्म इच्छा भी व्यर्थ संकल्प उठने का कारण है। तो जिसमें ऐसी इच्छाएं उत्पन्न होती हैं उनके सामने तपस्या में यही विघ्न रूप हैं। इसके लिए बेहद का वैराग्य चाहिए। जैसे कई समझते हैं मैं कोई भी सेवा करता हूँ तो उसकी कदर नहीं करता। कोई हमारी सेवा को स्वीकार नहीं करता, मानता नहीं। तो सेवा तो की लेकिन सूक्ष्म में कई प्रकार का मेवा चाहते हैं। तो चाहना माना ही इच्छा, आसक्ति है। कोई भी प्रकार की इच्छा होगी तो उसका सामना जरूर करना पड़ेगा। जैसे धन



इकट्टा करने का शौक होता है तो उसके लिए मेहनत करनी पड़ती, बिजनेस में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता। इसका अर्थ यह नहीं है कि शरीर निर्वाह अर्थ कर्म ही नहीं करना है। करना जरूर है लेकिन एक है शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करना अथवा बाबा की सेवा के लिए कर्म करना और दूसरा है शौक अथवा इच्छाओं की पूर्ति के लिए कर्म करना। फिर ऐसे कर्म में स्वयं को बिजी कर लेते हो जो कन्ट्रोल से बाहर हो जाता, उसके लिए नींद भी नहीं करते। यदि उसमें अच्छा रेसपान्ड नहीं मिलता तो नाउम्मीद हो जाते। यह कोई बैलेन्स नहीं है। तपस्या कहती है - कर्म करो लेकिन बैलेन्स रखो। सेवा भले करो लेकिन आसक्ति नहीं रखो, स्वार्थ न हो। घूमो फिरो, खाओ पियो लेकिन अनासक्त रहो। अनासक्त स्थिति ऐसी होती है जो सब व्यर्थ संकल्पों से छुड़ा देती है। तो सूक्ष्म चेक करो कि व्यर्थ संकल्प यदि उत्पन्न होते हैं तो उसका कारण क्या है? क्या किसी भी प्रकार का शौक है या कोई आसक्ति है। हर बात का हुल्लास रखो, उमंग से करो लेकिन उसमें आसक्त होकर फँस नहीं जाओ। हर कार्य निमित्त बन करके करो। कई बार कोई ने कुछ कहा, हमारे कानों तक वह बात आई तो खुशी ही गुम हो जाती है। उसकी ऐसी फीलिंग आती जो चेहरा ही मुरझा जाता है। तो तपस्या करने के पहले ये चेक करो कि क्या हमने इस फीलिंग के फलू को समाप्त किया है? मेरी खुशी को कोई भी बात नीचे तो नहीं ले आती? छोटे-से-छोटी बात हो या बड़ी बात है... किसी भी बात का मेरे माइण्ड पर उसका असर तो नहीं आता है? यदि माइण्ड पर असर आया, फीलिंग आई तो तपस्या भंग हुई। बाबा कहते बच्चे तुम्हारी स्थिति ऐसी चाहिए जैसे कमल का फूल। कमल फूल अर्थात् निर्लिप्त। सब कार्य करो लेकिन निर्लेप रहकर करो। निमित्त मात्र करो। न्यारे-प्यारे रहो। तो तपस्या का आधार ही है - न्यारे बनो और प्यारे बनो। इससे स्थिति अडोल रहेगी। न्यारे-प्यारे रहेगे तो कोई भी इच्छा, आसक्ति पैदा नहीं होगी। जब कोई भी आसक्ति नहीं, मान-शान, बड़े छोटे, अच्छे-बुरे की इच्छा नहीं तो आपकी स्थिति बहुत-बहुत स्वीट हो जायेगी। फिर ऐसी स्थिति से याद में बैठो तो स्थाई याद हो जायेगी। तपस्वीमूर्त बन जायेगे। यदि इच्छायें आसक्तियाँ होंगी तो स्थाई याद नहीं रह सकती। इधर-उधर के संकल्प आते रहेगे। तो तपस्वीमूर्त बनने के लिए 'इच्छा मात्रम् अविद्या' बनो। किसी भी प्रकार की अंश मात्र भी इच्छा न हो। किसी व्यक्ति से स्वार्थ न हो। वैभवों, वस्तुओं की चाहना भी न हो। ऐसी निःस्वार्थी जीवन बनाओ। इसके



लिए बुद्धि में त्यागवृत्ति हो। जब हम हैं ही त्यागी, वैरागी तो तपस्वी तो बन ही जायेंगे।

तपस्वीमूर्त बनने के लिए - सुनते भी न सुनो, देखते भी न देखो। इसके लिए चाहिए सहनशीलता कईयों की दिल बड़ी कोमल होती है। ज्ञान में कोमल दिल नहीं चाहिए। कोमल दिल वाले को छोटी-छोटी बात में फीलिंग आती, जो उदासी ले आती है। कोमल दिल वाला सदा कमजोर होगा, हिम्मतवान नहीं हो सकता। वह डरपोक होगा। कोमल दिल वाला ही जवाब देता कि क्या करूँ मेरे में सहनशक्ति नहीं है। संगठन में चलने के लिए सहनशीलता का गुण बहुत जरूरी है। क्योंकि अनेक प्रकार की बातें सामने आती हैं। कभी कोई भाव-स्वभाव होगा, कभी कोई मुझे कुछ बोल देगा... इसलिए सहनशीलता और धैर्यता का गुण बहुत जरूरी है। धैर्यता के लिए सहनशीलता जरूर चाहिए। तो इन दोनों गुणों को धारण कर तपस्वी बनो। इनकी कमी के कारण तपस्या भंग न हो जाए। अपना बुद्धियोग एक बाबा से रखो। एक बाबा को देखो, बाबा से सुनो, बाबा के संग बैठो...। बाबा से मीठी-मीठी बातें करो - एक बाबा के सिवाए और कुछ भी दिखाई न दे। जो ऐसा रहता है वो सर्व को प्यारा लगता है। उनके दिल में कोई अप्रिय होता ही नहीं है। उनके दिल में सर्व के प्रति स्नेह रहता, सब मीठे प्यारे लगते। जो किसी से भी नफरत करता है वह पहले तो खुद से नफरत करे कि मेरे में भी तो अब तक यह-यह कमजोरी है। अपनी कमजोरी से खुद नफरत करो, दूसरे से नफरत क्यों करते? हर एक नम्बरवार है, हर एक में कोई न कोई विशेषता है। तो ऐसी अनेक बातों को धारण करने के लिए हमें यह तपस्या वर्ष मिला है। इसके लिए रोज़ चेक करो कि अभी तक मेरे में कौन सी कमी है जो व्यर्थ संकल्प वा विकल्प उठते हैं। दिनचर्या में चेक करो कि किस बात ने, किस कारण ने, किस रूप से मेरी बुद्धि में व्यर्थ संकल्प उत्पन्न किया जिससे बुद्धियोग टूटा। यदि बुद्धियोग टूटता नहीं तो निरन्तर आत्मा का दीप जैसे लगा हुआ ही है। फिर खुद को और दूसरों को भी रोशन करते रहेंगे। खुद भी रोशन रहें और दूसरों को भी रोशन करें, खुद में भी साइलेन्स की शक्ति भरी हुई हो और दूसरों को भी साइलेन्स के वायब्रेशन मिलते रहें - यही है तपस्या वर्ष की सेवा। इससे आटोमेटिक स्वयं का माइन्ड शान्त रहता, स्वीट रहता, फिर कोई भी बात आती भी है तो आई और गई। आंधी आई, पास हुई, चली गई। इसलिए अपनी ऐसी स्थिति



रखो जो सदा मौज में और मजे में रहो। ऐसा कभी भी न हो जो कोई बात का चिंतन नींद ही फिटा दे। कइयों में व्यर्थ चिंतन करने की ऐसी आदत होती है जो अपना टाइम, एनर्जी वेस्ट करते रहते, नींद भी खराब कर देते हैं। छोटी सी बात होगी और सोचेंगे बहुत लम्बा। बात कुछ भी नहीं होगी और चिंतन इतना बड़ा करेंगे जो राई को पहाड़ बना लेंगे। लेकिन इन सभी का सूक्ष्म कारण है – स्वार्थ, इच्छा, चाहना। इसने मेरी इन्सल्ट क्यों की? बस, इतनी-सी बात का विस्तार ऐसा कर देंगे जो पूरा 24 घन्टे की एनर्जी वेस्ट कर देगा। फिर वह तपस्या क्या करेंगे! तो तपस्या वर्ष में हमें स्वयं की चेकिंग करने का अच्छा साधन मिला है। रोज़ ऐसा अपना चार्ट चेक करो और चेकिंग करके परफेक्ट बनो। साइलेन्स की शक्ति, तपस्या की शक्ति ऐसी बढ़ाओ जो सूक्ष्म में भी कोई इच्छा न रहे। अगर अब तक हो तो उसे समाप्त कर दो। इच्छा होगी तो उसकी निशानी है – फीलिंग ज़रूर आयेगी। कोई मेरी बात दूसरे से कह रहा है तो उसका वायब्रेशन आयेगा, चिंतन चलता रहेगा। क्यों कहा, क्या कहा, किसलिए कहा, फिर क्या हुआ...? ऐसे तूफान आते रहेंगे। लेकिन हम अच्छे हैं तो मौज में रहें। हमने बुरा ही क्या किया है जो ऐसे चिंतन में समय गँवाते हैं। सदा 'बी गुड, डू गुड' का स्लोगन याद रखो तो किसी भी बात की फीलिंग नहीं आयेगी। सदा डबल ओ.के. रहो। फिर नेचुरल हल्के हो जायेंगे। योग में बैठते ही लगेगा कि हम हल्के हैं, उड़ रहे हैं। हमारी बुद्धि स्वच्छ साफ़ आइने की तरफ है तो उसमें कई अनुभव कर सकते हैं। हमें अपने सम्पूर्णता की सिद्धि को प्राप्त करना है, हम साधकों को अभ्यास के लिए यह साल मिला है। यह अभ्यास हमें निरोगी बनायेगा, सम्पूर्ण बनायेगा। इस तपस्या से सारे विश्व में आवाज पहुँचेगा। हम सबकी एक ही भावना है कि विश्व का कल्याण हो। परिवर्तन हो, सुखमय संसार आये। यही एक संकल्प है। हमें और कुछ नहीं चाहिए। महिमा भी नहीं चाहिए। भगवान ने मेरी महिमा कर दी – ओ बच्चे, तुम हो मेरे दिल तख्त के मालिक। इस महिमा के आगे और कोई महिमा नहीं। जिसने स्वीकार करना था, कर लिया, उसने दिल का मालिक बना दिया। अच्छा- ओम् शान्ति।



योग तपस्या द्वारा स्वयं में साइलेन्स की शक्ति जमा कर विश्व को सकाश दो

इस वर्ष विशेष मन और मुख के मौन की भट्टी क्यों रखी गई है, इसके पीछे कितने लाभ हैं? पहले तो रोज़ प्यारे बाबा हमें मन्त्र देते कि हे बच्चों, तुम्हें यह याद की यात्रा का बहुत अभ्यास बढ़ाना है। इसके लिए बाबा रोज़ हमें मन्मनाभव का मन्त्र देता। तो सदा यही स्मृति रहे कि हम हैं 'राजयोगी'। हम हैं तपस्वी योगी। हम हैं राजऋषि। हम हैं कर्मयोगी अथवा सहजयोगी। योगेश्वर बाबा ने हमें इस पढ़ाई से मास्टर योगेश्वर बनाया है। दूसरा - सर्वशक्तिवान बाबा ने हमें इस राजयोग के द्वारा मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है, जिससे हमें अष्ट शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। बाबा कहते बच्चे ऐसा अभ्यास करो जो अशरीरी बन जाओ। वर्तमान समय यही अभ्यास बहुत-बहुत ज़रूरी है। दिन में 10-15 बार भी अगर कुछ सेकण्ड के लिए यह स्मृति आवे कि मैं अशरीरी हूँ, मैं विदेही हूँ... बीच-बीच में उठते-बैठते, खाते-पीते-सोते 5 सेकेण्ड भी देह से परे चले जाओ, अनुभव करो मैं विदेही हूँ, मैं अशरीरी आत्मा हूँ।

यह अभ्यास एक तो हमें शान्ति की बहुत मीठी शक्ति देता है। बाबा हमें बार-बार यही मन्त्र अथवा वरदान देता है - बच्चे, 'विदेही भव'! अशरीरी भव! इससे देह का भान सहज भूल जाता है। देह का भान भूलना माना ही देही-अभिमानि बन जाना, आत्म-अभिमानि बन जाना। यह अभ्यास भी आत्मा को अपने सम्पन्न स्वरूप के समीप ले जाता है। यह अभ्यास आत्मा को कितनी बड़ी शक्ति देता है, इसी अभ्यास से बुद्धि - दिव्य स्वच्छ पवित्र बनती जाती है। जब स्वयं को अपनी स्व



आत्मा प्रत्यक्ष अनुभव होती है तब खुद को भी शान्ति की अनुभूति होती और दूसरों को भी वह सकाश मिलती है, इसलिए इसका बहुत प्रयोग चाहिए।

दूसरा - इस भट्टी में हमारी यह भावना है कि हर एक स्वयं में साइलेन्स की शक्ति को जमा करें। जितना हो सके साइलेन्स की शक्ति को बढ़ायें, जब स्वयं शान्ति के स्वधर्म में रहेंगे तब यह शुभ वायब्रेशन स्वयं को परिवर्तन करेंगे और विश्व को परिवर्तन करने की सूक्ष्म सकाश मिलेगी। संगम पर मीठा बाबा हमें एक तो कहते हैं बच्चे, मैं आया हूँ तुम बच्चों को अपना मददगार बनाए स्व-परिवर्तन से विश्व को परिवर्तन करने। तो जितनी हम आत्मा स्व धर्म में रहेंगी उतना ही हमारी शान्ति की शक्ति, हमारी यह लाइट-माइट विश्व को मिलेगी, तब यह विश्व परिवर्तन होगा।

तीसरा – जितना हम यह अभ्यास करेंगे उतना हम मायाजीत बनते जायेंगे। कुछ भी किसी प्रकार की माया जो अब तक भी वार करती है, उस व्यर्थ संकल्प को, उस सूक्ष्म माया की शक्ति को यह आत्मिक-शक्ति खत्म करेगी। सूक्ष्म जो कोई कमी, कमजोरी होगी वह हम इस विदेहीपन के अभ्यास से ही खत्म कर सकते हैं।

चौथा – जितना-जितना हम अपना आत्मिक दीपक जगायेंगे उतना अपने योग बल से, योग अग्नि से संस्कारों को परिवर्तन करेंगे। हमारे इस सहज राजयोग का प्रत्यक्ष प्रमाण है ही संस्कारों पर विजय पाना अर्थात् परिवर्तन करना।

पाँचवा – हमारे इस अभ्यास से हमारी स्वयं की स्थिति व्यक्त भावों से ऊपर उठकर अव्यक्त बनती जायेगी। उठते, बैठते, चलते, फिरते, देखते ऐसे अनुभव होगा जैसे हम बाबा के समान अव्यक्त फ़रिश्ता हैं। अर्श निवासी बनने का यही अभ्यास है। इस अभ्यास से ही अन्तःवाहक शरीर ले उड़ सकते हैं। तो उड़ती कला इस अभ्यास से ही अनुभव करेंगे।

छठा – जो बाबा कहते कि तुम्हारी बैटरी चार्ज हो, वह भी तब होगी जब बाबा-बाबा-बाबा ही स्मृति में रहेगा। हमारा बुद्धियोग अपने पावर हाउस बाबा से जुटा हुआ होना चाहिए। उसी से ही हमें इतनी शीतल लाइट, शीतल माइट मिलती जो हम परिवर्तन हो जाते हैं। इसलिए बाबा हमें कहते – बच्चे, एक तरफ इस बेहद की पुरानी दुनिया से जीते जी मर जाओ, त्यागी बन जाओ। तो जीते जी मरजीवा बनने



की साधना सिर्फ ज्ञान सुनने-सुनाने से नहीं लेकिन इस अभ्यास से ही हो सकती है। इससे ही हम ऐसी स्थिति बनाकर फिर उसको बढ़ाते रहेंगे। इसलिए हमें इसकी बहुत दरकार है।

सातवाँ – भट्टी रखने की मूल यही शुभ भावना है कि हमारे संकल्प, हमारी बुद्धि, हमारे संस्कार, हमारा चेहरा, हमारे नयन, हमारे बोल इतना स्वीट बन जावें जो दूर बैठे हम अपने वायब्रेशन दूसरों तक पहुँचा सकें। साइलेन्स की किरणों आने वालों पर अथवा दूर रहने वालों पर भी ऐसी पड़ें जो उन्हें यह वायब्रेशन पहुँचे। सब आत्माओं को अपने प्यारे-प्यारे परम बाप का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार हो, जो रोज़ बाबा कहते बच्चे, तुम्हें विश्व में यह सन्देश देना है, जो सब कहें हमारा बाबा आ गया है, हमारा बाबा आ गया है अथवा यह प्रभू प्रत्यक्षता का नगाड़ा गूँज उठे। यह अनुभव करें इस धरा पर हमारा बाबा अथवा प्रभू का अवतरण हो गया है। शिव अवतरण की अनुभूति कर लेवें, तो यह साल यही भावना है कि नई सदी तक हम देश-विदेश के घर-घर में, अपने परिवार में, स्वयं में ऐसी आत्मिक-शक्ति की क्रान्ति लावें, प्रयोग करें जो सचमुच हमारे सामने जो कोई आवे, उनको करण्ट मिले। जैसे चुम्बक के ऊपर कशिश से सुई खिंच आती है। तो यह स्थिति ही जादू का चुम्बक है। इससे ही आत्मायें प्यारे बेहद बाप को पहचानकर उनसे अपना वर्सा प्राप्त करेंगी और विश्व के अथवा भारत के गांव-गांव में हर आत्मा के दिलों में शिव बाबा का झण्डा लहरा जायेगा।

यह साइलेन्स की किरणें सबके ऊपर छत्र रूप में अनुभव होंगी। इसलिए यह अभ्यास यहाँ पक्का करेंगे तो वहाँ अपने सेवाकेन्द्रों में, चाहे धन्धे-धोरी, घर अथवा दफ्तरों में बाबा का आह्वान, बाबा से रूहरिहान, बाबा से मिलन का अनुभव करते बाबा की शक्ति वा बाबा की प्रेरणायें लेते रहेंगे। बाबा से कनेक्शन क्लीयर रहेगा तो लाइट मिलती रहेगी। कनेक्शन क्लीयर नहीं होगा तो अंधेरा रहेगा। इसलिए ऐसी पक्की अपनी स्थिति बनाओ जो यह कनेक्शन अटल बनें और स्थिति अचल-अडोल बनें क्योंकि हम हैं योगी लोग, हम हैं तपस्वी लोग। हमें बाबा ने कहा ज्ञानी तु आत्मा प्यारे हैं लेकिन योगी तू आत्मा मेरा स्वरूप हैं। और तुम ही मेरे समान सर्व के प्यारे,



सर्व से न्यारे हो। तुम्हें ही मरजीवा बनने की नॉलेज है।

आठवाँ – इस भट्टी में हमारी यह भी भावना है कि अब समय है 'नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धः' बनने का या कहें स्मृतिर्लब्धः नष्टोमोहः। अपने देह में भी ममता न हो तो दूसरों की तो बात ही छोड़ो। यही इस भट्टी का लक्ष्य है - अब हमें बाप समान बनना है। यह बीच-बीच में स्मृति दिलाने के लिए ही ट्रैफिक कन्ट्रोल के गीत बजते हैं कि शिवबाबा को याद करो क्योंकि हमें मुक्तिधाम में जाना है। तो हरेक खुद से पूछे कि बराबर मैं आत्मा ऐसी तैयार हूँ, जो मैं मुक्ति-जीवनमुक्तिधाम में उड़ जाऊँ क्योंकि हमें पिछले 63 जन्मों के कर्मों के खातों को खत्म करना है तब कर्मातीत बनेंगे। तो चेक करना होता है कि हमारे कर्मातीत स्थिति में अभी कितनी सूक्ष्म दूरी है या समीप है क्योंकि अन्त में कुछ नहीं याद आवे, बाबा ही सामने हो।

तो इस भट्टी से ऐसी स्थिति बनाओ जो हमारे एक आँख में बाबा दूसरी आँख में दादा हो। जो कोई भी हमें देखे तो अनुभव करे कि जैसे बाबा ने हमें यह अनुभव कराया। जैसे बाबा के सामने जब आते थे, तो बाबा साकार दिखाई नहीं पड़ता था। ऐसे लगता था अव्यक्त बाबा के सामने अव्यक्त वतन में फ़रिश्ते के सामने खड़े हैं। शिवबाबा बिन्दु रूप में है। तो यह भट्टी का मूल लक्ष्य है कि यह सब अनुभव करके जावें कि हमें ऐसा बाबा का स्वरूप बनना है। हमारे इन नयनों से दूसरों को अनुभव हो कि एक अँख में शिवबाबा बैठा है, दूसरे में ब्रह्मा बाबा बैठा हुआ है। इन दोनों खिड़कियों से बाबा का साक्षात्कार हो क्योंकि हमें बाबा ने विश्व-कल्याणी बनाया है। तो यह भावना है कि स्व के कल्याण और सर्व के कल्याण की हमें सच्ची सेवा करनी है। तो जब हमारी ऐसी स्थिति बनेगी तब दूसरों को भी आकर्षण होगा क्योंकि प्रवृत्ति में अनेक घण्टों, मिनटों समय बीत जाता तो थक जाते परन्तु हमें अमृतवेले उठ यह अभ्यास करके पक्के अभ्यासी बनके ही कार्यक्रम में जाना है। मुरली तो हमारा रोज़ के लिए आत्मा का सच्चा भोजन है। यह भोजन ही हमारे बुद्धि को शक्ति देता है। यह भोजन न हो तो बुद्धि भी यहाँ-वहाँ भटकती रहेगी। बुद्धि योग का भोजन मुरली है और मुरली का सार है - याद में समा जाना, खो जाना। तो हमें अपने संकल्प की शक्ति, श्वाँस की शक्ति और समय की शक्ति को एक गुणा से



100 गुणा सफल करना है। हम लौकिक दुनिया वाले नहीं हैं। अब हम अलौकिक परिवार, अलौकिक दुनिया के योगी हैं। हमारी इसी शुभ भावना से सर्व धर्म वालों को भी अन्त में झुकना है। अहो प्रभू! अहो प्रभू! का गीत गाना है।

हम समझते हैं कि हरेक बाबा के बच्चे यह पॉवर भरके जायेंगे। कोई भी प्रकार की वृत्ति, दृष्टि की कमी होगी तो इस भट्टी से उसको सम्पन्न कर स्वाहा कर समाप्त करके ही जायेंगे। इसलिए अभी की घड़ी से ही निगेटिव संकल्प समाप्त कर लो, पॉजिटिव संकल्प रखो कि हम हैं बाबा के विजयी माला के विजयी रत्न।

तो समय की पुकार है कि अब समय है – नई दुनिया में जाने का और बाबा की भी पुकार है कि बच्चे, मैं बाँहे पसार खड़ा हूँ, अब घर आना है। हमें घर जाने की तैयारी करनी है, तो हम उड़कर बाबा के साथ, बाबा के घर में जायेंगे। तो चलो अब सब उड़के चलो बाबा के पास...। सब भूल जाओ। बस, हम आत्मा विदेही हैं, बाबा और हम आत्मा उस वतन में पहुँचे हैं...। इस वतन से निकल मूलवतन में उड़ जाओ, घर चलो, घर चलो। स्वीट साइलेन्स होम में बैठ जाओ। ओम् शान्ति।



एकाग्रता के अभ्यास से विदेही स्थिति का अनुभव करो

आज हम सबको विशेष यही अभ्यास करना है कि हम आत्मा इस देह से न्यारी देही-अभिमानी हूँ। देही-अभिमानी बन देह से न्यारे हो विदेही स्थिति की अनुभूति करनी है। विदेही स्थिति अर्थात् सूक्ष्म संकल्पों से भी परे रहे, जिसको कहते हैं हम आत्मा अपने मूल बीजरूप स्थिति में तत्पर रहें। उसके लिए शरीर होते भी अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। जैसे ज्ञान की सब्जेक्ट में हम ज्ञान का मनन-चिन्तन करते हैं। परन्तु इस ज्ञान से भी परे विज्ञान अर्थात् योग वा निरन्तर बाबा की याद में हम रहें, ऐसी विदेही स्थिति इतनी परे बन जाये जो सब कुछ देखते भी कुछ नहीं देखें। एक है कर्मयोग जो दिनभर करते, परन्तु यह मन का मौन इसीलिए रखते हैं कि अन्त में हमें कुछ भी याद नहीं आये - जिसको ही कर्मातीत स्थिति कहते हैं।

विदेही स्थिति में रहने से ही विकर्म विनाश होते हैं। एक हैं कर्म, दूसरे होते हैं विकर्म। परन्तु हम इस देह को भी भूल जायें, बहुत सूक्ष्म अपने को आत्मा समझ सूक्ष्मवतन से भी पार अपने मूलवतन घर में पहुँच जायें। वही हमारा स्वीट साइलेन्स होम है, इसकी प्रैक्टिस बहुत चाहिए इसलिए यह अभ्यास जरा एकान्त में बैठ एकाग्रचित्त होकर करना होता है। ऐसी एकाग्रता का जब हम अभ्यास करेंगे तब ही विदेही स्थिति का अनुभव होगा। जिसकी निशानी है कि इन्द्रियों से परे अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति वा अपने परम आनन्द की अनुभूति में चले जायें। तो ऐसे लगेगा जैसे कि हम शिवबाबा के बहुत-बहुत समीप



बैठे हैं। अपने बिन्दु आत्मा की स्थिति के ऐसे अनुभवी हो बैठ जाओ जो लगे कि बाबा भी हमारे साथ बिन्दु-ज्योति, हम भी बिन्दु-ज्योति और सूक्ष्म में बाबा पॉवर हाउस हमें पॉवर दे रहा है क्योंकि हमें कर्मातीत बनने लिए पहले चाहिए लाइट हाउस की स्थिति हो। जितना-जितना लाइट हाउस बनेगे उतना माइट हाउस होंगे। यह माइट स्वयं आत्मा को भी शक्तिशाली मास्टर सर्वशक्तिवान बनायेगी और इस स्थिति से ही हम दूसरों को भी लाइट हाउस बन लाइट देंगे।

तो वर्तमान समय के अनुसार स्वयं को, सर्व को, विश्व को यही लाइट देने की सेवा करनी है। इसलिए रोज़ चाहे अमृतवेले, चाहे दिन में ऐसे सभी संकल्पों को समेट लो जैसे कि कछुआ समेट लेता है। जो बाबा बार बार कहते कि जब योग में बैठेंगे, तो माया बीच-बीच में आयेगी और उसी स्थिति से खिसकाके जायेंगी। इसलिए अटेन्शन देने की बहुत जरूरत है। जैसे कई बार हठयोगी अण्डरग्राउण्ड हो जाते हैं, हमारा कोई हठयोग नहीं है परन्तु हम अन्तर्मुखता की स्थिति से, अपने मन की शक्ति को भी अनुभव कर सकते हैं। ज्ञान-चिन्तन बहुत अच्छा है परन्तु उसके ऊपर साइलेन्स की शक्ति महान है। जब एक बाबा की याद का संकल्प हो जाता तो इस देह से भी परे हो जाते, जिसके लिए कई बार बाबा कहते देही-अभिमानी बनो, मन्मना भव। इस स्थिति में अभ्यास करो तो हमने देखा है कि बहुत मज़ा आता और खुद को ऐसे अनुभव होता जैसे सचमुच बाबा ने हमें ऊँचा उठाकर साक्षात्कार मूर्त बना दिया है। आखिर तो अन्त में हमें अव्यक्ति फ़रिश्ता स्थिति से ही साक्षात्कार मूर्त बन साक्षात्कार करना कराना है। यही स्थिति वह शक्ति देगी जो सूक्ष्म कमी कमजोरियाँ अपने आप समाप्त हो जायेंगी। जो कभी-कभी कहते माया की सूक्ष्म कमी-कमजोरियाँ है, वह सूक्ष्म में ही खत्म हो जायेंगी।

बाबा रोज़ कहते बच्चे, तुम्हें मायाजीत जगतजीत बनना है, तो इसका सुख कोई अन्त में नहीं लेना है, परन्तु अभी से ही यह स्थिति अनुभव हो कि हाँ, बाबा हम मायाजीत जगतजीत हैं। अभी हम माया से विजयी हैं, विजयी हैं तो नैचुरल इस स्थिति से जो बाबा शिक्षायें देते वे शिक्षायें भी सहज धारण हो जायेंगी। इस अभ्यास से आत्मा प्युअर बन जाती है, तो व्यर्थ संकल्प भी समाप्त हो जाते हैं। दृष्टि, वृत्ति



प्युअर बन जाती है। हम आत्मा, तुम आत्मा भाई-भाई बिन्दु ज्योति तो इसका अभ्यास निरन्तर चाहिए।

कहते हैं कि साइलेन्स इज पॉवर क्योंकि साइलेन्स की शक्ति महान है। जो खुद को भी साइलेन्स की शक्ति मिलती दूसरों को भी मिलती। यही अनुभव हमें साकार बाबा के सम्मुख आते ही होता था, इसलिए यह वर्ष हरेक को ऐसी शक्ति भरने की भट्टी रखनी है जिसमें मन और मुख का मौन रखकर अन्तर्मुखता की स्थिति को आगे बढ़ाना है। भल योग का अभ्यास करते, परन्तु योग की गहरी अनुभूति है - विदेही स्थिति। एक है बापदादा से रूह-रूहान करना। एक है उसी रूह-रूहान से भी परे अपने शान्ति की शक्ति का अनुभव करना और यह अभ्यास ही अपने निरन्तर कार्यक्रम में शक्ति देता है क्योंकि हम राजयोगी, राजऋषि भी हैं तो कर्म से भी प्यारे न्यारे बनने की शक्ति का साधन यह विदेही स्थिति है। विदेही माना कुछ याद नहीं जिसको कहते हैं कि टॉवर आफ पीस में चले जाओ। टॉवर आफ साइलेन्स में जाने से जो योगी की स्थिति कही गई है कि निन्दा, स्तुति, मान-अपमान सबमें समान...तो ऐसी स्थिति में रहने की शक्ति मिल जाती है। इस स्थिति से बुद्धि की लाइन भी क्लीयर होती और बुद्धि की लाइन क्लीयर होने से निर्णय करने की शक्ति मिल जाती है। जो पास्ट, प्रेजेन्ट, फ्युचर का अनुभव करा लेती, बुद्धि की लाइन क्लीयर हो जाती अथवा जैसे आज भी बाबा ने कहा सर्व साधनों के आकर्षण से भी परे हो जाते।

सबसे ऊँची स्थिति का मजा आता ही तब है जब हम अपने घर उड़कर जाते हैं। इसी को ही उड़ती कला का अभ्यास कहते हैं। तो हम अभी उसी उड़ती कला में उड़ने का अभ्यास करेंगे। साइलेन्स की दुनिया, अपने घर मूलवतन में उड़कर चलेंगे, जहाँ अपने बाबा का भी घर है। साकारी दुनिया से परे और आकारी दुनिया से भी परे निराकारी दुनिया है, अन्त में इसी घर में हम सबको जाना है। तो अब चलो अपने निराकारी दुनिया, अपने मूलवतन घर स्वीट स्वीट साइलेन्स होम में...।
अच्छा - ओम् शान्ति।



14.11.2000

सम्पन्नता की समीपता का अनुभव करना माना फ़रिश्ता बनना

आप सबने मीठे बाबा की मुरली सुनी। मुरली सुनते जरूर सभी का विचार चला होगा कि मीठे बाबा ने हम सबको 6 महीने का समय देकर “सम्पन्न वा सम्पूर्ण” बनने का वायदा कराया है और यह भी युक्ति से कहा कि मई तक “मैं-मैं” से मुक्त बन, कम से कम 75 परसेन्ट तक जीवनमुक्त स्थिति बनाओ। तो मुरली सुनते विचार चला कि सम्पन्नता की स्थिति किसे कहा जाये?

तो बाबा मुझे जवाब देता बच्ची, आप सामने बाबा को नहीं देख रही हो? बाबा को क्या कहती हो? अव्यक्त अर्थात् फरिश्ता। जब बाबा साकार में थे तो लास्ट दिनों में सभी क्या अनुभव करते थे? बाबा से क्या साक्षात्कार होता था? तो मुझे वह लास्ट की घड़ियाँ याद हैं। जब भी बाबा के सामने आते, बात करते, देखते थे तो बाबा बिल्कुल निराला, न्यारा फ़रिश्ता, लाइट-ही-लाइट दिखाई पड़ता था। भले बाबा कुछ कारोबार यहाँ वहाँ करते थे परन्तु जैसे एकदम निमित्त मात्र कर रहे हैं। ऐसे लगता था जैसे बाबा आ रहा है, जा रहा है, चल रहा है परन्तु इस धरनी पर नहीं है, कोई फरिश्ता चल रहा है। ऐसा अनुभव होता था कि लाइट का अव्यक्त वतन हम नीचे साकार में देख रहे हैं। बाबा दृष्टि देते थे तो ऐसे लगता था कि बाबा धरनी पर नहीं है, एकदम ऊँचे वतन से बाबा हमें देख रहा है। और ऐसे लगता जैसे हमारे पाँव भी धरनी पर नहीं है।

तो जब से मुरली सुनी है तो हमें यह जवाब आता कि बाबा अब हम सबको



अपने समान सम्पन्न देखना चाहता है। इसलिए बाबा इशारा कर रहा है आओ बच्चे, तुम्हें मेरे समान अभी फरिश्ता बनना है। फरिश्ता माना जो देह के रिश्तों से परे है। जैसे बाबा सबका प्यारा होते भी कितना न्यारा है। ऐसे हमें भी न्यारा-प्यारा बनना है। संगमयुग पर जो अव्यक्त वतन, सूक्ष्मवतन की स्पेशल गिफ्ट बाबा ने हमारे लिये रखी है, उसका अभी यहाँ ही अनुभव करना है।

तो हम अपने आपसे पूछती हूँ वो दादी, तुम एंजिल कब बनेगी? हम सभी फरिश्ता कब बनेंगे? ऐसी स्थिति का साक्षात्कार हमारे द्वारा कब होगा? समय आने के पहले हमने अपनी ऐसी प्यारी स्थिति निरन्तर बनाई है? बाबा रोज़ कहते बच्चे, अशरीरी भव। यह मन्त्र कितना स्मृति में रहता है! दूसरा बाबा ने कहा बच्चे, जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो। लेकिन बाबा का एक शब्द याद आता “सदा”। हर बात में “सदा”, ऐसे नहीं कभी कभी हो, परन्तु सदा हो। तो क्या सदा मेरी ऐसी जीवनमुक्त स्थिति है? सदा हम अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में समाये हुए रहते हैं? अतीन्द्रिय सुख का मज़ा कहो, आनन्द कहो, उसमें सदा हम लवलीन रहते हैं? तो जवाब आता कि बाबा सदा अपने को खुशियों के झूले में झुलाता है परन्तु मैं बाबा जैसा फ़रिश्ता हो गई हूँ, यह तो नहीं कहेंगे। तो हम आप सबको बाबा का यह इशारा है कि ‘मेरे समान सम्पन्न फ़रिश्ता भव’।

तो फ़रिश्ता स्थिति को सामने रख हरेक अपना-अपना चार्ट देखो और पूछो कि बराबर 75 परसेन्ट मार्क्स पर हैं? बाबा तो हमें चतुराई से 75 परसेन्ट तक पहुँचने को कहता परन्तु हम तो कहती बाबा हमें तो आपके समान सम्पूर्ण बनना है। तो बाबा मुस्कराता। कई बार मेरे सामने बाबा ऐसे खड़ा हो जाता जैसे मैं सामने साकार में बाबा से बातें कर रही हूँ। इतनी प्यारी न्यारी समीपता का अनुभव सदा होता रहता है। सवेरे भी बाबा से रूहरिहान करेगी अथवा जब भी करेगी तो ऐसा ही अनुभव होता और बाबा कहता हँ बच्ची जो ओटे सो अर्जुन। अगर आप बाप समान “वन प्लस वन” (1+1) में रहो तो और क्या चाहिए?

बाबा हम सबको अपने समान सम्पन्न बनाकर साथ ले जाने का इंतजार कर रहा है। तो कितने हम भाग्यशाली हैं, जो बाबा स्वयं कहता मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा



हूँ। मेरे बच्चे - तुम तैयार हो मेरे समान बनो तब मैं स्वर्ग का गेट खोलूँ। तो बाबा का यह आवाज कानों में गूँजता है? ऐसी तैयारी में लगे हुए हो? बाबा गेट खोले और हम बाबा के समान फरिश्ता बन उड़ती कला में उड़ें।

फरिश्ता कभी कहेगा क्या कि मैं फरिश्ता पुरुषार्थी हूँ? वह कभी कहेगा क्या कि यह मेरा संस्कार है? मुझे अभी तक यह बन्धन है? यह मेरा स्वभाव है? नहीं। फरिश्ता अर्थात् सम्पन्न। तो अपने सामने बाबा को देखो और अपनी स्थिति को चेक करो कि हम ऐसी सम्पन्न स्थिति के कितना समीप हैं? कितना न्यारा, कितना प्यारा बने हैं? भल वह अव्यक्त है, हम व्यक्त हैं परन्तु व्यक्त में होते भी बाबा ने ऐसा अव्यक्त रूप बनाके दिखाया। हम व्यक्त में ऐसा कब बनेंगे? कैसे बनेंगे? जब हम इतना ध्यान रखेंगे तब अपनी चेकिंग करके बाबा को अपनी स्थिति का सबूत दे सकेंगे। भल बाबा ने हमें टाइम में बाँधा है परन्तु कहा जाता 'जो कल करना है सो आज करो, जो आज करना है सो अब करो'। सम्पन्नता की समीपता का अनुभव करो, जीवनमुक्त स्थिति में रहो। अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो। न्यारे रहो, प्यारे रहो। और जितना हो सके अपने संस्कारों के विजयी रहो, विजयी बनो। संस्कारों के वश होने की कमजोरी को समाप्त करो।

बाबा ने ओम मण्डली में आते ही हम सबसे वायदा कराया कि बच्ची तुम्हें नष्टोमोहा बनना है। नशा चढ़ाया, नष्टोमोहा बनाया। उसी नशे में हम इतने मस्त थे, जो बाबा को कहना भी नहीं पड़ा कि बच्ची मोह छोड़ो। इस शरीर की सुधबुध भी भूल जाते थे। इतनी मस्ती चढ़ी हुई थी जो हम कहते हमारी मस्ती के सामने क्या वह गोपियां होंगी! हम हैं वह सच्ची गोपियाँ, इतने मौज में रहते थे और इतना उड़ते रहते थे। तो आज उसको 63 साल हो गया। अब तो हमें बाबा आपके समान बनना ही है और कुछ भी बुद्धि में न आवे। सेवा करो, बाबा सेवा कराता सब अच्छा है परन्तु मुझे आपके समान बनना है, दूसरा कुछ भी याद नहीं आवे।

हम को बाबा ने अपनी गोद में बिठाया है, हमें कोई बाह्यमुखता का आवाज भी क्यों आकर्षित करे? हम क्यों बाह्यमुखता को देखें, क्यों हमारा बुद्धियोग बाहर में जाये। हमें तो अन्तरमुख बन बाबा समान बनना है।



तो आपस में मिलकर पुरुषार्थ की ऐसी रेस करो। रूहरिहान करके रोज़ अपनी स्थिति का चार्ट लिखो, नोट करो और एक दूसरे को उसी ही स्थिति के लिये इशारा करते रहो। भल संगठन में कई बातें आयेगी, यह भी बाबा ने इशारा दिया है परन्तु हमें अपनी स्थिति को ऐसा बनाने का दृढ़ संकल्प करना है। समझा!



राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी

स्नेह और शक्ति, सरलता और गम्भीरता की सजीव मूर्त दादी हृदयमोहिनी जी को बाल्यकाल से ही ईश्वरीय स्नेह में लवलीन रहने की विशेष अनुभूति प्राप्त हुई है। आपने ईश्वर पिता से दिव्य दृष्टि का विशेष वरदान पाया है। सदा निश्चित तथा ईश्वरीय रस में सदा मग्न आपका जीवन अनेक दिव्य

विभूतियों से सम्पन्न है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अत्यक्त होने के उपरांत निराकार शिव परमात्मा ने आपके रथ (शरीर) को अपना साकार माध्यम बनाया है। देश-विदेश की रूहानी सेवा पर सदा तत्पर दादी हृदयमोहिनी जी के कुछ एक प्रवचनों का सार यहाँ पर प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें आपने बहुत से गुह्य दिव्य रहस्यों को अपनी मधुर वाणी एवं सरल शब्दों से स्पष्ट किया है। पाठकगण इन्हें पढ़कर पुरुषार्थ की तीव्रता द्वारा अपने लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त कर सकेंगे।

अपने समय, संकल्प और बोल के बचत की स्कीम बनाओ, यही अन्तिम तैयारी है

आप सभी कुमारों का बहुत सुन्दर संगठन हुआ है। विशेष युवा बच्चों को बाबा ने निमन्त्रण दिया है। युवा गवर्मेन्ट को यह प्रूफ दे कि हम इतने युवा कन्स्ट्रक्शन करने वाले हैं, डिस्ट्रक्शन करने वाले नहीं। तो ऐसी सेवा के लिए आप सभी अपने को तैयार कर रहे हैं। इसके लिए करना क्या है? बाबा तो कहते हैं कि आजकल का जो फैशन है - एक नाचना, दूसरा गाना। युवा विशेष इसी में ही रूचि लेते हैं और इसी में सुधरते भी हैं, बिगड़ते भी हैं। तो बाबा कहते हैं मैंने भी आपको यही काम दिया है, आप नाचो और गाओ लेकिन पाँव से नाचना नहीं, वह तो टेम्प्रेरी है। बाबा कहते हैं खुशी में नाचो। पाँव का नाचना तो किसको आयेगा, किसको नहीं, वह भी सदा नाच नहीं सकते हैं। यहाँ बाबा तो कहते कि सदा नाचो, तो यह है मन की खुशी का नाचना। मन में खुशी होगी तो वह अपने एक्शन के द्वारा दिखाई देगी। और खुशी ऐसी चीज है जो मनुष्य को कहाँ से भी मिल नहीं सकती है। ऐसा कोई दुकान होगा जहाँ सदाकाल की खुशी

मिले? बाबा हमको सदाकाल की खुशी का खज़ाना देते हैं। खुशी सदा साथ रहें, ऐसी खुशी बाबा कितनी सहज देता है। लोग तो टेम्प्रेरी खुशी के लिए कितना कुछ खर्चा करने के लिए भी तैयार होते हैं। लेकिन हमको बिना कौड़ी खर्चे के बाबा ने सदाकी खुशी दी है क्योंकि अविनाशी बाबा अविनाशी चीज़ ही देगा। तो बाबा ने इतनी अविनाशी खुशी और अखण्ड, अटल ऐसी खुशी दी है जो हमारे पास कभी दुःख की लहर नहीं आ सकती। जहाँ खुशी होगी, वहाँ दुःख नहीं होगा और जरा



भी दुःख की लहर आई तो खुशी गुम हो जायेगी। तो खुशी कभी भी गुम होनी नहीं चाहिए क्योंकि यह अविनाशी बाबा का, अविनाशी खुशी का वर्सा बार-बार नहीं मिलता है। तो हम अपने आपसे पूछे अगर कोई भी प्रकार की परिस्थिति आती है तो उसमें हमारी खुशी गुम तो नहीं होती है। परिस्थितियाँ तो आयेंगी ही। परिस्थिति माना पेपर इसलिए इसको आप और कुछ नहीं समझो, यह एक हमारे लिए पेपर है और पेपर में जो परीक्षा दे करके अच्छे मार्क्स लेंगे वह आगे क्लास में जायेंगे। और जो पढ़ाई में कच्चे होंगे वह पेपर (परिस्थितियों) से डरेंगे।

ब्रह्मा बाबा के सामने भी पेपर आये और फर्स्ट नम्बर में पास हो गये, यह हमारे सामने प्रैक्टिकल प्रुफ है। पेपर हमको और ही पक्का बनाता है इसलिए इससे कभी घबराना नहीं है। कोई ऐसे हैं जो छोटे से पेपर से भी प्रभावित होते हैं, तो कभी खुशी, कभी गम के वश हो जाते हैं। बाबा तो कहते हैं कि अभी तो शेर आना है, जब चूहे बिल्ली से घबरा गये तो शेर के आगे तो पहले ही सो जायेंगे, फिर क्या होगा ? इसलिए परिस्थिति या कोई बात में अपने को मुँझाना नहीं है क्योंकि बाबा ने हमको ज्ञान और योग के पंख लगा करके उड़ती कला की बाज़ी सिखाई है, तो जिन्हें उड़ना आता है वह हिमालय जितनी बड़ी परिस्थिति को भी सहज पार करेंगे। जब ऊँचे उड़ जायेंगे तो कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो वह हमको छोटी सी लगेगी। इसलिए बाबा कहते कि जब ऐसी कोई बात आये तो उड़ जाओ। तो अभी ऊँचा उड़ना सीखो लेकिन इसके लिए अपने पंखों को शक्तिशाली बनाओ। पंख कहीं ढीले न हों वा कहीं पंख चिपके हुए न हो, नहीं तो परिस्थिति के वश हो जायेंगे। फिर तो पास हो ही नहीं सकेंगे। इसलिए पहले अपने पंखों को चेक करो - ज्ञान और योग की मेरी दोनों ही सबजेक्ट जो हैं वह ठीक हैं ? जब मैं उड़ना चाहूँ तब उड़ सकता हूँ ? या सिर्फ यही समझता हूँ कि मैं उड़ सकता हूँ और समय पर धोखा खाता हूँ ? तो हमारे ज्ञान की तलवार की धार बड़ी तेज होनी चाहिए और इस ज्ञान की तलवार को केवल म्यान में ही रख करके खुश न हो जाओ बल्कि हमेशा अपनी इस तलवार को देखते रहो तो समय पर काम में आ सकेगी।

अन्त में तो यह पाँचों तत्व आँधी, तूफान, आग, पृथ्वी का हिलना यह सब



इकट्ठा काम करेंगे तो सोचो उस समय हमारी कैसी स्थिति होनी चाहिए ? अभी तो फिर भी ठीक है, कहीं कुछ, कहीं कुछ होता है तो एक दो के सहारे से, स्थान के सहयोग से अपने को फिर भी बचा रहे हैं। लेकिन जब पाँच तत्व ही एक साथ काम करेंगे तो अन्त में ऐसा कोई सहारे का स्थान मिलेगा ? नहीं। उस समय तो हमारी यही तैयारी काम आयेगी कि फरिश्ता बनके उड़ जायें, बस। तो उसके लिए अभी से अशरीरी बनने का अभ्यास चाहिए। अशरीरी माना शरीर में होते हुए भी शरीर का भान न हो। शरीर के सम्बन्ध वा पदार्थों के तरफ बार-बार मन का खिंचाव न हो। इसके लिए जितना समय चाहे, जहाँ चाहे उतना समय हमारा मन वहाँ ही रहे, यह अभ्यास चाहिए और यह अभ्यास सारे दिन में भी बीच-बीच में करते रहना चाहिए।

अभी-अभी बॉडी कान्सेस, अभी-अभी सोल कान्सेस और अभी-अभी बाबा की याद। बहुतकाल युद्ध के अभ्यासी होंगे तो चन्द्रवंशी में पहुँचेंगे। फिर पहले युग का सुख तो ले ही नहीं पायेंगे। तो ब्रह्माकुमार बनके क्या किया ? बी.के. बने हैं तो बाबा से पूरा वर्सा लेना चाहिए। अगर योग में मेहनत वा युद्ध है तो कर्मातीत वा अशरीरी स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। फिर अन्त में आप युद्ध में ही जायेंगे क्योंकि अन्तकाल तो किसका पूछकर नहीं आयेगा। अचानक ही सब कुछ होने वाला है। इसलिए बाबा ने कहा एवररेडी रहो। तो एक अचानक और दूसरा एवररेडी - यह दोनों ही बातें सदा याद रहना चाहिए क्योंकि सब अचानक होने वाला है। तो जो एवररेडी रहेंगे वही पास होंगे। कल क्या होगा, कुछ भी हो सकता है, इतना एवररेडी हमको रहना चाहिए। इसके लिए मम्मा का एक फेवरेट स्लोगन था कि हमारी अन्तिम घड़ी कैसी होगी ? हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो तो अन्तिम घड़ी में और कोई बात याद नहीं हो। अभी जा रहे हैं तो कुछ अच्छे कर्म करके जावें, तो अच्छा है। ऐसे ही हम लोगों को एवररेडी रहना चाहिए, कभी भी कुछ भी हो सकता है लेकिन मैं रेडी हूँ ? मैं सेकण्ड में उड़ सकती हूँ या टाइम लगेगा ! बाबा को उलहना देंगे या बाबा से मदद मिलने लिये बाबा को याद करेंगे। लेकिन बाबा ने कहा है कि हिम्मत वाले को मदद मिलेगी। हिम्मत माना योग ठीक हो, विजयी हो। विजयी को मदद नहीं



मिले, यह नहीं हो सकता है।

बाबा ने कहा है जो मेरे को सदा साथी बनाकर रखता है, उसको साथ देने के लिए मैं बँधा हुआ हूँ। तो कई ऐसे हैं जो कोई मतलब या स्वार्थ होगा तो कहेंगे बस बाबा, आपके सिवाए कोई नहीं और जब कोई बात आयेगी तो कहेंगे बाबा आप तो परमधाम में बैठे हो मैं तो यहाँ बैठा हूँ... तो ऐसा नहीं करना है। कई हैं जो मतलब की बात याद रखते हैं और जो अटेन्शन की बात है वह भूल जाते हैं। कई तो फिर बाबा के ही मास्टर बन बाबा का पेपर लेते हैं, तो ऐसे नहीं करना है। अपनी उन्नति के लिए अमृतवेला, क्लास तो नियम अनुसार करना ही है, लेकिन इसके अलावा अपनी जो ड्यूटी है वह करते भी यह अभ्यास का क्रम चलता रहे। ऐसे नहीं कि कर्म किया फिर याद किया तो भी लिंक तो टूट गया। इसलिए काम करते हुए भी कर्म कान्सेस की स्मृति से परे रहकर निरन्तर बाबा के याद की लिंक में ही रहने की आदत डालनी है। जहाँ जितना समय मिले, उतना वहाँ याद का लिंक जारी रखें तब ही हम 8 घण्टा याद कर सकते हैं। इसके लिए याद का 'टाइम-बॉक्स' बनाओ। एक-एक मिनट करके 10 मिनट हो जायेंगे तो हमारी लिंक जुटी रहेगी, इससे खुशी भी सदा होगी।

हर घण्टे में 5 मिनट, 2 मिनट जितना समय निकाल सकते हो, उतना निकालने का अभ्यास करके बाबा को याद करो तो उसका इतना ही प्रभाव फिर बढ़ते-बढ़ते बढ़ता रहेगा। फिर बीच-बीच में चेक भी करो कि हमारा सारे दिन में याद का लिंक जुटा रहा ? निरन्तर याद का अभ्यास बढ़ाओ तो अन्त में इसकी मदद मिलेगी। अगर लिंक टूट गया, फिर जोड़ने में टाइम लगेगा तो एकरस वा कर्मातीत स्थिति का अनुभव चाहते हुए भी नहीं होगा, युद्ध में समय जायेगा, योग नहीं लगेगा। तो आप योगी हो या योद्धे हो ? टाइम तो कभी वापस आता नहीं है। इसलिए अभी व्यर्थ तो छोड़ो परन्तु फालतू संकल्प भी नहीं चलाओ। उसने लड़ाई की और हमने फालतू सोचा तो दोनों ही रांग हुए। फायदा कुछ नहीं। हाँ, कुछ कर सकते हो या आपकी कोई जिम्मेवारी है तो सोचो और उस समय कुछ नहीं बोलो, बाद में ही उन्हें कुछ अपना सोच बताओ तो अच्छा है, नहीं तो आपके सोचने और उन्हें उस समय कुछ



सुनाने से कोई लाभ नहीं निकलेगा। जैसे दवाई देने का भी समय फिक्स होता है, ऐसे समय देख शिक्षा दो। तो क्यों, क्या के फालतू संकल्पों में अपना समय, संकल्प, बोल नहीं गँवाओ। उसको टी.बी. की बीमारी है और आपको बुखार है, हैं तो दोनों ही बीमार ना। तो फालतू सोचने की जिम्मेवारी किसने दिया? अपना ही पूरा पुरुषार्थ नहीं हो रहा है तो दूसरों की बातों को सोचने से फायदा? कुछ नहीं।

और कईयों का बोल भी ऐसा मज़ाकी होता है, फालतू बोल... वह समझते हैं कि हम बहुत खुश हैं लेकिन ऐसे बोल और ऐसी खुशी, फालतू सोच क्या काम के, इस फालतू बोल को भी बचाओ क्योंकि हम अभी अलौकिक हैं। तो हमारा हँसी-मज़ाक भी ज्ञानी तू आत्मा का होना चाहिए। अगर आप ऐसे फालतू को बचाने लगे तो आपको पुरुषार्थ करने के लिए काफी समय मिलेगा। तो चेक करो – आज मैंने फालतू बोल कितने बोले? ऐसे ही बोला, व्यर्थ भी नहीं फालतू भी नहीं बोला.. तो फिर ऐसे ही क्या होता है! इसलिए अपना अटेन्शन रखो, अपने अन्दर का चार्ट रखो क्योंकि बाबा ने कहा है कि आजकल विघ्न भी फालतू के ही आते हैं। और जो ज़्यादा बोलते हैं वह गलती बहुत करते हैं। अपने बोल की एनर्जी को बचाओ तो अपनी बहुत उन्नति कर सकते हो। यही अन्तिम तैयारी करनी है, उसके लिए अपने समय, संकल्प और बोल के बचत की स्कीम बनाओ तो आप अन्तिम घड़ी में पास हो सकते हो। नहीं तो हालतें ऐसी होंगी जो मन फौरन व्यर्थ तरफ चला जायेगा क्योंकि मन को व्यर्थ में जाने की आदत है। इस तरफ यह हो रहा है, उस तरफ वह हो रहा है। तो यह वह देखने और सोचने में ही टाइम चला जायेगा, अशरीरी नहीं हो सकेंगे। अशरीरी होंगे तो बचाव होगा क्योंकि उस समय हालत बहुत दर्दनाक होगी। अपने ही कोई सम्बन्धी चिल्ला रहे हैं, अगर मोहजीत नहीं होंगे तो उसी में ही बुद्धि जायेगी, इसको बचाऊँ उसको यह करूँ। बचाओ जरूर लेकिन बाबा की याद में बचाओ, ऐसे नहीं यह ऐसा क्यों हुआ, यही नहीं सोचते रह जाओ। जब इस प्रकार के कोई भी फालतू संकल्प चलते हैं तो क्यों, क्या, कैसे, कब और कौन - इन पाँच शब्दों में से कोई एक शब्द जरूर होता है। तो माया की तरफ से अगर यह पाँच शब्द आ गये और 'कैं कैं' करने लगे तो कौवे बन गये। और अगर ज्ञान की रीति



से इन्हीं पाँच प्रश्नों के आधार पर मनन करो तो आप नम्बरवन भाषण वाले बन सकते हो। इसीलिए इन पाँच शब्दों को कभी भी निगेटिव अथवा बुरे रूप से नहीं यूज करना। मनन करके अच्छे रूप से यूज करो। इन पाँच शब्दों से कोई भी प्वाइन्ट का मनन कर सकते हो। अभी तो निगेटिव को पॉजीटिव में परिवर्तन करने की शक्ति धारण करनी ही पड़ेगी तभी लास्ट में पास हो सकते हो। तो नम्बरवन बनने का आधार भी यही है कि परिवर्तन की शक्ति को यूज करके अशरीरी बनने का अभ्यास करते रहना।
अच्छा - ओम् शान्ति।



योगी जीवन का आधार - सम्बन्ध और प्राप्ति

मधुबन की भट्टी में आप सबने वर्तमान और भविष्य के लिए शक्तियाँ जमा की, बाबा से मिलन भी मनाया। भिन्न-भिन्न अनुभव भी किये। यहाँ के वातावरण अनुसार सहज योगी जीवन का अनुभव भी किया। हम कोई योग लगाने वाले योगी नहीं हैं लेकिन हम 'योगी-जीवन' वाले हैं, हमारी जीवन ही योग सहित है। जीवन दो घण्टे, चार घण्टे के लिए नहीं होती है, जीवन निरन्तर साथ में है। तो हम योगी जीवन वाले हैं क्योंकि भोगी जीवन तो हमने छोड़ दी। हम कहलाते ही हैं ब्राह्मण, अर्थात् योगी जीवन है और जीवन सदा है, जब तक जिन्दा है तो जीवन है। जीवन में होते हुए हमको योगी जीवन वाले ही बनना है। जैसे आत्मा और शरीर एक दो से अलग हो जायें तो जीवन ही खत्म, ऐसे ही बाबा कहते हैं कि योग और जीवन सदा साथ हो। ऐसे नहीं कि दो-चार घण्टे का योग लगाया। अच्छा, जब योग नहीं था, तो क्या था ? भोगी जीवन से तो हम थक गये, हमारे ६३ जन्म भोगी जीवन में गये। अब भोगी जीवन से थक कर निराश होकर हम लोगों ने योगी-जीवन बनाई, जिसको बाबा दूसरे शब्दों में कहते हैं - 'कर्मयोगी'।

कर्म करते हुए भी हम योगी हैं क्योंकि हम सभी कहते हैं कि बाबा ही हमारा संसार है। तो सभी दिल में सोचें कि क्या बाबा ही हमारा संसार है ? यह हमारा अनुभव है या ऐसे ही कहते हैं - बाबा मेरे साथ है, बाबा ही हमारा सब कुछ है। बाबा की याद तो मेरे मन में, दिल में समाई हुई है। जो हम कहते हैं, उस अनुसार अगर संसार ही मेरा बाबा है, तो हर कर्म करते हुए बाबा भूल सकता है ? क्योंकि संसार ही बाबा है। तो संसार में चलते, कार्य करते जब बाबा ही संसार है तो सिवाए बाबा के और



क्या है? बाबा की याद ही योग है और हमेशा हम कहते हैं - बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरा साथी है। जब साथ है तो साथ वाला साथ में बैठा हो फिर हम भूल कैसे सकते हैं?

जब सर्व सम्बन्ध भी हमारे एक बाबा से ही हैं, जिससे सम्बन्ध होता है और साथ में है, वह भूल नहीं सकता है। तो हम कहते हैं बाबा मेरा सर्व सम्बन्धी है। एक सम्बन्ध भी नहीं कहते हैं, सर्व सम्बन्ध हमारे बाबा के साथ है। वैसे भी देखा जाए तो इस आयु में मनुष्य के विशेष तीन सम्बन्ध होते हैं जो आवश्यक हैं। पिता, शिक्षक और सतगुरु, और भी सम्बन्ध हैं, फ्रैण्ड भी है, माँ भी है... लेकिन विशेष कार्य वा कनेक्शन जो होता है वह विशेष इन तीन से होता है। तो हमारी याद बहुत सहज है। वहाँ लौकिक जीवन में पिता अलग होता है, शिक्षक अलग होता है और सतागुरु तो है ही नहीं, गुरु है लेकिन वह भी अलग होता, अगर इन तीन सम्बन्धों को भी याद करो तो अलग-अलग याद करना पड़ेगा। बाबा ने इतनी सहज याद हमको दी है कि एक में सब याद करो, एक ही को याद करो। उसमें सब आ जायेगा।

याद उसकी आती है जिससे हमारा सम्बन्ध होता है। दूसरी बात - याद उसकी आती है जिससे कोई प्राप्ति होती है। भले हमारा सम्बन्ध नहीं हो लेकिन कोई चीज़ की आपको आवश्यकता है, वह आवश्यकता समय पर कोई पूरी कर दे तो आप उसको स्वतः ही याद करेंगे क्योंकि प्राप्ति है। मानो कोई एक्सीडेन्ट हुआ, कुछ चोट लगी और आपको उस समय किसी ने मदद की तो आपके मुख से क्या निकलता है? जीवन भर आपको नहीं भूलूँगा। तो बाबा ने कितनी प्राप्तियाँ कराई है? जीवन में वास्तव में तो सुख, शान्ति, प्रेम, ज्ञान, आनन्द यही चीज़ें चाहिए। कितना भी कोई प्रयत्न करता है, चाहे मजदूर है, चाहे पद्मपति है लेकिन उन दोनों से पूछो आप इतनी मेहनत क्यों करते हो? तो यही जवाब देंगे कि मैं और मेरा परिवार सुखी रहे, इसके लिए ही यह सब करते हैं। लेकिन बाबा ने हमको सब दे दिया है। ऐसे नहीं सुख दिया तो शान्ति दूसरी जगह लेना है। सर्व प्राप्तियों का आधार हमारा बाबा है। तो प्राप्तियाँ भी हैं, सम्बन्ध भी सब एक से हैं। वैसे अनुभव भी होगा कि जब कोई विघ्न आता है, कोई बात या समस्या आ जाती है तो उस समय मन परेशान हो जाता



है। और उस समय समझो कोई देहधारी आपका साथी फ्रेंड या कोई भी व्यक्ति जिसको आप दिल से चाहते हो, अगर वह आपके सामने नहीं है तो सोचते हो कि अब क्या करें? क्योंकि देहधारी मित्र तो सदा साथ रह भी नहीं सकता। लेकिन बाबा को अपना सच्चा मित्र बना लो और अपने दिल की बातें उससे करो, तो दिल सदा हल्की रहेगी। परेशान नहीं होंगे। बाबा कहते – तुम दिल से कहो “मेरा बाबा” तो मैं उसी समय तुम्हारे सामने हाजिर हो जाऊँगा। अपना बोझ बाबा को दे दो, अपनी जो भी परेशानी है, वह बाबा को दे दो। बाबा इस बात को आप ही जानो। मैं तो न्यारा हूँ, मैं तो छोटा बच्चा हूँ। आप बाप हो, आप मेरे मित्र हो दिल से। सिर्फ कहने मात्र नहीं। वह तो भक्ति में भी गीत गाये - आप ही मेरे मात-पिता, बंधु सखा हो... लेकिन दिल से बाबा कहो और सब बोझ बाबा को दे दो। तो एक सेकेण्ड में आप अनुभव करेंगे कि मेरा बोझ बाबा ने ले लिया और मैं डबल लाइट हो गया।

लेकिन बाबा कहते हैं – कंडीशन है कि मैं सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ, बाप हूँ आया ही हूँ आपके पाप मिटाने के लिए, पावन बनाने के लिए आप अपना बोझ मेरे को दे दो, मैं उठा लूँगा। लेकिन सिर्फ मतलब से याद नहीं करो। कोई बात आई उस समय कहो कि बाबा आप तो बस मेरे हो ... ऐसे बाबा-बाबा करो और बात पूरी हुई तो बाबा परमधाम में और मैं यहाँ... तो यह हुई स्वार्थ की याद। तो बाबा को स्वार्थ प्यारा नहीं, दिल का प्यार चाहिए। अगर दिल का प्यार है तो बाबा दिलाराम है। दिलाराम दिल को आराम नहीं दे, यह हो ही नहीं सकता, असम्भव है। सिर्फ दिल सच्ची होनी चाहिए, बस, बाबा कहता है – मुझे सबसे प्रिय वह है जिसकी दिल साफ और सच्ची है। बस और मुझे कुछ नहीं चाहिए। तो ऐसे बाबा से हमको सब मदद मिल सकती है। हमारा बोझ उठा सकता है जब बोझ बाबा ने उठा लिया तो हम तो बहुत मौज में रहेंगे। कोई समस्या नहीं, कोई फिकर नहीं, बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह हो गये।

प्रवृत्ति में आजकल के जमाने में एक फिक्र जाता है तो दस आते हैं लेकिन वह हमारे लिए नहीं है क्योंकि हमारे पास आया, हमने बाबा को दे दिया, बस। हम बेफिकर बादशाह। दिल से दिया, दिल से बाबा को साथी बनाया तो कोई फिक्र नहीं। आप



कहेंगे शिवबाबा तो है निराकार, हम तो साकार में हैं, लेकिन ब्रह्मा बाबा भी तो हमारे जैसा ही साकार था। अन्तिम जन्म था, आयु भी वानप्रस्थ अवस्था की थी, सब अनुभव था, व्यापार का, प्रवृत्ति का, भक्ति का.... सब अनुभव था। ब्रह्मा बनने के बाद भी कितनी आत्माओं के जीवन की जिम्मेवारी थी, फिर भी बेफिक्र रहे। और यह नया क्रान्तिकारी काम था, उस समय दुनिया के आगे यह एक चैलेंज थी। पवित्रता की बात जो लोगों के लिए असम्भव थी, कहते थे आग और कपूस साथ कैसे रह सकते हैं! साथ रहें और विकारों की आग न लगे यह तो असम्भव है। तो आप सोचो बाबा के सामने कितने विघ्न आये होंगे। फिर भी बाबा बेफिकर बादशाह। ऐसे बाबा कहते बच्चे फालो करो। जब भी ऐसी कोई बात आती है, तो ब्रह्मा बाबा का सैम्पुल सामने देखो।

हमने बाबा को बचपन से देखा है, कभी भी बाबा के चेहरे पर फ़िकर की लहर नहीं देखी। बाबा को दो शब्द बहुत पक्के थे - बच्चे, नथिंग न्यु। दूसरा - यही शब्द बाबा के मुख पर था - बच्ची, जिम्मेवारी शिवबाबा की है, हम तो निमित्त हैं। बाबा बैठा है। कुछ भी ऐसी बात हो जाये तो बाबा कहता - बच्ची, इसमें भी अच्छाई भरी हुई है। मानो कुछ बुरा भी हो गया और हो रहा है लेकिन फिर भी बाबा कहते थे कि जो हो रहा है वो अच्छा, और जो हो गया है वो बहुत अच्छा, और जो होने वाला है वो और ही बहुत-बहुत-बहुत अच्छा। यह बाबा का स्लोगन था। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, निगेटिव को भी पॉजिटिव नज़र से देखते थे। कोई निगेटिव बात हो गई या मन में आ गई, तो कहते हैं कि यह तो बुरा हो गया, शिवबाबा तो भूल गया। उसी को ही सोचने में लग जाते हैं लेकिन ऐसे बुराई में अच्छाई क्या लेनी है? क्यों हुआ यह बुरा, जरूर कोई हमारी ही कमजोरी का कारण होगा।

हमने गलती नहीं की, दूसरे ने की, इसलिए इसमें हमारा तो कोई कसूर नहीं है, इसने ही किया... लेकिन बाबा कहता था अच्छा उसने कसूर किया, आपने नहीं किया, इसलिए आप बहुत सच्चे और अच्छे हो लेकिन उसने समझो क्रोध किया और हमने उसके क्रोध को फील किया। मेरे पास फीलिंग की बीमारी आई। तो वह बीमार हुआ क्रोध में और आप बीमार हुए फीलिंग में, तब तो मन चल रहा है। अन्दर धारण हुआ, तभी तो आपके मन में क्यों, क्या, संकल्प चल रहे हैं। बाबा का स्लोगन क्या



है? 'न दुःख दो, न दुःख लो'। देना तो नहीं है लेकिन दूसरा कोई देता है तो लेना भी नहीं है, तब तो अच्छा-अच्छा हुआ। जो बुरा काम हुआ उसको निगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन कर उससे शिक्षा ले लो। तो आगे से मुझे क्या शिक्षा मिली, आगे से मुझे अपने में क्या करेक्शन करनी है? यह सोचो तो निगेटिव भी पॉजिटिव हो जायेगा। तो ऐसी बाबा की शिक्षा थी, ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी। तो क्या ऐसा हम अपनी लाइफ में प्रैक्टिकली नहीं कर सकते हैं? बेफिक्र बादशाह हम नहीं बन सकते हैं? जैसे बाप ने किया वैसे हम करें, तो हो सकता है। इसीलिए हमारा योग नीचे करने वाली, यह निगेटिव बातें होती हैं।

एक निगेटिव और दूसरा व्यर्थ। छोटी सी बात को बड़ा करना, यह हमारे हाथ में है। बड़ी बात को छोटी करना - यह हमारे हाथ में है। यह नेचर होती है। बड़ी बात को नथिंग न्यू समझो, मुझे भविष्य के लिए क्या करना है, वह सोचो और फुलस्टॉप लगाओ क्योंकि बीती को सोचने से फ़ायदा कुछ नहीं। हो गया उसको सोचने से फ़ायदा क्या है? बदल जायेगा, नहीं। वह तो हो गया। जैसे कहते हैं कि तीर कमान से निकल गया, वह फिर वापस आयेगा क्या? नहीं। इसीलिए योगी जीवन है हमारी, योगी जीवन में बेफिक्र बादशाह है तो योग लगेगा। कोई फिक्र है यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, यह कैसे हुआ... यह फिक्र होगा तो फिर योगी जीवन नहीं होगी। दो घण्टे के योगी, चार घण्टे के योगी और बाकी भोगी हुए और क्या हुए? तो ऐसी हमारी निरन्तर योगी जीवन हो।

विदेही का अर्थ ही है - देह में हैं लेकिन देह की कोई भी आकर्षण, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, कोई भी हमको अपने तरफ नहीं खींचे। अच्छा। ओम् शान्ति।



सिर्फ योग लगाने वाले योगी नहीं लेकिन योगी जीवन वाले बनो

आज सारा दिन आप सभी ने विदेही अवस्था का अनुभव किया। क्योंकि यहाँ चारों ओर योग का वायुमण्डल है। उठते हैं, बैठते हैं कोई भी कर्म कर रहे हैं लेकिन सब योगी आत्मायें हैं। एक योगी वायुमण्डल पर अपना प्रभाव डालता है, यहाँ तो अनेक योगी हैं। वृत्ति से ही वायुमण्डल बनता है तो सभी ने यथाशक्ति यथा पुरुषार्थ अनुभव तो किया ही होगा क्योंकि बाबा हमको शुरू से ही कहते हैं कि आप योगी-जीवन वाले हैं। योग तो भिन्न-भिन्न आत्मायें भी लगाती रहती हैं लेकिन हम सिर्फ योग लगाने वाले नहीं हैं, योगी जीवन वाले हैं। जीवन ही हमारी योगी है, तो जीवन सिर्फ दो घण्टे, चार घण्टे की नहीं है, जीवन निरन्तर है। तो जब योगी जीवन माना निरन्तर योग लगा हुआ ही है।

जब हम कहते हैं कि बाबा ही हमारा संसार है, तो हमारी बुद्धि और कहाँ जायेगी ? और है ही क्या जहाँ बुद्धि जाये। भिन्न-भिन्न प्रकार से कहते हैं भगवान हमारा साथी है, बाबा ही हमारा संसार है, एक बाबा दूसरा न कोई, बाबा

हमारे नयनों में समाया हुआ है... ऐसे भिन्न-भिन्न रूप से हम वर्णन करते हैं। तो जो वर्णन करते हैं, उसका स्वरूप बनें। उसी एक में ही एकाग्र हो जाएं। तो बाबा एक है, दूसरा है ही नहीं तो निरन्तर और स्वतः बुद्धि उस एक में ही जायेगी, इससे योगी जीवन स्वतः बन जायेगी।

विदेही का अर्थ क्या है ? देह में तो हम हैं ही, देह के बिना तो बोल भी नहीं सकते, लेकिन देह में होते हुए विदेही का अर्थ है, देह-भान हमारी बुद्धि को अपने



तरफ खींचें नहीं। देह से कार्य कर रहे हैं लेकिन देह के भान में आकर कार्य नहीं करें। कर्मयोगी बनकर काम करें। वैसे भी आपको साधारण जीवन में अनुभव होगा कि कई बार काम एक कर रहे हैं लेकिन एक दो घण्टे में आप अपने को चेक करो तो बुद्धि कई जगह चक्कर लगाकर आती है। एक ही काम में नहीं होती है, बुद्धि चक्कर लगाकर दूसरा काम भी सोचने का कर रही है और हाथ-पाँव से दूसरा कर्म भी कर रहे हैं। तो विदेही का अर्थ है कि देह में होते, कर्मयोगी बनते कर्म का बन्धन हमको खींचें नहीं। देह का भान हमको विदेही अवस्था से नीचे नहीं ले आये। विदेही माना देह के भान से न्यारे हो एक बाबा की याद में अच्छी तरह से रहना। ऐसे नहीं कभी बाबा याद आया, कभी पाँव का दर्द याद आया, कभी एक दो का देखना याद आया.... कोई भी संकल्प हमको नीचे नहीं ले आवे।

जैसे कोई से बहुत प्यार हो और प्यार में कोई मगन हो। ऐसे बाबा के प्यार में मगन हो जाएं। एक होता है लगन लगाना, दूसरा होता है लगन में मगन रहना तो योग लगाये नहीं, मेहनत नहीं करें लेकिन बाबा के प्यार में एकदम खोये हुए हों। जो बाबा की याद में एकदम खोये हुए होते हैं वह सब कुछ देखते हुए, चलते हुए भी लगन में मगन रहते हैं, उनके सामने कोई विघ्न नहीं आ सकता। लगन में मगन माना उसी तरफ उसकी बुद्धि जाती है, यहाँ वहाँ नहीं जाती है। कर्म करेगा लेकिन बाबा की याद में करेगा, मगन अवस्था में करेगा।

खास बाबा ने वर्तमान समय इसीलिए यह भट्टी का, मौन का प्रोग्राम रखवाया हैं क्योंकि हमारा सिर्फ मुख का मौन नहीं है, हमारा है मन का मौन। मन के मौन का अर्थ ही है मन शान्त रहे, यहाँ वहाँ हलचल में नहीं आवे क्योंकि मन का बोलना है मन की हलचल। तो मन के मौन का अर्थ ही है मन में कोई भी हलचल नहीं हो, अचल हो।

कर्मयोगी का अर्थ ही है कि मन अचल-अडोल रहे। कोई भी बात, संकल्प हमको डगमग न करे, अपनी ऊँची स्थिति से नीचे नहीं ले आवे। मन अचल हो, कोई व्यर्थ संकल्प की चंचलता मन में नहीं आये, इसको कहते हैं अचल-अडोल। जैसे तूफान आता है तो प्रकृति की हलचल है, उसमें जो मजबूत यानि ताकत वाले, बहादुर होते



हैं, वह कितना भी तूफान होगा फिर भी अपने को सेफ रख सकते हैं। और जो कमजोर होगा वह तो हिल जायेगा। इफेक्ट में आ जायेगा। ऐसे कितने भी प्रकार की बातें हमको कोशिश करें चंचल बनाने की, अचल से नीचे लाने की लेकिन मन अचल रहे, वह उसका होगा जो स्वयं ताकत वाला होगा यानि जिनकी आत्मा पॉवरफुल होगी। तो आत्मा को पॉवरफुल बनाने के लिए, अचल अडोल बनाने के लिए बाबा हमको यह चान्स देता है क्योंकि अकेले में और संगठन का जो सहयोग मिलता है उसमें अन्तर होता है। वायुमण्डल का भी प्रभाव बहुत पड़ता है। अभी यहाँ तो वायुमण्डल ही योग का है तो योग का प्रभाव मन को मदद देता है।

हम कहते हैं आज मेरा मन बड़ा खुश है, जब मेरा है तो मैं मालिक हूँ, मालिक जैसे चाहे वैसे उसको चलाये। ऐसे नहीं हम बैठे तो योग में हैं, कोशिश बहुत की लेकिन मन पता नहीं कहाँ-कहाँ चला जाता है। अरे जब मेरा मन है तो मैं जहाँ चाहूँ वहाँ मन को लगाऊँ, न कि मन मेरे को जहाँ लगाने चाहे वहाँ खींचके ले जाये। तो हमारा पाठ है “मैं और मेरे का”। तो मैं मालिक हूँ, उस लक्ष्य से अगर हम स्मृति स्वरूप होकर बैठते हैं तो मन को जहाँ हम चाहें वहाँ लगा सकते हैं। मन एक चित्त हो करके रहे तो विदेही अवस्था सहज बन जाये, उसके लिए सिर्फ हमको बार-बार यह अटेन्शन देना पड़ेगा।

लौकिक जिम्मेवारी जो भी है वह तो सम्भालना ही है। बाबा की श्रीमत है प्रवृत्ति में रहो, सब कुछ करो लेकिन ट्रस्टी होकर करो। ट्रस्टी माना तेरा समझकर सम्भालना, अगर मेरा-मेरापन है तो बाबा उसको कहते हैं ट्रस्टी नहीं, गृहस्थी है।

तो सदा के लिए अपनी विदेही अवस्था बनाने के लिए निरन्तर यह अभ्यास चलता रहे, उसके लिए हमको बार-बार अपने ऊपर अटेन्शन देना पड़े, चेक करना पड़े कि मेरा मन मेरे कन्ट्रोल में है? चेक करने में कितना टाइम लगता है - मैं मन के वश हूँ? या मन मेरे वश में है? अभी मेरे को कहने में भी एक सेकेण्ड से भी कम लगा और सोचने में तो उससे भी कम लगेगा। तो बीच-बीच में काम करते हुए भी अपने काम के हिसाब से नियम बनाना चाहिए। घण्टे के बाद सोचो, दो घण्टे के बाद सोचो, तीन घण्टे के बाद सोचो लेकिन बीच-बीच में सोचो ज़रूर। तो लिंक जुटा



रहेगा, नहीं तो लिंक टूट जाता है। फिर टूटे हुए लिंक को जोड़ने में टाइम लगता है। और घड़ी-घड़ी लिंक टूटने की आदत भी पड़ जाती है। इसलिए बीच में एक सेकेण्ड भी चेकिंग करो और ऐसा कोई नहीं है, जिसको बीच में एक सेकेण्ड भी नहीं मिलता हो। कुछ भी कर रहे हो, चेकिंग तो मन की बात है, कर सकते हो। कोई कहते हैं कि दफ्तर में हम योग में बैठने की कोशिश करते हैं तो लोग कहते हैं, क्या कर रहे हो? काम कर रहे हो आँखें बन्द करके, यह क्या है! हमें तो आँखें भी बन्द नहीं करनी है, यह तो मन की बात है, एक सेकण्ड में चेकिंग करना है। उसमें उन्होंने को क्या पता, वैसे भी काम करते आप मन से पता नहीं कहाँ कहाँ घर में, काम में घूमकर आते हो। तो यह काम की बात है - चेक करना और चेंज करना। सिर्फ चेक भी नहीं करो क्योंकि कई हैं जो पोतामेल लिखते हैं परन्तु रिजल्ट में इतना अच्छा नहीं होता तो दिलशिकस्त हो जाते हैं।

फिर सोचते हैं कि मेरा योग तो लगता नहीं है, अभी दो साल हो गये हैं, ऐसा ही है, हम तो न यहाँ के रहे न वहाँ के रहे, इससे तो वहाँ भोगी ही ठीक है। नहीं। चेक करने का अर्थ है चेंज करना। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त बन जायेंगे। जब अच्छा होगा तो उस दिन बहुत खुश होंगे और थोड़ा खराब होगा तो सोच में पड़ जायेंगे, लेकिन सदा ही चेक के बाद चेंज करने का अभ्यास करते रहो तो वह निरन्तर हो जायेगा। चेन्ज करने की शक्ति हमको बाबा ने दे दी है बस, मन का मैं मालिक हूँ। मालिकपन के स्मृति में आना - यह है चेन्ज करना। चेक करना और चेन्ज करना तो ऐसा अभ्यास अगर हम बीच-बीच में बार-बार करते रहेंगे तो योग पाँवरफुल होता जायेगा क्योंकि लगातार होने से पाँवरफुल होता रहेगा। अगर टूटता-जुटता, टूटता-जुटता है तो वह पाँवरफुल नहीं होता है। और कई तो यही सोचते रहते हैं कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ... आत्मा हूँ तो उसमें टिक जाओ ना। आत्मा क्या है, आत्मा के गुण क्या हैं? आत्मा के ओरीजनल संस्कार क्या हैं? उस स्मृति में रहो माना आत्म-अभिमानि बनो तो ऐसा अभ्यास अटेन्शन में रहने से सहज विदेही बन जायेंगे। ऐसे नहीं कोई बात सामने आई और मैं कोशिश करूँ, नहीं-नहीं मैं विदेही बन जाऊँ, अशरीरी बन जाऊँ... ऐसे ही थोड़ेही विदेही बनेंगे?



अभ्यास चाहिए। तो जितना अभ्यास करते रहेंगे उतना वह नैचुरल रूप आता जायेगा। जैसे देह-भान में आने का बहुत समय का अभ्यास है। देह-भान नैचुरल हो गया है, उसके लिए आप योग लगाते हो क्या? नहीं, मैं देह हूँ, मैं देह हूँ, देही बनने की कोशिश करते हो, तो भी देह में आ जाते हो तो यह नैचुरल हो गया ना। वैसे नैचुरल देही-अभिमानी बनना इसी को ही कहा जाता है पॉवरफुल योग। कई समझते हैं पता नहीं बाबा ज्योतिबिन्दु याद तो किया लेकिन दिखाई नहीं दिया, लाइट माइट कुछ अनुभव नहीं हुआ। तो लाइट दिखाई दे इसको योग नहीं कहा जाता है, बुद्धि द्वारा अनुभव होना, यह देखने से भी बड़ा अनुभव है। आपने देखा - आत्मा ज्योतिबिन्दु है, चमक रही है, सुन्दर है - मेरे भृकुटी के बीच में चमक रही है, बस। अब दिखाई तो एक सेकेण्ड देगी फिर? लेकिन बुद्धि द्वारा अनुभव जो होता है वह सदाकाल का होता है। मैं जो आत्मा बिन्दु हूँ, परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु जो है जैसा है वैसा बुद्धि द्वारा अनुभव करना, वह देखने से भी ऊँचा है। इसलिए बीच-बीच में यह अभ्यास करते रहो। चलते-फिरते मैं शरीर नहीं हूँ लेकिन मैं आत्मा शरीर को चला रही हूँ। मैं आत्मा इस शरीर द्वारा यह कर्म कराने वाली हूँ। आत्मा करावनहार और शरीर करनहार है। जैसे हम कहते हैं ना बाबा हमारा करावनहार है और हम करनहार हैं ऐसे आत्मा भी करावनहार है और शरीर करनहार है। यह विस्मृति हो गई है, शरीर और आत्मा को हमने मिला दिया है। अभी अभ्यास करो मैं अलग हूँ और कराने वाली हूँ - यह स्मृति आना ही ज्ञान है। और जब तक यह ज्ञान नहीं होगा तो ज्ञान के बिना योग नहीं लगता है। पहले अपने को आत्मा ही निश्चय नहीं किया है तो परमात्मा से योग कहाँ से लगेगा? आत्मा का ही तो कनेक्शन परमात्मा से है ना। शरीर का कनेक्शन शरीर के सम्बन्धों से है, आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से है तो पहले आत्म-अभिमानी ही नहीं बने तो परमात्म-अभिमानी कैसे बनेंगे। पहला फाउण्डेशन है - आत्म-अभिमानी बनो। आत्मा मालिक बनकर शरीर से कर्म कराओ फिर परमात्मा पिता की याद रहेगी। आत्मा का कनेक्शन किससे है? आत्मा का कोई माँ-बाप, चाचा-काका है क्या! देह के सम्बन्ध हैं, पदार्थ हैं जो खींचते हैं, वह देह के लिए हैं ना। आत्मा को तो कोई पदार्थ की जरूरत नहीं तो देह-भान में आने से बाबा की याद नहीं आ सकती है।



आत्म-अभिमानी बनने से सिवाए बाप के और किसकी याद आ नहीं सकती है। इसलिए हर मुरली में कितने बार बाबा के यह शब्द आते हैं – ‘बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो’।

तो पहले आत्म-अभिमानी का फाउण्डेशन पक्का है ? है बॉडी कॉन्सेस और कोशिश कर रहे हैं बाबा की याद में बैठें। शरीर का बाबा वह है ही नहीं तो याद कैसे आयेगा ? आत्मा का ही कनेक्शन है इसलिए पहले जिसका यह आत्म-अभिमानी बनने का अभ्यास पक्का होगा, उसका योग स्वतः सहज लगेगा। तो यह चेकिंग करो और चेन्ज करो। चेन्ज करते-करते फिर निरन्तर हो जायेगा तो इसको कहा जाता है— योगी-जीवन। दो घण्टे के योगी नहीं, समझो आपने दो घण्टा योग लगा लिया और बाकी २२ घण्टे का क्या हुआ ? शरीर (देहभान) के वश ही हो गये ना ! इसीलिए बाबा कहते हैं योगी जीवन बनाओ। योग हमारा नैचरल हो जाये।
अच्छा - ओम् शान्ति।



विशेष अटेन्शन देकर संकल्प शक्ति जमा करो और कार्य में लगाओ

आज आप सबने मन का मौन और मुख का मौन, डबल मौन रखा। मन के मौन का अर्थ ही है, जैसे मुख का मौन रखते हैं तो बोलना कम होता है कम बोलने से साइलेन्स में रहने से अन्तर्मुख हो जाते हैं। अन्तर्मुख होने से बहुत ही कुछ अनुभवों का खज़ाना मिलता है इसलिए इसको कहते हैं – मौन भट्टी। तो भट्टी शब्द का अर्थ ही है जहाँ आग निकलती है। भट्टी में आग निकलती है तो यहाँ भी मौन की भट्टी में आप बैठे तो बाबा के लगन की अग्नि का अनुभव किया, और इस लगन की अग्नि में हमारी जो भी कमी-कमजोरियाँ हैं, वह परिवर्तन हो जाती हैं। तो यह भट्टी बहुत ज़रूरी है क्योंकि हम सभी चाहते हैं कि हम बाबा के समान सम्पूर्ण बन जायें। तो सम्पूर्ण बनने के लिए जो भी हमारे अन्दर कमी है, ६३ जन्म के संस्कार जो कुछ भी रहे हुए हैं, उन्हें भस्म तो करना ही है। चाहे भोग करके खत्म करो, चाहे योग से खत्म करो। तो भट्टी का अर्थ ही है लगन में मगन होना। एक बाबा दूसरा न कोई। सारा दिन बाबा के साथ ही

रहना, खाना, पीना जैसे कोई निमन्त्रण देता है कि आज आप हमारे पास ही शाम तक या रात तक रहना। ऐसे आज के दिन भी विशेष बापदादा का निमन्त्रण है कि सूक्ष्मवतन में मेरे साथ विशेष अनुभव करो, तो आप सबने आज बाबा के साथ बहुत ही दिल की बातें की होंगी क्योंकि दिल की कई ऐसी बातें होती हैं जो और किसी को सुनाने में नहीं आती और अगर हम सुनाते भी हैं तो आपने सुना होगा कि एक का एक ज़रूर होता है। चाहे सभी को नहीं भी सुनावे, लेकिन एक का एक होता



है वहाँ निकल जाता है इसीलिए एक ही बाबा है जिसको आप कुछ भी सुनाओ। जो है जैसा है बुरा है, अच्छा है जो भी है, उसे सुनाओ। वह बाबा की दिल में रहता है और कहाँ नहीं जाता है। इसलिए आप सभी ने दिलाराम बाबा से आज दिल की बातें की होंगी, मिलन मनाया होगा, बाबा से स्पेशल शक्ति ली होगी। जैसे कोई निमन्त्रण देकर खास बुलाते हैं, उसमें भी कोई प्यारा सम्बन्ध होता है तो कुछ गिफ्ट भी देते हैं, बहुत अच्छी तरह खातिरी भी करते हैं। तो आज बाबा ने विशेष इस मन और मुख के मौन की भट्टी के दिन आपको शक्तियों की गिफ्ट भी दी होगी और साथ-साथ बाबा ने खातिरी भी की होगी। बाबा खातिरी क्या करेगा? बाबा यही खातिरी करेगा जो आपको खुशी की अनुभूति करायेगा, प्यार और सुख-शान्ति के झूले में झुलाता है यानि अनुभव कराता है। फरिश्ते रूप में बाबा एक-एक को अनुभव करा सकता है और बाबा जब अव्यक्त हुए, तो बाबा ने कहा तुम लोग क्यों सोचते हो कि ब्रह्मा बाबा चला गया। मैंने तो सिर्फ वस्त्र और स्थान बदली किया, स्थूलवतन के बजाए सूक्ष्मवतन में बैठा हूँ और साकार शरीर के बजाए मैंने अव्यक्त फरिश्ता शरीर (वस्त्र) धारण किया है। अब उस अव्यक्त रूप में बाबा के सेवा की स्पीड कितनी बढ़ गयी है।

ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद ही विदेश की सेवा शुरू हुई है। प्रैक्टिकल सेवा तो अभी ही हो रही है। ब्रह्मा बाबा देह में जब थे तो एक दिन में कहाँ-कहाँ जा सकते थे, कितनों से मिल सकते थे? अभी भी देखो आप चाहते हैं बाबा से पर्सनल स्टेज पर आकर मिलें, दो शब्द बाबा हमको बोल देवे। अभी बाबा चाहता है और आप भी चाहते हो लेकिन हो सकता है? हो ही नहीं सकता है क्योंकि फिर भी अव्यक्त बाबा साकार में आता है ना, तो साकार शरीर के बन्धन तो अपने हैं और अव्यक्त शरीर के कोई बन्धन नहीं हैं, वह फरिश्ता है, इसलिए वह कहाँ भी पहुँच सकता है। बाबा कहते हैं यहाँ टाइम नहीं मिलता है तो वतन में आओ, घण्टों बात करो कोई मना नहीं करेगा। आप भी अव्यक्त फरिश्ता होकर सूक्ष्मवतन में आओ, अव्यक्त रूप से बाबा से रूहरिहान करो, आपको कोई रोकेगा नहीं। अभी दरवाजा बन्द है, अभी आ नहीं सकते हो या जा नहीं सकते हो, जितना चाहे उतना



समय मिलो। और एक ही समय पर कई बातें कर सकते हो, आपको फीलिंग ऐसे आयेगी जैसे पर्सनल मेरा बाबा है, भले औरों से भी बाबा मिल रहा होगा। लेकिन आपको ऐसे महसूसता आयेगी बस बाबा तो मेरे साथ ही है। बाबा कहते हैं मैं अव्यक्त हो गया हूँ लेकिन मैं अभी शरीर के बन्धन से स्वतंत्र हो गया हूँ। सवेरे से देखो, शरीर के बन्धन में, टाइम के बंधन में बँधना तो पड़ता है ना। बाबा अव्यक्त वतन में जाने से इससे मुक्त हो गया और अभी बाबा कितनी फास्ट सेवा कर और करा रहा है क्योंकि वह तो फरिश्ता रूप से हमारी आत्मा और मन, बुद्धि को टच करेगा लेकिन साकार में जो कामकाज होना है, वह फिर हम लोगों से ही कराता है क्योंकि भविष्य तो हमको बनाना है बाबा ने अपना बना लिया। बाबा का भविष्य तो निश्चित है। हम लोगों का भविष्य बनाने के लिए बाबा कितना पुरुषार्थ करा रहा है। कितनी सेवा के चान्स दे रहा है और अभी तो बाबा ने बहुत सहज साधन बता दिया है, जिसमें कोई भी बाबा को बहाना नहीं दे सकता है कि मेरे को सेवा का चान्स मिला ही नहीं, मैंने तो सेवा की नहीं, मुझे कोई ने कराई नहीं, मैं कर नहीं सकी, मैं बीमार थी तो बाबा ने 'मन्सा सेवा' का साधन ऐसा बच्चों को दिया है, जो लास्ट मृत्यु तक भी अगर उसका दिमाग ठीक है तो मृत्यु के समय तक भी यह सेवा कर सकता है, इसीलिए कोई उल्हना नहीं दे सकता। कोई कहे हम साठ साल के हो गये, इतने सारे प्रवृत्ति के बन्धन में बँध गये फिर बाबा क्यों आया, पहले ही आता ना, ऐसे कई उल्हना देते हैं।

लेकिन बाबा ने अपना यह भी उल्हना उतार दिया, अच्छा ठीक है मैं अभी आया हूँ, आप अभी आये हो तो अभी भी चान्स है, टू लेट का बोर्ड तो लगा ही नहीं है। लेट का लगा है लेकिन टू लेट का बोर्ड लगा ही नहीं, इसलिए अभी भी लास्ट सो फास्ट हो सकता है। और फास्ट सो फर्स्ट हो सकता है और बाबा के महावाक्य हैं तो ज़रूर कोई होना ही है। अभी वह कौन है, वह हम भी देखेंगे, आप भी देखेंगे लेकिन चान्स तो है। चान्स खत्म तो नहीं हुआ है। इसलिए कोई भी बच्चा उल्हना नहीं दे सकता है कि बाबा मैं आया ही देरी से हूँ। बाबा मुझे बीमारी है ना, मैं बिजनेस में बहुत बिजी था तब आप आये। पहले से आते तो मैं यह करता ही नहीं। लेकिन



कोई भी बहाना बाबा नहीं सुनेगा, इसलिए हमको अपना पुरुषार्थ आप करना पड़े।

अभी बाबा ने संकल्प शक्ति के ऊपर कितना स्पष्ट किया है और देखा जाए तो आधार तो सारा संकल्प के ऊपर है। चाहे हम बोलते हैं, चाहे हम कर्मणा करते हैं लेकिन पहले तो संकल्प ही चलता है ना। जैसा संकल्प हमारा चलता है वैसे मुख से बोल भी निकलते हैं। जैसी वृत्ति, दृष्टि होती है वैसे ही कर्म होता है। इसीलिए बाबा कहते हैं कि संकल्प शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है और अन्त में यह संकल्प शक्ति ही हमारे काम आयेगी। यह साधन तो न थे, न रहेंगे। जब से स्थापना हुई है तब से ही यह सब साधन निकले हैं।

यह सब साधन सेवा के लिए हैं, आगे बढ़ने के लिए निकले हैं लेकिन यह सदा थोड़ेही रहेंगे। तो अन्त में भी हमको संकल्प शक्ति ही काम में आयेगी। टचिंग होनी चाहिए ना, यह टेलीफोन, फैक्स, यह कम्प्यूटर, ईमेल आदि क्या-क्या निकला है, यह सब हमारे सन्देश पहुँचाने के लिए निकले हैं। यह सब साधन हमारे लिए ही निकले हैं, परन्तु साधना के बिना साधन बेकार हैं। साधन हम यूज करते हैं लेकिन साधन के वश होना और साधन को अपना निमित्त कार्य अर्थ यूज करना, फिर न्यारे हो जाना। वश नहीं होना। इसलिए बाबा ने आजकल संकल्प शक्ति पर बहुत अटेन्शन दिलाया है। जितना मन और बुद्धि, आत्मा की लाइन क्लीयर होगी तो आपको ऐसे ही टचिंग होगी जैसे आपको कुछ कह रहा है। जैसे अभी हम फोन में बात करते हैं तो जब लाइन क्लीयर होती तभी फोन मिलता है, अगर लाइन क्लीयर नहीं होती है तो एक घण्टा आप हेलो हेलो करते रहो, कुछ आवाज़ ही नहीं आयेगा। और करेन्ट से ही लाइन क्लीयर होती है। तो पहले तो यह होना चाहिए कि संकल्प शक्ति जो हमारी है, जिससे हमारी मन्सा सेवा अभी हो सकती है और लास्ट में भी यह मन्सा संकल्प ही पास विद ऑनर बनने में मदद करेगा।

तो संकल्प शक्ति अगर हमारी नाचती रहती है - कभी यहाँ, कभी वहाँ, फालतू भी जाती है। हमको याद है एक चित्र हमारा बना हुआ था। वृक्ष के नीचे एक योगी बैठा है, योग लगा रहा है और वृक्ष के ऊपर बन्दर बैठे हैं वह इधर से उधर, उधर से इधर जम्प दे रहे हैं। तो उस चित्र में दिखाया हुआ है कि मन भी ऐसे बन्दर के



समान एक डाली से दूसरी डाली, दूसरी से तीसरी डाली ऐसे घूमता रहता है, जम्प लगाता है। तो संकल्प शक्ति एक सेकण्ड में कहाँ तक पहुँच सकती है, यह तो सबको अनुभव है, वैसे आप कहाँ नहीं भी पहुँच सको लेकिन संकल्प से तो पहुँच ही सकते हो। तो बाबा ने हम सबको यही अटेन्शन दिलवाया कि संकल्प शक्ति पर अटेन्शन रखो। संकल्प शक्ति सभी के पास है, लेकिन हम यूज कहाँ करते हैं। अगर शुभ तरफ यूज करते हैं तो वह जमा होती है और व्यर्थ में करते हैं, तो न अच्छा न बुरा और बुरे संकल्प करते हैं तो शक्ति गँवाते हैं। संकल्प एक शक्ति है। जैसे स्थूल धन शक्ति है। धन अगर अच्छी तरह से किसको यूज करना आता है तो मौज मनाता है और धन अगर ऐसे ही बैंक में पड़ा है, और वह ऐसे ही मर जाता है तो फालतू। और गँवाता है तो नुकसान होता है, ऐसे ही यह संकल्प शक्ति सबसे बड़ा खज़ाना है इससे हम जो चाहें अपना भविष्य बना सकते हैं, जमा कर सकते हैं। और संकल्प शक्ति के ऊपर अगर आपका कन्ट्रोल है तो समझो सब शक्तियों के ऊपर कण्ट्रोल है।

तो मूल आधार संकल्प है। बाबा कहते हैं उसको जमा करो। स्थूल धन को जमा करने की कितनी कोशिश करते हैं। स्थूल धन को बचाने का हमको ध्यान रहता है लेकिन वह भी संकल्प अगर मेरा ठीक है तो कमा सकते हैं। अगर संकल्प शक्ति हमारी नीचे-ऊपर है तो कमाई भी नहीं कर सकते हैं। कोई लखपति और कोई कखपति बन जाता है, कारण क्या होता है। संकल्प शक्ति कमजोर होने के कारण निर्णय शक्ति नहीं, और निर्णय शक्ति न होने के कारण हाँ के बजाए ना किया तो गया। इसीलिए यह बाबा रोज़ कहता है अपना चार्ट ज़रूर देखो। लेकिन सारा दिन अपनी मस्ती में मस्त होंगे, कोई भी मस्ती बिजनेस की या बातें करने की, जो भी मस्ती होगी उसी मस्ती में मस्त होंगे तो फिर टाइम नहीं मिलता है। फिर तो चेकिंग ही नहीं होती। तो रात को सोचेंगे क्या, सोचेंगे भी तो समझ नहीं सकेंगे कि मैंने किया ही क्या लेकिन हमारी पुरुषार्थी लाइफ है। तो इतना अटेन्शन रहता ही है ना। समझ में तो आता है कि हम राँग कर रहे हैं, अगर हम अपनी चेकिंग इतनी भी नहीं करते हैं तो बाकी पुरुषार्थी किस चीज़ के। तो अपनी चेकिंग आपेही जितनी करेंगे, दूसरा



कोई कहेगा तो उतना कुछ नहीं होता। अपने को चेक करना, यही तो हमारी जीवन है, सारा समय का जमा करने का समय तो अभी है।

सतयुग में कमाई करेंगे क्या ? वह तो प्रालब्ध भोगेंगे, जो बनाई है। कमाई का समय, जमा का समय तो अभी है। यदि अभी हम जमा नहीं करेंगे तो कब करेंगे ? इसीलिए बाबा कहता है संकल्प शक्ति के ऊपर बहुत अटेन्शन रखो और आप सिर्फ एक घण्टा ही चेक करो तो मालूम पड़ेगा कि फालतू समय और संकल्प कितना जाता है, जिसमें हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। इसीलिए बाबा कहता है कि अपने संकल्प शक्ति के ऊपर अटेन्शन रखो और जमा करो। हाँ, काम में लगाओ या जमा करो। वैसे स्थूल धन के लिए भी कहते हैं कि पहनकर, खा-पीकर अच्छा मौज मनाओ। बाकी ऐसे फालतू गँवाने से फायदा ? बाबा का हमारे ऊपर बहुत प्यार है इसलिए बाबा इस पर अटेन्शन दिलवा रहे हैं। तो हमारी बुद्धि अभी एकदम क्लीन और क्लीयर होनी चाहिए, जो बाबा का संकल्प हमको ऐसे ही टच हो, जैसे कि यही तो मैं भी सोच रहा था। अभी उड़ीसा में जो विनाशकारी तूफान आया था, उसमें हमारी बहनों का अनुभव सुनो, किसी को कुछ भी नहीं हुआ है। यह बाबा की मदद है लेकिन उस समय जब पेपर होगा तो बाबा मदद नहीं देगा। पेपर हाल में कोई टीचर मदद नहीं करता है। तो अन्त समय में जब हमारा पेपर होगा उस समय बाबा मदद नहीं देगा। देखेगा, कि बच्चों ने क्या-क्या मेहनत की है और मेहनत का फल ले रहे हैं। लेकिन पुरुषार्थ तो हमको अभी करना है। तो जो कमाई हम अभी इक्ठ्ठा करेंगे वह सतयुग, त्रेतायुग में काम आयेगी। उसी अनुसार तो हम प्रालब्ध भोगेंगे।

लक्ष्मी-नारायण बनने में तो सब हाथ उठाते हैं, राम सीता में तो कोई नहीं उठाता। अगर लक्ष्मी नारायण बनेंगे तो जरूर पहले जन्म में आयेगे। लक्ष्मी-नारायण जो बनने हैं वह तो पहले से ही प्रसिद्ध हैं लेकिन लक्ष्मी नारायण के रॉयल फैमिली में तो आ सकते हैं क्योंकि वह भी तो समझेंगे ना कि हमारा राज्य है। तख्त पर तो दो ही बैठेंगे, 4-6 तो बैठेंगे नहीं। विश्व-महाराजन् की बात है। तो जब लक्ष्मी-नारायण बनने में हाथ उठाते हैं तो इतना जमा भी तो चाहिए।

कई कहते हैं समय हमको सिखा देगा और तो कुछ समझ में नहीं आता तो बाबा



ने बहुत मुस्कराते कहा कि क्या मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों का शिक्षक समय बनेगा ! सर्वशक्तिवान बाप टीचर है या समय टीचर है ? अगर समय सिखायेगा तो हमारा टीचर कौन हुआ ? समय । समय को तो हम रचना कहते हैं, क्या वही हमारा टीचर बनेगा । हम तो समय के पहले तैयार हों या समय आने पर हम तैयार होंगे ? इसीलिए बाबा ने कुछ साल पहले हमको याद दिलाया था एवररेडी । ऐसे नहीं इन्तजार करो कि समय आयेगा तो यह हो जायेगा और दूसरी बात बाबा ने यह भी राज सुनाया था, अच्छा समय आया और आप तैयार हुए ठीक है चलो । लेकिन बहुतकाल तो नहीं हुआ ना ! और बहुतकाल का अभ्यास काम में आता है, ऐसे नहीं समझो विनाश के समय ऐसे होगा उस समय वैराग्य तो आ ही जायेगा । लेकिन जब कुछ है ही नहीं फिर वैराग्य आया तो वह वैराग्य क्या हुआ, वह तो मजबूरी हुई । लेकिन समय के पहले हम एवररेडी रहें, यही तो पुरुषार्थ है ना । अन्त समय पुरुषार्थ किया तो उससे क्या फायदा ? बहुतकाल का भी हिसाब है, और समय हमारा शिक्षक नहीं है, हमारा शिक्षक सर्वशक्तिवान है हम सब फखुर से कहते हैं । हमारा एक ही बाप है, शिक्षक भी है, गुरु भी है । यह थोड़ेही कहते हैं कि शिक्षक हमारा समय है । जब बाप ही हमारा टीचर है तो टीचर द्वारा ही तो अभी शिक्षा लेनी है ना । अभी भी देखो बहुत समय का कितना फ़र्क पड़ता है, कोशिश करते हैं बस, एक घण्टा बैठे हैं कोई संकल्प नहीं आवे । देह का भान खींचे नहीं, न चाहते हुए भी बीच-बीच में इस भान में आने का कारण है - बहुतकाल का अभ्यास है । जो न चाहते भी खींच लेता है, युद्ध भी करते हैं । समझेंगे मैं देही-अभिमानी हो बैठा हूँ, फिर भी वही खींचता है । तो यह भी अभ्यास नहीं होगा तो कहाँ एक सेकण्ड भी हम फेल हो गये तो खत्म । अन्त मते सो गते । इसीलिए जो बाबा अटेन्शन खिंचवाता है, उन्हें हम प्रैक्टिकल में यूज करें, हम बाबा की बातें अभ्यास में लायें ।

जितने आगे बढ़ते जाते हैं उतना अलबेलापन भी होशियारी से आता है, फिर वह अलबेलापन हमको नीचे ले आता है । स्थिति में स्थित होने नहीं देता है इसलिए बाबा बार-बार कहता है अटेन्शन प्लीज़ । और अटेन्शन की भी आदत पड़ जाती है । जैसे देखो शरीर के जो भी हमारे नियम हैं - उठना है, बैठना है, सोना है..... यह



एक नैचरल आदत पड़ गयी है, तो नैचरल हो गये हैं। टाइम पर हमको याद आता है, भले हम बिजी भी होंगे तो भी टाइम होगा खाने का, सोने का... तो अटेन्शन तो जाता है कि अब यह टाइम हो गया है - खाने या सोने का। जैसे यह दिनचर्या नैचरल हो गयी है, ऐसे आत्मा की दिनचर्या अटेन्शन रखने की, यह भी तो नैचरल हो जानी है ना। हो भी जायेगी कोई बड़ी बात नहीं है, और थोड़ा सिरदर्द होता है, तो सिर दर्द कोई दवाई भुलाता नहीं। टाइम हो गया तो दवाई लेते रहते हैं। और थोड़ा सिरदर्द कम हो जायेगा फिर दवाई भूल जायेगी। तो अभी आत्मा सम्पूर्ण हुई ही कहाँ है, तो अटेन्शन तो जाना चाहिए। तो यही बाबा की शिक्षाएँ हैं, हम सबको सम्पूर्ण बनकर बाबा के साथ घर जाना ही है। बाबा ने तो कहा है कि मुझे तो ले ही जाना है, चाहे कुछ भी करो इतनी चैलेंज तो बाबा ने दे दी है, चाहे सजायें खाकर जाओ या प्यार से जाओ लेकिन जाना है। तो जब जाना ही है तो जबरदस्ती क्यों जायें। प्यार से बाबा की अंगुली पकड़कर जायें, जाना तो है ही तो क्यों नहीं रॉयल्टी से जायें, तो यही बाबा की बातें ध्यान में रखते हुए सभी आगे बढ़ते चलो।
अच्छा - ओम् शान्ति।



प्राप्तियों की स्मृति से प्यार इमर्ज होता है, जहाँ प्यार है वहाँ याद की मेहनत नहीं

हम सबका लक्ष्य अथवा अपने प्रति शुभ आशा है कि हम सब बाबा के समान बनें। जो बाबा हम बच्चों से चाहता है वह हम करके दिखायें। यह लक्ष्य तो सबका बहुत अच्छा है और सभी का एक ही लक्ष्य है। लक्ष्य में अन्तर नहीं है लेकिन लक्ष्य के साथ जो प्रैक्टिकल लाइफ में धारणायें कहो, लक्षण कहो उसमें अन्तर हो जाता है। इसलिए बाबा सभी बच्चों को नम्बरवार यादप्यार देता है। जब पढ़ाने वाला भी एक है, और पढ़ने का क्लास भी एक ही है। एक ही हमारा शिक्षक है, चाहे सेन्टर्स अलग-अलग हैं लेकिन वह भी हमको वही पढ़ाते हैं जो बाबा पढ़ाता है, कोई अपना तो नहीं पढ़ाते हैं।

तो पढ़ाने वाला और पढ़ाई एक होते भी नम्बरवार होने का कारण है - प्रैक्टिकल जीवन में लक्षणों की धारणा। क्योंकि सुनने के तो अभ्यासी तो हम सब द्वापर से हैं। द्वापर में काम क्या था, एक भक्ति में भटकना और सुनना। अभी बाबा कहते हैं - ब्राह्मण जीवन में सुनने का अर्थ है बनना। सिर्फ सुनना नहीं है सुनते जाओ और बनते जाओ। सिर्फ सुनने से यह फायदा ज़रूर है कि

उस समय टाइम अच्छा पास हो जाता है या यहाँ वहाँ के बजाए, कुछ ना कुछ सुनने से बुद्धि में कुछ बैठ भी जाता है, संग अच्छा हो जाता है। परन्तु ब्राह्मण जीवन में बाबा का कहना है कि यहाँ सिर्फ सुनना नहीं है। यहाँ सुनना माना बनना। मूल बात बाबा कहते हैं कि ज्ञान कोई मुशिकल नहीं है, ज्ञान का सार एक ही स्लोगन में आता है - हम उसके हो गये और वह हमारा हो गया। इसी बात के लिए ही हम सब पुरुषार्थ करते रहते हैं। और जो जिसका बन जाता है उसकी याद लानी नहीं पड़ती



है, स्वतः ही आती है लेकिन बनना माना ही है – दिल में उसको बिठाना।

अगर दिल में बाबा को बिठा दिया तो और सब निकल जायेंगे, एक बाबा ही रहेगा। और बाबा के साथ दूसरे भी अगर बैठे हुए हैं तो बाबा नहीं बैठता है। बाबा खिसक जायेगा, दूसरे ही याद आयेंगे इसलिए बाबा कहते हैं - पुरुषार्थ का सबसे सहज तरीका यह है कि बस, बाबा से दिल का जिगरी प्यार हो। फिर देखो बिना मेहनत के आप सफलता को पाते रहेंगे। और बाबा से जितना आपका जिगरी प्यार होगा उतना आपको योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन योग लगा ही हुआ होगा। और हरेक को प्यार करना आता ही है। किसी ना किसी से प्यार तो होता ही रहता है। भले बदली होता जाता है लेकिन प्यार तो होता ही है। तो दिल से प्यार अगर बाबा से है तो न चाहते भी वह याद आता है। और जिससे प्यार होता है प्यार की निशानी होती है दिल से उसके ऊपर कुर्बान जाना। कुर्बान जाने का मतलब यह है कि जो वह कहता है, जो वह चाहता है जैसे वह चलता है वैसे हम स्वतः ही चलें। उसकी बात न मानना - यह हो ही नहीं सकता। जिससे गहरा प्यार होता है, उसकी बात आप स्वतः ही मानते हैं। तो बाबा से अगर हमारा प्यार है तो जो बाबा बात कहते हैं वह मानेंगे ज़रूर। वह करेंगे ज़रूर। और हम कहते हैं कि एक बाबा ही मेरा संसार है, दूसरा कोई है ही नहीं। तो जब संसार ही बाबा है तो आप सोचो क्या याद आता है! वैसे भी संसार में जो भी व्यक्ति है, वस्तु है वही तो याद आते हैं। व्यक्ति माना सम्बन्ध, तो हमारे सर्व सम्बन्ध भी एक बाबा से हैं और वस्तु यानी चीज़ों (पदार्थों, वैभवों) के तरफ अगर हमारी बुद्धि जाती भी है तो उससे प्राप्ति होती है इसलिए जाती है। कोई भी चीज़ हमें बहुत प्यारी लगती है, क्यों? उससे प्राप्ति है। तो वस्तुओं या पदार्थों से प्यार है माना उससे हमको प्राप्ति है। तो प्राप्ति के कारण हमको वह चीज़ याद आती है। बाबा से हमारी प्राप्ति क्या नहीं है? जो भी चीज़ों से हमको प्राप्ति होती है, वह क्या प्राप्ति होती है? सुख मिलता है, मन में इच्छा होती है वह शान्त हो जाती है और साथ-साथ थोड़े टाइम के लिए आनन्द की प्राप्ति होती है। तो क्या यह सब प्राप्तियां बाबा से हमें होती हैं? बाबा का वर्सा ही क्या है - सुख, शान्ति, आनन्द, ज्ञान और प्रेम यह प्राप्त होना, यही बाबा से प्राप्ति है। तो बाबा ही हमारा संसार है अर्थात् बाबा से ही हमारे सर्व सम्बन्ध हैं और बाबा से ही हमारी



प्राप्तियाँ हैं।

बाबा मिला तो हमारी जीवन बदल गयी। दुःखी से सुखी हो गये। अशान्ति से शान्ति आ गयी तो बाबा का प्यार ऐसी चीज़ है जो दुनिया को भुला देता है। किसके दिल का गहरा प्यार होता है, उसको दुनिया में कुछ भी सहन करना पड़े, आपोजिशन हो कुछ भी हो, उसको उसकी परवाह नहीं होगी। जैसे बाबा आशिक माशूक का मिसाल देता है वह जहाँ देखेगा, जहाँ बैठेगा, जिधर चलेगा... उसको वही माशुक सामने आयेगा। तो हमारे सामने अगर बाबा का प्यार है और प्यार कोई मेहनत की चीज़ नहीं है। जितना गहरा समीप का सम्बन्ध होता है और जिससे प्राप्ति होती है उससे आपेही प्यार होता है। कोई सुन्दर चीज़ होगी तो वह बहुत अच्छी लगेगी, वह याद आती रहेगी तो सुन्दरता से भी प्यार होता है। तो बाबा तो सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है ही। दूसरी सुन्दरता तो आज है कल खत्म हो जायेगी, कोई भी सुन्दरता सदा नहीं चलती। कोई सुन्दर चीज़ वा व्यक्ति देखो उसमें ज़रूर परिवर्तन आता है। वह सदा नहीं रहता है लेकिन बाबा अविनाशी सुन्दर है। तो बाबा से प्यार होना सहज है। दूसरा जिससे सहारा मिलता है उससे सम्बन्ध गहरा होता जाता है। समय प्रति समय जिसका जिसको सहारा मिलता है उसका उससे प्यार होता है। दिल की लेन-देन से उसकी दिल हल्की हो जाती है, मदद मिलती है इसीलिए बाप से प्यारा मित्र लगता है। तो बाबा तो हमारा सब कुछ है, माता भी है, पिता भी है, सखा भी है, बन्धू भी है, मित्र भी है - सब कुछ है सिर्फ एक को अपना लो बस। अलग-अलग समय पर याद करो। लौकिक सम्बन्ध में कितना विस्तार है और एक एक को याद करो, समय पर अगर एक भी याद नहीं आवे तो कितना नुकसान हो जाता है। समझो आपके यहाँ कोई बड़ा उत्सव है और आप सम्बन्धियों को उसमें बुलाते हो लेकिन किसी कारण से एक सम्बन्धी भी भूल गया तो वह उल्हना देगा, झगड़ा भी करेगा। कोई एक मिस हो गया तो झगड़ा ही झगड़ा है। और बाबा हमारे से झगड़ा करता है? कभी कहता है तुम क्यों मुझे भूल गयी। वह भी प्यार से कहता है बच्चे मेरे को भूलो नहीं क्योंकि नुकसान आपको है। कोई चार्ट नहीं लिखता है, कोई लिखता है कि बाबा आज तो मैंने सिर्फ ४ घण्टे याद किया, बाकी तो भूल गया। फिर भी बाबा कभी झगड़ता है? ऐसा अगर तुम्हारा चार्ट है तो तुम मेरे बच्चे नहीं हो, ऐसा कभी कहता है! फिर भी बाबा यही



कहता है जो हो, जैसे हो मेरे ही हो। मुझे तो आपको लेके ही जाना है, पावन बनाना ही है – इतनी गैरन्ती बाबा करता है।

फिर बाबा कहता है चलो योगबल नहीं होगा तो सज़ा मिलेगी लेकिन ले ज़रूर जाऊँगा, तो इतना प्यार कोई कर सकता है? इतनी प्राप्ति कोई करा सकता है! तो बाबा से प्यार होना तो कोई बड़ी बात ही नहीं है क्योंकि सर्व सम्बन्ध हैं और प्यारे ते प्यारा सम्बन्ध, अविनाशी सम्बन्ध है। तो प्यार में याद करने की आवश्यकता होती नहीं है लेकिन स्वतः ही याद आती है। तो जो भी बाबा का बच्चा बना है वह आकर्षित किस पर हुआ है? बाबा के प्यार पर। मैजारीटी का फाउण्डेशन प्यार है। भाई बहिनों का निःस्वार्थ प्यार भी बाबा का बच्चा बना देता है। ज्ञान तो पीछे समझते हैं पहले तो प्यार ही खींचता है, जीवन खींचती है क्योंकि ऐसा निःस्वार्थ प्यार कोई दे नहीं सकता। चाहे कितना भी कोई निष्कामी हो लेकिन अपने लिए कामना ज़रूर होगी क्योंकि मनुष्य तन में है। अब बाबा तो है ही ज्योतिर्बिन्दु, उसको शरीर ही नहीं। आवश्यकतायें सारी शरीर से हैं, प्राप्तियों की इच्छायें भी सब शरीर के लिए ही हैं। उसको शरीर ही नहीं है और दाता है, सागर है, भरपूर है, उसको अपने लिए क्या चाहिए? इसीलिए उसको सागर कहा जाता है, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, नदी नाला नहीं कहा जाता है। सागर कभी कम नहीं होता है, सदा भरपूर रहता है।

तो बाबा का प्यार निःस्वार्थ प्यार है। यहाँ जो भी आते हैं, यही कहते हैं कि यहाँ जो खाना खिलाते हैं, मिलते हैं और सुनाते भी हैं तो लगता ऐसे है जैसे सचमुच हम अपने कोई बिछड़े हुए फैमिली में, परिवार में आ गये हैं। और हर एक प्यार से मिलता है। मानो कोई भण्डारे में खाना बना रहा है, उसको हमारे से क्या चाहिए! हम तो सिर्फ देखने आये भण्डारा कैसे चलता है, उस भण्डारे में खाना बनाने वाले को हमसे क्या चाहिए? लेकिन वह भी प्यार से मिलता है और उससे दिल के प्यार का अनुभव होता है। तो उन्हीं को भी यह प्यार आकर्षित करता है। और बाबा ने हम सबको सिखा दिया है कि किसी को भी रिगार्ड देना माना रिगार्ड लेना। अभी माया विशेष इसी रूप से आती है, कहते हैं कि मेरे को इतना रिगार्ड नहीं मिलता है, जितना इनको मिलता है। मैं तो इनसे भी अच्छा हूँ, कोई भी अपने को कम तो समझता ही नहीं है। यह एक मनुष्य की नेचर है। चाहे अन्दर में समझे कि यह मेरे



से कुछ तो विशेष हैं परन्तु फिर भी उसको आयेगा कि मैं कम हूँ क्या ! तो यह सोचते हैं कि हमको रिगार्ड नहीं मिलता है जितना इनको मिलता है, इनको पूछा जाता है, इनको बिठाकर पानी भी पिलाते हैं और मेरे को तो कोई पूछता ही नहीं है, क्यों ? मैं बाबा का बच्चा नहीं हूँ क्या ! मेरे को भी वही रिगार्ड मिलना चाहिए। यह सब माया है।

अगर आपको किसी से कुछ भी चाहिए और आप सोचते हैं कि हमें यह चीज़ क्यों नहीं दी जाती है, तो मांगने से कभी नहीं मिलेगी। इसलिए इसमें टाइम वेस्ट करने की ज़रूरत नहीं है। इससे फालतू व्यर्थ संकल्प चलेंगे, टाइम वेस्ट, इनर्जी वेस्ट। अगर आपको किसी से भी कुछ चाहिए तो पहले उसे आप दो, तो मिलेगा। रिगार्ड देना अर्थात् रिगार्ड लेना। माँगने से रिगार्ड नहीं मिलता, कहने से रिगार्ड नहीं मिलता, सोचने से रिगार्ड नहीं मिलता। देना ही लेना है। लेकिन हम देना कम जानते हैं, लेने की इच्छा ज्यादा रखते हैं। हमेशा बाबा कहता है दाता के बच्चे बनो, देते जाओ। पहले जमाने के हृद के राजायें भी सम्पन्न थे, दान पुण्य करते रहते थे। राजा बनता भी कौन है ? जो अगले जन्म में दान पुण्य करते हैं, वही जाकर राजा बनते हैं। और राजा को हमेशा पहले दाता कहते थे, अभी के राजा कुर्सी वाले जो हैं, वह तो टैक्स लेने वाले हैं, देने वाले नहीं है। लेकिन दाता बनना - यह है निःस्वार्थ प्यार। जितना आप देते जायेंगे, यहाँ देना ही बढ़ना है। जैसे बाबा कहता है आपको बाबा से खुशी मिली है तो जितनी खुशी बाँटते जायेंगे, उतनी खुशी आपकी बढ़ती जायेगी।

किसी से किसी को ज्ञान का तीर लग जाता है तो कितना उनका दिल से और खुशी से शुक्रिया अदा करते हैं। तो यह कम बात नहीं है। तो उसकी खुशी देख करके पहले आपको खुशी होगी क्योंकि आपने खुशी बाँटी। चाहे ज्ञान के दाता बनकर बाँटो, कैसे भी करके कुछ तो देंगे तब तो खुश होंगे। दुनिया में जो भी चीज़ें होती हैं, वह बाँटने से कम होती हैं लेकिन यहाँ बाँटने से बढ़ती है इसीलिए बाबा कहता है खुशी बाँटो, ज्ञान बाँटो। जो भी शक्तियाँ, गुण मिले हैं वह सब बाँटते रहो। बाबा कहता है सबसे बड़ा दान है गुण दान। तो ऐसा खज़ाना बाबा ने हमको दिया है, मिला है तो बाबा से कितना प्यार होना चाहिए!

कई कहते हैं योग लगाना बहुत मुश्किल है, बुद्धि टिकती नहीं है, मन चंचल



है, पता नहीं कहाँ कहाँ घूमके आता है...। लेकिन बाबा को प्यार से याद करो बस फिर मन कहाँ जा ही नहीं सकता। और प्यार सीखने में, प्यार करने में कोई मुश्किल नहीं है क्योंकि जहाँ प्राप्ति को सामने रखेंगे वहाँ प्यार अवश्य पैदा होगा।

आप अपनी एक दिन की दिनचर्या देखो तो सारे दिन में दिल से आप जो याद करते हो, वह किसको करते हो? यह चेक करो। जिससे आपको प्राप्ति है, प्यार है, उसी को याद करते होंगे। चाहे कोई वस्तु को याद करते हो, चाहे कोई व्यक्ति को याद करते हो, चाहे कार्य को याद करते हो, जहाँ आपको प्राप्ति है। प्राप्ति सामने आती है तो याद आती है। और जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ प्यार आटोमेटिक होता है। तो पहले यह चेक करो कि बाबा से मेरा जिगरी दिल का प्यार है? बाबा कहते हैं— एक मेरे बच्चे हैं 'दिमाग वाले' वह कहेंगे हमने समझ लिया हूँ, परमात्मा है, मैं भी आत्मा हूँ। परमात्मा मेरा पिता है, परमात्मा से यह-यह प्राप्ति होती है। तो यह है नालेज के आधार पर दिमाग से समझना। दूसरे बच्चे हैं दिल वाले, जो दिल से जानकर, मानकर, प्यार से उस पर चलते हैं, उसमें बहुत अन्तर है। बाबा बांधेली माताओं की महिमा करता है, कहता है बांधेलियों का योग जो छुटेली हैं उन्हीं से भी ज्यादा है क्योंकि जो बांधेली मातायें होती हैं वह दिल से, प्यार से बाबा को याद करती हैं और बार-बार याद करती हैं। अभी कुछ हुआ सुनने जाऊँ, अभी कुछ हुआ पढ़ लूँ... ऐसे सारा दिन टाइम देखती रहती है और याद आता रहता है। दिल है ना। तो दिल से मैंने शिवबाबा को अपना बनाया है या नॉलेज के आधार से दिमाग से बनाया है? पहले यह अपनी चेकिंग करो।

मेरे दिल ने माना है कि यह मेरा बाबा है, दिल ने माना मेरा है। मेरा कभी भूल नहीं सकता। ऐसे ही शिवबाबा है, बहुत अच्छा है, ज्योति है, निराकार है, सबका सागर है... यह तो ठीक है। परन्तु दिल से मेरा माना। मेरा ही है बस। हरेक समझे मेरा पर्सनल बाबा है। मेरी चीज़ भूलती नहीं है, सारे दिन में मेरा ही याद आता है। सबसे पहले तो मेरा शरीर है, तो मेरा शरीर है बॉडी कान्सेप्सनेस वह भूलता है! बैठते हैं सोल कान्सेप्स होने, याद आता है बॉडी कान्सेप्स क्योंकि मेरा का भान रहा है।

हमारा एक गीत है "दो घड़ी दिल से याद कर लो...।" जिसको दो घड़ी दिल से याद करना आ गया, उसकी दो घड़ी अविनाशी हो जाती है। जो याद में मग्न



होता है उसको कोई सुधबुध नहीं रहती है, वह माया से छूट जायेंगे। बस इतनी मेहनत करो फिर कोई दिलशिकस्त हो जाते हैं तो कहते हैं मेरा शायद पार्ट ही नहीं है। इतना ही पार्ट है, ठीक है, और कई तो मेहनत करते-करते थक जाते हैं फिर अलबेले भी हो जाते हैं। फिर कहते हैं ठीक है करोड़ों में, कोई में तो आ गये हैं। सतयुग में तो आ ही जायेंगे, सतयुग में आ तो जायेंगे, यह तो ठीक है बाबा के बच्चे बने हैं, मेहनत करते हैं, मुरली सुनते हैं, कुछ ना कुछ नियमों में चलते भी हैं लेकिन वह अच्छे ते अच्छा बनने का सोचेंगे। यह नहीं, ठीक है अच्छा... खुद अपनी ही कमजोरी विघ्नों को लाती है। कई कहते हैं पहले तो हमारे सामने कोई विघ्न आता ही नहीं था, अभी ज्ञान में आने के बाद पता नहीं विघ्न ही विघ्न आने लगे हैं। पहले तो पता ही नहीं था कि बाबा का इतना वर्सा ले सकते हैं। अभी ऊँचे जाते हो तो ऊँचाई में कुछ तो ऊपर नीचे होगा ना। कई समझते हैं पहले मेरी अवस्था बहुत अच्छी थी, अभी कम हो गई है। लेकिन कम नहीं हो गई है, वह प्राप्ति आपको कॉमन हो गई है। कई फिर कहते हैं कि शुरू में बाबा की मदद बहुत मिलती थी, अभी नहीं मिलती है। लेकिन बाप छोटे बच्चे को अँगुली पकड़ के ले जायेगा या जवान भी हो जाए, तो भी बाप उसकी अँगुली पकड़कर चलायेगा। अपने पाँव पर तो बाबा खड़ा होने देगा ना। भले गिरे, थोड़ी हड्डियाँ मजबूत होंगी। तो पहले-पहले छोटे बच्चे होते तो बाबा अँगुली पकड़ करके चलाता है इसलिए कि चलना तो सीख जाए। अभी चलना सीख गये तो सीखने के बाद भी क्या अँगुली पकड़कर चलाये ? फिर भी अभी भी करावनहार बाबा ही हमको चला रहा है। तो सिर्फ दिल से प्यार करो, फिर आप भी न्योछावर और बाबा भी आपके ऊपर न्योछावर हो जायेगा। कोई मेहनत नहीं सहज है। सहजयोगी और स्वतःयोगी हमारी जीवन है। सारे दुनिया में अगर कोई किससे पूछे तो मौज की जीवन किसकी है ? आप कहेंगे मेरी है। एक है मूँझना दूसरा है मौज में रहना। मूँझना माना मौज गई और मौज है तो मूँझना गया। तो हम सदा मौज में रहने वाले हैं, मूँझने वाले नहीं। संगमयुग मौजों का युग है। सतयुग में भी इतनी मौज नहीं होगी, जितनी अभी है क्योंकि शिवबाबा भी हमारे साथ है। तो मौज में रहो, खुशी में रहो। घुटके नहीं खाओ, यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, कैसे हुआ ? होना नहीं चाहिए यह क्या होता है... अरे इसमें हम क्यों जायें। जो होता है अच्छा है, पहले



हम अपने को अच्छा करें। ज़्यादा बातों में जाने वाला कभी मौज में नहीं रह सकता। यह क्यों, वह क्यों... अरे यह हरेक का काँटा ले करके क्यों अपने को लगा रहे हो। काँटे के लगने से खून ही निकलेगा तो दुःखी होंगे। इसलिए खुशबू लेते जाओ और खुशी में रहो। बस।

बाबा ने बहुत अच्छी युक्ति सुनाई है कि हरेक की विशेषता देखो, कमी को तो वह खुद ही छोड़ रहा है, जिसको छोड़ रहा है उसको हम क्यों देखें। और यह हो ही नहीं सकता है कि किसमें कमी नहीं हो। कमी होती नहीं तो अव्यक्त वतन में चला जाता। कुछ है तभी तो रहे हुए हैं। तो हमारा काम है विशेषता देखना लेकिन विशेषता देखते हुए यह नहीं भूलें कि यह विशेषता देने वाला कौन? ऐसे नहीं कि उस आत्मा की विशेषता देखकर उसके ऊपर लट्टू बन जाओ, ऐसा भी नहीं करना है। उसमें भी बाबा याद आवे। आत्मा के सम्बन्ध में नहीं आना है। बाबा के सम्बन्ध में आने से आटोमेटिकली सभी आत्माओं के कनेक्शन में आ ही जायेंगे। आत्मा की विशेषता नहीं है, परमात्मा की देन है, प्रसाद है परमात्मा का। प्रसाद में प्रसाद की ही भावना रहती है। तो कोई में भी विशेषता है यह प्रभू प्रसाद है, उस रूप से उसको देखो। बाकी देखने की ज़रूरत ही नहीं है।

मम्मा कहती थी समझो कहीं गन्दा पानी गिर रहा है और आप उस गन्दे पानी को हाथ में ले रही हो। तो क्या यह अच्छा लगेगा? वह अपनी कमी छोड़ रहा है और उसकी छोड़ी हुई कमी जो आप मन में सोच रहे हैं, यह ऐसा है... यह बहुत खराब है। यह ऐसा करता है, तो क्या यह अच्छा लगता है? उससे हमको क्या मिलेगा? क्या आप उसको बदल सकते हो? अपने को बदलो, दूसरे की चिंता छोड़ दो तब मूँझेंगे नहीं, मौज में रहेंगे। अपने बाबा के लव में प्यार में मगन रहेंगे, मूँझेंगे नहीं मौज ही मौज। इतना समय तो भटकते रहे, अभी एक छोटा सा ही युग बाबा ने मौज का दिया है, इसमें भी मूँझते रहेंगे क्या!

अच्छा - ओम् शान्ति।



सहजयोगी बनने के लिए अपने स्वरूप को और प्राप्तियों को इमर्ज करो

आज का दिन विशेष भट्टी का दिन है। याद तो हम सबको बचपन से ही करना आता है। ऐसा कौन होगा जिसको किसी भी बात को या किसी भी व्यक्ति को याद करने का अनुभव नहीं हो। सभी को अनुभव है। सिर्फ यहाँ याद को परिवर्तन करना है, लौकिक याद का अनुभव बहुत कर लिया है और अब सिर्फ बाबा कहते हैं कि अलौकिक याद का अनुभव करना है। बच्चे को प्राप्ति के कारण बाप का सम्बन्ध ही प्यारा होता है। हमको भी बाबा ने यही सिखाया है कि बाप के सम्बन्ध से विशेष याद करो, यह कोई बड़ी बात तो है नहीं। बाप भी कैसा है वह सोचो, आज रिवाजी रीति से भी देखो - किसका बाप राजा हो या किसका बाप प्रेजीडेंट हो, तो बच्चे को कितना नशा रहता है। उसे याद नहीं भूलती है कि मेरा बाप कौन है। बाप कहने से ही उसके चेहरे पर वह खुशी की झलक दिखाई देती है।

उनके चलन और चेहरे से ही पता पड़ता है कि यह कौन है? किसका है? और हमारा बाबा कौन है यह तो सब जानते

हैं। अगर किसी को कहें कि बाबा कौन है, इस पर भाषण करो तो सभी बहुत अच्छे से अच्छा भाषण करेंगे। परन्तु बाबा कहते हैं जानना अलग चीज़ है, जानने के बाद होता है मानना। और मानने के बाद है उसी नशे में चलना। तो जानते और मानते तो हम सभी हैं तब तो यहाँ आये हैं, लेकिन उस नशे में चलना इसमें नम्बरवार हैं। इसका कारण क्या है? कारण है कि ६३ जन्म के विस्मृति के संस्कार पक्के हो गये हैं, इसीलिए बार-बार जानते, मानते भी भूल जाते हैं। तो बाबा कहते हैं कि विस्मृति



के संस्कार को मिटाने के लिए बार-बार स्मृति स्वरूप को इमर्ज करो। कई भाई-बहन कहते हैं कि हमको तो पता ही है ना - परमात्मा हमारा बाबा है, वह बड़े ते बड़ा, ऊँचे ते ऊँचा है... यह तो पता है। पता तो है परन्तु जो पता है, उस निश्चय की निशानी है - नशा। हमें जितना पक्का निश्चय होगा, उतना रूहानी नशा आटोमेटेकली चढ़ता है।

हम सब निश्चयबुद्धि तो हैं ही लेकिन निश्चय का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या है? बाबा हमेशा हम सब बच्चों को यही बार-बार याद दिलाता है कि आपके स्वरूप से दिखाई दे क्योंकि आत्मा का जो निजी परिचय है, गुण हैं उसमें हम क्या वर्णन करते हैं? आत्मा ज्ञान स्वरूप है, शान्त स्वरूप है...। सिर्फ शान्त और ज्ञान नहीं कहते हैं, स्वरूप है। दुनिया के लोगों में और हम ज्ञानी आत्माओं में यही तो अन्तर है कि हम सिर्फ समझते नहीं, कहते नहीं लेकिन उसके समान जीवन बन गई। हम कहते हैं कि हम ब्राह्मण हैं तो हमारी ब्राह्मण जीवन है। और जीवन कोई ४-८ घण्टे की नहीं होती है, जीवन तो निरन्तर है ही। योगी जीवन है हमारी, योग लगाने वाले योगी नहीं। तो जीवन माना स्वरूप में लाना। तो हम यह चेक करें जो निजी आत्मा के गुण हैं - ज्ञान, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम... इनको स्वरूप में कहाँ तक लाया है। सिर्फ बुद्धि में समझ है या मुख से कहना है या स्वरूप है? जिसको बाबा इन शब्दों में कहते हैं कि 'आपकी कथनी और करनी' एक हो। लोगों की कथनी एक है और करनी दूसरी होती है। हमारी जो कथनी है, जो समझ है वही करनी है यानि प्रैक्टिकल जीवन है। तो जब तक हम सारे दिन में अपने अनादि स्वरूप को इमर्ज नहीं करते हैं, अनुभव नहीं करते हैं। इमर्ज करना माना अनुभव करना। तो जब तक वह अनुभव नहीं करते हैं तब तक हमारा निरन्तर योग लगा रहे, वह नहीं हो सकता है। टूटेगा फिर जोड़ने की कोशिश करेंगे, मेहनत करेंगे फिर जुटेगा, फिर टूटेगा, तो उसमें क्या मजा आयेगा?

हमको याद का पुरुषार्थ बार-बार क्यों करना पड़ता? जो बाबा कहते हैं होना चाहिए, वह क्यों नहीं होता है? उसका कारण सिर्फ यही है कि हम पहले आत्मा के निजी गुणों के स्वरूप में अनुभव नहीं करते हैं। बाबा के गुणों का भी वर्णन करते हैं



वह सिर्फ सागर है, हम स्वरूप है। तो जब स्वरूप बनेंगे तब सागर से मिल सकेंगे। सागर में समा सकेंगे। स्वरूप ही नहीं बनेंगे तो समायेंगे क्या ? अनुभव क्या करेंगे ? लवलीन होंगे कैसे ? तो पहले अपनी इस धारणा को देखो, ओरीजनल तो मेरे गुण वही हैं ना। किसी से भी पूछो कि आपको अशान्ति प्रिय लगती है या शान्ति ? कोई भी नहीं कहेगा मुझे अशान्ति प्रिय है या किसी से भी पूछ लो आपको २ घण्टे के लिए शान्ति हो, बाकी 22 घण्टा अशान्ति हो तो इसमें कोई बात है क्या ? कोई नहीं मानेगा। कहेगा हमें चाहिए तो सदा चाहिए ना ! तो यह चाहना आत्मा में क्यों उठती है ? क्योंकि ओरीजनल हमारा स्वरूप ही वह है। हमको बाबा से यही जायजाद मिली है। हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार क्या है ? यही तो हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, यही तो हमारे खजाने हैं ना। तो पहले यह चेक करें कि वह ओरीजनल संस्कार मेरे इमर्ज हुए हैं ? अगर ओरीजनल संस्कार मेरे इमर्ज नहीं है, मेहनत करते हैं नहीं, अभी ४ घण्टे बीत गये, अभी आधा घण्टा तो शान्ति में बैठो। आधा घण्टा सुख के अनुभव में बैठो, बार-बार इमर्ज करते हैं फिर भूल जाते हैं। तो टेम्पेरी जो ६३ जन्म के संस्कार हैं उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं क्या कि हम लड़ाई-झगड़े के संस्कार इमर्ज करूँ, अशान्ति के संस्कार इमर्ज करूँ, यह कभी पुरुषार्थ किया है क्या ? और ही मिटाने चाहते हैं, इमर्ज करने नहीं चाहते हैं। तो मेरा निजी स्वरूप क्या है, वह स्मृति में रखना है। और मेरा बाबा कौन है ? क्योंकि मैं अपने स्वरूप में स्थित भी होंगी तो याद तो बाबा को करूँगी।

तो बाबा को याद करना मुश्किल नहीं है, भुलाना मुश्किल है। ऐसा प्यार करेगा कौन... सोचो। सतयुग से लेके कलियुग तक आपको ऐसा बाबा मिला ! जो रोज़ आपको याद-पत्र लिखें वह भी तीन पेज का। मुरली क्या है ? याद-पत्र है ना। बाबा बातचीत करता है, मीठे बच्चे यह नहीं करो, मीठे बच्चे तुम यह थे, मीठे बच्चे अभी यह बनो... यह क्या है। रोज़ आपको मीठे-मीठे बच्चे, सिकीलधे बच्चे कहेके यादप्यार देवे, तो सोचो किसी जन्म में ऐसा बाप मिला आपको ? सारे वर्ल्ड में बढ़िया ते बढ़िया शहजादी हो, प्रेजीडेंट, प्राइम मिनिस्टर वा राजा की लड़की/ लड़का हो, कुछ भी हो ऐसा बाप किसको मिल सकता है। सारे कल्प में मिला था, नहीं मिला।



ऐसा प्यारा बाबा कभी मिल नहीं सकता, जो रोज़ इतना ध्यान देवे। हम भले पत्र कभी सुनें या पढ़ें, कभी नहीं सुनें या नहीं पढ़ें लेकिन बाबा नहीं भूलता।

बाबा अस्पताल में भी बच्चों को याद करना भूला नहीं, वहाँ से भी बाबा मुरली लिखकर भेजते थे। चाहे हम अलबेले हो जाते हैं, लेकिन बाबा रोज़ सुनाता ही रहता है। हम नॉलेजफुल बाबा के नॉलेजफुल बच्चे बन जाते हैं तो सोचते हैं हमने सब समझ लिया, इसलिए मिस कर देते लेकिन बाबा अपनी ड्यूटी कभी नहीं छोड़ता है। तो ऐसा प्यार कोई कर सकता है? कितना भी कोई प्यारे से प्यारा हो, वह तो सिर्फ कह देते हैं यह बच्चा तो मेरे जान का टुकड़ा है, पता नहीं क्या-क्या कहते हैं लेकिन बाबा कभी नहीं भूलता। जिस प्राप्ति के कारण सम्बन्ध जुटता है, और सम्बन्ध समीप होने के कारण याद आती है। प्राप्ति में देखो क्या नहीं दिया, जीवन में चाहिए क्या? किसी मजदूर से भी अपना लक्ष्य पूछो, कि इतना पसीना बहाते हो किसलिए? तो यही उत्तर देंगे, मैं खुश रहूँ, मेरा परिवार खुश रहे बस, इसीलिए यह सब कर रहे हैं। और बाबा ने हमें जन्म से ही जब से हम ब्राह्मण बनें तब से सुख, शान्ति, प्रेम यह जायजाद दे दे करके प्राप्तियों का अनुभव करा लिया। जिनके पीछे इतना भटकते हैं, चाहे भगत हैं, चाहे बिजनेसमेन हैं। दफ्तर वाले हैं, कोई भी जिसके पीछे भटकते रहते हैं। वह बाबा ने हमको वर्से के रूप में दे दिया। सिर्फ सुख नहीं दिया, शान्ति भी दी तो आनन्द भी दिया, प्रेम भी दिया, ज्ञान भी दिया सब दे दिया, और प्राप्ति है क्या?

तो जिस बाबा से हमें सर्व प्राप्तियां हैं, प्रैक्टिकल प्यार की अनुभूति है तो उसकी याद मुश्किल है क्या? सिर्फ दिल खुश करने वाला नहीं है। दिल से लगता है, जो भी ब्राह्मण आत्मायें होंगी, जो अनुभवी होंगे, दिल से प्यार का अनुभव किया होगा। तो जिस समय बाबा मुरली के बाद यादप्यार देता है उस समय अन्दर क्या फील होता है, कौन याद प्यार दे रहा है? भगवान! रोज़ हमको याद प्यार देता है, हम याद करें, नहीं करें लेकिन वह हमको मुख से रोज़ याद प्यार देता है। चलो मन से कैच नहीं भी कर सकें, यह तो प्रैक्टिकल मुख से बाबा देता है, हम सभी सुनते हैं और मीठे-मीठे बच्चे कह करके याद देता है, सम्बन्ध भी याद दिलाता है। यहाँ सिर्फ



दिमाग वाले नहीं चल सकते हैं। दिल और दिमाग दोनों वाले चल सकते हैं। कईयों का दिमाग बहुत तेज होता, फट समझ जाते कि परमात्मा तो ऊँचे ते ऊँचा है। आत्मा ज्योति है तो वह भी महा-ज्योति होगी और क्या होगा। लेकिन दिमाग से जानने में प्राप्ति नहीं है, उसमें टेम्प्रेरी नशा चढ़ेगा लेकिन दिल जब अनुभव कर चुकी तो भूलने का क्वेश्चन ही नहीं है, इसको बाबा कहता है कि जो दिल से मुझे याद करते हैं, उनके दिल की बातें बाबा सुनता भी है, रेसपान्ड भी देता है और जो अधिकार से चाहना करते हैं वह भी बाबा पूरी करता है।

बाकी कई तो ऐसे ही बाबा का भी पेपर लेने वाले हैं। बाबा कहता है ना मददगार तो मैं हूँ, मैं तो तुम्हारा सेवाधारी हूँ, बच्चों के लिए तो आया हूँ तो यह नोट तो कर लिया, फिर कहेंगे बाबा - अभी यह काम है ना, इसमें आप मेरे को मदद करना। मदद करने के लिए तो बाबा बँधा हुआ है। तो जो हिम्मत का कदम बाबा कहता है ना, वह आधी बात जो मेहनत की है, वह भूल जाते हैं। सिर्फ बाबा का पेपर लेने चाहते हैं, बाबा आपने तो कहा था ना कि मैं मददगार हूँ, मदद करो ना आप। बाबा के भी मास्टर बन जाते हैं पेपर लेने वाले, तो उसको बाबा क्या मदद करेगा! दिल से दिल का कनेक्शन ऐसा है जो दिल की बात दिलाराम नहीं जाने, यह हो ही नहीं सकता। इसीलिए बाबा का नाम ही है - 'दिलाराम'। क्यों नहीं मदद करेगा, बाबा बँधा हुआ है, हमारे लिए आया हुआ है लेकिन बाबा ने हम बच्चों के प्रति जो शर्त रखी है ना वह हम भूल जाते हैं। दूसरा बाबा कहता है - सच्ची दिल पर साहब राजी। एक कहता है - हिम्मते बच्चे मददे बाप। तो हमारा दिल सच्चा है या दिल में स्वार्थ है? कोई स्वार्थ होगा तो कहेंगे कि आज तो बस मेरे को योग लगाना है, आज मुझे और कोई काम नहीं करना है, और मेरे सामने यह बात है, योग लगाना है। ऐसे मतलब से योग लगाते हैं, बाबा से दिल का प्यार नहीं है। स्वार्थ है। भले योग लगाना बुरी बात नहीं है, अच्छी बात है फिर भी समय सफल होता है। उल्टे-सुल्टे संकल्पों से फिर भी याद में तो बैठा है। परन्तु जो लक्ष्य है वह तो पूरा नहीं होगा। इसीलिए बाबा कहता है पहले बाबा को पहचानो - मैं जो हूँ, जैसा हूँ उस रूप से मुझे पहचानो, मिक्स नहीं करो।



अज्ञानकाल में भी भगत लोग स्वार्थ से ही तो याद करते हैं कि यह कार मिल जाए, एक मकान मिल जाए, बच्चा ठीक हो जाए या बच्चा पैदा हो जाए बस.. यही स्वार्थ होता है। हमारे को यह स्वार्थ नहीं है, स्नेह है। स्वार्थ से याद करना और स्नेह से याद करना उसमें बहुत अन्तर है। जिसे हम स्नेह से याद करते हैं, उसको ज़रूर स्नेह पहुँचेगा। अगर नहीं पहुँचता है तो अपने को चेक करो कि जरा भी स्वार्थ का अंश मात्र तो नहीं है। स्वार्थ एक दीवार है जो आत्मा को परमात्मा से मिलने देगा ही नहीं। मुझे मदद चाहिए तो वह मदद लेने देगा ही नहीं। तो ऐसा नहीं करना। कहते हैं – जहाँ बाप है वहाँ पाप नहीं हो सकता है। और जहाँ पाप है वहाँ बाप नहीं हो सकता है।

तो बाबा मेरा है, बाबा कहने से बाबा का प्यार इमर्ज हो, बाबा सागर है, स्वरूप नहीं और सागर में तो लीन हो जाते हैं। कोई भी सागर में जायेगा तो समा जायेगा। तो बाबा भी कहता है – मैं प्यार का सागर हूँ, जब प्यार चाहिए तो प्यार के सागर में खो जाओ, जब शान्ति चाहिए तो शान्ति के सागर में खो जाओ। प्रेम चाहिए, आनन्द भी तो चाहिए, ऐसे हम सूखे संन्यासी थोड़ेही हैं। इसलिए हमारे मनोरंजन के प्रोग्राम कितने होते रहते हैं क्योंकि हम रमणीक हैं। हमारा परिवार है। हमारा बाबा ऐसा है जो सर्व सम्बन्ध निभाने वाला है। ऐसे सर्व सम्बन्ध कोई निभा नहीं सकता सिवाए निराकार बाप के। साकार में कोई सर्व सम्बन्ध नहीं निभा सकता है लेकिन एक ही हमारा निराकार बाप है जो सर्व सम्बन्ध निभाता है।

इतना निर्मान बाबा, इतनी बड़ी अथॉरिटी और कहता है मैं वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ। तुम्हारा बोझ उठाने के लिए आया हूँ तो तुम अपना बोझ दे दो। और तो कुछ माँगता नहीं। बोझ उठा-उठाके क्यों सिरदर्द मोल लेते हो, अपना बोझ मुझे दे दो। गीत भी है - कर दो जीवन राम हवाले तो वह सब ठीक कर देगा। सिर्फ उसकी श्रीमत में मनमत मिक्स नहीं करो। एक ही श्रीमत पर चलो बस, उसने कहा हमने किया बस। सर्व सम्बन्ध हैं, जिस भी सम्बन्ध से जिस समय आपको आवश्यकता है, कोई समय माँ की पालना चाहिए, कोई समय बाप चाहिए, कोई समय फ्रैन्ड चाहिए, कोई समय भाई चाहिए, भिन्न-भिन्न सम्बन्ध भिन्न-भिन्न समय पर आवश्यक होते हैं। तो बाबा



कहता है – मैं हूँ तुम्हारा सर्व सम्बन्धी, बस यही याद रखना। तो सहजयोगी बनने के लिए एक तो चलते-फिरते अपने आत्मा के ओरीजनल स्वरूप को इमर्ज करो, जीवन में लाओ। स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप बनो। २- प्राप्तियों को सामने लाओ और परिचय को सामने लाते हुए उसी याद में खो जाओ। बस, बाबा और मैं दूसरा न कोई। अच्छा।



व्यर्थ और निगेटिव से बचने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ

ओम् शान्ति । हमारे ख्यालों में भी और ख्वाबों में भी एक बाबा ही है और बाबा की हम बच्चों प्रति यही आश है कि तुम मेरे मैं तेरा, न तुम मेरे को भूलो, न मैं तेरे को भूलूँ - यही बाबा चाहता है। जब बाबा याद होगा तो नैचुरल बाबा की याद से जो हम अपने जीवन में शक्तियाँ या धारणायें चाहते हैं, वह बाबा की याद में समाई हुई हैं ही। तो बाबा कहते हैं कि बस और कुछ नहीं करो, मुझे भूलो नहीं क्योंकि मेरे को भूलने से ही आपको इतनी मेहनत करनी पड़ती है, अगर तुम मेरी याद में रहो तो आज कोई कामना उठी या क्रोध आ गया, लोभ आ गया ... तो इस मेहनत से छूट जायेंगे और मेरी याद में खो जायेंगे, बस। जो प्यार के आनन्द में खोया हुआ होता है उसको कोई भी बाहर की आकर्षण खींचती नहीं। तो बाबा की भी यही आशायें है और हम सबकी भी वही आश है। लेकिन उसको प्रैक्टिकल में लाने के लिए याद भूले नहीं। इसके लिए बाबा ने अभी तो बहुत सहज तरीका सुना दिया। कोई बहाने बाजी इसमें नहीं

चल सकती, बाबा ने इसीलिए 5 बारी ट्राफिक कन्ट्रोल रखा कि भूल भी जाये तो फिर से फट से याद आवे। अभी तक तो बाबा 5 मिनट कहते थे लेकिन अब तो 5 सेकण्ड ही कहते, ऐसा काम किसी का नहीं है, जो इतना टाइम भी नहीं निकाल सके। सिर्फ यह ज़रूर है कि इस बात के लिए जो बाबा ने सहज साधन दिया है उसके लिए अपने कुछ नियम वा चार्ट बनाना पड़ेगा क्योंकि हरेक काम की रीति रसम, टाइम, संग, कम्पनी भी होती है। इसीलिए बाबा कहते हैं कि आप ही टाइम निकालो। विधि को सेट करो।



बाबा ने “मैं आत्मा हूँ” का पाठ इतना पक्का किया था जो बाबा की सारी डायरी उससे भरी हुई थी कि मैं भी आत्मा, यह भी आत्मा, वह भी आत्मा। और हम लोगों को भी बाबा ने शुरू शुरू में यह आत्मा का पाठ बहुत पक्का कराया। परमात्मा का ज्ञान धीरे-धीरे स्पष्ट हुआ है लेकिन आत्मा का ज्ञान शुरू से ही हम लोगों को मिला। आत्म-अभिमानि बनना यही हमारा मुख्य लक्ष्य और पुरुषार्थ था। इसमें अपने ग्रुप्स बने हुए थे और रेस करते थे जैसे कि हमने ५ मिनट निकाला, तो दूसरे कहेंगे हम १० मिनट निकालेंगे और फिर तीसरा ग्रुप कहता था रात को २ घण्टा जागकर और बढ़ाऊंगा, ऐसे हम लोग आपस में रेस करते थे। और मम्मा की विशेषता यह थी कि आप घड़ी देखो नहीं देखो, अढ़ाई बजना माना मम्मा की लाइट जलना। हम सबने एक दिन मम्मा को पूछा कि आप इतना जल्दी वह भी रोज़ाना जागकर क्या करती हो? तो मम्मा कहती थी कि मैं योग में आत्म-अभिमानि स्थिति में स्थित होकर बैठती हूँ, दूसरा मम्मा कहती थी मैं रूहों को सकाश देती हूँ, मैं तुम्हारे रूह को भी इमर्ज करके तुमको भी सकाश, शक्ति या लाइट देती हूँ। तो हम लोग इस बात को नहीं समझते थे। अभी तो इन सब बातों का स्पष्टीकरण हमारे सामने है। इसलिए अभी तो वह सब कॉमन बात हो गई है। तो मम्मा ने शुरू से अपनी स्व-उन्नति के लिए इस प्रकार से पुरुषार्थ और पालना की है। तो ऐसे ग्रुप्स को देख एक-दो को उमंग आता था, अभी तो अपना इन्डिविज्युअल चार्ट रखना, पुरुषार्थ करना यह पावर आ गई है। हर एक अपने आपको जितना मेकप करने चाहें उतना कर सकते हैं।

अभी लास्ट मुरलियों में जो बीच-बीच में आत्म-अभिमानि बनने अथवा ५ सेकेण्ड की ड्रिल करने के लिए बाबा कहता है, उसमें जो बीच में विघ्न पड़ता है वह एक तो हैं व्यर्थ संकल्प और दूसरा है निगेटिव देखना, सोचना। यह दो विघ्न योग को बहुत नीचे करते हैं क्योंकि मन में ही तो वेस्ट थॉट चलते हैं। और निगेटिव देखने सोचने की अगर आदत पड़ गई तो हमारी वृत्ति कभी शुद्ध नहीं होगी। तो यह दोनों ही विघ्न हमारी मन्सा शक्ति को नहीं बढ़ा सकते या मन्मनाभव होने नहीं देंगे। लेकिन अगर हमारी मन्सा में शुद्धि है, वृत्ति-दृष्टि में निगेटिव नहीं है, शुभ भावना,



शुभ कामना की वृत्ति है तो भले हम कितना भी मन को कामकाज में बिजी रखें तो भी हमारी वृत्ति चंचल नहीं होगी। काम पूरा होगा फिर वही वृत्ति आ जायेगी क्योंकि वृत्ति में और कुछ है ही नहीं।

तो हमने सोचा कि कइयों के बुरे थॉट नहीं है, कोई विकल्प नहीं हैं लेकिन जो जरूरी नहीं हैं उसको वेस्ट ही कहेंगे। तो वह वेस्ट थॉट इसलिए चलते हैं क्योंकि हमें अपने मन को बिजी रखने का तरीका नहीं आता है। खाली बुद्धि है तो वेस्ट चलता है, आपको टाइम है तो वेस्ट टाइम भी जायेगा। अगर टाइम ही नहीं है तो वेस्ट कैसे जायेगा? ऐसे अगर मन-बुद्धि, वृत्ति में फ्रीडम है, मन बिजी नहीं है तो वेस्ट जायेगा। और बुद्धि को बिजी रखने के लिए अगर हम बड़े वी.आई.पीज की तरह एक डायरी में 5-5 मिनट का टाइम टेबल बना लेते हैं तो वेस्टेज से बच जायेंगे। हमारे लिए तो अभी संगम का यह थोड़ा सा समय ही पुरुषार्थ के लिए है। बिना संगम के तो कोई यह पुरुषार्थ कर ही नहीं सकता है। संगम के सिवाए तो न शिवबाबा हमको मिलेगा, न सर्व शक्तियाँ मिलेंगी, न यह अलौकिक सम्बन्ध मिलेगा। तो बाबा ने कहा कि अभी मैं सागर भी हूँ और दाता भी हूँ। और इस खजाने पर कोई ताला चाबी भी नहीं है। सूक्ष्म-वतन में बाबा से मिलने के लिए कोई पहरेदार भी नहीं है। जब चाहो तब वतन में आ जाओ और जितना टाइम चाहे उतना टाइम मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो। जितना चाहे, जो चाहे वह बाबा से लो।

बाबा हमें टाइम कान्सेस तो बनाता ही नहीं है। कई बार बच्चे बाबा से पूछते हैं कि बाबा थोड़ा तो डेट बता दो। कई पूछते हैं 2005 आयेगी कि पहले होगा! अभी बाबा ने नहीं बताया तो कौन बता सकता है, ऐसे ही अपने मन से कोई भी कुछ भी सोचते कहते रहते, तो भले कहें...। लेकिन बाबा ने नहीं बताया तो फाइनल तो नहीं कर सकते हैं। यूँ तो बाबा ने पहले से ही कह दिया है कि एवररेडी रहना है, सब अचानक होना है। तो एवररेडी और अचानक को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि किसी को यह कह दें कि बाकी 8 घण्टे तुम्हारे मृत्यु में हैं तो उसको क्या याद आयेगा? हम लोगों को तो यह आयेगा कि केवल 8 घण्टे ही हैं तो योग पूरा लगाऊँ, जो भी कमी है उसको ठीक कर दूँ, लेकिन अज्ञानियों को क्या याद आयेगा?



पोत्रा है, धोत्रा है, पैसे हैं, वह है, यह है... और क्या याद आयेगा ? तो बाबा ने अचानक और एवररेडी का जो पाठ पढ़ाया है, यह दो शब्द तो हमको पक्का याद रखना है। यह नहीं सोचें कि अभी तो कुछ दिखाई नहीं देता है। और दूसरे को देखने की आदत बहुत पक्की हो गई है। अपने को देखने के बजाए संगठन में न चाहते भी दूसरे का दिखाई देता है। यह भी तो ऐसा है, अभी कोई तैयार तो लगता ही नहीं है। और अभी हम कोई महारथी आदि तो हैं नहीं, लेकिन होना यही चाहिए कि हम एवररेडी रहें।

बाबा ने बहुत अच्छी बात सुनाई कि स्वयं रचता बाप तुम्हारा शिक्षक है, वह शिक्षा देते सम्पूर्ण बना रहा है। और आप सोचते हो कि समय आने पर कुछ जल्दी बदल जायेंगे। अभी समय है, समय सब ठीक कर देगा। तो बाबा ने कहा कि आपने टीचर किसको बनाया है ? समय को बनाया है ? समय ने आपको सम्पूर्ण किया और बाबा ने जो शिक्षा दी उसने सम्पूर्ण नहीं बनाया ? समय ने मुझे सम्पूर्ण कर दिया तो मैं रचता शिक्षक की स्टूडेंट हूँ या रचना समय की, किसकी स्टूडेंट हुई ? तो बाबा ने बार-बार हमारा अटेन्शन खिंचवाया है कि रचता तुम्हारा शिक्षक है, उसी की शिक्षा से अभी से एवररेडी रहो। और दूसरा एवररेडी रहने का यह बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। एक तो समय को हम टीचर नहीं बनायें, समय के पहले हम तैयार रहें, यह लक्ष्य रखें। और दूसरी बात बाबा ने यह भी बहुत अच्छा गुह्य राज सुनाया है कि अगर आपका बहुतकाल नहीं होगा तो जो हमारी २१ जन्म की प्राप्ति है, उसमें भी हमारा बहुतकाल नहीं होगा। यानि सतयुग आदि से त्रेता के अन्त तक जो बहुतकाल 21 जन्म का वर्सा है, तो अगर बहुतकाल का पुरुषार्थ नहीं है तो बहुतकाल का वर्सा कैसे मिलेगा ? हिसाब तो है ना। बाबा का साथी धर्मराज है। तो बाबा ने बीच-बीच में यह इशारा दिया है कि क्या आप सतयुग के बीच में आना चाहते हो, त्रेता में आने चाहते हो ! इसलिए हमें बहुतकाल का अभ्यास करना चाहिए और समय को भी सामने में याद रखना चाहिए।

स्वयं और समय। समय कौनसा चल रहा है ? समय को देख करके नैचरल हमारे में तीव्रता भी आती है, सुस्ती भी आती है। अगर हमको पता है कि एक घण्टे के



बाद होना है तो नैचरल हमारी चाल वैसी होगी। और पता है 5 मिनट हैं तो चाल में फ़र्क आयेगा। तो समय भी हम याद रखें, स्वयं को भी याद रखें और स्वयं के साथ बाबा की जो शिक्षायें हैं वह भी याद रहें।

कई भाई-बहिनें पूछते हैं कि निगेटिव को पॉजीटिव करने का अर्थ और विधि क्या है? हमको पता है कि यह निगेटिव है, उसको हम पॉजीटिव कैसे सोचें, अभी कोई गाली दे रहा है और हम उसको कहें कि नहीं यह तो बहुत अच्छा बोल रहा है, यह कैसे हो सकता है? जैसे गर्मी की सीज़न में चाहे राजा हो, चाहे फकीर हो सभी को गर्मी लगनी है, ऐसे नहीं राजा के लिए बहार होगी और गरीब के लिए गर्मी होगी। सीज़न तो सभी के लिए एक जैसी है। तो यह कलियुग की अन्त है, कलियुग की अन्त माना ही क्लेष। जब सीज़न ही क्लेष का है तो इसमें निगेटिव बातें नहीं आवें, या खराब-खराब बातें नहीं आवें, पेपर हमारे सामने नहीं आवें - यह असम्भव है।

ब्रह्मा बाबा कहते थे कि मैं तो इंजिन हूँ, तुम तो मेरे डिब्बे हो। तूफान पहले इंजिन पर आता है फिर डिब्बों पर आता है। मैं कोई बचा हुआ हूँ क्या? तो सचमुच देखते हैं कि यह तो आना ही है, समझ लेना चाहिए। एक साल के बाद सरकमस्टांश ठीक हो जायेंगे, नहीं होंगे। कोई और रूप में आयेंगे क्योंकि अन्त तक हम लोगों को पेपर पास करना ही है लेकिन पेपर आये और हम ठीक रहें, बहुतकाल का पुरुषार्थ यह काम करेगा कि पेपर्स कैसे भी आवें, भिन्न-भिन्न रूप से आवे। बाबा ने तो कहा है - समझो हमारे में क्रोध है तो माया एक वारी क्रोध महाकाल रूप में लायेगी, दूसरे वारी थोड़ा जोश में आयेगी, तीसरे वारी उससे हल्के रूप में आयेगी। आयेगी वह जरूर लेकिन अलग-अलग रूप से आयेगी, जो हम महसूस ही नहीं करेंगे कि यह भी कोई क्रोध है। यह थोड़ा बहुत तो आता ही है - इस तरह रॉयल रूप में माया आयेगी। तो बाबा ने कह दिया कि वह तो पेपर आना है लेकिन हम पेपर से न्यारे रहें क्योंकि बात तो हमारी है। तो निगेटिव को पॉजीटिव करने का मतलब है, कि मान लो कोई क्रोध कर रहा है और हम कहें यह तो प्यार कर रहा है, यह तो होना नहीं है। क्रोध तो राँग है ही लेकिन उसके क्रोध पर आपको क्रोध आया, या उसने झूठ बोला तो आपको क्रोध आया, तो आप भी फेल हुए ना। चलो



हल्के रूप में भी क्रोध आया, उसके प्रति भावना बैठ गई, दृष्टि बैठ गई यह भी तो रॉयल रूप में क्रोध का ही अंश है। तो बाबा ने कहा यह राइट है क्या ? यह तो उसकी बीमारी आपके पास थोड़े हल्के रूप में आ गई। तो जिस समय कोई भी ऐसा सरकमस्टांश आता है, संगठन है ना, आया, लेकिन उस समय मैं निगेटिव को पॉजीटिव इस रूप में करूँ कि मानो वह इनसल्ट कर रहा है। अभी इनसल्ट जो कर रहा है उसके संस्कार हैं, वह परवश है। कोई भी क्रोध करना, इनसल्ट करना चाहता नहीं है। हरेक पुरुषार्थी समझता है कि मैं ठीक रहूँ लेकिन स्वभाव वश उस समय ऐसा परवश हो जाता है, समस्या के आधार पर फेल हो जाते हैं।

तो बाबा ने कहा अच्छा निगेटिव है, उसको मैं पॉजीटिव में चेन्ज करूँ कि एक तो यह परवश है। यह क्यों करता है ? नहीं, यह बिचारा इस समय समस्या के वश है। तो जो परवश होता है उस पर रहम आता है, जोश नहीं आता है। कोई आपेही करता है तो मैं सोचूंगी - यह ठीक नहीं करता है। और कोई परवश हो करता है, तो जोश नहीं आयेगा। और दूसरी बात बाबा कहता है कि अशुभ के ऊपर, शुभ भावना रखो। शुभ भावना रखना माना कोई अशुभ है, उस पर ही तो हमें शुभ भावना रखनी है। इस समय वह अशुभ है, अब मेरा काम है शुभ भावना रखना, शुभ कामना रखना। तो निगेटिव बदलकर पॉजीटिव हो जायेगा ना। मानो उसने क्रोध किया तो हम पॉजीटिव सोचें कि यह मेरी सहनशीलता का पेपर ले करके और ही मेरी सहनशक्ति को बढ़ा रहे हैं। जब वह क्रोध करेगा तब तो हमें सहनशक्ति यूज करनी है जब ऐसी बात ही नहीं होगी तो मैं सहनशक्ति किसमें यूज करूँगी। कोई लड़ेगा ही नहीं तो मैं तलवार क्यों यूज करूँगी। तो अगर अशुभ है कोई रूप में तो मुझे शुभ भावना रखनी है हमें गिरे हुए को उठाना है। उठे हुए को उठाना है क्या ! तीसरी बात है - चलो सहनशक्ति मेरी बढ़ाई, जो भी बात हो जाती है उसके बाद भविष्य में मुझे क्या करना है। इससे मैंने कौनसा पाठ पढ़ा, करेक्शन क्या किया ? तो अपनी भविष्य के लिए करेक्शन सोचकर उस बात को फिनिश करके बिन्दी लगा लेनी चाहिए। अगर आपने उसको फुलस्टॉप नहीं दिया तो कितना भी आप योग में बैठेंगे, आपका वही संकल्प चलेगा - देखा इसने क्या किया, ऐसे थोड़ेही करना चाहिए... यह ठीक नहीं किया...



यह वेस्ट ज़रूर चलता है। इसलिए कोई बात हो जाती है तो पहले हम उसको शुभ भावना से खत्म करें। जो हिसाब-किताब था वह पूरा हुआ। और दूसरा हम यह फाइनल करें कि इससे मैंने शिक्षा क्या ली? अगर थोड़ा मुझे सेक भी आया तो सेक में भी स्वयं को सेफ करना है। मुझे तो अपने को सम्भालना है। अपनी कमाई मुझे करनी है। उसका तो बाबा हिसाब-किताब चुक्त्तू करेगा, मैं तो नहीं करूँगी लेकिन मुझे अपना हिसाब-किताब तो ठीक रखना है। मुझे इस बात से पाठ क्या मिला? यह समझकर उसे फिनिश कर दो। जैसे चौपड़ा खाली कर देते हैं, दीवाली में पुराना खत्म, नया चालू करते हैं। तो भविष्य के लिए मैंने यह सीखा। फिनिश किया। तो हमने देखा निगेटिव को पॉजीटिव में चेन्ज करना सहज है। और वेस्ट थॉट्स खत्म करने के लिए तो अपने मन को बिजी रखने का टाइम टेबल बनाना है। अच्छा। ओम् शान्ति।



राजयोगी ब्रह्माकुमार जगदीशचन्द्र जी

अनेक ईश्वरीय वरदानों का साकार स्वरूप राजयोगी ब्रह्माकुमार

जगदीश चन्द्र जी को अपने शब्दों के माध्यम से ईश्वरीय महावाक्यों को विस्तृत रूप देने की विशेष कला प्राप्त है। आपकी लेखन शक्ति अनेक आत्माओं को दिव्य मार्ग दर्शन देने के निमित्त बनी है।

आपको राजयोग की विभिन्न स्थितियों की गहन अनुभूति प्राप्त है। इस दिशा

में आपका अध्ययन भी उच्च कोटि का है। शारीरिक अस्वस्थता के उपरान्त भी आपने अशरीरी वा विदेह स्थिति की अनेक अलौकिक अनुभूतियाँ की हैं, जिसका अनुभव उन्हीं के शब्दों में यहाँ लिखा जा रहा है ताकि इसे पढ़कर हर आत्मा सहज अपनी उपराम और एकरस अवस्था बनाते हुए राजयोग के पथ पर दृढ़ता एवं तीव्रता से आगे बढ़ सके।

निजी गुण, कर्म और स्वभाव की समानता के आधार पर महानता

जो महान आत्मा होते हैं उनका मन, वचन और कर्म एक जैसा होता है। जैसा वह कहते हैं, जैसा वह मानते हैं वैसे ही फिर उसको चलन में लाते हैं तो महानता का यह एक विशेष चिह्न है। और हम लोग भी जो महान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं, पुरुषार्थ कर रहे हैं, हमारे जीवन में भी ऐसा ही होना चाहिए। तो पहले-पहले जब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो एक फार्म हमसे भरवाया जाता है और जीवन का लक्ष्य पूछा जाता है, इस पढ़ाई का एम एण्ड आब्जेक्ट बताया जाता है। उसमें कहते हैं कि हमें देवी-देवता बनना है। और उसकी व्याख्या करते हुए हम सबको यह कहते हैं - सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम... बनना है।

तो सर्वगुण सम्पन्न एक तो गुणों की विशेष बात हो गई। वैसे तो आमतौर से ऐसा होता है जैसे मनुष्य के गुण हो वैसे ही कर्म होते हैं। परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है क्योंकि गुण हम धारण करने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। और कभी-कभी जो

हमारे पुराने संस्कार हैं वह हमारे गुणों को ढक लेते हैं और पुराने संस्कार ऐसे कर्म करा देते हैं जो कि मन-बुद्धि कहती है कि यह कर्म अच्छा नहीं है, यह करना नहीं चाहिए फिर भी भूल कर देते हैं।

तो यह गुण, कर्म और स्वभाव - गुण और कर्म भी हमारे ऐसे हों कि स्वाभाविक हो जायें। अभी हम क्या कोशिश करते हैं कि जो हममें गुण हैं वह स्वाभाविक नहीं हुए हैं। गुणों को हम अपने स्वभाव में लाने की कोशिश कर रहे हैं। पूरी तरह से



वह हमारे नैचरल स्वभाव नहीं हो गये, कभी कोई व्यक्ति ऐसी बात कर देता है जिससे उत्तेजना आ जाती, उत्साह नहीं रहता। तो बुद्धि कहती है कि शान्त रहो, शीतल रहो। सहनशीलता का गुण धारण करो लेकिन स्वभाव ऐसा बन चुका है जो वह सहन नहीं करता। परन्तु बाबा की आज्ञा का पालन करने के कारण मजबूरी से वह धारण करता है। अभी स्वभाव हमारा ऐसा बन जाये कि गुण जो हैं वह हमारा नैचरल स्वरूप हो जाये। अलग न रहें और उसी के अनुसार हमारे कर्म भी हों।

जैसे गीत है ना कि ब्रह्म से ब्रह्मा पधारे.. यह अगर हमारे बुद्धि में रहे कि हम ब्रह्माकुमारियाँ हैं, हम ब्रह्माकुमार हैं तो ब्रह्मा ब्रह्म से पधारे, तो हमें क्या करना चाहिए, हम क्या सोचें? कि हम भी ब्रह्म से पधारे। तो बाबा कहते हैं जो भी कर्म करो ऐसे समझो कि आपकी आत्मा ने ब्रह्मधाम से ब्रह्मलोक से आकर शरीर में प्रवेश किया है। और ओम् अर्थात् मैं शान्त स्वरूप, शुद्ध स्वरूप आत्मा हूँ.. इस स्मृति में रहें। याद रखें कि हमारा यह नया जन्म हुआ है। नई दुनिया के लिए हम पुरुषार्थ कर रहे हैं, नया ज्ञान सुन रहे हैं, नया परिवार मिला है तो नवीनता आयेगी। हमारे गुण, कर्म और स्वभाव नये बनेंगे। लौकिक से अलौकिक बनेंगे, आसुरी से दिव्य बनेंगे और जो अपवित्र हैं वह पवित्र बनेंगे। शरीर के साथ रहते-रहते ऐसे हमारे सम्बन्ध हो गये हैं जो उन्हें भूलना कठिन हो गया है। इससे पक्की दोस्ती हो गई है। रात को स्वप्न भी देखेंगे तो अपने दोस्त का... कोई आत्मा और परमात्मा के स्वप्न थोड़ेही देखते हैं, देहधारियों का स्वप्न देखते हैं। स्वयं को भी देह में देखते हैं और देहधारियों के ही स्वप्न देखते हैं, देह की दुनिया के ही स्वप्न देखते हैं। तो देह से इतना लगाव-झुकाव हो गया है और इतनी अटैचमेंट हो गई है कि वह भूलता ही नहीं है।

यह आपको मालूम है कि जब ब्रह्माबाबा अव्यक्त हुए तो रात्रि को जब वह क्लास में मिलने गये तो बाबा ने क्या महावाक्य उच्चारण किये थे। बाबा ने कहा था निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी बनो। तो निराकारी कैसे बनोगे, जब यह सोचोगे कि ब्रह्म से हम पधारे हैं। ब्रह्मा बाबा की शुरू की, आदि, अन्त और मध्य तीनों कालों की यही आज्ञा रही है कि अपने को आत्मा समझो और यह समझो कि मैं परमधाम से उतरी हुई हूँ, इस कर्मक्षेत्र पर कर्म करने के लिए। देह से न्यारे होने की ड्रिल करो



तो यह ड्रिल कैसे करेंगे ? आत्मा की स्मृति कैसे रहेगी ? जब पहले-पहले हम यह सोचेंगे कि हमारे बाबा जो हैं वह भी ब्रह्म से पधारे और हम भी ब्रह्म से पधारे ।

तो हमारे ज्ञान का आदि-मध्य-अन्त क्या हुआ ? हम यह सोचें कि हम भी वहाँ से आये हैं । पृथ्वी पर पाँव हमारे हों, लेकिन हमें अनुभव ऐसा हो, याद हमारी ऐसी हो कि हम लाइट के हैं और वहाँ से आये हैं । ब्रह्म से आये हैं तो वह तो लाइट का देश है, साइलेन्स का देश है, पवित्रता का देश है, तो ऐसे उस देश से हम आये हैं तो हमारे बोल, गुण, कर्म, स्वभाव अपने आप ही बदलेंगे, तो यह मत भूलो । ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार वह है जिसको पहली-पहली बात यह याद रहे, लोग किसी से झगड़ा भी करते हैं, बात भी करते हैं, किसी को टोकते हैं, कहते हैं – तू क्या समझता है अपने आपको ? तू कहीं ऊपर से उतरा है क्या ? तू भी इस दुनिया का है, हम भी इस दुनिया के हैं... तू कोई विशेष है क्या ? और हम क्या समझते हैं कि हम तो सचमुच में ऊपर से उतरे हैं । वह कह देते हैं ऊपर से उतरा है, ऊपर कहाँ है ? क्या है ? कैसे उतरना होता है ? वह उनको पता नहीं है । तो यह अगर हमको याद रहे कि इस दुनिया में तो हम मुसाफिर हैं । यह सराय है, मुसाफिरखाना है । और हम तो यहाँ से जाने वाले हैं । इस माया नगरी में, पुरानी दुनिया में हम गुप्त वेश में जो सतयुगी स्वराज्य है उसको स्थापन करने के लिए आये हैं तो मन की स्थिति कैसी रहेगी ? वैराग्य, त्याग अपने आप ही आयेगा । योग अपना स्वयं ही लगेगा, देह से न्यारापन स्वतः ही आयेगा । तो इस एक बात को याद रखने से कि हम ब्रह्मा बाबा के बच्चे हैं और ब्रह्मा बाबा ही के लिए जब कहा गया कि वह ब्रह्म से पधारे, तो हम भी वहाँ से पधारी हुई आत्मार्ये हैं, जो कि लाइट के देश से आई हैं और स्वयं लाइट और माइट के स्वरूप हैं तो निराकारी स्थिति स्वयं हो जायेगी ।

फिर ब्रह्मा बाबा तो ब्राह्मणादि का पिता है । ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुए हैं तो सारे ब्राह्मणों के आदि पिता कौन है ? प्रजापिता कौन है ? ब्रह्मा बाबा । तो ब्राह्मणों के जो श्रेष्ठ, जो परम आदरणीय हैं वह ब्रह्मा बाबा है । तो जब कोई अपने को ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाता है तो यह उपाधि, यह डिग्री जो है, इससे श्रेष्ठ और क्या हो सकती है ? जो सारी दुनिया को रचने वाले ब्रह्मा हैं उनके हम कुमार-कुमारियाँ



हैं, जिसको बाबा कहते हैं आप साहबजादे, साहबजादियाँ हैं, अपने को साधारण मत समझो। तो जब साहबजादे, साहबजादियाँ हैं तो हमारे कर्म कैसे होने चाहिए? चलन कैसी होनी चाहिए? रॉयल। हमें कुल के हिसाब से चलना चाहिए, जैसे राजकुमार कैसे चलेगा? वह समझेगा मैं राजकुल का हूँ।

जो कोई पढ़ा-लिखा, अच्छे कुल का व्यक्ति होगा वह कोई भी काम करेगा सोच-समझकर अपने कुल की मर्यादा का ख्याल करके करेगा। तो हम ब्रह्मा की सन्तान हैं, ब्रह्मा सारी सृष्टि के आदि पिता रचयिता हैं और वह ब्राह्मणों के भी आदि पिता हैं। और स्वयं शिवबाबा ब्रह्मा के मुख से कहते हैं कि आप साहबजादे और साहबजादियाँ हैं तो हमारे कर्म कैसे होने चाहिए? तो ब्रह्माकुमारी को हमेशा यह सोचना चाहिए कि सारी दुनिया की निगाह हमारे ऊपर है। सफेद कपड़ा हमने पहन लिया और अब यह दुनिया में मशहूर हो गया कि जिसने पूर्ण रूप से ऐसे सफेद वस्त्र धारण किये हो, बैज भी लगाया हुआ हो तो लोग समझ जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। तो उनका बोल, उनका उठना, बैठना, बात करने का तरीका कैसा होना चाहिए? हमने कितनी बड़ी जिम्मेवारी ले ली है, यह कितना बड़ा टाइटल हमें मिला है, उसमें ना केवल हमें अपने सौभाग्य पर गर्व होना चाहिए कि इतनी जल्दी हमको इतना ऊँचा पद मिल गया। कोई प्रेजीडेंट बनता है, वाइस प्रेजीडेंट बनता है, सारी आयु राजनीति में गुजार देता है, फिर भी बनता है कि नहीं बनता है और बाबा ने हमको फौरन ही ब्रह्माकुमारी बना दिया, ब्रह्माकुमार बना दिया, यह टाइटल दे दिया। जो विश्व के शिरोमणी आत्मायें हैं, जो हीरो पार्टधारी हैं, वह टाइटल हमको दे दिया - यह कितनी बड़ी बात है। तो बाबा ने कोई ट्रस्ट करके आपमें विश्वास रखके, आपके ऊपर एतबार करके कि आप ऐसी आत्मायें हैं तभी आप यहाँ आये हैं, यह बनने के लिए दावा आपने लगाया है। तो बाबा ने जिसमें विश्वास किया है उसको अगर हम न निभायें, तो विश्वास तोड़ने को क्या कहा जाता है - विश्वासघात।

विश्वासघात तो बहुत बड़ा पाप होता है। कोई हममें विश्वास करे, कोई कहता है यह बात आपको बता रही हूँ, किसी को बताना मत, इसमें मेरे जीवन का सवाल है, यह बहुत खतरा है, मैं बदनाम हो जाऊँगी, लेकिन अपने मन को हल्का करने



के लिए तुम्हें बताया है इसलिए अपने तक ही रखना क्योंकि तुम्हारे में मेरा विश्वास है, तुम्हारे से राय करने के लिए मैंने कहा है और अगर वह विश्वासघात कर दे, इधर-उधर 20-25, 40-50 व्यक्तियों को बता दे तो आपको कैसा लगेगा, यह तो विश्वासघाती आदमी है। बुरा लगेगा ना। तो स्वयं भगवान ने जिनमें विश्वास किया हो, वह तो हो गई मनुष्य की बात, स्वयं भगवान ने जिसमें विश्वास किया हो.. लोग तो कहते हैं भगवान पर भरोसा करो, भगवान पर विश्वास करो यह भी बहुत बड़ी बात है। फेथ इन गॉड, गॉड में फेथ रखना चाहिए और गॉड ने आपमें फेथ रख दिया, यह तो कितनी बड़ी बात हो गई। बजाए इसके कि इन्सान भगवान में फेथ रखे, भगवान ने एक इन्सान में फेथ रख दिया और अगर वह भी इन्सान तोड़ दे तो क्या कहेंगे उसको ? अति निकृष्ट, जो अपनी तकदीर को लकीर लगाये, अपने सौभाग्य को लात मारे। अपने पाँवों को अपनी कुल्हाड़ी से काँटे, जिस डाल पर बैठा हो उसी को काँट दे, तो यह कितनी बड़ी जिम्मेवारी है। याद रखिए कि भगवान का यह टाइटल जो सर्व श्रेष्ठ मिला है उसे हमें तोड़ निभाना है, हमें इसको कायम रखना है।

वरना आप सोचिए अगर कोई एक नाव चलाने वाला नाविक हो, केवट हो और उसको पानी से डर लगे तो आप कहेंगे भाई तू भी अजीब आदमी है, पानी से डरता है! चला ली तूने नांव, हमको भी डुबोयेगा, खुद भी डूबेगा। अगर कोई बन्दूक चलाने वाला सिपाई हो, जब भी बन्दूक की आवाज़ कहीं से आयें बन्दूक चल रही हो, कहीं दूर आवाज़ आये और वह काँपने लगे, तो आप क्या समझोगे ? यह भी अजीब सिपाही है, यह तो हमें ही मरवा डालेगा, यह हमारा रक्षक क्या होगा ?

तो जो व्यक्ति जैसा है अगर वह वैसा कर्म न करें, उससे भिन्न, उससे विपरीत अगर उसके गुण, कर्म और स्वभाव हो तो वह उसके फिट नहीं होता। वह गलत टाइप का व्यक्ति है। तो बाबा ने जब हमको चुना है यह समझ करके हम इस बात को धारण करेंगे। तो हमें अपनी फिटनेस को ठीक रखना है। अपने उस कर्तव्य, जिम्मेवारी को पूरी तरह से निभाना है, यह नहीं कि हम भी काँपना शुरू कर दें कि यह कैसे हो सकता है, यह हमारे लिए पॉसिबल ही नहीं है। लेकिन जब पॉसिबल



है तभी तो बाबा ने कहा है, आदि-मध्य-अन्त को जानने वाला जो त्रिकालदर्शी बाप है। स्वयं उसने यह टाइल हमें दिया है तो फिर हमें कितना ख्याल रखना चाहिए! अभी हम साहबजादे, साहबजादियाँ हैं और भविष्य में होने वाले शहजादियाँ और शहजादे हैं। भविष्य का ख्याल आना चाहिए, साथ-साथ जो सतयुग में देवी-देवता बनने वाले और स्वराज्य को धारण करने वाले मोर मुकुटधारी हैं या रत्नजड़ित ताज धारण करने वाले तख्त पर बैठने वाले हैं। अभी ब्रह्माकुमार कुमारी बनते हैं, उसके बाद वह विश्व के महाराज कुमार और महाराज कुमारियाँ बनते हैं, तो यह हमारा भविष्य है।

वर्तमान पर हमारा भविष्य है, अगर कोई के लक्षण ठीक हैं तो वह विश्व के राज्य का अधिकारी बनेगा। अगर वह यहाँ ही फेल हो गया तो भविष्य में राज्य कहाँ से मिलेगा? कई लोग यह सोचते हैं कि हम भविष्य में क्या बनेंगे? यह कोई हमें बताये। कभी बाबा से बोलने का हमें मौका मिले तो हम बाबा से पूछें कि बाबा हम पहले लक्ष्मी-नारायण के टाइम आयेगे, दूसरे या तीसरे में आयेगे, उनके परिवार में नज़दीक होंगे या क्या बनेंगे? थोड़ा बहुत तो हरेक को शौक होता है कि अगर हमें स्पष्ट रूप से पता लग जाये कि हम कहाँ आयेगे, कैसे आयेगे, क्या बनेंगे तो अच्छा होगा। लेकिन लॉ यह है कि 'जैसा करोगे वैसा भरोगे', 'जैसा बोओगे वैसा काटोगे' और बोया जाता है आज और काटा जाता है भविष्य में।

अगर आप हो ही ठीक नहीं तो बनोगे क्या? तो इस प्रकार के प्रश्न पूछना ही फालतू है। जो हो उसके अनुसार बनोगे। कर्म का विधान है। कर्म की गति से हमारी सद्गति होगी। अगर अभी हमारे लक्षण ठीक नहीं हैं तो भविष्य भी हमारा ठीक नहीं है तो कितनी बड़ी बात है। तो हमारी जो प्रैक्टिकल लाइफ है वह इतनी निर्मल हो, इतनी शक्तिशाली हो, ज्ञान की हमारे में इतनी स्पिंट (धारणा) हो। योग की इतनी अपने में शक्ति हो, दिव्य गुण हममें इतने भरपूर हों जो उसका दूसरों पर प्रभाव पड़े। तब वह बदलेंगे। जो वचन वह बोलेगी वह इतने शक्तिशाली होंगे जैसे बाबा कहते हैं जौहर भरी तलवार जैसे होती है। वह दूसरे को लग जायें, असर करें। तो ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी बनना माना कोई सफेद वस्त्र पहन लेना या नाम लिख लेना



या सेन्टर पर रहने की बात नहीं है लेकिन जो हमारी प्रैक्टिकल लाइफ है वह शक्तिरूपा हो, वह पवित्ररूपा हो।

पवित्रता और रूहानी शक्ति अगर नहीं है तो ब्रह्माकुमारी सिर्फ नाम की हो गई। वह जैसे एक आर्टीफिशल गोल्ड होता है, एक रीयल गोल्ड होता है। तो वह उसका मूल्य क्या हुआ ? तो अपने में यह जज करो कि मुझ में कितनी रूहानी शक्ति भरी है ? वह रूहानी शक्ति भरने की परीक्षा कैसे करोगे, कैसे मालूम पड़ेगा कि प्युरिटी की पाँवर कितनी आयी है ? मुझ में कोई अशुद्ध संकल्प तो नहीं आते ? कोई देहधारियों के प्रति आकर्षण तो नहीं होता ? कोई किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष तो पैदा नहीं होता ? कोई मन में संसार के प्रति पहनने की, खाने की, घूमने की किसी भी प्रकार की इच्छायें तो नहीं हैं ? अगर यह सब चिह्न ठीक हैं, जैसे डॉक्टर भी जब जाँच करता है तो जबान देखता है, नब्ज देखता है, थर्मामीटर लगाता है, हाथ पर स्टेथसकोप रखके लगाके देखता है और ब्लड टेस्ट करता है, जो भी टेस्ट करना हो, टेस्ट करके कहता है आपको फलानी बीमारी है। तो हम लोग भी अपनी पवित्रता की और योग की शक्ति को चेक करें उसकी एक परख तो यह होगी कि उसका दूसरों पर प्रभाव पड़ेगा।

बाबा कहते हैं अपने स्वयं डा. बनो चेक करो अपने को, तो क्या चेंकिंग करेंगे ? कि पवित्रता कहाँ तक है ? बहुत दफा बाबा कहते Un touched Kumari जिसको किसी पुरुष ने हाथ न लगाया हो। ऐसी निर्मल, स्वच्छ.. किसी को उसकी देह के प्रति ऐसा आकर्षण न हुआ हो। इतनी पवित्रता हो कि दूसरे के मन में भी उसको देखकर कोई अपवित्र संकल्प न आये। गन्दे से गन्दा आदमी हो, बिल्कुल संसार में बदनाम आदमी, बिल्कुल ही दुःचरित्र आदमी वह भी अगर सामने आये, देखे तो वह भी समझे कि यह देवी है, शक्ति है। उसका भी विचार बदल जाये, ऐसी पवित्रता हमारी हो कि उसकी अपवित्रता को नष्ट कर दे। हमारी शक्ति इतनी तेज हो कि उसको ध्वस्त कर दे। हमारी पवित्रता का ऐसा प्रभाव पड़े कि स्वयं उसमें भी परिवर्तन आ जाये, यह हमारी पवित्रता की स्टेज हो। और योग की शक्ति हमारी ऐसी हो कि उससे उसके मन को भी शान्ति का अनुभव हो और उसके मन में यह संकल्प आये



कि यह तो देवी है, शक्ति है। अगर ऐसा अभ्यास आपका होता जायेगा तो उसको लाइट का साक्षात्कार होगा।

मैं आत्मा लाइट हूँ वह तो ठीक है लेकिन दूसरे को भी यह अनुभव होने लगेगा कि यह लाइट है, इसके आस-पास लाइट दिखाई दे रही है जिसको औरा या प्रभामण्डल कहते हैं, वह दिखाई देगा। योगियों के सिर के पीछे लाइट दिखाते हैं ना, तो ऐसे दूसरे को भी लाइट दिखाई देगी। चेहरे को देखने के बजाए उस लाइट को देखने लगेगा, यह क्या है चेहरा गुम हो जायेगा और हल्का-हल्का सा झिलमिल-झिलमिल प्रकाश उसे मालूम पड़ेगा।

तो ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी वह जो ब्रह्मा की सन्तान है। मुखवंशी है। मुख से पैदा हुए हैं, ब्राह्मण के लिए कहा जाता है जो यज्ञ करे और कराये, पढ़े और पढ़ाये। ब्राह्मण वह है जो दान दे और ले और यज्ञ पवीत (जनेऊ) पहनें और पहनाये। यह ब्राह्मणों के कर्म प्रसिद्ध है। परन्तु यह स्थूल की बात नहीं है, अभी हम तो इसके अर्थ स्वरूप में टिकते हैं। यज्ञ करें और यज्ञ करायें, दान दें और दान लें, पढ़ें और पढ़ाये, क्या पढ़े और क्या पढ़ायें? यह जो ईश्वरीय पढ़ाई है, ईश्वरीय पढ़ाई रोज़ कायदे से पढ़ें। गॉडली स्टूडेंट लाइफ इज बेस्ट, जिसको बाबा कहते कि किसी भी दिन मुरली मिस न हो। मुरली सुनने के बाद फिर उसका स्वाध्याय करें। स्वयं उस पर मनन-चिन्तन करें। दूसरा अगर किसी ब्रह्माकुमारी ने सारे दिन में किसी को भी ज्ञान नहीं दिया यह तो बात बनी नहीं। जैसे कि स्नान ही नहीं किया। कोई स्नान न करे, उसको कैसे लगता है। वस्त्र चेंज न करे और स्नान न करे तब तक भोजन खाने का मन नहीं करेगा। तो स्थूल सेवाओं के साथ-साथ मुरलीधर भी जरूर बनो।

बाबा ने जो मुरली सुनाई जब तक वह आप रिपीट नहीं करोगे, तो वह आपकी बुद्धि में धारण नहीं होगी। जैसे दीप से दीप जगना चाहिए वैसे आपने जो सुना है वह सुनाओ, उसको सुनाये बिना रिफ्रेश नहीं होंगे। अगर हमारे मन में यह दृढ़ संकल्प हो कि हमें किसी न किसी को ज्ञान सुनाना ही है, यह ब्राह्मण का कर्तव्य है। बाबा के वचन जो सुने हैं, बाबा ने जो हम पर एहसान किये हैं, जो हमें धन दिया है यह बँटना है, यह केवल अपने तक सीमित नहीं रखना है तो कोई ना कोई साधन मिल जाता है। अच्छा - ओम् शान्ति।



बाप, टीचर, और सदगुरु से पूरा वर्सा कैसे लें?

अब जहाँ तक पूरा वर्सा लेने की बात है, ऐसे तो सिर्फ बाप से हरेक बच्चे को वर्सा मिलता ही है, हर कोई हक्कदार है। और आम तौर से कानून तो यही है कि बाप हरेक बच्चे को बराबर का वर्सा देता है, अगर नहीं देता है तो लोग भी उसको कहते हैं कि इस बच्चे को इसने कम दिया है। बच्चे की भी शिकायत रहती है, उस पिता के प्रति। अगर वह पूरा वर्सा न दे, एक को अधिक दे, दूसरे को कम दे तो वह भी कहता है कि पिताजी का मेरे से प्यार कम है - यह तो आप सब जानते ही हो।

तो क्या सिर्फ बाप से वर्से की बात है, केवल ऐसा नहीं है, अगर आप ऐसा समझते रहेंगे तो मेरे ख्याल में गफलत में रहेंगे, नुकसान कर बैठेंगे। सिर्फ बाप से वर्से की बात नहीं है, संसार के जो लौकिक पिता हैं, उनसे यह अद्भुत है, न्यारे प्रकार का पिता है। यह सदगुरु भी है, शिक्षक भी है। इनके एक साथ तीनों पार्ट चलते हैं इसलिए वर्सा तीनों से लेना है। यह कहावत मशहूर है कि बाप से वर्सा मिलता है।

लेकिन सदगुरु से भी वर्सा मिलता है, यह जो संन्यासी लोग हैं, यह किससे वर्सा लेते हैं? जो इनका गुरु होता है उससे वर्सा लेते हैं। जो भी कुछ इनको मिलता है, जिस मुक्ति की यह कोशिश करते हैं या जो महान बनने का यत्न करते हैं। भक्ति में आगे बढ़ने का जो पुरुषार्थ करते हैं, वह समझते हैं कि गुरु कृपा से होता है। वह गुरु शिष्यों को देता है।

ऐसे ही जो टीचर है, टीचर्स से भी वर्सा मिलता है, अगर आपको यह तीनों ख्याल में रहेंगे तभी पूरा वर्सा ले पायेंगे, वरना पूरा वर्सा नहीं ले पायेंगे। सिर्फ अगर



यह सोचेंगे कि बाप से वर्सा मिलता है तो फिर तीनों वर्सें नहीं ले पायेंगे। कई ब्रह्माकुमारियाँ, ब्रह्माकुमार ज्ञान में ऐसे हैं जिनका जो वरिष्ठ बहन भाई हैं उनके साथ बड़ा नजदीक का सम्बन्ध है, उनके बड़े लाड़ले हैं और जो उन पर जिम्मेवारियाँ भी रखी जाती है वह कार्य भी करते हैं। लेकिन योग लगाने में, मुरली पढ़ने में, अपना पुरुषार्थ करने में थोड़ा बहुत अन्य लोगों से वह कुछ मात्रा में कम ध्यान देते हैं। तो आप खुद ही महसूस करते होंगे कि फलानी बहन या फलाना बड़े भाई के नजदीक है लेकिन इनका जीवन तो कुछ और टाइप का है, ऐसा आपको देखने में आता होगा। तो आप क्या समझते हैं कि उनको पूरा वर्सा मिल जायेगा? पूरा वर्सा तो नहीं मिलेगा। भाग्य से तो मिल जायेगा क्योंकि वह कुमारियाँ और कुमार बन गये हैं, बाप तो हरेक को वर्सा देने आये ही हैं। मुक्ति का वर्सा तो हरेक को मिल जायेगा, लेकिन जीवनमुक्ति रूपी जो वर्सा है वह तो सबको नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मिलेगा।

परमधाम में या ब्रह्मलोक में अपने उस पारलौकिक घर में लौटने की जहाँ तक बात है, वह तो बाबा ने सबसे वायदा किया हुआ है कि मैं आपको ले चलूँगा। शान्ति तो मिल जायेगी और जैसे तैसे जो बाप के गुण हैं थोड़े बहुत वह भी आ जायेंगे, लेकिन बाकी जो सारी प्राप्तियाँ हैं वह तो नहीं होगी। कई लोग ज्ञान में बहुत तेज है, उनको कहो कल्प की आयु ५ हजार वर्ष है, वह समझाने में बहुत निपुण है। गीता का भगवान कौन है? यह बड़ा जटिल विषय है, उसको वह सुगमता से समझा देंगे। कोई वाणी में से प्रश्न पूछो उत्तर ठीक दे देंगे, भाषण करना हो बड़ा अच्छा करेंगे लेकिन सहनशीलता नहीं है, सेन्सेटिव हैं, थोड़ी-थोड़ी बात में महसूस कर जाते हैं, रो पड़ते हैं। तो आपको आश्चर्य होता होगा कि अभी तो सहनशीलता पर अच्छा भाषण किया था और स्वयं मे तो सहनशीलता है ही नहीं। तो भाषण करने में वो प्रवीण हैं लेकिन वह गुण तो धारण हुआ नहीं है। और दूसरों को कहेंगे सब सेवा करनी चाहिए, सेवा तो एक समान है, मार्क्स एक जैसे मिलते हैं, अगर उनको कहो कि आज आप जरा झाड़ू लगा दो, तो समझेंगे मैं तो भाषण करने वाली हूँ, सीनियर बहन हूँ, मैं क्यों झाड़ू लगा दूँ, यह काम कोई दूसरा करे।

अगर सब सेवा एक समान है और हमें तन-मन-धन से सेवा करनी है, और



हमको यह बताया जाता है कि साकार रूप में बाबा इतने वृद्ध होने के बावजूद भी वह शारीरिक रूप से भी सेवा करते थे। और यह कहते थे कि मेरा तन भी सफल हो, यह भी सेवा में लगे, दधीचि ऋषि के समान हड्डी-हड्डी सेवा में लगे। और यह कुछ स्थूल काम तो करने को तैयार नहीं है, यह समझती है कि यह घटिया काम है। केवल भाषण करना, एस.एम.एल. कोर्स कराना या योग शिविर कराना या शिवरात्रि-जन्माष्टमी पर लेक्चर झाड़ देना - यही एक बहुत बड़ी सेवा है। कोई वी.आई.पी. है उसको प्रदर्शनी दिखा देना तो इसका भाव कुछ और है तो उसको वह धारण तो हुआ नहीं। इसका मतलब क्या हुआ ? इसको भी पूरा वर्सा मिलेगा नहीं।

अब तीनों से पूरा वर्सा किसको मिलेगा ? यह समझने की जरूरत है लेकिन पहले-पहले एक महत्वपूर्ण बात बुद्धि में अच्छी तरह से बिठा दीजिए सिर्फ बाप से वर्सा नहीं मिलेगा बल्कि टीचर और सदगुरु से भी मिलेगा, इस प्वाइन्ट को मिस नहीं करना। अगर इस प्वाइन्ट को मिस किया तो नुकसान हो जायेगा। दूसरी बात यह है कि केवल बाप से नहीं मिलेगा, बापदादा से मिलेगा। बाबा आम तौर से मुरली में कहते हैं कि ब्रह्मा बाबा से आपको क्या मिलेगा ? इसके पास है ही क्या ? मैं आप बच्चों को क्या दूंगा। मुझे खुद ही शिवबाबा दे रहा है, तो बाबा अपने आपको गुप्त रखते हैं, छिपाते हैं। कभी भी बाबा अपनी महिमा तो करते नहीं, अपनी प्रत्यक्षता तो करते नहीं। और हमेशा शिवबाबा के गुणगान करते हैं कि बच्चे योग उससे लगाओ मुझे क्यों याद करते हो। मैं तो देहधारी हूँ, मैं तो आपकी तरह से एक मनुष्य के समान हूँ. ऐसा कहते हैं लेकिन कुछ वर्सा ऐसा है जो ब्रह्मा बाबा से मिलेगा। बाबा तो वह भी है, शिवबाबा भी बाबा है, ब्रह्मा बाबा भी बाबा है तो बाप और दादा दोनों से वर्सा मिलेगा। तो यह बात मत भूलना, यह न सोच लेना कि शिवबाबा से तो मेरा कनेक्शन है, ब्रह्माबाबा से क्या है, वह भी तो एक मनुष्य था। ठीक है, उसने अच्छा पुरुषार्थ कर लिया और नम्बरवन में चला गया लेकिन परमात्मा एक शिव ही है।

परमात्मा एक शिव जरूर है लेकिन क्या सारे कल्प में कोई और ऐसी आत्मा मनुष्य सृष्टि में है, जो इतना समय तक अव्यक्तधाम में बाबा के अंग-संग रहे, यह कम बात है ? शिवबाबा जिसको अपने साथ रखे। हम लोग तो शिवबाबा को यहाँ



याद करते हैं और शिवबाबा ने उस ब्रह्मा बाबा को अपने साथ ही रखा हुआ है अव्यक्त धाम में। सन् 1969 से अभी इतने वर्ष तक शिवबाबा के अंग-संग कोई रहे, यह छोटी बात नहीं है। कौन किसको साथ रखता है, अगर कोई किसी को पसन्द न हो, किसी में कोई विशेषता और गुण न हो या कुछ अच्छे लक्षण न हो तो क्यों रखेगा और वह भी शिवबाबा जो सम्पूर्ण चाहता है, जो परफेक्ट है वह उसको ही रखेगा जिसमें कुछ ऐसी सुगंधी होगी, जिसमें ऐसे कुछ गुण या ऐसे कर्तव्य होंगे, वह ऐसी विशेष आत्मा होगी। सारी आत्मा में से एक ही आत्मा ऐसी है। पुरुषार्थ तो हम लोग भी कर रहे हैं और बहन-भाई भी कर रहे हैं और किसी का ड्रामा में यह पार्ट तो है ही नहीं कि वह बाबा के अंग-संग इतना समय तक रहे। अव्यक्त रूप बनकर सारी सृष्टि को ऊपर से वह लाइट और माइट का सकाश दे। स्वयं भी जाके आत्माओं की जगह-जगह पर सेवा करे - यह तो बहुत ही अद्भुत बात है। लोगों को तो पता ही नहीं कि ऐसा भी योग कोई होता है जिससे कि किसी को ऐसी भी सिद्धि प्राप्त हो गई।

परमधाम में अगर हम जायेंगे, शिवबाबा के साथ रहेंगे, वहाँ तो वह भी मौनी साधू है, हम भी मौनी साधू है, शिवबाबा के साथ बातचीत तो कोई होगी नहीं। वह भी बैठा हुआ है, हम भी बैठे हुए हैं। एक दूसरे को देख रहे हैं, क्या फायदा उसका? कुछ लेन-देन नहीं, कुछ आदान-प्रदान नहीं, कुछ मेल-मिलन नहीं। वहाँ पर तो जैसे निद्रा की अवस्था है। कोई एक्टिविटी तो है ही नहीं। तो यह शिवबाबा और ब्रह्माबाबा का ऐसा मिलन आप सोचिए कि इतने वर्ष तक अंग-संग रहे, तो वह नजदीक होने का ही जो प्रभाव पड़ता है, शिवबाबा जो ऑलमाइटी (सर्वशक्तिवान) है, जो पूर्ण प्रकाश स्वरूप है, सम्पूर्ण है, परफेक्ट है। और ब्रह्मा बाबा भी इस देह के लिमीटेशन से, अपने कर्मों और संस्कारों के लिमीटेशन से निकलकर, इस सांसारिक झंझट और वातावरण से निकलकर अव्यक्त लाइट का रूप (शरीर) धारण करके वह शिवबाबा के साथ है, उसको शिवबाबा की जो सकाश या लाइट और माइट मिलेगी, शिवबाबा क्या करता है? कैसे करता है? क्यों करता है? बातचीत होती होगी, देखते होंगे मिलते होंगे - यह कोई कम बात है?



ब्रह्मा बाबा तो यही कहते हैं, यह तो किसी काम का नहीं, यह तो गाँव का छोरा था। तो ब्रह्मा बाबा क्या है? अगर यह आपको मालूम नहीं है तो आपको ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाने का वह नशा भी आयेगा नहीं, वह खुमारी नहीं चढ़ेगी, किसकी बच्ची हैं आप। अगर आपको यह मालूम है जो शिवबाबा के अंग-संग रहते हैं और जिन्होंने थोड़े से समय में इतना पुरुषार्थ करके इतना ऊँचा पद प्राप्त कर लिया। 'ब्रह्मा वन्दे जगद्गुरु' यह शास्त्रों में लिखा है। यह जगद्गुरु तो बाद में हुए जब शंकराचार्य आये तो उनको वह उपाधी मिली, उससे पहले तो सब शास्त्रों में यही लिखा है 'ब्रह्मा वन्दे जगद्गुरु'। सारे जगत् को ज्ञान तो ब्रह्मा से मिलता है, चाहे वह अभी अव्यक्त रूप में मिले, चाहे वह साकार रूप में मिले तो सारे जगत् का कोई गुरु है, सारे जगत् का जो वन्दनीय है, गुरु है वह सद्गुरु शिवबाबा है लेकिन ब्रह्मा के द्वारा है। ब्रह्मा बाबा के बहुत से पर्यायवाची नाम हैं, शब्द है ब्रह्मा को 'भाग्य-विधाता' कहा जाता है। बिगड़ी को बनाने वाला कहा जाता है। सृष्टि का रचयिता ब्रह्मा बाबा है, अनेक उपाधियाँ, अनेक नाम ब्रह्मा को दिये जाते हैं तो जो सृष्टि का रचयिता है, जो हरेक के भाग्य की रेखा लिखता है। लोग कई दफा कहते हैं – अरे भाई, मैं क्या करूँ, मेरी किस्मत ऐसी है, जिसने संसार को पैदा किया उसने मेरी हस्तरेखा ऐसी बना दी है तो मैं क्या करूँ, मेरे मस्तक पर उसने लिख दिया, अब मैं उसको मिटाऊँ कैसे? तो ब्रह्मा के लिए हमेशा यह कहते हैं। तो वह ब्रह्माबाबा कोई कम है, उसको तो भाग्यविधाता कहा जाता है। अगर आप ब्रह्मा बाबा के निकट हैं, आपने उनके मन को जीत लिया, उनके दिल रूपी तख्त पर आप बैठ गये हैं, ब्रह्मा बाबा को आप प्यारे लगते हैं, आपका बेड़ा पार है। आपकी किस्मत बनी बनाई है। कोई भी आपको हिला नहीं सकता, अंगुली भी लगा नहीं सकता, हाथ नहीं उठा सकता-यह कोई कम बात नहीं है। ब्रह्मा बाबा कौन है? उसको समझने की कोशिश कीजिए, यह मत समझिये कि भाई वह भी तो दो हाथ, दो पाँव, दो कान वाले व्यक्ति हैं, हमारी तरह से एक मनुष्य है। मनुष्य-मनुष्य में भी अन्तर है, कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली.. बहुत फर्क होता है। तो ब्रह्मा बाबा कहाँ और दूसरे आजके मनुष्य कहाँ? कोई अन्तर भी समझने की कोशिश करनी चाहिए।



तो अगर उस ब्रह्माबाबा के दिल पर आप नहीं चढ़े, उसके नजदीक आप नहीं आये तो मैं 'ब्रह्माकुमार-कुमारी' हूँ यह आपके मन में कभी गर्व नहीं हुआ होगा और न कभी हो सकता है। वह कहते हैं "गर्व से बोलो - हम भारतवासी है" बहुत से लोगों को तो भारत का महत्व ही नहीं मालूम। बाबा कहते थे कि भारत की महिमा करो, जहाँ भगवान का अवतरण हुआ, जहाँ ब्रह्मा हुए, जहाँ सरस्वती हुई, जहाँ लक्ष्मी-नारायण हुए ऐसे गिनते जाइये, वर्णन करते जाइये, है कोई संसार में ऐसा देश ? तो जैसे भारत की बात है उससे अधिक महत्वपूर्ण बात ब्रह्मा की है कि ब्रह्मा कौन है ? जब आपको यह याद रहेगा कि उसने मुझे कुमार कुमारी के नाम से एक्सेप्ट किया है, मैं उसकी कुमारी, उसका कुमार हूँ तो आपके संस्कार इतने जल्दी तेज रफ्तार से बदलेंगे कि बात मत पूछिये। आपके मन में एक खुमारी होगी, खुशी होगी। अभी 'ब्रह्माकुमारी' तो आप हैं, 'ब्रह्माखुमारी' और हो जायेगी। कुमारी के साथ खुमारी (नशा) भी हो जायेगी।

तो वर्सा शिवबाबा से भी लेना है, वर्सा ब्रह्मा बाबा से भी लेना है, और वर्सा पिता के रूप से भी लेना है, शिक्षक के रूप से भी लेना है, सदगुरु के रूप से भी लेना है - अब आप यह सोचिए कि पिता के रूप से वर्सा कैसे मिलता है ? इन सबसे अलग-अलग वर्से कैसे मिलेंगे ? पूरा वर्सा जब आप लेने की कोशिश करते हैं, मिसाल के तौर से टीचर है, आप यह देखिए टीचर से पूरा वर्सा कौन लेता है ? पहली बात यह है कि जो रोज क्लास में जाता है और टीचर से थोड़ा पहले क्लास में पहुँचता है और जो होमवर्क उसको मिलता है कि यह घर से काम करके लाना, कल दिखाना मुझे। जो यह नहीं करता है, जो रिवाइज नहीं करता है, जो प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता है, जो परीक्षा में फेल होता है - क्या वह शिक्षक का वर्सा ले सकता है ? तो शिक्षक का वर्सा वह ले सकता है, जो पहले अटेन्डेन्स में रेग्युलर हो और अटेन्शन हो, पूरी स्टूडेंट लाइफ पर। मैं स्टूडेंट हूँ तो सबसे पहली बात कि शिक्षक और शिक्षार्थी/विद्यार्थी के साथ उनका सम्बन्ध कैसा होना चाहिए। जब क्लास में वह बैठता है, यह जो अदब है, कई लोग बैठते हैं, बाबा के सामने बैठते हैं, बाबा के चित्र के सामने शिवबाबा आये हुए होते हैं, उनके सामने ऐसे टांगे करके



बैठ जाते हैं। बूट-चप्पल पहनके और इस तरह से बैठ जाते हैं सामने पाँव करके, अब हम बाप के बच्चे हैं। बच्चे अगर बाप के सामने कैसे भी बैठ जाते हैं तो बाप परवाह नहीं करता है, वह समझता है बच्चा है इसको जैसे बैठने में सहूलियत है, कोई बात नहीं है, बैठ जाओ। अगर उसकी टांगों में कोई तकलीफ है और वह टांगे फैलाने में संकोच करता है तो बाप भी उसको कहता है कोई बात नहीं, ऐसे करो। वह तो उसको कंधे पर भी चढ़ा देता है।

लेकिन टीचर के आगे यह कोई अच्छे स्टूडेंट वा पढ़ाई का तरीका है? उनकी बुद्धि में वह विद्या जो आती है, वह विध्वंशकारी विद्या है। विनाश के तरफ ले जा रही है। जो ऐसे स्टूडेंट्स हैं उनमें से कई बहुत बुद्धिवान स्टूडेंट हैं और वह पढ़ाई में होशियार भी हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। जो शरारती स्टूडेंट होते हैं वह तो दुनिया के लिए पूरे मुसीबत हुसैन पैदा हुए हैं। टीचर कहेगा यह कब जायें। तो टीचर के प्रति स्टूडेंट का रिगार्ड कितना होना चाहिए? टीचर हमारे लिए वन्दनीय है, हम उनको नमस्कार करते हैं, नमो: नमः हमारे लिए। जो टीचर के प्रति इतना अदब नहीं रखता है, तो विद्या कैसे उसको प्राप्त होगी? विद्या के लिए कहा गया है जिसमें विनय हो उसको ही विद्या प्राप्त होती है तो जिसमें विनय (नम्रता) ही न हो, टीचर डांट देता या कुछ कह देता है तो उसमें अपना फायदा समझ करके चलना। जिसमें यह चीजें नहीं है वह तो पशु के समान मनुष्य है। तो वह हमें जो सिखाता है, वह तो हमें पशु से मनुष्य बनाता है, तभी तो उसमें मनुष्यता आती है। तो अगर यह हमारा भाव नहीं है कि हमारा टीचर है, इसके प्रति हमारा रिगार्ड क्या होना चाहिए? तो कैसे हम वर्सा धारण करेंगे!

पहले-पहले टीचर से वर्सा लेने का लक्षण है – रिगार्ड। उसके प्रति सन्मान, आदर भाव हो, उसके प्रति नम्रता हो, उदण्डता नहीं। और जो कुछ वह कहता है यह मेरे फायदे के लिए कहता है, मुझे सीखना है। मैं स्टूडेंट हूँ यह टीचर है। यह मुझे सिखाने वाला है, जो भी कहता है, मुझे उससे शिक्षा लेनी चाहिए। मैं विद्या प्राप्त करने वाला हूँ, यह विद्या देने वाला है। तो विद्या देने वाला जो हमारा शिक्षक है, उसके प्रति हमारे अन्दर यह भाव होने चाहिए।



दूसरा रेग्युलरिटी। कभी भी क्लास (मुरली) को मिस नहीं करना है। पढ़ाई एक तो होती है थ्योरी दूसरा होता है प्रैक्टिकल। तो शिक्षक से पूरा वर्सा वह स्टूडेंट लेगा जो रेग्यूलर के साथ-साथ पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन (ध्यान) देगा क्योंकि स्टूडेंट का काम ही है शिक्षा को प्राप्त करना। फिर अच्छा स्टूडेंट जो होगा वह होमवर्क करेगा, यह नहीं कहेगा कि आज मेरे घर में मेहमान आ गये थे, मैं उसी काम में बिजी था, मैंने लेसन लिखा वा रिवाइज नहीं किया, टाइम नहीं मिला। यह बहानेबाजी नहीं चलेगी। जो विद्यार्थी है वह अगर सुख से ऐश प्रस्थी से सोता रहे, वह विद्यार्थी हो नहीं सकता। पूरी मेहनत करनी पड़ेगी, यह विद्यार्थी जीवन मेहनत का जीवन है, पढ़ाई का जीवन है क्योंकि पढ़ाई पर अटेन्शन देना पड़ता है, जो पूरा अटेन्शन देंगे वही ऊँची पढ़ाई पढ़ेगे, दूसरे नहीं पढ़ पायेंगे। तो हम लोग सारे दिन में कितना पढ़ते हैं? सुबह में यही एक-आध घण्टा बस।

जो एक ही घण्टा पढ़ता हो उसको स्टूडेंट थोड़ेही कहा जाता है, वह तो ग्रन्थी है या कोई रामायणी है, कोई ग्रंथ पढ़ते, कोई रामायण पढ़ते या कोई गीता का पाठ करते हैं। आधा या एक घण्टा जो भी उनका नियम बना हुआ है, वह नेमीनाथ हैं। लेकिन स्टूडेंट माना जिसके पास कोई नोटबुक हो, कोई राइटिंग हो, उसके पास कई चीजें होती हैं जो भी उसको करना होता है। यह नहीं सुबह से लेकर कपड़े धोना, खाना बनाना, सफाई करना, खाना खाना, यह करना-वह करना सब कुछ करना लेकिन पढ़ाई कुछ नहीं पढ़ना, पढ़ ली सब। जो कल पढ़ी हुई थी, वह आज पढ़ी हुई है, जो आज पढ़ी हुई वही चलती रहेगी आगे, लेकिन आज नया हमने क्या पढ़ा? आज का पाठ क्या है? वह हमने पढ़ा? उसको रिवाइज तथा मनन किया? उस पर होमवर्क किया? बस, सुन लिया, आज का वरदान यह है, आज का स्लोगन यह है, नोट कर लिया कॉपी में। बस। फिनिश हो गया। कॉपी बन्द हुई। ओम् शान्ति। क्या यही स्टूडेंट लाइफ है? सुबह से शाम तक सब जबानी जमा खर्च है।

तो स्टूडेंट लाइफ हो और ज्ञानमय जीवन हो उसके लिए १. प्रतिदिन पढ़ना। २. जो टीचर जिस तरह से सिखाता है, बताता है उसको वैसे करना, उस तरीके से चलना - यह जरूरी है। तो यह टीचर से वर्सा लेने की बात है। सदगुरु से वर्सा



लेने के लिए:- 1. पूर्ण पवित्रता, रूहानियत। इसमें आध्यात्मिक अनुशासन होना चाहिए माना पूरा इन्द्रिय निग्रह चाहिए। 2. सेल्फ कंट्रोल। 3. श्रद्धा और विश्वास (फेथफुल नेस) हो। जो वह कहते हैं उसमें विश्वास और श्रद्धा तथा भावना को रखते हुए चलना - उन्हीं को गुरु पूरा वर्सा देगा। उसका गुण, कर्म, स्वभाव सब कल्याणकारी होगा, वो किसी के अकल्याण की बात सोचता ही नहीं। कल्याणकारी की आज्ञा का अगर हम पालन नहीं करेंगे तो क्या हमारा पूर्ण कल्याण होगा? अगर हमने 100 में से 80 आज्ञाओं का पालन किया, 20 आज्ञाओं का पालन नहीं किया तो हमारा 80 परसेन्ट कल्याण होगा। 20 परसेन्ट नहीं होगा, सीधी सी बात है, क्योंकि वह तो जो भी कहता है वह कल्याण के लिए ही कहता है, कल्याण के अलावा दूसरी कोई बात कहता ही नहीं जिसमें अकल्याण हो। मनुष्य तो कई दफा बात कोई कह देता है, एडवाइज़ (राय) दे देता है, बाद में कहता है मेरे से गलती हो गई थी। तो मनुष्य अपूर्ण है। तीनों कालों को जानता नहीं है। खुद वह जन्म-मरण में आने वाला होने के कारण संस्कारों के अपने वशीभूत है तो उसका ज्ञान कोई सम्पूर्ण तो है ही नहीं। सब विद्याओं का भण्डार तो है ही नहीं, किसी एक विद्या का भी नहीं तो सब विद्याओं का भण्डार होने की तो बात छोड़ दो। तो वह कैसे पूर्ण हमारा कल्याण कर सकेगा ? तो यह जो सद्गुरु है यह नाम ही सिद्ध करता है गुणवाचक है। देह के आधार पर नहीं है, यह गुण वाचक, कर्तव्य वाचक और स्वभाव वाचक है। उसके गुण, कर्तव्य और स्वभाव सबमें कल्याण ही समाया हुआ है। वह कल्याण स्वरूप ही है।

एक होता है मीठा, एक होता मिठास स्वरूप - जैसे केला, खजूर, खीर खाया तो मीठा लगेगा। लेकिन मिश्री क्या है? मिठास स्वरूप है। उसमें मिठास के अलावा और कुछ है ही नहीं।

तो परमात्मा भी कल्याण स्वरूप है। तीनों कालों में किसी भी क्षण मात्र में चाहे गुण से, चाहे कर्म से, चाहे स्वभाव से अकल्याण उसमें एक सुई की नोक बराबर भी नहीं है। किसी का सोचता ही नहीं, जो उसको ना मानता हो, गाली देता हो, निन्दा करता हो, विरोध करता हो - उसका भी वह कल्याण करता है। वह निन्दक-



नास्तिक...सबका कल्याण करता है।

आपने देखा होगा कई लोग भगवान को नहीं मानते हैं। बाबा कहता है - बच्चा कहाँ जायेगा, आखिर हट्टी तो एक ही है, यहीं आयेगा। इसको प्यार से चलाओ, धीरे-धीरे समझ जायेगा, सीख जायेगा। कल्याण तो इसका भी करना है। तो वह कल्याण स्वरूप है, उस कल्याण स्वरूप की आज्ञा को जो नहीं मानता उस जैसा महामूर्ख दुनिया में कोई नहीं। अगर महामूर्ख देखना है तो वह भी यहाँ देख लो, और अगर समझदार से समझदार देखना है, वह भी यहाँ देख लो। दुनिया की सारी वैराइटी आपको यहाँ से मिलेगी, दूसरे किसी जगह जाने की ज़रूरत ही नहीं है। तो सबसे बड़े महामूर्ख की व्याख्या वा परिभाषा क्या कहेंगे - जो परमात्मा की आज्ञा को ही नहीं मानता, जो पूर्ण कल्याणकारी है और वह कहता है मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए। दुनिया में तो लोग लेके कुछ देते हैं। डॉ. दवाई देता है, दवाई के पैसे लेता है। कोई टीचर हमको पढ़ाता है, गवर्नमेन्ट से उसको सेलरी (तनखा) मिलती है। दोस्त हमको कुछ फायदा पहुँचाता है, वक्त आने पर हमसे कुछ उम्मीद रखता है कि यह भी हमें मदद करेगा। सब लोग ऐवजे में कुछ ना कुछ चाहते हैं, यह तो कुछ भी नहीं चाहता और यह तो कहता है - मैं तुम्हें देने ही आया हूँ, मैं तो दाता हूँ। और इतना भरपूर देता है, अरे उसकी बात भी अगर हम नहीं मानते तो क्या कहेंगे ? कि उस जैसा महामूर्ख कोई नहीं है। देखना है तो वह देख लो।

तो सदगुरु का वर्सा किसको मिलेगा ? जो फेथफुल हो, पूरा ओबीडियन्ट हो। फेथफुल के दो मतलब होते हैं, एक तो जिसका फुल फेथ हो, जिसका भगवान में पूरा विश्वास हो। बाबा जो कहता है उसके ऊपर क्वेश्चन नहीं उठाना, वह ठीक है क्योंकि वह सत्य स्वरूप है। उसके कहने में कोई राज़ हो सकता है, हमारे समझने में कोई कमी-कसर हो सकती है, उसके बताने में कोई भाव हमसे क्लीयर न हुआ हो, यह हो सकता है लेकिन वह सत्य स्वरूप है। उसका वचन मिथ्या नहीं हो सकता है, अटल है इसलिए उसमें पूर्ण रूप से विश्वास रखना।

दूसरा जो वफादार हो, जो साथ न छोड़े, हमने उसके हाथ में अपना हाथ दे दिया और प्रण कर दिया, वचन कर दिया, व्रत ले लिया, हमने कसम खा ली, मन



में ठान लिया कि हम मर मिटेंगे लेकिन आपकी आज्ञा पर चल मिटेंगे। जो होगा वह हम करेंगे। कितने तूफान आयेंगे, कितनी मुश्किलें आयेगी, कोई भी मुशीबत आयेगी.. हम अपने वचन पर पाबन्द रहेंगे।

जब समर्पण समारोह होता है तब जो समर्पित होने वाली ब्रह्माकुमारी है उस समय वह यह कहती है कि आप जहाँ बिठायेगे, जो करायेगे, जो खिलायेगे-पिलायेगे इत्यादि-इत्यादि... पता नहीं कितनी सारी बातें कहती है, जब उसकी ट्रान्सफर करो तो कहते हैं सिर्फ मेरी ही ट्रान्सफर करते हो, पहले उसकी करो।

तो सदगुरु क्या देता है? मन्त्र देता है। गुरु के मन्त्र देने और साधना करने की विधि बताने की बात भारत में प्रसिद्ध है। कर्मों की गति बताता है।

कर्तव्य क्या है? अकर्तव्य क्या है - यह बताता है। और मन्त्र देता है। तो बाबा हमको मन्मनाभव का मन्त्र देता है।

सारा दिन मनुष्य कोई ना कोई को याद तो करता ही है। मन-बुद्धि उधर-उधर जाती तो है, तो उधर से मोड़कर सिर्फ शिवबाबा में लगाना है, इतना ही करना है तो यह गुरु का मन्त्र है। अब यह कितना टाइम हम करते हैं?

वह गुरुजी कहते हैं - तुम आज दो सौ मालायें फेरो या इतनी दफा मन्त्र लिखो - ओम्, ओम्, ओम् या राम, राम, राम... यह लिखो। कई तो ऐसे करते हैं कि ऐसा लिख कर, आटे की छोटी-छोटी गोलियाँ बना करके हरिद्वार के नदी में मछलियों को डाल आते हैं, यह भी एक तरीका अपनाते हैं। लेकिन इस संसार रूपी नदी में या सागर में जो मनुष्य रूपी मछलियाँ हैं, उनको ज्ञान डालो। तो यह शुरू यहाँ से हुआ कि तुम इतनी दफा लोगों को कम से कम इतना तो समझाओ, इतने लोगों को तुम समझाओ।

अभी मैं बाप हूँ, शिक्षक हूँ, सदगुरु हूँ। शिक्षा दे रहा हूँ, वर्सा दे रहा हूँ, नहीं मानोगे तो बाद में धर्मराजपुरी में आवोगे फिर कोई रिहायत नहीं होगी। अभी मैं रिहायत करूँगा, मार्क्स भी दूँगा, मदद भी करूँगा, गाइडेन्स भी दूँगा, कुछ कठिनाईयाँ आयेगी, उसमें सहयोग दूँगा। और अगर अभी नहीं मानोगे तो फिर मैं कहुँगा लगाओ इसको हंटर। इतना समझाने के बाद, सारी बात बताने के बाद भी



अगर समझ में नहीं आता है तो उसका नतीजा क्या होगा ? इससे सहज तो कोई भी नहीं बता सकता कि क्या करो ।

बाबा कहते हैं – यह योग प्रत्यक्ष फल देने वाला है । आप एक दिन भी अगर पूरी तरह से याद में रहके देखो, आपको कितनी खुशी, कितना आनन्द मिलता है, कितना हल्कापन महसूस होता है । देह से न्यारापन कितना लगता है । योगी जीवन की लाइफ ही क्या है ! आपको अनुभव होगा, प्रत्यक्षफल मिल जायेगा ।

तो सदगुरु से अगर वर्सा लेना है तो फेथफुल बनो, ओबीडियन्ट बनो और जो गुरु ने मन्त्र दिया है उस मन्त्र के अनुसार चलो । और क्या कर्तव्य, क्या अकर्तव्य है वह बताता है, क्या करो, क्या नहीं करो । खाना क्या खाओ, क्या न खाओ । कौनसी चीज पढ़ो, कौनसी चीज न पढ़ो । क्या देखो, क्या न देखो । कैसा संग करो, कैसा संग न करो । यह दिनभर की दिनचर्या कैसे रखो - यह सारी बातें बाबा ने हमें बताई हैं । झरमुई-झगमुई न करो । किसी की निन्दा-चुगली मत करो । नेगेटिव थिंकिंग मत करो ।

कहा जाता है गुरु की आज्ञा माना काल की आज्ञा, इसलिए गुरु की आज्ञा को कभी टालना नहीं चाहिए । तो भगवान ने इस रथ को ही क्यों चुना ? क्योंकि शुरू से ही ब्रह्मा बाबा में कुछ ऐसी योग्यताएँ थी जिसकी वजह से उस रथ को चुना । वह गुरु के आज्ञा को पूरा मानने वाले थे । तो शिवबाबा भी उसको चुनेगा जो पूरी आज्ञा पर चलने वाला हो । अगर ब्रह्मा ही पूरी आज्ञा पर नहीं चलेगा तो दूसरों को कैसे चलायेगा, उनको क्या बतायेगा ? तो ऐसे रथ को चुना ।

तो सदगुरु के रूप में अगर वर्सा लेना है तो एक तो कर्मों की श्रेष्ठता का और दूसरा योग की परम-सिद्धि का अभ्यास हो । मन हमारा एकाग्र हो जाये, लगन में मगन हो जायें । कर्मेन्द्रियों पर पूरा नियन्त्रण हो जाए । देह से न्यारा पन आ जाये, हमारे हर कर्म में अलौकिकता, रूहानियत आ जाये । जीवन के प्रति जो हमारा वैराग्य भाव होना चाहिए, वह वैराग्य और त्याग की भावना आ जाये - यह सदगुरु हमें सिखाता है । त्याग, वैराग्य, योग, कर्म की श्रेष्ठता और मन्त्र यह सब जो शिक्षा देता है, यह डिपार्टमेन्ट सदगुरु के रूप से हैं इस कारण से हम उसको सदगुरु कहते हैं ।

जैसे और गुरु यात्रा कराते हैं, शिवबाबा भी हमें यात्रा बताते हैं, यज्ञ कराते हैं ।



यज्ञ का क्या मतलब है? यज्ञ माना देना। दुनिया में जो भी यज्ञ, होम वा अग्निहोत्र करते हैं, जब हर थोड़े समय के बाद वह आहुति डालते हैं तो उसमें क्या कहते हैं - 'इदं अग्नाही धमनमं',... थोड़ी देर के बाद बोलेंगे यह अग्नि के लिए है, यह मेरे लिए नहीं है, यह मैंने अग्नि को समर्पित किया तो यह भगवान के लिए है मेरे लिए नहीं है। मेरा यह तन अब भगवान को समर्पित है। जैसे कपड़ा धोबी को दिया जाता है कि इसको धो डालो, जैसे भी चाहिए, जो भी इसको साबुन लगाना हो, कुछ भी डालना हो लेकिन इसको स्वच्छ कर दो, भट्टी में डालकर या सोटा मार कर जैसे भी चाहे इसको स्वच्छ बना दो।

तो बाबा कहते हैं कि यह बाबा धोबी भी है, जन्म-जन्मान्तर के लिए यह आत्मा के सारे मैल को धो डालता है लेकिन अगर आप समर्पित ही नहीं होंगे, अपने आपको बाबा के हवाले करेंगे ही नहीं। धोबी को कपड़ा ही नहीं देंगे तो वह भट्टी में डालेगा कैसे?

बाबा कहते थे अगर भट्टी में तुम्हें घर याद आया, अगर भट्टी में पुराना जीवन या पुराने संस्कार याद आये, फिर करो, क्योंकि यह भट्टी फेल हो गई। तो मन जो है, संकल्प जो हैं हमारे, याद जो हमारी है वह और कोई की न आये बल्कि भट्टी में एक शिवबाबा ही याद आयें, एक 'मैं' दूसरा 'वह', तीसरा न कोई - तब होगी भट्टी। तब स्टीम पैदा होगी और वह स्टीम हम पर असर करेगी। अगर सारी स्टीम ही निकल गई तो वह ठण्डे कपड़े क्या धुलेंगे? इसलिए अगर किसी को भट्टी में इस किसम की लौकिक बातें, कोई बातें वा कोई मित्र-सम्बन्धी, पुराना जीवन/विद्यार्थी जीवन, घर की कोई बात या कोई पुराना संस्कार या सेन्टर में साथ रहने वाली किसी बहन की बात या इधर-उधर की कोई बात अगर याद आयी तो उसकी भट्टी ठीक नहीं हुई फिर करो तुम।

गुरु का जो शिष्य है, संन्यासी है, समर्पित है, जो गुरु से वर्सा लेना चाहता है, गद्दी लेना चाहता है, या अपने जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति चाहता है, तो संसार के लफड़ों से उसको अलग होना पड़ता है और वह वहीं आश्रम में रहते हुए अपने को गुरुजी के समर्पित कर देता है। तो अगर आप कहते हैं शिवबाबा सद्गुरु है तो अपने



आपको उसके प्रति समर्पित करो। अगर हम समर्पित बुद्धि नहीं हैं, हमारे मन में डेडीकेशन नहीं है, डिवोशन नहीं है, बुद्धि हमने पूरी रीति से शिवबाबा के हाथ में दी नहीं, पूर्ण रूप से हम ट्रस्टी नहीं हैं तो हमको सदगुरु से पूरा वर्सा मिलेगा नहीं। जब उसके प्रति समर्पित होंगे तब हम उस सदगुरु के बच्चे होंगे। जब पढ़ाई पढ़ेंगे तो टीचर के बच्चे होंगे, जब बाप का लालन-पालन लेंगे तो ब्रह्माबाबा के पिता के रूप से बच्चे होंगे। और जब सदगुरु से मन्त्र लेकर उसके प्रति समर्पित होंगे, श्रेष्ठ कर्म करते हुए ट्रस्टीपन से तो फिर हम सदगुरु के भी बच्चे होंगे फिर वर्से के अधिकारी होंगे। तीनों वर्से जब हमें मिलेंगे तब हमको सम्पूर्ण वर्सा मिलेगा। इस बात को अच्छी तरह से समझना है। अच्छा - ओम् शान्ति।



मम्मा के स्मृति दिवस पर जगदीश भाई का अनुभव

आप सब होवनहार देवी-देवता हो। देवी-देवता तो सतयुग में बनेंगे लेकिन उससे पहले यह जो हमारा सर्वोत्तम ब्राह्मण जीवन है और फ़रिश्ता बनने का पुरुषार्थ है, इसमें हम होवनहार देवी-देवता हैं। तो हम भी आप सभी को इसी दृष्टि से देखते हैं कि यह होवनहार देवी-देवता हैं और ईश्वरीय सन्तान हैं। कहते हैं समझदार के लिए इशारा काफी है। जो होवनहार देवी-देवता हैं, स्वाभाविक बात है कि उनके लिए इशारा काफी है। तो आप सभी भी उसी मर्यादा में चलने वाले बहन-भाई हैं, होवनहार देवी-देवता।

तो होवनहार देवी देवताओं की दुनिया में जब मैं पहली बार जाके पहुँचा, उसमें बाबा के दर्शन हुए। मम्मा के भी दर्शन हुए। गद्गद् हो गया। मम्मा का स्पर्श मिला, दृष्टि मिली। इन गालों पर मम्मा की थपथपाहट मिली, मम्मा की वह मधुर मुस्कान भरी सूरत देखी। वह पवित्रता की, योग की और धारणा की मूर्ति थी! देखता ही रह गया कि सचमुच यह सरस्वती हैं। और जैसे जैसे आगे बढ़ा तो जीवन में यह

प्रत्यक्ष अनुभव किया। कई किस्से ऐसे हुए, जिसमें लोगों ने बहुत विरोध किया। जो सिंध में किया था वह तो अलग बात है, लेकिन भारत वर्ष में आने के बाद भी, बहुत से लोगों ने इकट्ठा होके जगह-जगह हंगामा किया। अमृतसर में बाबा ने मुझे जाने को कहा, मम्मा भी वहाँ आईं। वहाँ के लोग काफी खिलाफ हो गये थे।

तो मम्मा वहाँ आई हुई थी, वहाँ के लोग सेन्टर का दरवाजा तोड़ रहे थे। सेन्टर वालों ने दरवाजा बंद कर दिया था। मम्मा को कोई नुकसान न पहुँचाये इस ख्याल से बहनों ने दरवाजा बन्द कर दिया। लोग उसको धक्का देके, खोलने की, तोड़ने



की कोशिश कर रहे थे। आखिर वह दरवाजा खोल दिया गया, उनमें से उनको कहा गया कि आप में से जिस किसी को बात करनी है तो दो तीन आकर बात कर लो। तो दो तीन उन्हीं में से आए, और भागते-भागते ऊपर मम्मा जहाँ बैठी थी, उस कमरे में चले गये, मम्मा गद्दी पर योग में बैठी थी। और वे भी उनके सामने जाकर बैठ गये। आये तो थे झगड़ा करने के लिये, गुस्सा करने, कि आप लोग पवित्र बनाने की बात कहते हैं। आप लोग हमारे हिन्दू धर्म को समाप्त कर रहे हैं। पता नहीं क्या-क्या सिकवा वो कहना चाहते थे। लेकिन वो चुप करके मम्मा के सामने भीगी बिल्ली की तरह से बैठ गये, कुछ बोले नहीं, चूँ-चाँ नहीं की। मम्मा को देखते रह गये।

मम्मा उनको मुस्कुराते हुए प्यार से अपने योग के वायब्रेशन से देख रही थी। वे सब बैठे रहे और पूर्ण रूप से शांत हो गये। लग रहा था कि उनका मन वहाँ से उठने का नहीं है। घर वापस जाने का नहीं है लेकिन बाहर उनकी काफी इंतजार हो रही थी क्योंकि काफी बड़ा मज़मा था। एक हजार के करीब लोग होंगे। तो सब इस इंतजार में थे कि यह क्या बात करके आते हैं। इसलिए उन्हें जाना पड़ा। तो बाहर गये, तो सब लोगों ने उनको घेर लिया। क्या बात है! क्या कहते हैं वह। इनको कहो यहाँ से सेंटर हटायें! यह क्या फैला रखा है इन्होंने। गुस्से में थे सब लोग। लेकिन आश्चर्य की बात, मैं साक्षी हो करके देख रहा था। मम्मा के व्यक्तित्व ने उन पर जादू किया, मम्मा का जो योग था, धारणा थी, पवित्रता थी, जो मम्मा साक्षात् सरस्वती की मूर्ति थी। उसको देखकर तो वे स्वयं ही शान्त हो गये थे। वह अपने साथियों से बोले कि अरे भाई, तुम खुद जाके मम्मा को देख लो। यह ब्रह्माकुमारियाँ ठीक नहीं हैं, मम्मा इनकी बिल्कुल ठीक हैं। एकदम पवित्र हैं, साक्षात् देवी हैं। तो लोगों ने कहा कि अरे भाई, इन पर भी जादू हो गया। सच कहते हैं कि ओम मण्डली में जादू है। वह जादू कौन-सा था? योग का था, पवित्रता का था, धारणा का था। मम्मा ने उसकी साधना की थी। उनके जीवन में उसका अभ्यास था। उसका प्रभाव उन पर पड़ा था तो किसी की सेवा जो मम्मा करती थी, हम क्या कर सकते थे क्योंकि उनकी प्रैक्टिकल लाईफ का जो प्रभाव उन पर पड़ता था, उसकी तुलना कोई हो नहीं सकती। कई दफा मैंने ऐसा देखा, देहली में एक व्यक्ति का अपनी पत्नी से झगड़ा होता था।



वह बहुत दफ़ा कहता था मुझे मम्मा से मिलना है, अपनी पत्नी की शिकायत करने के लिये। उसको मिलने नहीं दिया जाता था। मम्मा किस सेन्टर पर ठहरती है, बताया नहीं जाता था। एक दफ़ा वह जैसे तैसे पता करके जबरदस्ती वहाँ गया। गुस्से में इधर उधर की कई चीजें तोड़ दी और अंदर आके बोला - कहाँ हैं मम्मा! कहाँ है मम्मा! दूँढते-दूँढते ऊपर जा पहुँचा जहाँ मम्मा एक कुर्सी पर बैठी हुई थी, वहाँ वह जाके खड़ा हो गया। और हाथ जोड़ने लगा, मम्मा ने उसको कहा - बैठो। बच्चे, बैठो, मीठे बच्चे, बैठो। तो जब यह शब्द मम्मा ने उसको कहे तो वह बैठ गया। मम्मा को देखता रहा, कुछ नहीं बोला, कोई शिकायत उसने नहीं की बल्कि वह हम लोगों को शिकायत करने लगा कि आप लोग बेवकूफ हो। यह सरस्वती देवी है। बोलता है कि आप लोग मम्मा से मिलने नहीं देते। अगर आप लोग मम्मा से मिलने दो, तो किसी की गलतफहमी रह ही नहीं जाये।

अरे, मम्मा तो साक्षात् सरस्वती है, उससे मिलने तो दो लोगों को। उस दिन से वह मम्मा का भक्त बन गया। और बिल्कुल चेंज हो गया। जो व्यक्ति विकारों से भी हाहाकार करता था, झगडा करता था, उसके जीवन में इतना परिवर्तन आ गया। थोड़ा सा समय मम्मा के सामने जाकर बैठा ही था, इतना परिवर्तन हमने सामने देखा। तो कितने प्रमाण आपको मैं दूँ, जो प्रैक्टिकल लाईफ में मैंने देखे। यह तो एक जीवन गाथा ही अलग है कि मम्मा के सामने किस प्रकार की परिस्थितियाँ आईं। लेकिन मम्मा अपनी धारणा के कारण अभय, निर्भय, धैर्यवान रही। इसलिए तो देवी की शेर पर सवारी दिखाते हैं। कोई भाव तो उसका जानते नहीं हैं लेकिन असल में बात तो यही है कि मम्मा को कोर्ट में भी जाना पड़ा, जहाँ पर भी लोग इकट्ठे हो गये, लोगों ने हंगामा किया उस समय मम्मा की कितनी आयु थी, अनुभव क्या था, कौन से और सहारे थे, किस आधार पर सामना करने के लिए उनमें इतनी हिम्मत थी! एक निश्चय के बल से, शिवबाबा के बल से। शिवबाबा तो अपना कार्य करा ही देगा, उसके कार्य में कोई रुकावट डाल नहीं सकता है। यह निश्चय उनको पूर्ण रूप से था, उसने सबका सामना किया।

आज हम लोगों को अष्ट शक्तियों की बात बताते हैं, वह सर्व शक्तियाँ



प्रेक्टिकल रूप में हमने मम्मा में देखी। एक बल - एक भरोसा, सारी दुनिया एक करो। मम्मा एक करो, शक्ति दल की सेनानी, वह उनकी कमान्डर, उनके चलने से, बोल-चाल से ऐसा लगता था कि यह कमाण्डर है - एक बहुत बड़े आर्मी की। कैसी भी परिस्थिति हो, लेकिन बिल्कुल अभय। इसलिए उनको आदि-शक्ति कहा जाता है। तुम भी शिवशक्तियाँ हो लेकिन उनमें आदि शक्ति जो है, वह ये हैं। जो सबके सामने मिसाल हैं, एजाम्पुल और सिम्पुल। जिसको औरों ने फॉलो किया। मैं जब वहाँ गया, मम्मा की लौकिक माँ से मेरा परिचय कराया कि यह मातेश्वरी जी की माँ हैं। और मैंने देखा कि मातेश्वरी जी की माँ, मम्मा को कहती हैं 'माँ'। माँ अपनी बेटी को 'माँ' कह रही है। बाबा की लौकिक युगल जशोदा वह मम्मा को 'माँ' कह रही है।

मम्मा की आयु क्या थी, इन सबकी आयु क्या थी! यह कोई आसान काम नहीं था। लोग कोई जल्दी से नहीं मान सकते। अच्छे परिवार, धनाढ्य परिवारों के लोग थे, उनका अपना भी कोई स्टेटस है, कोई रिसपेक्ट है... कोई कह दे कि यह तुम्हारी माँ है और हम कहने लगे कि हाँ यह हमारी माँ है, यह साधारण बात नहीं है। मम्मा को किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा होगा, मैं समझ सकता हूँ कि किसी को किसी काम की जिम्मेवारी तो कितने लोग क्रिटिसाइज़ करते होंगे, उस हिसाब से। लेकिन सबका प्रेम, सबका रिगार्ड, सबकी श्रद्धा, भक्ति भावना, हमने मम्मा में देखी। ऐसा था मम्मा का जीवन, ऐसा निर्मल जीवन था मम्मा का। जो देखते-देखते आदमी आश्चर्यानंद हो जाता था कि कितना सुन्दर यह जीवन है।

मम्मा ने सब सहन किया, सामना भी किया। तो यह हर शक्तियाँ उनके जीवन में थी। मैंने देखा कि बहुत से लोग विकारों से तपे हुए, काम विकार से जले हुए, क्रोध विकार से भरे हुए हैं, ऐसे ऐसे विकारों से परेशान, जो यह समझते थे कि हम कोई शुद्ध नहीं बन सकते हैं। हम तो महा-असुर हैं एकदम। हमें कौन पवित्र बना सकता है। मम्मा के एक दो मिनट की मुलाकात से वह बदल गया। कई आते थे, सेन्टर इन्चार्ज बहन को अनुनय विनय करके रिक्वेस्ट करके कहते थे मुझे दो मिनट मम्मा से मिलना है। बहिनें सोचती थी यह खराब आदमी मिलके क्या करेगा! बहनों ने उसे चारों तरफ से देखा लेकिन उस बिचारे ने आग्रह और अनुरोध नहीं छोड़ा।



वह मम्मा के सामने जाकर बैठा, ओ हो ! ओ हो ! उसकी जीवन में पहली बार यह अनुभव हुआ कि पवित्रता की शीतलता क्या होती है। निर्विकार जीवन का आनंद क्या होता है। मन में जब अशुद्ध विचार न आये वह स्थिति क्या होती है। चाहे एक सेकेण्ड या एक मिनट के लिए भी वह उनको अनुभव हुआ, तो उनका यह निश्चय बैठा कि यह तो ऐसी पवित्र आत्मा हैं, ऐसी महान आत्मा हैं, कि इनसे हमने अभी कुछ सुना ही नहीं, इसने कुछ बोला नहीं, हाथ पर हाथ रखा हुआ, हिला नहीं सिर्फ देखा है। हमने इसको निहारा है। जिसके पास हम बैठे हैं, जैसे लोहा चुम्बक के पास बैठता है, ऐसा महसूस होता है कि यह माँ है। इसकी गोद हम लें, यह हमारे माँ की गोद है। इससे हमारा जीवन सदा के लिए पवित्र हो जायेगा। ऐसा ऐसा अनुभव लोग सुनाते थे कि कैसे हमने पहली बार जीवन में पवित्रता का अनुभव किया। और उनको यह निश्चय हुआ कि पुरुषार्थ करने से हम भी पवित्र बन सकते हैं। अच्छा - ओम् शान्ति।



निश्चयात्मक भावना ही सर्व प्राप्तियों का आधार है

भावना बहुत बड़ी चीज़ है। बड़ों में और हमशरीक में पूरी भावना चाहिए। खासतौर से शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा में तो बहुत अच्छी भावना चाहिए। बहुत से लोग कहते हैं कि हमारी प्रोग्रेस नहीं हो रही है, उन्नति नहीं हो रही है। हम आगे नहीं बढ़ रहे हैं, करते सब कुछ हैं, कोई फंक्शन आयेगा, आपेही सहयोग देंगे, क्लास में रोज़ आयेंगे, अमृतवेले भी उठने की कोशिश करेंगे... सब चीज़ कर रहे हैं। कोई चीज़ कम नहीं है। सारा खाना बना लो लेकिन उसमें नमक बिल्कुल ही न डालो, सब्जी भी बढ़िया ते बढ़िया हो, बनाने वाला भी अच्छा होशियार हो। लेकिन उसमें थोड़ी सी कमी भी सब बेकार कर देती है। तो हमारे अन्दर भी सब विशेषतायें हो लेकिन भावना न हो तो उन्नति नहीं हो सकती। इसलिए भावनायें बहुत ज़रूरी हैं। इसकी मात्रा थोड़ी अधिक होनी चाहिए। शरीर में भी जब कोई कठिनाई होती है, तो डॉक्टर लोग कहते हैं, फलानी चीज़ बढ़ाओ, फलानी चीज़ घटाओ। नमक कम खाओ, चीनी ज्यादा खाओ। अपना-अपना बताते हैं। ग्लूकोज़ ले लो ... ऐसे कुछ इन्सट्रक्शन

होते हैं कम ज्यादा करने के। ऐसे दैवी परिवार का जब कोई भी आपसे मिलता है, तो किस भावना से आप उससे मिलते हैं। यह कौन हैं? यह भविष्य के देवी देवतायें हैं। देखने में तो कैसे भी हो, लेकिन यह भगवान के बने हैं, और इन्होंने कुछ त्याग किया है। दुनिया से मुख मोड़के इधर ध्यान दिया है तो निश्चित है यह विशेष हैं। तो एक सत्कार होता है, एक होती है फारमेलिटी। किसी डा. के पास कोई अच्छा गेस्ट आयेगा, उसमें औपचारिकता होगी।

राष्ट्रपति भवन में आप जाओ आपको चाय पिलायेंगे या ठण्डा-गरम ले आयेंगे



या बिठायेंगे ठीक तरह से, उनका जो स्टॉफ है उनके नियम बने हुए हैं। प्रेजीडेन्ट से मिलने जो भी आये तो उस वक्त क्या करना चाहिए। तो आने वाले देख-देख कर खुश होंगे कि हम कहाँ आ गये। ऐसे हम जो धरती के तारे हैं। यह सब बहन भाई हमारे हैं, यह भूलें नहीं। हम आत्मा हैं, आत्मा हैं, आत्मा हैं। आत्मा स्टार के समान है, वह तो ठीक ही है। स्टार तो सभी आत्माएँ हैं लेकिन यह जो स्टार हैं, यह सतयुग में प्रगट होके सारा राज्य भाग्य सम्भालने वाले हैं, उस समय यह दुनिया देवी दुनिया कही जाती है। बाबा ने पहले पहले दृश्य देखा था ना, स्टार्स हैं, ऊपर से आते हैं तो कोई शहजादा बन जाता है, कोई शहजादी बन जाती है। शिवबाबा ने कहा तुम्हें ऐसी दुनिया बनानी है। बाबा ने कहा है कि ऐसी दुनिया बनानी है, तो मैं कैसे बनाऊँ। बाबा तो ज्वेलर थे, और उनको यह थोड़ेही पता था कि ऐसा कैसे बनाया जायेगा।

तो बाबा बताते थे कि मेरे को आया, उसने यह तो नहीं बताया कि ऐसी दुनिया बनानी कैसे है? यह दुनिया बनानी है, यह तो कह गया, लेकिन कैसे बनानी है, उसका तरीका बताया नहीं। वह तो लम्बा तरीका होगा ना। वह धीरे-धीरे बताने का था, वह एक दिन में तो नहीं बताने का था। तो बाबा बताते गये। लेकिन यह स्टार हैं, इतने सबको देखके लोगों को हैरानी हो कि यह लोग जब आपस में मिलते हैं और एक दूसरे से बैठते हैं, बात करते हैं, इनका आदर कुछ अलग है। यह नई सभ्यता है, नई संस्कृति है। देवी देवताओं की झलक हमें यहाँ मिलती है। तो इसके लिए हमारे व्यवहार में दिव्यता आनी चाहिए। वह तभी होगी, जब आत्मा बनो, आत्मा देखो, बिन्दु रूप देखो... यह अभ्यास निरन्तर करना है। लेकिन वह आत्मा और बिन्दु रूप में भी क्या देखें? उनमें से भी जो यह आत्माएँ हैं, जो हमारे नजदीक आ रही हैं, यह विशेष आत्माएँ हैं। स्वयं साक्षात् सर्वशक्तिवान भगवान ने इनकी बुद्धि में ज्ञान डाला है, अमृत पिलाया है और योग सिखाया है। इतना प्यार दिया है। तो उनके मूल्य को भी हमें समझना चाहिए। तो जब भावना होती है तो आदमी सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

हम कहते हैं सतयुग में जो दुनिया होती है। वहाँ मनुष्य में स्वार्थ नहीं होता है। कोई भी चीज़ है, हर एक कहता है कि यह आपके लिए है। वह कहता है,



नहीं-नहीं – यह आपकी चीज़ है। परन्तु जब ऐसी भावना होती है तो यह सब स्वतः आ जाता है। मैं कई दफ़ा फील करता हूँ, सोचता हूँ, कि अगर हम सभी के अन्दर यह भावना आ जाये, तो बहुत जल्दी प्रगति होगी और लोगों को भी यह नई सभ्यता, नई संस्कृति, सब नया दिखाई देगा। हम कहते हैं सतयुग में यह सब नया होगा। वैल्यू सिस्टम (Value system) होगा, यह होगा, वह होगा, क्या होगा यह? इसके लिए गम्भीरता धारण करो, नम्रता धारण करो, मधुरता धारण करो, एक एक गुण धारण करते रहो, कितने गुण धारण करते रहेंगे। कितनी मेहनत और कितना पुरुषार्थ करेंगे। लेकिन अगर हमारी शिवबाबा में पूरी आस्था है तो सब गुण अपने आप आ जायेंगे।

मिसाल के तौर पर सुबह जो बाबा की अमृत वाणी सुनते हैं। मैं नहीं समझता हूँ कि इस तरीके से कोई मनुष्य कॉपी कर सकता है। लिटरेचर मैंने भी बहुत पढ़ा है, बहुत लोगों की आत्म कथाओं की पुस्तकें पढ़ी, अब वह भाषा के लिहाज़ से कोई बढ़िया नहीं हो सकता, हो सकता है लोग कहे कि जो राइटर्स हैं, या तो स्पीकर्स हैं, वह ऐसा बोलते हैं, कि जो सारी पब्लिक को मोह लेते हैं। उनमें जादू जैसा होता है, वह बड़े निपुण होते हैं बोलने में, मैं मानता हूँ। परन्तु बाबा की एक मुरली में इतनी बातें होती हैं, इस छोटे से दो चार पेज की मुरली में इतनी सारी बातें, और प्यार कितना है और इस ढंग से कही गई हैं, जो मैं गैरन्टी से कहता हूँ कि कोई सवाल ही नहीं रह जाता। लेकिन जिनको भावना नहीं है वह तो कहेंगे, रजनीश का लिटरेचर पढ़ो, साईं बाबा का पढ़ो, फलाने का पढ़ो, उसमें शब्दों की झंकार हैं। भक्तिमार्ग की बातें, मिसालें, चुटकलें, कहानियाँ, टोटके बहुत होंगे परन्तु जिससे जीवन में परिवर्तन हो, जिसमें प्यार भरा हुआ हो, दिव्यता भरी हो, लाईफ में परिवर्तन लाने की शक्ति हो, वह यह स्वयं साक्षात् भगवान की वाणी है। बाबा कहते हैं कि मैं भी स्वयं सुनता हूँ, जब आप सुनते हो। मेरे कान सबसे ज्यादा नज़दीक हैं, इसलिए सबसे पहले मैं सुनता हूँ। लेकिन हैं यह सबके लिए। बाबा जिसमें खुद स्टूडेंट (student) बनके उसका अध्ययन करते हैं। तो यह भावना अगर नहीं होगी तो वह कहेगा कि वही तो मुरली है। रोज़ रोज़ बाबा यही कहते हैं, कि आत्मा समझने का अभ्यास करो। लेकिन आप उस चीज़ की गहराई में जाते नहीं है। अगर मौका



मिलेंगे आप कोई मुरली मेरे पास ले आईये। आप कहेंगे जगदीश भाई, कल या परसों या तीसरे दिन भी यही बात थी, आज भी यही बात है। बताओ क्या फर्क है? परन्तु बहुत बड़ा फर्क है। आपने समझा नहीं है। उसका मनन नहीं किया है, गहराई में नहीं गये हो। आपकी भावना नहीं है। भावना रिस्पेक्टिव बनाती है, जिससे प्राप्ति होती है। भावना ही नहीं है तो एक कान से सुनेंगे, दूसरे कान से निकालेंगे। उससे फायदा क्या हुआ? कभी-कभी किसी की बुद्धि में ख्याल आता है कि यह वही मुरली है। कड़ियों को फिर मुरली सुनते बड़ा आनंद आता है, खुशी होती है, गद्गद् होते हैं कि रिफ्रेश हो गये, बहुत शक्ति मिल गई। बाबा स्वयं कहते थे मैं जब मुरली सुनाता हूँ, साकार में आपके सामने बैठता हूँ, आप मुझे मत देखो। शिवबाबा ब्रह्मा के तन में आके बता रहे हैं - भावना यह रखो।

प्रश्न :- निश्चय और भावना में क्या अन्तर है?

उत्तर :- निश्चय यह है कि बुद्धि से समझ लिया कि यह ठीक कह रहे हैं। इसमें कोई झूठी या दूसरी बात नहीं है। यह निश्चय तो हो गया। हम समझ गये। भावना में थोड़ी श्रद्धा है, प्रेम है। उसमें और कई चीजें हैं जो निश्चय में नहीं हैं। निश्चय तो बुनियादी चीज़ है। निश्चय ज़रूरी है लेकिन निश्चय के बाद है - भावना। भक्ति मार्ग में है अन्धश्रद्धा। परमात्मा क्या है, आत्मा क्या है - ज्ञान पूरा नहीं है। लेकिन गुरु की महिमा सुनी है, गुरुब्रह्मा, गुरुर्विष्णु...., फिर उनकी महिमा करते हैं। तो गुरु को ही समझते थे कि यही साक्षात् ईश्वर है। लेकिन वह कौन-सा गुरु, वह पता नहीं। वह परमात्मा स्वयं आकर सदगुरु बनता है यह थोड़ेही मालूम है। तो बाबा की अभी मुरली में था कि बचपन में ही गुरु करा देते हैं। यह गुरु का महत्व है वह अलग चीज़ है। लेकिन कल्याणकारी बाप हमें मिल गया पहले यह निश्चय हो गया, शिवबाबा सर्वव्यापक नहीं है, ज्योति बिन्दु है, परमधाम का वासी है, निश्चय हो गया।

हम आत्माएँ हैं, शिवबाबा परमात्मा है, हमारे मात-पिता हैं, निश्चय हो गया। यह संगमयुग है, यह हमारी लास्ट लाईफ है, यह निश्चय हो गया। लेकिन वाह! वाह! कौन है वह? मेरा सारा जीवन उसके लिये कुर्बान है। मैं भरपूर हो गया, मेरी झोली भर गई। तो उसके प्रति वह भाव, वह श्रद्धा, वह प्रेम, वह न्योछावर होने का भाव जो



कहें... हाँ जी यही सत्य है - इसको मैं कहता हूँ निश्चयात्मक भावना। फिर वह नम्बरवार तो होती है। सबसे ज़्यादा तो शिवबाबा में होगी। फिर जो बाबा जिनको निमित्त बनाते हैं, अब दादीजी कहती हैं, भाई, यह काम तुम करो, हमारी समझ में नहीं आ रहा है। यह दादी बाबा की जगह पर हैं, बाबा इनको डायरेक्शन दे रहा है फिर वही बात दादी हमें कह रही हैं, यह भावना अलग चीज़ है। यह दादी है, महान हैं, पवित्र हैं, योग लगाती हैं, इतनी सेवा करती है, त्याग किया है, इतने साल से योग का अभ्यास करती है, यह निश्चय है। लेकिन यह अब कौन हैं? किसके स्थान पर हैं? देखिये बिजली की तार है, बिजली की तार अगर वैसे ही हो तो आप उसको लपेट लेंगे, लेकिन उसमें अगर करेन्ट आ रहा हो, तो सोचके करेंगे, कहीं शॉक न लग जाए। कहीं मैं ही न उड़ जाऊँ। तो बिजली की तार को अगर आप हैंडिल करना नहीं जानते, इलेक्ट्रिसिटी का काम भी नहीं जानते। फ्यूज़ लगाने में भी डरते हैं। जब बाबा की करेन्ट आती है, वो वोल्टेज अप हो जाती है। वह पावर अलग चीज़ है। आपने देखा है जब शिवबाबा गुल्जार बहन के तन में आते हैं, तो नेत्र कैसे होते हैं। उनकी वाणी कैसी होती है। कभी आपने डायरेक्ट बाबा से दृष्टि लिया है? अगर ठीक तरह से दृष्टि ले लें तो उड़ जायें। लेकिन अब इसमें भी भावना की बात है। कई लोग देखते हैं कि यह क्या करते हैं।

कइयों को तो अन्दर से आता - ओहो! बाबा मिल गये, मेरे ऊपर नज़र डाल दी, मुझे निहाल कर दिया, यह भावना होती है। उनका अनुभव पूछो और जो ऐसे ही बड़े-बड़े वी.आई.पी., पंडित, पढ़े लिखे लोग आते हैं, बहुत शास्त्र वगैरा जानते हैं। उनको यह बातें अपने तरीके से समझ में आती हैं लेकिन प्राप्ति कुछ नहीं करते। एक बुढ़िया माता जो पढ़ी लिखी नहीं, और उसकी भावना है मेरा इस दफा आना सफल हो गया। यह कैसे सफल हुआ, बाबा ने ऐसी पावरफुल दृष्टि दी, मैं तो उड़ गयी। अरे अगर यह भावना है कि साक्षात् भगवान मुझे देख रहे हैं, मेरे उपर दृष्टि डाल रहे हैं, तुम्हें और क्या चाहिए, मालामाल हो गये, गद्गद् हो गये। इतनी भक्ति करते लोग यही तो मांगते हैं उससे, और क्या मांगते हैं। तेरे एक बूँद के प्यासे, तू प्यार का सागर हैं... कहते हैं। और वह हमको प्यार से देखता है, उसकी दृष्टि हमारे



ऊपर पड़ रही है। वही बहुत कुछ हो गया। फिर उसके वचनों को सुनना, उसके जो डायरेक्शन्स हैं उसको सुनना, इन सब चीजों का अपना-अपना महत्व है। लेकिन यह भावना ही तो असली चीज़ है। इसका भाव यह होना चाहिए।

एक बार जर्मनी के बहुत सारे लोग आये थे, एक बहिन वहाँ से ले आयी। उनमें कोई नये थे, कोई पुराने थे, और विदेशों के भी थे। तो उन दिनों में इतनी संख्या नहीं थी, मेडिटेशन हॉल में बाबा आते थे। बहुत रात तक और कई घण्टों तक बाबा ज्ञान सुनाते थे। बाबा बच्चों से मिलन मनाते थे, तो कुछ लोग ऐसे थे जो बैठे-बैठे थक जाते हैं। सामने बाबा बैठे हैं। बच्चे बाप के सामने क्या लज्जा करेंगे, कुर्सी पर ही सो जाते थे। तो जब उन्होंने देखा तीन चार व्यक्ति कुर्सी पर ऐसे सो रहे हैं। तो उन्होंने बहिन को कहा कि आप हमारा वापसी का टिकट करा दें। उस बहन को बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने पूछा क्या बात है? क्या कोई शरीर की तकलीफ है! हम डॉक्टर को बुलाते हैं। खाना-पीना ऊपर नीचे है तो उसको आपके मुताबिक ठीक कराते हैं। बात क्या है! वह इतनी मेहनत करके लेकर आयी, और उसने देखा कि ये ऐसा कह रहे हैं। तो उन्होंने बताया कि जिसको आप सद्गुरु भगवान कहते हैं, वह सामने बैठा है। और यहाँ लोग उसके सामने ऐसे टांगे करके बैठे हैं। उनको समझाया गया, भाई देखो कई तरह के लोग आते हैं, अब कई कैसे घराने से, कैसे कल्चर से, कैसे शिक्षा वाले आकर बैठते हैं। तो हमें उनकी बुराई नहीं देखनी है। उनमें कुछ अच्छाई भी तो होगी, वह भी तो तुम देखो। फिर वह समझे। लेकिन एक दफा तो उनके दिमाग में ख्याल आ गया कि चलो यहाँ से, यहाँ कोई फायदा नहीं। यह लोग खुद जो बात हमको कह रहे हैं, उसमें इनका अपना ही विश्वास नहीं है। भाई, आप कैसे कहते हो हमारा विश्वास नहीं है! कहता है हमने देख लिया। बहन जी ने कहा तुमने रात ही रात एक दिन में क्या देख लिया? तो उसने यह देख लिया। अच्छा मान लीजिए अब गुल्जार दादी हैं, दादीजी हैं, मेरे पास आकर कमरे में बैठती हैं, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मुझे डॉक्टर ने कहा है कि तुम बेड में लेटे रहो। तो मैं लेटा हुआ हूँ, अब किसी ने उनकी कुर्सी इधर कर ली, ताकि बातचीत हो सके, मेरे मुंह के सामने कुर्सी रख दी। मेरे पाँव फैले हुए हैं जिसको समेट नहीं सकता तो चादर डाल



लेता हूँ।

लेकिन मन में तो है कि यह महान है, हम उनका रिगार्ड करते हैं, हमें इनका आदर है। माफ करना, अगर हमने कोई गलती की हो तो क्षमा करना। यह हम मजबूरी से कर रहे हैं क्योंकि डॉक्टर की इन्स्ट्रक्शन है, बीमार हैं, बाकी आपका हम पूरा रिगार्ड करते हैं, इसको भावना कहते हैं।

अब बाबा के पास मुझे जब बुलाते हैं, मैं बाबा के सामने जाता हूँ तो सिर नीचे कर देता हूँ। तो सब हँस पड़ते हैं, कि यह क्या करते हैं! क्योंकि हमारे यहाँ यह नियम तो है नहीं लेकिन मुझे लगता है कि यह कौन है, मेरा कितना ऊँचा भाग्य है, मेरे को अपने पास स्वयं भगवान ने बुलाया है। हे प्रभु! हे शिवबाबा! तुम मेरे से इतना प्यार करते हो! मैं क्या हूँ! मेरे में कुछ भी नहीं है। आप ऐसे लोगों को भी पूछते हो। धन्य हो आप।

कहाँ वह सर्वशक्तिवान शिवबाबा, कहते हैं ना – कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली। कहाँ शिवबाबा, कहाँ तुम। (किसी ने कहा, आप भी धन्य हो) तो वह जो भावना होनी चाहिए, शिवबाबा में, उसकी मुरली में, जो उनके निमित्त हैं, मुरली सुनाने में। हमारी भावना कभी कम न हो। नहीं तो यह भी हमारी कमी है। अच्छा - ओम् शान्ति।



समझदार वह है जो समय के पहले अपनी जीवन नय्या प्रभु हवाले कर दे

आपने किसी के संस्कारों को समझ लिया कि इसके ऐसे संस्कार हैं। यह बिल्कुल छुईमुई है। थोड़ा सा भी कुछ कह दो कि तुमने ऐसा क्यों किया तो फट से कहेगी कि तू कौन होती है कहने वाली ? तू हेड है क्या ? अब मान लो कि उसका यह स्वभाव है, वह मेरे ऊपर हावी होती है। ठीक बोलती नहीं है, शिकायत करती है। अब आपने सामने वाले को समझ लिया कि इसका संस्कार ऐसा है कि इसको कुछ भी कहना मुश्किल है। कोई करेक्शन नहीं दे सकते। आप बड़े हो, छोटे हो या समान हो लेकिन उसको कुछ कह नहीं सकते, तो उसको फिर आप कैसे समझायेगे ? कई हैं जो साथ रहते हैं लेकिन एक दूसरे को देख नहीं सकते, बोलते भी नहीं हैं। किसी-किसी जिज्ञासुओं में फिर चर्चा होती है कि यह दो बहनें बोलती नहीं हैं। तो यह कितनी डिससर्विस होती है। और उनको लगता है कि इस बहन के कारण मेरा भी नाम बदनाम न हो। और वह भी ऐसी समझती है लेकिन

ठीक करने का तरीका क्या है ? कोई बड़ी बहन उनको समझायेगी, तो अभी मान जायेंगी कहेगी हम ठीक करेंगे। लेकिन वहाँ से हटेगी तो फिर वही के वही। कोई चेन्ज नहीं लाई फिर इतनी बाबा की मुरलियाँ आती हैं, चेन्ज थोड़ेही हो रहे हैं। सुनते हैं, अच्छा लगता है, फिर देखो तो वैसे के वैसे। क्यों नहीं चेन्ज होते हैं ? और उसको आप समझाओगे या नहीं समझाओगे ? कई दफा तो समझाना भी अच्छा होता है। कई दफा फिर चुप रहना अच्छा होता है। कभी ५-६ बार उसके



काम में मदद करने से भी चेन्ज होने की मार्जिन है। उससे वह फील करेगी कि यह बहन महान है। मैं तो ऐसी भी नहीं हूँ। यह रियलायजेशन तो हरेक को होती है। और जब तक अन्दर से रियलायजेशन न हो तब तक बदलता कोई नहीं है। तो पहली चीज है कि अन्दर से रियलायजेशन चाहिए।

अच्छा रियलायजेशन क्यों नहीं है? 15-20 साल से सर्वशक्तिवान शिवबाबा जो धर्मराज है उसकी बातें सुनते हैं, फिर भी धारण क्यों नहीं होती? उसमें एक गलती तो यह रह जाती है, सोचते हैं कि अरे अभी सतयुग बहुत दूर है। देखो तो सही कितने तैयार हुए हैं सतयुग के लिये। यह कोई देवी-देवताओं के लक्षण थोड़ेही हैं। फलाने को कितना टाइम हुआ है, वह भी क्रोध करती है, अगर हमने थोड़ा क्रोध कर लिया तो क्या है! ऐसे ही हमको दबाते हैं, खुद क्रोध करते हैं और हमको समझाते हैं कि तुम क्रोध नहीं करो। तो उनमें यह रियलायजेशन नहीं है कि बाबा कहते हैं कि तुम उनको फ़ालो मत करो, बाबा को हमेशा सामने रखो। और गलत चीज़ तो गलत चीज़ है। दूसरे के करने से जस्टीफाय तो नहीं हो जाता लेकिन करते हैं। तो न चेन्ज होने की एक बात यह होती है।

दूसरा - आपने देखा लोग समझते थे, सन २ हजार में विनाश हो जायेगा। यह कल्पवृक्ष में भी लिखा हुआ है, सृष्टिचक्र में भी लिखा हुआ है। २ हजार तो चल रहा है, देखने में आता है चीजें तो बड़ी नई-नई, अच्छी-अच्छी बन रही हैं। अरे विनाश होगा या नहीं होगा ... इन बातों में क्या रखा है! मतलब यह है कि अच्छे बनो। बाकी २ हजार में विनाश हो जायेगा, ऐसी कोई बात नहीं है। तो बाबा की बातों पर वह कम ध्यान देने लगे हैं। अच्छा आप समझो कि विनाश नहीं होगा। कई बातें कहने में भी राज़ होता है। ऐसे बहुत से मिसाल आप लोगों को दिये जा सकते हैं कि जो बात बड़े कहते हैं, उसमें कोई न कोई राज़ समाया होता है। उससे उनका कल्याण हो जाता है। वह कहते हैं उन्होंने यह जो बात कही थी, उससे हमारा तो भला हो गया। लेकिन विश्वास ही छोड़ देते हैं कि बाबा ने यह कहा हुआ है। अपनी बुद्धि चलाकर सोचते हैं कि कौन कहता है विनाश होगा। सब ऐसे चल रहे हैं, किसी के भी लक्षण देखने में आते हैं, जो मालूम हो कि विनाश होने वाला है। सब मौज



में बैठे हैं, विनाश किसी को याद हो... ऐसे थोड़े ही विनाश हो जायेगा। तो इसे बाबा कहते हैं – ‘अलबेलापन’। कितनी मुरलियाँ बाबा की अलबेलेपन की हैं। कोई सीरियस हो यह नहीं सोचते कि भाई, हमारे इतने पुराने संस्कार कई जन्मों के हैं, वह हमको ठीक करने हैं, विकर्मों को भी हमें दग्ध करना है।

बाबा ने कहा है – जो है जैसा है उसको वैसा समझो। शिवबाबा को तो आप समझते हो जो है जैसा है...लेकिन आपस में नहीं समझते हैं। तो जीवन में ठीक रीति से चलने के लिये यह जानना ज़रूरी है, जो है जैसा है लेकिन मुश्किल यह है कि हमारा अपने ऊपर कन्ट्रोल नहीं है। हम जानते हैं कि इसके संस्कार क्या हैं, यह भी जानते हैं कि किस तरह से बदल सकता है लेकिन हमारा कहने का तरीका ऐसे होता है कि बजाए उसको बदलने के और भड़का देते हैं। हमारा बोल ऐसा टेढ़ा और कटु होगा जो और ही उसको भड़का देंगे। फिर कहेंगे क्या करें रोज-रोज दिमाग खराब करती है। तो हम अपने ऊपर कन्ट्रोल नहीं कर सके ना। हमने जाना तो सही कि इसके संस्कार ऐसे हैं, परन्तु चेन्ज तो नहीं कर सकते क्योंकि खुद ही नहीं चेन्ज होते हैं। और लॉ यह है कि ‘तुम बदलोगे तो विश्व बदलेगा’ और आप कहते हो यह बदले तो मैं भी बदलूँ और विश्व भी बदलें, यह उल्टा फार्मूला अप्लाय करते हैं। मैं बदलूँगा तो विश्व बदलेगा, बाबा ने यही कहा हुआ है और हम यह उम्मीद रखके बैठे हैं कि यह चेन्ज हो। हम यह नहीं करते कि हम चेन्ज हों। तो स्वयं के परिवर्तन की तरफ जिनका अन्तर्मुखता से ध्यान है, वह गम्भीरता से सोचते हैं कि मुझे पास विद ऑनर बनना है और बाबा ने जैसे कहा है, बाबा की आशा को मुझे पूरा करना है। बाकी प्रॉबलम तो आयेगे ही, कोई ऐसा नहीं है, जिसको प्रॉबलम न हो, हरेक को हैं। कुछ मिसाल ऐसे होते हैं...

जो कइयों की नय्या भंवर में फँस जाती है, तूफान आ जाते हैं। कोई रास्ते में चट्टान आ जाती है, कुछ ना कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं जो आदमी समझता है कि अब हम गये। यह जीवन की नय्या अब डूबी की डूबी। तो जीवन को नय्या मानकर और इस संसार को एक दरिया, नदी या सागर मानकर कवियों ने, लेखकों ने, संगीतकारों ने, गीतकारों ने उपमा दी है। और वास्तव में फिट बैठती है, है ठीक,



क्योंकि जब मनुष्य के बस की बात नहीं रहती, उसके कन्ट्रोल से बाहर हो जाती है उस टाइम ऐसा होता है। जीवन में जब मनुष्य के पास पैसे की सामर्थ्य है, शरीर समर्थ है। कोई से परिचय है इत्यादि-इत्यादि... जो समाज में साधन माने जाते हैं, वह होते हैं। कोई टाइम ऐसा भी आता है जब आदमी के पास कुछ नहीं होता है। दिल्ली लाल किल्ले में एक लाइट एण्ड साउण्ड शो दिखाया जाता है। वह ऐतिहासिक है। लम्बी स्टोरी है, उस सारे को तो हम नहीं ले रहे हैं लेकिन उसका एक अंश मैं आपको बता रहा हूँ जो इस प्रसंग से सम्बन्धित है।

औरंगजेब का इतिहास तो पढ़ा ही होगा। वह कैसा व्यक्ति था, कैसा बादशाह था.... तो औरंगजेब जब जवान था, ताकत थी और सब कुछ था.. उसने क्या किया! अगर आप उसकी हिस्ट्री पढ़ें तो लुटेरों जैसे, मर्डरों जैसे और गलत काम करने वाले जो होते हैं, ऐसे काम वह करता रहा। उसने राज्य को हथियाने के लिए अपने सभी भाईयों को मरवा डाला था। सत्ता के लिये, पैसे के लिये, राज्य के लिये मनुष्य कितने गलत काम करता है! उसका एक भाई था जिसे उपनिषद् में इन्ट्रेस्ट था, वह उपनिषद् पढ़ता था और जगह-जगह महात्माओं के पास, संतों के पास जाता था कि मुझे उपनिषद् सुनाओ, मुझे अच्छे लगते हैं। अब मुसलमानों में तो यह रिवाज़ है कि कुरान के अलावा और कुछ मत पढ़ो। तो वह उपनिषद् पढ़ता था। लोगों ने औरंगजेब को भड़काया कि तुम्हारा यह जो भाई है यह तो हिन्दू हो चला है, यह उपनिषद् पढ़ता है। उसने आर्डर दे दिया कि जाओ इसको हाथी के पाँव के नीचे रौंद दो। भाई से उसने कुछ बात किया नहीं, कौनसा उपनिषद् है वह देखा नहीं, क्या पता उसमें वही बात हो जो तुम्हारे कुरान में लिखी हो। आदमी गुस्से में जब आता है, नफरत में जब आता है और जब चाहता है मेरा एक छत्र राज्य हो, उसके लिए कुछ सोचता भी नहीं। लोग हाथी ले गये और उसको हाथी के पाँव के नीचे मरवा डाला। ऐसे और भाईयों को... उसकी वह सारी कहानी है। सिर्फ औरंगजेब की नहीं, मुगल पीरियड की है।

उस कहानी का अन्तिम चरण यह है कि वह दिल्ली का जो लाल किला है। उस लाल किले में जहाँ वह ठहरा हुआ था वहाँ एक मोती मस्जिद है। राजा लोग बाहर



मस्जिद में नहीं जाते थे, अपने पास ही मस्जिद बनवा रखी थी, वहाँ जाके वह नमाज़ पढ़ता था। सफेद मार्बल की बनी हुई है। वैसे भी मोती की तरह से चमकती है तो उसका नाम मोती मस्जिद रखा हुआ था। जब उसका अन्त आ गया, बीमार पड़ा था बिस्तरे में। उस दिन बिचारा कुछ नहीं कर सका, मजबूर था। जिसने इतनी बड़ी फौजों को कमान्ड किया, इतने लोगों से लड़ा, इतनी जिसमें दिलेरी थी उस दिन ऐसे पड़ा था, जैसे अधमरी मक्खी होती है। और वहाँ मस्जिद में मुल्ला ने बांक (अजान) पढ़ी-
 ”अल्लाह हु अकबर, हु अकबर.... अल्ला हु अकबर“ वह उधर नमाज़ पढ़ रहा था, वह उसके कानों में पड़ी। जब उसके कानों में यह बांक (अजान) की आवाज़ पड़ी तब उस समय उसके मुख से क्या निकला! आपको मालूम हो कि उस समय औरंगजेब कुरान लिखता था। कुरान की कॉपीज़ करता था। और वह बिकती थी, हालांकि वह राजा था लेकिन धन्धा यही करता था, वह कहता था कि सबसे अच्छी और नेक कमाई यही है। भाईयों को मरवा दिया और कुरान लिखकर बेचता था। दोनों काम इस तरह से करता था।

तो जब वह बांक (अजान) उसके कान में पड़ी तो उसके कान खड़े हो गये। और वह समय ऐसा था, परिस्थिति ऐसी थी श्वाँस निकल रहा था, समझ गया था कि यह मेरा अन्तिम श्वाँस है, आज के बाद बचने वाला नहीं हूँ, यह मेरा आखिरी टाइम है। तो सारी कर्म कहानी उसके सामने आई। मैंने क्या किया, अरे सब कुछ छोड़के जा रहा हूँ, कुछ साथ में लेके जा रहा हूँ क्या? और इतनों को मरवाया, इतनों को लूटा, इतनों को कत्ल किया, भाईयों को भी नहीं छोड़ा, खानदान भी तबाह किया, मिला क्या मुझे? तो यह मन ऐसा है कि जो गलत काम करो या अच्छा काम करो उसका रिकार्ड यहाँ रहता है। आप जब चाहो देख लो कि आपने क्या किया, कितना काला काम किया, कितना सफेद काम किया, यह मन में सब लिखा रहता है। सारा उसके सामने निगाह से घूमा और क्या कहता है? या अल्लाह, या खुदा, मैंने क्या किया? मैं कौन हूँ? कहाँ से आया? मुझे कहाँ जाना है? मैंने सारी उम्र गुजार दी, यह भी मैंने मालुम नहीं किया कि आखिर मेरी मंजिल क्या है? मुझे पहुँचना कहाँ है? यह उसमें सुनाते हैं। हिस्ट्री में लिखा हुआ है लेकिन वह लाइट एण्ड साउण्ड शो



में सारा दिखाते हैं, बताते हैं। तो प्रायश्चित्त करता है और प्रायश्चित्त करते हुए – अल्लाह तू अब मुझे गोद में ले ले, तू अपना सहारा मुझे दे दे, ऐसा आदमी जो किसी के सहारे की मांग नहीं करता था, वह भी ऐसी परिस्थिति में आया जब कहता है - हे भगवान जीवन की यह नय्या तेरे हवाले... लेकिन वह देर हो गई थी। अब जीवन की नय्या को क्या हवाले करेगा, जीवन की नय्या तो तेरी डूब चली आज, अब बचने वाली नहीं है। अब कहाँ से वह सुरक्षा उसको मिलेगी। लेकिन अन्त में यही कहता है कि प्रभु, तू मुझे सम्भालना।

तो कोई व्यक्ति हमने जीवन में ऐसा नहीं देखा, चाहे बड़े से बड़ा महावीर हो, शूरवीर हो और पैसे वाला हो, इज्जत वाला हो, समाज में उसका मान हो और वह हस्ते-खेलते चलता जाता है... एक ना एक घड़ी जरूर ऐसी आती है जब आदमी फँस जाता है और समझता है कि यह जो मेरी जीवन रूपी नय्या है आज यह गई। समझदार व्यक्ति वह है जो समय पर वक्त से पहले यह जीवन रूपी नय्या उसके हवाले कर दे। उसको जाने वह कौन है और इसके अलावा और कोई नहीं है। लोग कहते हैं गॉड इज वन, अब इसका क्या मतलब है कि एक ही ऐसा है जो आपकी जीवन रूपी नय्या को बचा सकता है इस मजधार से, इस तूफान से, और कोई नहीं बचा सकता। कई किस्से ऐसे सुने गये हैं कि लोग जा रहे थे नावों में.. बहुत बड़े बोट्स होते हैं। तो उसमें लिकेज़ हो गया या कोई तूफान आ गया, सब भगवान को याद करते हैं। नास्तिक लोग भी भगवान को याद करते हैं यहाँ तक कि अगर वह डूबने लगती है तो कहते हैं – अरे भाई, कौन है तुम लोगों में से बैठा हुआ, जो यह डूब रही है। तुम एक दो आदमी ऐसे कोई पापी या खराब बैठे हो जो हम सब डूब रहे हैं। ऐसा भी लोग भक्तिमार्ग में मानते हैं।

तो जीवन की नय्या अगर हम समय से पहले उस एक परमात्मा के हवाले कर दें जो सर्वशक्तिवान है, कल्याणकारी है। हमारा मात-पिता है, समर्थ है वह समझके उसके हवाले कर दें तो निश्चित हो जायेंगे। अब जो लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपनी इन्श्योरेन्स कराई हुई है, बैंक बैलेन्स रखा हुआ है, बिल्डिंग बना रखी है। बेटा पढ़ा-लिखा है, अच्छे काम में लगा हुआ है। देखने में आता है कि यह आदमी खुश है,



निश्चित है। अब जितने दिन भी हो, उस वक्त तो आपको ऐसा लगता है क्योंकि जो चीज है जो आदमी को वक्त पर काम आये, समझता है यह भी है यह भी है, यह भी है.. ठीक है। इतना ही कर सकते हैं और क्या कर सकते हैं। लेकिन बहुत-बहुत चीज़ें ऐसी हैं जो सिवाए भगवान के कोई नहीं कर सकता है। उसमें सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे जो संस्कार हैं, जो हमारे मन के ऐब हैं, खराबियाँ, कमी-कमजोरियाँ हैं कोई नहीं निकाल सकता है क्योंकि वह खुद ही उनमें फँसे हुए हैं। जो वृक्ष के साथ में बँधा हुआ होगा, अगर मेरे हाथ वृक्ष के साथ बाँध दो और इधर दूसरा आदमी भी वृक्ष के साथ में बाँध दो और वह मुझे बार-बार आवाज़ लगाये जगदीश भाई मुझे खोल दो। कैसे खोल दूँगा! मैं तो खुद ही बँधा हुआ हूँ। बँधा हुआ आदमी किसी को कैसे खोल सकता है? तो इस संसार की जो भी आत्मायें हैं, वह खुद ही बन्धन में है। उनमें अपने में बुराइयाँ, कमजोरियाँ भरी हुई हैं तो वह हमारी कैसे निकालेंगे? उतनी ही निकाल पायेंगे जितनी उन्होंने खुद अपने में से निकाली है। हमारी सारी जिम्मेवारी कैसे लेंगे? अगर कोई कहता है कि मैं तेरी जिम्मेवारी लेता हूँ गलत कहता है, झूठ बोलता है। अरे भाई तू अपने को तो पहले ठीक कर, हमको क्या ठीक करेगा? कई दफा लोग किसी को कहते हैं, लाओ लाओ मैं ठीक कर देता हूँ। उसको कहते हैं तू अपने घर को तो पहले ठीक कर, मेरे को ठीक करने जा रहा है ऐसे लोग बोलते हैं। तो इसी तरीके से एक परमात्मा है जो सर्वशक्तिवान है, कल्याणकारी है, सदा मुक्त है, जन्म-मरण से न्यारा है। वह कभी विकर्म नहीं करता, विकर्मातीत है, कर्मातीत है। सदा शान्त स्वरूप है, परफेक्ट सम्पूर्ण है वही हमें उन बुराइयों की दलदल से निकाल सकता है।

मैं खुद एक दफा दलदल में फँस गया, एक होस्टल में था, एक ट्रेनिंग में था उसके पास नदी थी और सुबह मैं चला जाता था नदी के किनारे और कोशिश करता था कि भाई मैं भगवान की याद में बैठूँ... तो उसके किनारे में एक जगह पर काफी दलदल थी। मुझे मालूम नहीं था, अन्धेरा था, मैं थोड़ा रास्ते से इधर हो गया, दलदल में चला गया। एक पाँव मेरा नीचे दलदल में दूसरा निकालने लगा तो वह और दब गया। इसको निकालने लगा तो यह भी दब गया। धीरे-धीरे, दलदल में मैं चला गया।



हाथ में चप्पल, लोटा लिया हुआ सबकुछ लिया हुआ... भगवान दिखाई देने लगा। अभी ज्ञान में नहीं आया था। हे प्रभु, आज मैं गया दलदल में। दलदल ऐसी चीज़ है जो दलदल में फँसा हुआ आदमी खुद ब खुद मुश्किल ही निकल सकता है। यह तो कोई ड्रामा में पार्ट था, इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आना था। भगवान ने हमारा भी कल्याण करने के लिये कुछ करना होगा। तो अचानक से ऐसे मेरा हाथ पड़ा वह जगह थोड़ी सुखी थी, उसको दबाके थोड़ा सा बाहर निकला। तो जो खुद दलदल में फँसा हुआ हो वह दूसरे को दलदल से कैसे निकालेगा। एक परमात्मा ही है जो इस संसार की दलदल में फँसा हुआ नहीं है। इस माया रूपी दुबन में जो फँस जाता है उसका निकलना बड़ा मुश्किल है। भगवान उसको निकालता है, इसीलिए अगर हम जीवन रूपी नाव उसके हवाले कर देते हैं तो निश्चित हो जाते हैं। फिर वह जो डायरेक्शन दें वह करते चलो, कल्याण तो उसी में है। उसका वचन खाली नहीं जाता है। वह तो कहते हैं 'काली कलकते वाली तेरा वचन न जाये खाली' ऐसे बोलते हैं लेकिन भगवान है जिसका वचन खाली नहीं जाता है। पक्का वचन उसका होता है, प्रामिस करता है। हे बच्चे, मीठे बच्चे, तू मेरी शरण में आ जा मैं तेरी जिम्मेवारी लेता हूँ, तुझे इस दुबन से निकालने की, मुक्त करने की। फिर भी अगर हम न करें..... सारा ज्ञान हमने लिया, शिवबाबा आया है, संगम का समय है, आखिरी जन्म है। कल्प में एक ही बार यह ऐसा मौका मिलता है, अरे भाई बाजी लगा दो। करना है जो भी कर लो यह वक्त जा रहा है। यही समय है फिर भी अगर हम न करें फिर पछताये क्या होत है जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। वह कहते हैं फिर क्या फायदा है। तो सार तो यही है। बिना उस बाबा की मदद के सहारे के, एक बल एक भरोसे के हम मंजिल पर पहुँच नहीं सकते हैं। यह समझ लो, जो यह नहीं समझता है उसकी मर्जी है। माने सो मर्जी, न माने सो मर्जी उसकी अपनी है। और सब ठीक है, आनन्द मौज में है।

आप देख रहे हैं मैं तो ठीक हूँ, थोड़ा बहुत इलाज चल रहा है यह शरीर तो नाशवान है, पाँच तत्वों का बना हुआ है तो यह कभी भी किसी का रहा नहीं। राम गयो, रावण गयो जाको बहु परिवार, कोई बचा तो आज तक है नहीं। यह काल जो



है यह तो सबके शरीर को खा जाता है। आज नहीं कल, कल नहीं परसो होता है सबका। तो जो इसका हिसाब-किताब है, जो यह दाना-पानी माँगता है कोशिश करके इसको देते हैं। जब तक चलता है तो कोई ऐसी चिंता की बात तो है नहीं। बाबा के पास बैठे हैं, बाबा का सहारा है नथिंग टु वरी, नो प्रॉब्लम। ठीक है। और आप लोगों की दुआयें हैं, अच्छी शुभ-कामनायें जो हैं वह बहुत मदद करती हैं। यह जो दैवी परिवार है इसका योगबल, ज्ञानबल, पवित्रता का बल यह बहुत मदद करता है। तो उसके लिये आप सबका बहुत-बहुत थैंक्स। ओम् शान्ति।



परीक्षायें व परिस्थितियाँ जीवन में आगे बढ़ाने के लिए आती हैं, निश्चय वाला सदा निश्चित रहता है

ज्ञान से पहले मनुष्य जो अनुभव करता है वह स्थूल चीजों के अनुभव करता है लेकिन जैसे-जैसे हम अभ्यास करते हैं तो सूक्ष्म अनुभव भी होने लगते हैं। यह इस बात की निशानी है कि हम आगे बढ़ रहे हैं। किसके मन में क्या है, हमें इस चीज़ की जानने की ज़रूरत नहीं है। कलियुग का अन्त है, कैसे थॉट्स होते हैं हमें पता ही है, इसलिए हमें किसी के मन के संकल्पों को जानकर क्या करना! लेकिन उसके जो वायब्रेशन्स हैं वह तो पता चलता है, उससे हम सावधान हो जाते हैं। हमें यह पता पड़ता है कि यह संग है या कुसंग है, इसके साथ कैसे चलना है, इसकी समझ बिना कहे, बिना बतायें आ जाती है। हमारा यह नया परिवार स्थापन हो रहा है, नया सम्बन्ध जुट रहा है, शिवबाबा के साथ सबका सम्बन्ध होने से, आपस में भी सूक्ष्म सम्बन्ध जुट रहा है। तो उसका वायब्रेशन कैसे नहीं पहुँचेगा!

जैसे बाबा से शान्ति के, प्रेम के बहुत पावरफुल वायब्रेशन आते हैं। प्रेम तो कहीं से कहीं खींचके ले आता है। तो यह प्रेम का भी एक नाता है, कनेक्शन है जो बहुत जबरदस्त होता है, खींचके ले जाता है। तो मैं यह अनुभव करता रहा कि बाबा स्वयं तो मिले, उन्होंने अपार खज़ाना दिया लेकिन यह इतना बड़ा ईश्वरीय परिवार दिया, वाह बाबा! आपका बहुत थैंक्स। कहीं थे हम, क्या थे.. आपने जब हमें अपना बनाया तो इतने बड़े परिवार ने भी हमें अपना लिया। यह भी एक जीवन में बहुत बड़ी प्राप्ति है। लोगों के सम्बन्ध ठीक नहीं होते हैं, कनेक्शन्स ठीक नहीं होते हैं। और बाबा हमारा



सबसे मेल मिला दे, हम एक दूसरे से मिलकर खुश हों, प्रसन्न हो.. तो यह भी खुशी का बहुत बड़ा साधन है।

कहते हैं आदि, व्याधि और उपाधि यह तीनों चीजें झंझट है। इससे पहले मेरे से कई लोग पूछते थे कि भाई, जो योग लगाते हैं वे सन्त-महात्मायें होते हैं, भगवान के बनते हैं, भक्ति करते हैं उनको क्यों कष्ट होता है? भगवान उन पर इतना भी नहीं करता कि कम-से-कम उनकी रक्षा करे, माफ करे ... फिर भगवान की भक्ति करने से फायदा ही क्या हुआ? कोई गवर्नमेंट में अपना बड़ा होता है, वह भी इनकम टैक्स माफ करा देता है, या कोई दूसरा काम करा लेता है, अरे भाई, इसका काम कर दो भला आदमी है। तो भगवान इतना भी नहीं करता कि अगर छोटी-मोटी हमें कोई तकलीफ हो तो वह खत्म हो जाए। जब क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया, उसने समझा था कि मुझे कुछ होगा नहीं, शायद भगवान उतरकर आ जायेगा, मुझे उतारकर ले जायेगा। या इन लोगों को फूँका मारेगा और वह वहीं मर जायेंगे। ऐसे लिखा हुआ है कि उसने कहा कि “अरे मेरे पिता! तुम भी मुझे छोड़ गये”! यह उसके मुख से एक दफा निकला। फिर उसके बाद दुबारा निकला क्योंकि उसने सोचा देर है अंधेर नहीं, अभी नहीं तो दो मिनट में भगवान आता होगा, बहुत बिजी होगा। मेरे से ज्यादा स्ट्रांग केस कोई और होगा वहाँ से फारिग होके आ जायेगा। लेकिन उसने देखा वह तो आता ही नहीं है। तो उसके मुँह से जोर से निकाला – My father, you have left me तुमने भी मुझे छोड़ दिया! यह सबसे लास्ट उसका अनुभव था, जो सूली पर चढ़ते टाइम क्रॉस पर उसने बोला था। इतना भला आदमी और जा जाके लोगों को यही कहता था our father in heaven हमारा पिता आसमानी बाप है, उसको याद करो। उसको कोई शिवबाबा ने ज्ञान तो दिया नहीं था, उसमें जितना भी ज्ञान था उसी अनुसार उसने ठीक तरह से जीवन जीने की कोशिश की। उसने अपने लिए खुद महल-माड़ी नहीं बनाई, कुछ नहीं किया। सब कुछ भगवान सदके किया और भगवान ने उसको सूली पर चढ़ने दिया। चढ़ जा बेटा सूली पर, राम बरी करेंगे। वह कहावत मशहूर है ना। वह सुली पर चढ़ गया फिर भी राम ने बरी नहीं की, तो उसको ऐसा लगा कि मुझे तो यह कुछ आश्चर्य लगता है। उसके



बाद तो उसको बहुत तकलीफ हुई और समाप्त हो गया। उसका सिर लटक गया।

तो लोग भी पूछते हैं कि क्या बात है जो भगवान के बनते हैं, उनको तो राहत मिलनी चाहिए। खुशी होनी चाहिए, प्राप्ति होनी चाहिए? क्या कारण है कि भगवान भी उनको छोड़के चला जाता है! और भगवान को कहते हैं रक्षक है। क्रिश्चन लोग भी कहते हैं God is our Saviour वह हमारी रक्षा करता है। तो उस टाइम क्या रक्षा की? तो यह बात लोग पूछते हैं। लेकिन मैंने अपने जीवन में भी और दूसरों के भी जीवन में यह अनुभव किये हैं कि भगवान दयालु है, कृपालु है, वह हमारा रक्षक है। वह सर्वशक्तिवान है। वह जो चाहे कर सकता है लेकिन वह न्यायकारी है। अगर वह खुद ही नियमों को तोड़ने लगे तो फिर बाकी क्या बात रही! मेरे से अगर राहत कर दे तो दूसरा कहेगा, मैं क्या बुरा हूँ? मैं भी आपका बच्चा हूँ, मेरे लिए भी ऐसे करो। बाबा कहते थे भीड़ लग जाये बीमार लोगों की, भगवान ज्ञान देने के बजाए लोगों की नब्ज देखता रह जायेगा। उसको कहेगा जबान निकालो, गला दिखाओ ... यही वैद्य का काम करना है क्या उसको! तो फिर ज्ञान नहीं दे सकता। लेकिन मैंने अनुभव किये हैं कि जानता वह सब विद्या है। सब विद्या में परिपूर्ण है। ईश्वरीय ज्ञान का सागर तो है ही। कोई ज्ञान-विज्ञान ऐसा नहीं है जिसका अंशमात्र भी वह नहीं जानता हो। जानता है। उसको हमारे प्रति प्यार है, दया का भाव है, हमारी रक्षा करना चाहता है लेकिन भाई, जो हमने गलती की है, उसका खामयाजा तो हमें ही उठाना पड़ेगा। जो भूलें की हैं और खास करके ऐसी भूलें, जिसके बारे में उसने पहले से कहीं भी किसी भी तरीके से, किसी के भी द्वारा हमें सावधान किया हो। बाबा रोज़ मुरली में कहते हैं कि यह करो, यह करो, हम नहीं करते हैं तो एक दिन तो खामयाजा उठाना पड़ेगा। तो इसी तरीके से यह होता है, बाकी भगवान मदद हरेक की करता है।

दूसरा मैंने देखा है कि हम अपने रीति से पुरुषार्थ तो करते हैं, जिसकी जितनी सामर्थ्य है। हर एक चाहता है कि मैं भी याद करूँ, पुरुषार्थ करूँ, सतयुग आ रहा है, मैं भी कुछ पद पा लूँ। लेकिन नम्बरवार तो हैं। बाबा कहते हैं नम्बरवाइज़ हैं लेकिन कोशिश हरेक की है कि मैं अच्छा बनूँ, देवी-देवता बनने का पुरुषार्थ करूँ,



दिव्य-गुण धारण करूँ। यह सब करते हैं लेकिन इतना करने के बावजूद भी कई चीजें हम नहीं कर पाते हैं। आप सब अनुभवी होंगे। मैं भी इस बात का अनुभवी हूँ, बहुत कोशिश करने के बाद भी नहीं कर पाते हैं। लगे रहते हैं दूसरे कामों में। बाबा कहता अरे बच्चे, अलबेलापन मत करो। अरे ओना रखो, फुरना रखो, 63 जन्मों के विकर्मों का बोझा है। यह जन्म-जन्मान्तर का बोझ कैसे उतारेंगे, इसे उतारो। इस बात का ख्याल रखो। वार्निंग देते हैं, समझाते हैं। हम चलते जाते हैं – आज यह है, कल यह है, परसों यह है। उतना ध्यान नहीं देते जितना सर्वशक्तिवान साक्षात् भगवान स्वयं कह रहे हैं। अरे सुनते हो कि नहीं सुनते! कौन कह रहे हैं? बाबा कई दफा मुरली चलाते हुए पूछते हैं – अच्छा बच्चे - समझे। समझे कुछ, कि नहीं समझे! बाबा पूछते हैं और सब कहते हैं – हाँ, हम समझे। समझे हैं तो फिर जीवन में चेन्ज आना चाहिए लेकिन वह चेन्ज आता नहीं है। बाबा ने जब हमारी गैरन्टी ले ली है कि मैं कल्याण करूँगा, आपके जीवन में परिवर्तन लाऊँगा, आपको घर वापिस ले चलूँगा, आपको काँटे से फूल बनाऊँगा.. तो हमारा भी ऐसा पुरुषार्थ हो। मैं आगे बढ़ूँ, जीवन में पवित्रता लाऊँ, सद्गुरु लाऊँ। कई बार पुरुषार्थ करने के बावजूद भी हमारे जीवन में कुछ संस्कार, कुछ कमी-कमजोरियाँ रह जाती हैं। जानते हैं कि यह चीज हमारे में ठीक नहीं है। कमजोरी बड़ी होती है लेकिन अपनी आत्मा की शक्ति इतनी नहीं होती जो झट से उसको खत्म करें।

तो बाबा ने जब गैरन्टी ले ली है, जब हमने बाबा के सामने अपने आपको अर्पण कर दिया। तो बाबा ने कहा - मैं तुझे मोक्ष दिलाऊँगा। मोक्ष शब्द को लोग बहुत अच्छा मानते हैं। मैं तुझे इन बुराइयों, दुःखों से मुक्त करूँगा, तू चिन्ता मत कर। तू मेरा बच्चा है, मैं बैठा हूँ, यह जिम्मेवारी मेरी है। तू मेरी शरण में आ जा... उसके बाद बाकी सारी जिम्मेवारियाँ मेरी हैं। तो बाबा हम आपके पास आ गये। हम तो अन्जान हैं, असमर्थ हैं.. जितना समझते हैं, जितनी हमारे में शक्ति है वह आपको मालूम है, आपके सामने है, हमसे ज्यादा आप जानते हैं। अब जो आपने करना है सो करो। कपड़ा धोबी को दे दिया, भाई साफ़ करके दे दो। वैद्य के पास जाते हैं वह कहता है यह दवाई लेना, यह यह करना - कोशिश करते हैं। हम यही कर सकते



हैं लेकिन वह तो परफेक्ट वैद्य है और वह तो टोटली सम्पूर्ण है, हर बात में परफेक्ट है। तो क्या उसका वचन टल सकता है! मनुष्य का वचन तो टल जाता है वह कहेगा मैं आपकी मदद करूँगा, आप चिन्ता क्यों करते हो, मैं बैठा हूँ ना। कुछ हो तो मेरे को कहना और जब ज़रूरत पड़ेगी तो कहेगा मैंने आपको कहा ज़रूर था, परन्तु भाई अब मैं वह नहीं कर सकता। उस टाइम मेरे पास धन था, अब मैं गँवा बैठा हूँ या कहेगा उस टाइम जवानी थी। अभी भगवान ऐसे असमर्थ तो नहीं हैं। त्रिकालदर्शी है, सोच-समझके बात करता है तो हमारी जन्म-पत्री को जानते हुए वह हमसे वचन देता है। अटल वचन देता है कि बच्चे - मैं तुझे पार ले चलूँगा। यह कम है! यह मेरी जिम्मेवारी है, यह कम है! हमने क्या भी खुराफात की, अब वह कहता है कि तू चिन्ता न कर, मैं तुझे ठीक कर दूँगा। कर दो। उसमें यह जो व्याधियाँ हैं, यह सिर्फ व्याधियाँ नहीं हैं, यह शरीर के कष्ट नहीं हैं, यह नये-नये अनुभव कराते हैं। कई चीज़ें जो हमें छोड़नी चाहिए, अपनानी चाहिए, जिस बात की तरफ ध्यान देना चाहिए, हमारा ध्यान कम है, उसकी तरफ दिलाते हैं। सारा दिन बिज़ी, सारा दिन बिज़ी...। अब बैठे हैं चारपाई पर दिन के 11/12 बजे तक लेटे हुए हैं। क्या करोगे, याद करो बाबा को। जो आपने पहले इतना टाइम नहीं दिया, अब बाबा ने मजबूरी से बिठा दिया। लेट चारपाई पर, कर मुझे याद। तो आप देखिए बाबा यह तरीके अपनाता है। इसमें हमारा कल्याण भरा हुआ है और लोग समझते हैं भगवान हमारी बीमारी को ठीक नहीं करता। अगर बीमारी को ठीक कर दे, तो मेरा योग का चार्ट कैसे बढ़े। वह रोज कहता है तू अलबेलापन छोड़, तू ओना रख, फुरना रख क्योंकि 63 जन्मों का तेरे ऊपर बोझ है। तो उसने यहाँ से पकड़कर कह दिया - बैठ! लेट जा यहाँ पर। लेटा दिया। लेटा के कहता है अब क्या करेगा बोल! बाबा जो कहोगे वह करूँगा। अच्छा बाबा को याद करो, मेरी चर्चा करो, मेरी ही बात करो। भक्तिमार्ग में जो नौधा भक्ति है या योग की जो सम्पूर्णता है वह यही तो है। केवल उसी का ही मनन-चिन्तन करना। मन में और कोई संकल्प न आये। क्या जीवन में कोई ऐसा एक दिन भी होगा जिसमें हमें और कोई ख्याल नहीं आये? प्रभु, प्रभु, प्रभु..... भक्ति मार्ग में जैसे निरन्तर माला जपते हैं और कोई भी संकल्प भवगान के सिवाए



आये ही नहीं और उसी की याद में, उसके पास पड़ा हुआ है कि हे मेरे प्रिय पिता बोल क्या करना है। तो यह जो व्याधियाँ आती हैं। योगियों के, सन्त-महात्माओं के, भक्तों के जीवन में जो इस तरह के कष्ट आते हैं, वह उनके अनुभवों को बढ़ाते हैं।

कई लोगों को मैंने भक्ति करते हुए देखा है जब भक्ति करते हैं तो इतना मस्त हो जाते हैं, भूल जाते हैं सब। जैसे कोई लोग पान खाते हैं, उनको पान का रस आता है... ऐसे ही भक्ति वाले भक्ति का रस लेते हैं, बहुत उनको रस आता है। तो यह योग का आनन्द जिनको आये वह भी सब भूल जाते हैं। तो बाबा ने हमको और चीजों से जबरदस्ती छुड़ाकर योग में बिठा दिया है, जिसको हम छोड़ नहीं रहे थे, मेरी अवस्था अब ७० साल से ऊपर हो गई है। मैं चाहता था कि अब मुझे ज्यादा योगयुक्त रहना है। सेवा की है, सेवा अभी भी करूँगा। जो आयेगा उसे दृष्टि दे दूँगा। और जो ज्ञान के दो वचन होंगे, कहूँगा। साइलेन्स में रहूँगा। अब मेरा यह अन्तिम पीरियड है, अब मैं उसकी याद में रहना चाहता हूँ। वह तो ठीक है लेकिन यह काम कौन करेगा! सेन्टर वाले कहेंगे, यह कौन करेगा? तीसरा आदमी कहेगा यह कौन करेगा? सब लोग पकड़ेंगे कि यह कौन करेगा? अरे दुनिया मेरे से तो नहीं चल रही है। बहुत से प्राइममिनिस्टर हैं, वह समझते थे, हम ही चला रहे हैं भारत-वर्ष को। अब खुद ही मुकदमें-बाजी में बिजी हैं, कोर्ट में चल रहे हैं। चला रहे थे भारत-वर्ष को। तो यह कोई फारिग होने नहीं देता। जीते जी आदमी को ठीक तरह से कोई छुट्टी दे दे, ऐसा होता नहीं है। घर वाले कहते हैं पिताजी, सुबह को दूध आप ले आया करो, सब्जी-फल वगैरा आप ले आया करो। हम कहीं जाते हैं, बच्चों को आप सम्भालो। वह छूटता नहीं है। तो इन सबसे छूटकर निरन्तर योग में हम कैसे रहेंगे? योग का वह आनन्द कैसे प्राप्त करेंगे? फिर भी ना करें तो वह भी हमारी मूर्खता है, हमारी कमी है लेकिन मौका तो हमें मिले। वह मौका देता है, हमें सबसे छुड़ाकर ऐसे जबरदस्ती। तो यह व्याधि नहीं है। इसके सदके लाभ, कल्याण हो जाता है। जब आप कहते हो कि उसका नाम शिव है, शिव माना कल्याणकारी है। तो जब वह जानता है कि मेरे बच्चे को बीमारी है, तो कल्याण ही करेगा। घर में कोई बच्चा बीमार होता है। माँ-बाप भागे-भागे जाते हैं या टेलीफोन करते हैं, डाक्टर को बुलाते



हैं, डाक्टर साहब इसको देखो। कितना भी बड़ा डाक्टर हो, कितना ही खर्च हो। कहते हैं कि यह बच्चा जल्दी से ठीक होना चाहिए। वो तो हमारा मात-पिता भी है, सर्जन भी है। खुद कहता है मैं सबसे बड़ा सर्जन हूँ, फिर क्या नहीं कर सकता है? सब कर सकता है लेकिन वो हमें यह मौका दिलाता है कि बच्चे अब भी अगर तू नहीं मानेगा तो मैं क्या करूँ! तू कर ले याद, अगर करना है तो, नहीं करना है तो तेरी मर्जी है। तो वो हमें सहूलियत देता है, टाइम दिलाता है, जिसकी ओर ध्यान दिलाता है, हमारा अटेन्शन उस पर खिंचवाता है, जिससे हमें यह फायदा होता है। तो कभी भी हमें यह महसूस नहीं करना चाहिए कि यह क्या ज्ञान है?

कई कहते हैं कि शिवबाबा यहाँ पर ब्रह्मा के तन में आता है, गुल्जार दादी के तन में आता है। हम कई दफा मधुबन में बापदादा से मिले। बापदादा हमारा इतना भी ख्याल नहीं करता है मैं बीमार पड़ा हूँ और यह ऐसी बात है, सारा ज्ञान गुम होने का अन्देशा होता है। नहीं। पॉजिटिव थिंकिंग का कोर्स कराते हैं, पॉजिटिव थिंकिंग क्या होती है? यह तो निगेटिव थिंकिंग हो गई। यह गलत ख्याल है फिर सारी की हुई कमाई अपनी खत्म कर रहे हैं। निश्चय डावांडोल हो गया, फिर लुढ़क गये - बेपैदे के लोटे की तरह से। क्या फायदा हुआ? मैंने पहले भी कई दफा अनुभव किया है, हमें कोई मारने आता है। कहता है तू ब्रह्माकुमार है! अगर उसको कहो - हाँ मैं ब्रह्माकुमार हूँ तो सिर पर लाठी मारेगा। शुरू में हमने अनुभव किया, कई लोग हमारे खिलाफ थे। हमने हाथ जोड़ दिया, अब उसका मतलब वह कुछ भी समझे। हम हैं या नहीं है, वह अपने आप उसका अर्थ निकाले क्योंकि गुस्से में आके कहीं मैंने कह दिया कि मैं ब्रह्माकुमार हूँ। है, तो ठहर फिर तू, तू कहता है भगवान आया है, कहाँ है? भगवान को बुला, आज मैं तेरी खबर लेता हूँ। जैसे आपने सुना है प्रह्लाद के साथ क्या हुआ? भक्तिमार्ग में ऐसे बताते हैं तो मेरी तो खैर नहीं है। मैंने हाथ जोड़ दिया, हाथ जोड़ दिया तो वह क्या करेगा!

हम जो कहते हैं निर्भयता का गुण धारण करो, अभय बनो। यह शरीर नाशवान है। आत्मा अविनाशी है। एक दिन तो शरीर छोड़ना ही है, घबराते क्यों हो। "मौत का एक दिन मुहियन है, फिर नींद क्यों शव पर नहीं आती" तो यह होता है। सामने



परिस्थितियाँ वा परीक्षाएँ आयेंगी, आप अपनी अचल-अडोल अवस्था में रहें। अगर परिस्थितियाँ ना आये तो हम पक्के कैसे होंगे ? कई परीक्षाओं में थोड़ा सा हिल जाते हैं। हिलना नहीं चाहिए। निश्चय वाला निश्चित होता है। और जो निश्चयात्मा होता है उसकी विजय होती है। घबराते क्यों हो, निश्चय का यह बल है। तो मैं यह अनुभव करता हूँ, समझता हूँ मैं कोई परफेक्ट नहीं हूँ। कोई ऐसा नहीं कि पूर्ण पुरुषार्थ कर रहा हूँ। जैसे बाबा कहता है बिल्कुल हूबहू वैसा ही कर रहा हूँ। कमियाँ हूँ, पूरी तरह से नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन बढ़ा तो रहा हूँ, कोशिश कर रहा हूँ कि और अच्छा हो, यह मुझे मौका मिला है, मैं इस मौके से पूरा लाभ उठाऊँगा।

इसलिये यह सोचने की बात नहीं है कि मैं बीमार हूँ। आखिर कितने दिन हैं, कितने साल जियेंगे हम ? मान लीजिए मेरी इस समय शरीर की आयु 71 वर्ष है, 71 वर्ष कम्पलीट होने वाले हैं। मैंने एक दिन में 16, 18 घण्टे, 22 घण्टे भी काम किया है। खूब जी-जान से डटके काम किया है। तो उसके हिसाब से अगर आप लगायें तो 70 साल भी नहीं है क्योंकि 70 साल में अगर आदमी 6-7 घण्टे सो जाये, खूब खाने-पीने में और ऐशो-ऐशरत मनाने में मस्त रहे, तो उसकी लाइफ तो आप कह सकते हैं 70 साल की है। जिसने बहुत मेहनत की है, काम किया है, उसने लाइफ को जेस्टीफाय किया है, उसके हिसाब से अगर आप देखें तो 100 साल जैसे पूरे कर लिये। अच्छा 100 साल का नहीं भी हो, चलो 71 साल का भी हो, कितना और मनुष्य जीना चाहता है! उसकी तृष्णा तो कभी पूरी नहीं होती। पुराणों में कथा आती है - “आप भया बूढ़ा, तृष्णा भई जवान”। बूढ़ा हो गया, तृष्णा उसकी मिटी नहीं तो अपने बेटों को बुलाकर कहा कि राज्य आपको दे दूँगा, जवानी मुझे दे दो। सब लोगों ने कहा हम जवानी देके बूढ़ें क्यों हो, तेरी वज़ह से। तू बूढ़ा हो चुका है तो तू ही बूढ़ा रह, हम तेरा बुढ़ापा लेके तेरे को जवानी दें, हमें क्या पड़ी है। हमें नहीं चाहिए ऐसा राज्य। एक बेटे ने अपनी जवानी उसे दे दी। उसके बाद भी वह तृप्त नहीं हुआ, यह विषय-वासनायें, यह संसार की इच्छायें, कामनायें, तृष्णायें जिनको कहते हैं वह पूर्ण होने वाली नहीं हैं। मैं कहूँ कि अगर मैं 25 साल और जी जाऊँ कुछ और लिख लूँगा, कुछ और सेवा कर लूँगा, कुछ यह कर लूँगा, वह कर



लूँगा। करूँगा कि नहीं करूँगा। बाबा कहते हैं ना बच्चा माँ के पेट से बाहर आता है, कहता है वाँ, वाँ, ... वहाँ की वहाँ रही। आगे का पता कुछ नहीं लगता। तो कल्याणकारी बाप को हमने हाथ दिया हुआ है, वह जैसे चाहे..। अपना एक गीत बना हुआ है - जीवन की नय्या कर दे उसके हवाले...। वह जैसा चाहे वैसे ही सम्भालें बस, सीधी सी बात है, हम नहीं जानते हैं। हम तो थोड़ा-सा जानते हैं, चूहे को हल्दी मिली तो बोलता है कि मैं भी पंसारी हूँ। मेरी भी बहुत बड़ी दुकान है, मैं भी कुछ कम नहीं हूँ, ऐसा नहीं हमारा कितना ज्ञान है, अल्पज्ञ है। वह तो सर्वज्ञ है। अल्पज्ञ और सर्वज्ञ में रात-दिन का अन्तर है। तो उसके ऊपर जब तक नहीं छोड़ेंगे तो हमारा कल्याण कैसे होगा! छोड़ दो उसके ऊपर, तू मालिक है.. यह तेरे हवाले है। अब जो करना है सो कर। That's all O.K.

आपका प्यार मुझे मिला और उससे लगता है मुझे प्राप्ति हुई जीवन में कुछ किया, जो आप लोग मुझसे प्यार करते हैं तो यह भी एक जीवन की सफलता है। इतने दूर से आप तकलीफ से आते हैं, मैं चाहता नहीं आपको तकलीफ दूँ लेकिन जब कभी आप आते हैं तो मेरी खुशी में वृद्धि ज़रूर होती है। सब कुछ दिया हुआ बाबा का है, कराया बाबा ने है, मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। लेकिन फिर भी यह लोग प्यार से मेरे को मिलने आये है तो मन गद्गद् होता है। थैंक्यू - ओम् शान्ति।



योग में मग्न स्थिति अथवा आनन्द की अनुभूति करना ही जीवन का सबसे श्रेष्ठ लक्ष्य है

हम योग का अभ्यास करते हैं, हमारे जो सबजेक्ट्स हैं वह तो हमें मालूम हैं। कुल मिलाकर हम यही कहते हैं कि यह हमारा पुरुषार्थी जीवन है। हम पुरुषार्थ कर रहे हैं, किसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिये। और कई दफा बाबा इसको एक दौड़ या रेस की उपमा देते हैं। कई दफा तो बाबा यह भी कहते हैं कि यह हॉर्स रेस है। हम सब लोग उस रेस में शामिल हैं, कोई आगे बढ़ रहा है, कोई थोड़ा स्लो प्रोग्रेस कर रहा है। चाहते सभी यही हैं कि हम अपनी जो सम्पूर्ण स्टेज है उसको प्राप्त करें। बहुत दफा हम दिव्य गुणों की लिस्ट पढ़ते हैं कि 36 मुख्य दैवी गुण हैं, यह सब हम धारण कर लें। इस तरह से हम योगी बनें तो हमारे मन की एकाग्रता जो है वह सम्पूर्ण हो जाये और बहुत आनन्द में हम मग्न हो जायें। बाबा के साथ जो आत्मा का मिलन हो जो योगी जीवन का आनन्द कहा हुआ है बस, उसमें रम जायें, समा जायें हरेक की यह कोशिश होती है।

कइयों ने यह अनुभव किया है, बहुतों ने यह अनुभव नहीं किया है। आत्मा और परमात्मा के मिलन का जो आनन्द है, उसमें लवलीन होना है, मग्न होना है, समा जाना है। मन उसमें पूरी रीति से टिक जाये, इधर-उधर न जाये, एकरस, अचल अवस्था में हो। उसका अनुभव इसी जीवन में विशेष रूप से मिल सकता है। ऐसे द्वापर युग से लोग पुरुषार्थ करते आये कि ऐसा प्राप्त हो लेकिन परमात्मा का पूर्ण परिचय न होने के कारण वह ऐसा कर नहीं पाये। फिर भी जितना उनको जैसा मालूम



था, अपने जीवन को अच्छा बनाके कुछ ना कुछ उन्होंने पाया, अपने जीवन में आनन्द प्राप्त किया। हम यह काफी समय तक, चिरकाल तक प्राप्त कर सकते हैं। जीवन का सबसे बड़ा खज़ाना जो है वह यही है। सबसे बड़ी प्राप्ति यही है। सारे कल्प में जो एक ही बार मिलती है, फिर बार-बार और किसी जन्म में नहीं मिलती वह यही इस संगम में मिल सकती है। लेकिन क्या है, क्यों हम इस चीज़ को भूल जाते हैं। हमारी बुद्धि पर पर्दा क्यों पड़ जाता है, इस बात को समझते हुए इसका महत्त्व जानते हुए भी हम ढीले क्यों हो जाते हैं! जितना ध्यान हमें देना चाहिये, जितनी कोशिश हमें करनी चाहिये, क्यों नहीं करते! जब इतनी जबरदस्त प्राप्ति है, यह समझ में आ गया है, फिर गफलत क्यों करते हैं, इसका क्या कारण है? आप लोगों ने ज़रूर सोचा होगा और बापदादा भी मुरलियों में बहुत दफा यह बताते हैं। कारण तो कई हैं लेकिन संक्षेप में अगर हम देखें तो क्या है कि जन्म-जन्मान्तर के विकर्मों का बोझ हमारे ऊपर चढ़ा हुआ है।

जो हमारे खराब संस्कार पड़ गये हैं, वह आके मन को इधर-उधर ले जाते हैं। पहले यह कर लो फिर उसके बाद यह कर लो, इस तरह से मनुष्य कुछ ऐसे आना-कानी करता है, गफलत करता है। जिससे पूरा अटेन्शन नहीं देता, फिर अपने उस रास्ते से थोड़ा बहुत हट जाता है। क्यों हट जाता है? क्योंकि कई दफा वह निराश हो जाता है। पुरुषार्थी जीवन में जो सबसे ज्यादा खतरनाक चीज़ है वह है – निराशा। अरे भाई, इसको छोड़ो, हम पवित्र नहीं बन सकते हैं, हमारे बस का नहीं देवी-देवता बनना। जितना बन जायेंगे सो बन जायेंगे। इतने बजे उठो, रोज अमृतवेले नींद को छोड़कर यह करो, वह करो - यह अपने से नहीं हो सकता है। सहज जो हो सकता है ठीक है, नहीं हो सकता है छोड़ो उसको। तो इजी गोइंग हो जाते हैं। बाबा ने तो कहा है यह योग इजी है। सहज है। बाबा भी नहीं कहते कि हम कोई मुश्किल में पड़ें लेकिन यह इजी भी हमें मुश्किल लगता है। क्यों मुश्किल लगता है? क्योंकि कभी-कभी विशेष अनुभव होता नहीं। अच्छा उठे अमृतवेले, कोशिश की मन को एकाग्र करने की लेकिन मन तो टिका नहीं, लाभ कुछ हुआ नहीं। नींद भी गँवाई, योग भी नहीं किया। अरे आराम से सोओ, योग तो बाद में लग सकता है। किसने



कहा है कि ३:३० बजे योग लगता है, योग तो किसी टाइम लग सकता है। तो आदमी अपने को गलत तरीके से समझाता है। समझता तो यही है कि मैं बुद्धिवान व्यक्ति हूँ अपना भला सोच रहा हूँ। लेकिन गलत सोच लेता है। क्यों ऐसा लेता है? क्योंकि निराशा होती है। जब प्राप्ति नहीं होती, कोई बिजनेसमेन कोई बिजनेस करता है अगर उस बिजनेस में इन्वेस्ट करने के बाद, दिन भर काम करने के बाद कुछ टाइम लगाने के बाद उसको कुछ मिलता नहीं है तो सोचता है समेटो इस झंझट को, क्या रखा है इसमें। यह तो नुकसान ही नुकसान है, प्राप्ति तो कुछ हो नहीं रही है। तो यह निराशा का संकल्प उसके विल पॉवर को वीक करता है। उसमें फिर वह उतनी ऊँची प्राप्ति नहीं कर सकता है। तो इसमें हमको यह समझना चाहिए कि यह कर्म का लॉ है।

जैसे हम दूसरों को कर्म की थ्योरी या लॉ बताते हैं, उसमें कई दफा हम यह बताना भी भूल जाते हैं और अपने जीवन में भी उसको भूल जाते हैं। 'एक्शन नेवर गोज वेस्ट' कोई भी कर्म टोटली वेस्ट जाये, ऐसा हो नहीं सकता। आज अगर आपको अनुभव नहीं हुआ, आपने पुरुषार्थ किया और आप समझते हैं कि बेकार है, मैं आगे के लिये नहीं उठूँगा। तीन दिन से कोशिश कर ली, माथा मार लिया अब ज्यादा नहीं करूँगा, यह सोचना गलत है। वह एक्शन थोड़ा थोड़ा काम कर रहा है। एक दिन जल्दी आने वाला है जब आपको वह आनन्द प्राप्त होगा लेकिन कुछ बाधाये आपके जीवन में ऐसी हैं जो तोड़ने में आपको समय लग रहा है। बाकी ऐसा नहीं है कि आपको बिल्कुल ही प्राप्ति नहीं हुई, एक्शन टोटली चला जाये ऐसा नहीं होता।

कहने का भाव यह है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म भी कोई कर्म हो पुरुषार्थ हो, कोई एक्शन हो, वह वेस्ट नहीं जाता। वह असर तो लाता ही है। इसीलिए जो हम पुरुषार्थ करते हैं, उससे कभी-कभी अगर निराश हो जाते हैं, यह गलत है। यह निराशा हमारा बहुत बड़ा शत्रु है, यह हमारे रास्ते में बहुत बड़ी रुकावट है। बाबा कहते हैं निश्चयात्मा विजयन्ती। निश्चय रखोगे कि यह रास्ते में रुकावटें सब मैं दूर करके रहूँगा। मुझे अपने लक्ष्य तक पहुँचना ही है, चाहे जो कुछ हो जाये। जहाँ पर यह दृढ़ता होगी, वहाँ



निराशा नहीं आयेगी, वरना निराशा आ जायेगी। कहते हैं 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'। जिसका मन हार गया वह तो हार ही गया। ऐसा जीवन में कभी नहीं आने देना चाहिए। तो पुरुषार्थ अथक वह है जैसे हम सेवाधारी के लिये कहते हैं, यह अथक सेवाधारी है। ऐसे पुरुषार्थियों में भी अथक पुरुषार्थी होते हैं जो थकते नहीं हैं। अरे भाई 60 साल योग लगाया है, बाबा के तो बन ही चुके हैं और अभी हमारे जीवन में और लफड़ा ही क्या है, अब क्या करने का है। रात के राही थक मत जाना सुबह की मंजिल दूर नहीं, यह तपस्या है, साधना है। इसमें एक भी अबसेन्ट आने नहीं दो। अगर आपने कहीं ढील की और वह मिस करने लगे तब तो डाउन फॉल शुरू हो जायेगा। सावधान रहो। चाहे आप कितने भी बड़े योगी हो, कितने भी वर्ष आपने पुरुषार्थ किया हो, साधना आपकी बहुत ऊँची क्वालिटी की हो, यह अभिमान, कभी मन में सूक्ष्म विचार कभी भी नहीं आना चाहिए। कर लिया अब क्या बात है अब क्या ज़रूरत है... यह विचार ही गलत है, यह गिरावट का साधन है। करते चलो, करते चलो, निराशा उसमें न आये।

दूसरी बात - हमारे जीवन में कई ऐसी आदतें हैं, कमी-कमजोरियाँ हैं, खराबियाँ हैं, जो लगता है यह तो मामूली-सी बात है, कोई खास नहीं है, थोड़ी सी है। अब शुरू में आदमी सिगरेट पीता है तो पहले-पहले एक दिन में कोई सारी डिब्बी तो खत्म नहीं कर देता है। एक सिगरेट पीता होगा, आधी भी पीता होगा अच्छी भी नहीं लगती होगी। थोड़ी से ही शुरू करता है। थोड़ी-थोड़ी करके ही चीज़ बढ़ती है, इसलिये इसकी गफलत मत करो कि मेरे में यह खराबी जो है थोड़ी-सी है, ठीक हो जायेगी। वह एक दिन आपको हड़प कर देगी। ध्यान दो वह थोड़ी-सी निकालो। थोड़ा-थोड़ा करके बूँद बूँद करके तलाब बनता है, तो यह सारी चीज़ें बढ़ती जायेगी। बीमारी बढ़ती है। इसलिए शुरू से ही उसको समाप्त करो। तो थोड़ी कह के जो टाल देता है, वह बड़ी गलती कर बैठता है। बाद में पश्चाताप करता है कि मैंने ऐसा निकम्मा काम किया है, तो यह गफलत भी कभी नहीं करना चाहिये। सभी में कुछ ना कुछ ऐसी बातें हैं, जो ठीक होने की हैं और हम उनकी तरफ गाफिल हैं, हम उनको थोड़ी समझके चला रहे हैं। उसका नतीजा जो है, अब वह हमें खत्म ना करें,



इसका कुछ ख्याल करने की ज़रूरत है, थोड़ी नहीं है। किसी कमरे में आप घास भर दो, उस घर में एक छोटी-सी चिंगारी जो है, आग की स्पार्क डाल दो तो क्या होगा ? सबको आग लग जायेगी। तो थोड़ी-सी चीज़ को थोड़ा मत समझो वह मल्टीप्लाय हो जाती है, बढ़ जाती है, यह जिन लोगों ने राज गँवाया है। हिस्ट्रियाँ आप पढ़के देखिए, कई लोगों ने उनको समझाया यह गलत काम कर रहे हैं। शुरू शुरू में दो चार लोगों ने उनको बताया कि महाराज, आप यह ठीक नहीं कर रहे हो, इसका नतीजा ठीक नहीं होगा। उन्होंने समझा दो-चार-पाँच लोग ऐसे विरोध करने वाले हैं, कोई बात नहीं है, इनको दबा दो। दबाने की कोशिश की, नतीजा यह हुआ, राज्य गँवाना पड़ा। उन्होंने यह नहीं समझा कि यह बढ़ जायेगा, वक्त पर उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। तो इसके लिए ही बाबा कहते हैं – ‘अलर्ट बनो। एक्टिव बनो’।

हमारे शत्रु पाँच विकार हैं उनसे जो हमारी लड़ाई है उनसे अलर्ट रहो। वह थोड़ा-थोड़ा करके आपमें प्रवेश करेंगे। थोड़ा-सा यह खा लो, थोड़ा-सा ऐसा कर लो, कोई फ़र्क नहीं पड़ता। इतने वर्ष के तुम योगी हो तुम्हारे ऊपर इसका कोई असर होने वाला नहीं है, जब लोगों के बहकाने से, कहने से कर लेता है, वह थोड़ा-थोड़ा उसको पूरा ही खा जाता है। इसलिए अलर्ट रहो। समझा। इसको बाबा कहते हैं अलर्ट और एक्टिव रहो। इतनी की हुई साधना ऐसे ही जाने न दो। तुम रोज सुबह उठते रहे, नहाते-धोते रहे, ठण्डी में भी, गर्मी में भी, नींद का त्याग किया चाहे कितने बजे भी सोये। तुमको ईश्वर की लगन थी, तुमने और कुछ इकट्ठा करने की कोशिश भी नहीं की और एक ही तरफ धुन लगाके चलते चले, अब थोड़े में तुम फँसने लगे तो मारे गये, समझो, तुम्हारे गिरावट के दिन आ गये। इसीलिए इस चीज़ का ख्याल रखना चाहिए।

फिर तीसरी बात है - पोस्टपाण्ड कर देना। आज नहीं करते हैं, कल करेंगे। आपके द्वार पर भाग्य आकर आपको खटखटाता है। आपको जगाता है, चलो मैं तुम्हें राजा बनाता हूँ, तुम कहो आज नहीं भाई, कल आना। मैं रात को सोया नहीं था, अब तुम जाओ कल आना। अरे कल किसने देखा है ? दूसरा राजा बन जायेगा, इसको बाबा कहते हैं – चांस गँवाने वाले चान्सलर कैसे बनेंगे ? तो अच्छा काम कोई



भी है। सेवा का चान्स मिलता है, मान लो, हम कहें भाई, अब तो रहने दो, मैं बहुत थका हूँ, आज नहीं होगा। यह सेवा का चान्स आपको फिर इसी कंडीशन में, इन्हीं लोगों का, इसी हाल में नहीं मिलेगा। सारा परिवर्तन हो जायेगा। इसीलिए जिस वक्त जो चान्स मिलता है, गोल्डन चान्स, अच्छा चान्स उसको कर लो। करना है जो भी कर ले यह वक्त जा रहा है। कर लो जो भी, अभी करना है। वक्त की चोरी कौन करता है? टालमटोल। यह मत करो। अगर मैं समझता हूँ कि मेरे पास बहुत पैसा है, यज्ञ में जरूरत है इतना अगर मैं दे दूँ तो मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। सोच लिया हूँ दे दूँगा। उस वक्त देता नहीं है, कहता है अच्छा सोचूँगा, फिर उसके बाद कहता है अरे भाई, यहाँ ब्रह्माकुमारीज संस्था में क्या कमी है, तू काहे को चक्कर में पड़ता है। तू अपना पैसा अपने पास रख, तेरे काम आयेगा। देने वाले और बहुत हैं। फिर गया उसका भाग्य... जब कभी आपके जीवन में गोल्डन थॉट आये, अच्छा विचार आये कर लो। पता नहीं अगला श्वाँस आयेगा कि नहीं आयेगा, अपनी भारत की भाषा में ऐसे कहते हैं। हरेक बात को श्वाँसों में बोलते हैं। याद करो श्वाँसों-श्वाँस। तो यह समझके करो, जो अच्छा काम है उसको पोस्टपोन्ड मत करो। एक गाड़ी अगर पूरी तरह से खड़ी हो जाये फिर उसको धक्का देके चलाने में बड़ा मुश्किल होता है। अगर थोड़ा-थोड़ा वह चल रही हो, तो थोड़ा-थोड़ा करके भी करो। और दूसरा पोस्टपोन्ड अच्छी चीज़ को मत करो। खराब चीज़ को पोस्टपोन्ड करो। यह तो बड़ा अज़ीब आदमी है 10-20 आदमियों के सामने मेरी निंदा की है इसने, मेरी सारी इम्प्रेसन खराब कर दी इसने। लोग क्या समझेंगे, मैं कैसा आदमी हूँ? मन करता है इसको ठीक कर दूँ, सीधा करूँ इसको ठोक्कूँ। गुस्सा है मन में, तू कौन होता है बीच में, क्या मतलब तुम्हारा, क्यों बोलता है। क्या बिगाड़ा है मैंने तुम्हारा, गुस्सा आता है मन में तो इसको पोस्टपोन्ड करो। ठीक है आज छोड़ दो, इसको कल करूँगा। कल तक आपका गुस्सा आधा हो जायेगा, चला भी जायेगा। खराब चीज़ जो है उसको पोस्टपाण्ड करो, आज पोस्टपाण्ड करोगे, कल फिर पोस्टपाण्ड करोगे, परसो फिर पोस्टपाण्ड करोगे, वह खत्म हो जायेगा। किसी को कोई तकलीफ है, ट्यूमर है कुछ है तो डाक्टर लोग कहते हैं इसको ब्लड मत जाने दो, यह सूख के



खत्म हो जायेगा अपने आप ही। किसी व्यक्ति को कमरे में बन्द कर दो कई दिन तक खाना ही न दो, अपने आप सूख के खत्म हो जायेगा और क्या होगा। यह भी तरीका है किसी चीज को खत्म करने के लिये।

कोई खराब चीज़ बार बार आती है, आप ध्यान ही नहीं देते, हटा देते, जा भाई हमारे पास और काम है, यही करना है क्या ? तू कहीं और जा, हमारी छुट्टी कर वह भाग जायेगा। वह आपका पीछा छोड़ देगा। तो खराब चीज़ को पोस्टपोन्ड करो। अच्छी चीज़ को करने में लग पड़ो। यह छोटे छोटे टिप्स हैं हमारे पुरुषार्थ के। देखने में बहुत मामूली हैं, हरेक व्यक्ति जानता है, कोई नई बात नहीं है। लेकिन इसके यूज करने में फर्क पड़ता है। यह अगर हम करते चलेंगे तो मेरे ख्याल में हमारा प्रोग्रेस जो है वह दिन ब दिन आगे होता जायेगा। ओम् शान्ति।



उपराम स्थिति का अलौकिक अनुभव

आपके बीच में उपस्थित हूँ, आप सब देख रहे हैं कि मैं ठीक-ठाक हूँ, कोई समस्या प्रॉब्लम नहीं है। और जो कुछ भी शरीर के निमित्त डॉक्टर्स वगैरा ने किया, आपको मालूम है कई असुविधायें, परीक्षायें आती हैं लेकिन मेरे लिये इस कारण से भी सहज था क्योंकि साकार बाबा, मम्मा, यह दादियाँ उन परीक्षाओं में से गुजरी है। गुल्जार दादी है, जो भी वरिष्ठ बहन भाई है उनके अनुभव सुनते रहे, उनसे प्रेरणा मिलती रही है तो जैसे पहले से भी किसी बात की तैयारी हुई हो क्योंकि इस पढ़ाई का एक चैप्टर यह भी है, अन्त में सबको शरीर की परीक्षा तो आनी है। परमात्मा का नाम, धाम क्या है वह पढ़ाई भी आवश्यक है लेकिन साथ-साथ यह भी उस पढ़ाई का एक प्रैक्टिकल चैप्टर है। तो यह जल्दी या देर से हरेक के सामने आता है। अपने सामने भी आया। मैं तो खूब खेलता-कूदता, भागता-दौड़ता रहता था। मैं समझता था कि मैं एक छोटा सा बच्चा हूँ, युवा हूँ, कुमार तो हूँ ही। ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ कि आयु थोड़ी बड़ी हो गई है। भाग-दौड़ करते-करते अचानक से आके व्याधि ने थोड़ा

घेरा लेकिन वो अपना रूप दिखा रही थी, यह शरीर पुराना तो है ही। तो बाबा ने कहा है कि इसको चतियाँ लगानी पड़ती है, कई चतियाँ लगाकर चलाना पड़ता है। सुनते रहते थे, अब यह अनुभव की घड़ी भी थोड़ी-सी आ गई। लेकिन जैसे मैंने कहा कि अपना यह विशाल दैवी परिवार जो है, इसका जो बल है सबका स्नेह जो मिलता रहा, यह भी अनुभव की बात है कि कैसे स्नेह का बल मदद करता है। वह अपनी तरफ खींचता है कि यहाँ होते हुए जैसे कि हम नहीं होते ऐसा मैं महसूस करता रहा।

रोज़ मधुबन से दादी जी का फोन आता रहा, दादी जानकी जी का भी लंदन



से फोन आता रहा, गुल्जार दादी का आता रहा। मुझे तो और ही चान्स मिल गया कि रोज इनकी गुडमार्निंग, गुडनाईट होती और इनकी याद मिलती। बाबा ने जो हमें सिखाया हुआ है, जिसे हम योग का अभ्यास कहते हैं। बाबा कहते हैं – निरन्तर योगी बनो, वह स्टेज हम लोगों की आई नहीं है लेकिन जितना भी अभ्यास करते हैं उससे भी बहुत मदद मिलती है। बहुत फायदा होता है। तो वह जो कुछ करते रहे वह कहने लगे कि आपको उल्टी का विचार होता होगा, मैंने कहा – नहीं। अन्दर से घबराहट होती होगी - ऐसा नहीं। सिर चकरा रहा है - नहीं, ऐसा नहीं इत्यादि-इत्यादि पूछते रहे, खामखा मुझे उस चीज़ की कान्सेसनेस दिलाते रहे। लेकिन उस क्रिया में उनका पूछना ज़रूरी होता है क्योंकि फिर ऐसी स्टेज पर वह स्टॉप कर देते हैं। मैंने कहा नहीं आप इसको कम्पलीट कीजिए, तो यह क्या था ? यह बाबा का जो सिखाया हुआ योग था, उसी का प्रयोग था। बाबा की मदद थी, बहनों-भाइयों का स्नेह था, यह मैंने देखा और यह अनुभव किया।

फिर दो दिन छोड़के उन्होंने किया, वह उससे थोड़ा अधिक सक्त था, उस दिन उन्होंने जो कुछ किया फिर मुझे जब अपने कमरे में लाया गया तो थोड़ा देर तो मुझे डीप स्लीप आ रही थी क्योंकि रात भर मैं सोया नहीं था और किसी ख्याल से नहीं, एलर्ट था, एक्टिव था। सारा दिन काम तो कोई था नहीं, लिखना पढ़ना भी नहीं था, जीवन में कभी भी इतनी रेस्ट तो किया नहीं होगा, जो बिल्कुल बिस्तरे पर लेटे रहो और कुछ काम भी नहीं, तो रातभर बिल्कुल नींद नहीं थी। सुबह को ले गये उसके बाद जो उन्होंने किया, थोड़ा नींद का झपका कुछ देर डीप स्लीप में था, उसके बाद जो अनुभव था वह बहुत अनमोल अनुभव था। मेरे जीवन में एक विशेष अनुभूति थी, ऐसे पहले अनुभव करता रहा हूँ। लेकिन वह काफी टाइम की थी। लगभग दो-अढ़ाई घण्टे का अनुभव था, वैसे जब हम कभी करते हैं 15-20 मिनट, आधा घण्टा कर लेते हैं। कभी भी हम पहले काम करते थे, बहुत थके हुए हैं, लेट गये बाबा की याद में लाइट में महसूस करते थे, अशरीरी अवस्था का। लेकिन यह जो दो-अढ़ाई घण्टे में मैंने कोई विशेष पुरुषार्थ भी नहीं किया, बाबा की याद में तो था। मैं बाबा के साथ हूँ, मेरी कान्सेसनेस यह थी।



आपरेशन के टाइम डॉ० लोग जो ड्रेस पहनते हैं, माफ करना बड़ी अजीब-सी पहनते हैं। मुझे बड़ा अजीब लगता है। जैसे यमदूत घूम रहे हो चारों तरफ। कोई अच्छा सा ड्रेस पहनें या कोई एंजिल जैसे लगे, ऐसा नहीं, डार्क डार्क और ऐसा कुछ होता है रफ-डफ सा पहना हुआ जैसे लगता है कि भाई यह ले जा रहे हैं आज हमको धर्मराज की दरबार में। तो मैं जब यह दो-अढ़ाई घण्टे के बाद अपने कमरे में वापस लौटा, मुझे बहुत ही अच्छा अनुभव हुआ। मैं यहाँ होते हुए भी नहीं था, शरीर चारपाई पर था लेकिन मैं ऊपर की दुनिया में था, लाइट था। लाइट की दुनिया में था, बाबा के पास था। नीचे देख रहा हूँ लोग खड़े इन्तजार में कुछ बात करना चाहते हैं। कोई कोई आता है पूछता है, ठीक तो हो? कोई तकलीफ तो नहीं हो रही है? बोलने का मन नहीं करता, जवाब देने की इच्छा नहीं होती। ऐसे लगता है कि वह दुनिया ही अलग है, उसी में रह जायें, क्या नीचे जाके करना है। सुख है तो यही है, अनुभव है तो यही है, यह जो अनुभव हुआ दो-अढ़ाई घण्टे का अभी तक भी पूरी तरह से वह उतरा नहीं है। अभी भी आप सब बैठे हैं मेरे सामने, पहले भी बैठता रहा हूँ इसी हॉल में कुछ अजीब सा लगता है। ऐसा मालूम होता है जैसे उपराम हो कोई, काफी टाइम से, वैसे भी मैं उपराम तो हो चला था लेकिन यह उपरामता कुछ अलग टाइप की है, जैसे यहाँ होते हुए भी यहाँ का भान नहीं है। कशिश की बात नहीं, कशिश तो पहले भी नहीं थी।। क्या कहूँ इसको, शब्द नहीं मेरे पास। लेकिन ऐसा लगता है वो दुनिया अच्छी थी, वह अनुभव अच्छा था और यह बखेरा है। यहाँ लफड़ों में पड़े रहते हैं, यह करना है, वह करना है दौड़-धूप तो कर ली लेकिन जो करना है उससे हम गाफ़िल हैं, ऐसा महसूस होता था। अभी भी ऐसा नहीं कि मेरे योग का चार्ट बहुत ज्यादा बढ़ गया है, आप समझें मैं निरन्तर योगी हो गया हूँ, लेकिन पहले से फर्क तो पड़ा है। और अनुभव के लिहाज़ से मैं यह कहूँगा जो विदेही अवस्था या अव्यक्त अवस्था होती है, वैसी पूरी न हो मैं नहीं कह सकता वह तो बाबा वेरीफ़ाय करें लेकिन पहले से और अब में फर्क तो है। बीच में तो कम से कम महसूस करता हूँ। यह फायदा हुआ। बाकी लण्डन में जितना टाइम मैं था तो ऐसा नहीं कि मैं कोई अपने इलाज में ही लगा हुआ था,



वहाँ सर्विस करता था, अभी युवाओं के क्लास है, अभी महिलाओं का क्लास है, अभी कुछ सिन्धियों की क्लास है, अभी नये लोग आये हैं, अभी जनरल क्लास है... ऐसे दिन में ३-४ क्लास कराता रहता था। कुछ मिलने वाले वी.आय.पीज वगैरा आते थे उनसे सारा टाइम बिजी थे हम। ऐसे ही जब बॉम्बे में आये तो पहले दिन से ही डाक्टर्स से और नर्सस से ज्ञान की वार्तालाप होती रही। बाबा की टर्चिंग होती थी इसको क्या बोलूँ, कोई पहले से सोचा हुआ नहीं होता था कि इस डाक्टर से मैं यह कहूँगा, जैसे ही वह सामने आयेगा, बाबा की टर्चिंग से कुछ उसके लिये निकलेगा। तो पहले-पहले तो वह लोग हैरान हो गये, एलर्ट हो गये क्योंकि यह प्रथा तो है नहीं। डाक्टर जो आता है वह आपका ब्लड प्रेशर देखेगा, टेम्प्रेचर देखेगा और जो उसको चेक करना है वह अपना करेगा। तो फिर मैं उसको कुछ कहता था तो उससे नज़दीक आ गये और उनको मैंने कहा कि रोज़ एक लेसन लेकर जाया करो तो फिर अपनी बात करने के बाद वह कुर्सी पर बैठ जाते थे। अच्छा, आज का लेसन क्या है? जो वहाँ के बड़े-बड़े मशहूर डाक्टर हैं, प्रसिद्ध डाक्टर हैं, वह भी आकर 20-25 मिनट, आधा घण्टा जिस टाइम उनको थोड़ा फुर्सत होती, आकर बैठ जाते, अच्छा आज का लेसन क्या है और नर्सस भी किसी नर्स को कुछ, किसी को कुछ.. उनको टोली प्रसाद भी खिलाते थे। प्रसाद भी हमारा बहुत काम करता है। तो नर्सस की भी काफी सेवा हो गई। और जब मैं आ रहा था सारी नर्सस अपना काम छोड़के लिफ्ट तक आई। मुझे 16 वें फ्लोर पर रखा था, 16 कला तो बनना है ना। तो उस फ्लोर को स्पेशल वी.आई.पी. फ्लोर कहते हैं। तो 16 वें फ्लोर पर लोगों को यह मशहूर हो गया, कोई तो कहने लगा गुरुजी आये हुए हैं। कोई कहता स्वामी जी आये हुए हैं, कोई कहने लगे सन्त जी आये हुए हैं, उनका यह भाव जो था एक आध्यात्मिक हो गया था, रूहानी हो गया था और लिफ्ट तक छोड़ने आये। कहने लगे हमें भूल नहीं जाना। आप पेशेन्ट नहीं हैं, आप हमारे भाई हैं तो इस तरह से थोड़ा बहुत उनकी भी सेवा हुई। बाबा ने इसीलिए भेजा होगा, क्या राज है बाबा की हरेक बात में हमें मालूम नहीं। बाकी अब ठीक हूँ, यह इलाज जो करा रहा हूँ यह पूरा नहीं हुआ, यह चलता है कुछ समय तक। 3-4 दफा फिर जाना पड़ेगा। दुश्मन बहुत



बड़ा है, गोलियाँ 4-5 मारी जायेगी तब कहीं जाके ठीक होगा। बाकी आप सबकी शुभ भावना ने, आशीर्वाद ने बहुत काम किया उसके लिये आप सबका बहुत-बहुत थैंक्स। दादी जी का खास तौर से इन्होंने बहुत ध्यान रखा। मधुबन वालों की बाबा बहुत महिमा करते हैं। बाबा की आपमें बहुत उम्मीदें हैं। तो आप ऐसी विभूतियाँ हैं, उनके दर्शन के लिये हम आये यहाँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।



कर्म अटल होते हैं—हर कर्म का फल अवश्य मिलता है

बाबा का यह फूलों का बगीचा बढ़ते हुए देखकर बहुत खुशी होती है। उन फूलों के बगीचों में तो मैं किसी ना किसी कारण से जा नहीं पाता। लेकिन यह फूलों का बगीचा मुझे मिलता है जहाँ मैं जा सकता हूँ और इससे कोई कम खुशी नहीं होती है, यह भी मेरा स्वास्थ्यवर्धक है, पौष्टिक है, टॉनिक है क्योंकि जब यह देखते हैं कि बाबा की इतनी भुजायें बन रही हैं और दैवी सतयुगी नये विश्व की स्थापना होनी है और उसमें यह सब अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार जुट गये हैं, तो लगता है कि यह काम अब सहज हो जायेगा।

एक समय था जब यहाँ पर भाई बहुत कम थे, अब बढ़ते-बढ़ते जब इतनी पाण्डव सेना, शिवशक्ति सेना हो गई है तो खुशी का होना स्वाभाविक है। तो इसलिये मैं कह रहा था कि यहाँ आने से बड़ी खुशी हुई और यहाँ (ज्ञान सरोवर में) मनोहर दादी रहती हैं। ड्रामा में मनोहर दादी का जो पार्ट है, जब यह साकार बाबा के सामने बैठती थी और हँसती मुस्कराती थी, बाबा को बहुत अच्छा लगता था। जब बाबा मुरली चलाते थे यह हँसती रहती थी। मैं सिरीयस नेचर का व्यक्ति था, इनका और मेरा बहुत कान्ट्रास्ट होता था। तो मेरे मन में यह रहता था कि जैसे इनके मन में हर्ष है, मैं भी हो जाऊँ। अभी तक हुआ तो नहीं, क्योंकि इन्होंने मुझे छोड़ दिया। खैर यह तो दूसरा पहलू है।

बाकी बीच में स्वास्थ्य की यह थोड़ी सी परीक्षा आयी, बाबा ने शुरू से यह समझाया हुआ है कि ज्ञान के बाद परीक्षाएँ आती हैं, थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल टेस्ट



आते हैं। यह सब आप लोगों को मालूम है, कोई नई बात नहीं है लेकिन यह टेस्ट होता है, उसमें भी जब कोई व्याधि अचानक से आकर घेरे और वह कुछ ज्यादा जोरदार हो। आमना-सामना अच्छी तरह से हो रहा है तो फिर टेस्ट तो आते हैं, पहले भी अनुभव करता रहा हूँ, पहले लोग बहुत सामना करते थे, विरोध करते थे। हम लोग बहुत थोड़े थे। कोई राजनितिज्ञ भी हमारे परिचित नहीं थे, हमारे में आर्थिक वा बौद्धिक शक्ति भी नहीं थी। लाइफ जब खतरे में होती थी तो कौन बचाता था, कौन गाईड करता था, क्या बोलो इनसे, क्या कहो, कैसे चलो... ऐसे मौकों पर अगर एक शब्द भी गलत हो जाए, ऊपर-नीचे हो जाए तो छोड़ने वाले नहीं थे क्योंकि गुस्से में, जोश में तो आदमी देखता नहीं है, बाद में पछताता है। तो यह कोई सिर्फ आपोजीशन की बात नहीं है, ऐसी कई परिस्थितियाँ आयी जिनका इतिहास हमने लिखा नहीं है। वह ऐसा इतिहास है, जो संसार में तुलनात्मक तरीके से कोई इतिहास नहीं मिल सकता है।

सिन्ध में क्या-क्या हुआ वह तो आप सबने सुना ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं कि जितनी दलेरी से, वीरता से इन्होंने उन परिस्थितियों का सामना किया, हम तो उनके मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं। प्रेरणा तो उनसे मिली, वह तो महान हैं लेकिन हमारे सामने अपने प्रकार की परीक्षा आयी, उससे बहुत अनुभव हुए। यह कोई हम इसलिए नहीं बताते कि उसमें यह लगे कि जगदीश भाई ने बहुत अच्छे तरीके से सामना किया, बल्कि उसमें अनुभूतियाँ समाई हुई हैं कि भगवान अपना कार्य कैसे करते हैं! जिसको रक्षक कहा गया है, वह रक्षा कैसे करता है, गाइडेन्स कैसे देता है... यह बहुत ही अच्छी अनुभव की बातें होती हैं, जिसे सुनकर दूसरे का निश्चय परिपक्व होता है। और आगे के लिये उसको मार्गदर्शन मिलता है, यह अलग प्रकार का इतिहास है। अभी भी किसी से मैं कह रहा था कि वह झांसी वाली एक रानी जब हुई उसके लिये लोगों ने लिख रखा है – खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी। वह तो एक रानी की चर्चा करते हैं कि वह खूब लड़ी। लेकिन हमारी जो बहनें हैं, यह एक-एक ने कैसा सामना किया। यह शुरू से चला आया है। ब्रह्मा बाबा के टाइम से चला आया है। बाबा ने कहा ही है जब ज्ञान में आओगे उसके बाद माया



से युद्ध होगा। उससे पहले तो हम सब माया के मुरीद बने हुए थे, युद्ध की तो बात ही नहीं थी। इसलिये गीता में अर्जुन को बाण और तीर कमान के साथ दिखाया गया है। ज्ञान रूपी तलवार से काम रूपी शत्रु को मार.... जो इस तरह की लड़ाई है, वह अब लड़ाई छिड़ गई है।

बाबा ने अपनी गाइडेन्स से एक बार छपवाया था कि दुनिया में तीन सेनायें उपस्थित हैं - कौरव सेना, पाण्डव सेना और यादव सेना। कोई भी इस सेना से बाहर नहीं है, किसी से पूछो आप किसी सेना में भर्ती हो? कहेगा नहीं जी, मैं तो सिविलीयन हूँ, मैं मिलेट्री का आदमी नहीं हूँ लेकिन उसको मालुम नहीं है कि या तो वह कौरव है या यादव है या पाण्डव है। तो उसमें बाबा ने कहा था कि इसका उल्लेख करके यह उनसे पूछा जाये कि आप किस सेना में हो? ताकि उनकी बुद्धि चले। अब क्या करना है, कौरव दल में या पाण्डव दल में हो या यादव दल में हो? यह निर्णय करो। महाभारत की लड़ाई जारी है। आजकल हम ऐसी बातें बताते नहीं हैं, ठण्डी मीठी बातें बताते हैं, SML कोर्स कराते हैं और भी इस तरह की कई चीजें कराते हैं। बिजनेसमेन आते हैं उनको तो यही चीजें चाहिए, तो नैचरली इससे सेवा तो बहुत होती है, इसमें कोई संशय नहीं है। लेकिन उनके रौंगटे खड़े हो जायें और गोली की तरह से कोई उनको बात जाके हिट करे, कि यह तो लगता है लड़ाई शुरू है। यह गुप्त लड़ाई है we are at war कैसे कैसे अच्छे शब्द हैं बाबा के, तो वह कोई सुनेगा अगर बाबा का बच्चा बनने वाला है तो फौरन आ जायेगा। निकल आयेगा बाहर कि मैं लडूंगा माया से। मैं पाण्डव हूँ, कौरव नहीं हूँ, कोई भी नहीं कहता मैं कौरव हूँ। और उसको कहो यादवों के पेट से मूसल निकले उनसे विनाश होगा। कहेगा नहीं, महाराज माफ करो मेरे पेट से मूसल निकलने वाले नहीं हैं। मैं यादव भी नहीं हूँ, तो पाण्डव ही हुआ।

पाण्डवों के बारे में भी जो महाभारत में बताया गया है वह भी काल्पनिक है। वह दिखाते हैं कि दुर्योधन पहले ही स्वर्ग में बैठा था, युधिष्ठिर बाद में जाके पहुँचा तो क्या फायदा हुआ? युधिष्ठिर सत्यवादी था, धर्म के पक्ष में रहता था और उसका यह हाल हुआ, भाइयों का भी यही हाल हुआ तो फायदा क्या हुआ? उससे किसी व्यक्ति



को यह प्रेरणा नहीं मिलती कि मैं युद्ध करूँगा, माया का नामो-निशान मिटाऊँगा, इसको हराऊँगा। भगवान मेरा साथी है, हम लोग भी कहते हैं भगवान हमारा साथी है, हम भगवान के साथ हैं। अरे! साथी हो तो कुछ करके दिखाओ। जब भगवान तुम्हारे साथ है तो फिर खड़े क्यों हो? करते क्यों नहीं कुछ? जब इतनी बड़ी शक्ति आपके साथ में है, तुम लेके बैठे हुए हो? What are you doing? तो बहुत सी बातें जो हम कहते हैं, उसका शाब्दिक अर्थ तो समझते हैं लेकिन उसके पीछे जो भाव है वह नहीं समझते। कई बार बाबा कहते हैं अच्छा बच्चे, समझे! अगर समझें होते तो पूछने की बात क्या थी, अरे तुम नहीं समझें। अगर समझे होते तो यह बात नहीं करते। पूरी तरह से बात वह हमें हिट कर जाये, हम समझ जायें। गीता वाला अर्जुन जब समझ गया तो वह तीर कमान के साथ खड़ा हो गया। अब जैसा आप कहेंगे मैं करूँगा, बिल्कुल करूँगा। अन्त में वह कहता है अब मेरा मोह नष्ट हो गया, सन्देह कोई नहीं रहा। मेरी स्मृति ठीक हो गई, अब आप जैसा कहेंगे मैं करूँगा तो हम तो करते नहीं हैं। बार-बार बाबा हमको कोई चीज करने के लिये कहते हैं कि अगली दफा जब मैं आऊँगा तो आपसे यह पूछूँगा, जो ऐसा करेंगे वह हाथ उठाओ। हाथ उठाते हैं लेकिन करते तो कुछ नहीं।

तो हम कह रहे थे कि मेरे ऊपर जो यह परीक्षा आयी। अपने ज्ञान में कई लोग इस परीक्षा में हैं, शारीरिक कष्ट में हैं, भोगना भोग रहे हैं, अस्पताल में हैं और उनका इलाज चल रहा है, बिस्तर पर लेटे हुए हैं। तो लोग पूछते थे कि जो सन्त, महात्मा हैं, साधू लोग हैं, जो अच्छे कर्म करते हैं उनको क्यों ऐसा होता है? सारी जीवन जिन्होंने अच्छी बातें की हैं, उनके ऊपर भी यह कष्ट आता है। भगवान दयालू है, कृपालू है, क्या अपने बच्चों पर इतनी दया और कृपा नहीं करता? मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कहता है, तो यह सिर्फ कहने मात्र कहता है। उस वक्त मीठे बच्चे को मीठा क्यों नहीं बनाता? यह क्यों उसको कष्ट आते हैं? ऐसे कई लोग पूछते हैं। कई ऐसे लोग भी हुए हैं जो आसानी से शरीर छोड़ देते हैं। कोई ज्यादा दिक्कत उनको नहीं होती है, कोई ज्यादा सेवा भी नहीं लेता, भोगना नहीं भोगता। बस, मक्खन से बाल जैसे निकल जाता है, सहज ही चले जाते हैं। मृत्यु भी तो कई तरह की होती है,



भयानक मृत्यु भी होती है, सहज भी होती है।

योगी का तो जो होना चाहिए, विवेक ऐसा कहता है सहज होना चाहिए फिर क्यों ऐसा होता है? यह एक प्रश्न है। कई लोग पूछते हैं तो जो मैंने थोड़ा समझा है कि यह कर्मों की गति है, कर्मों का फल मनुष्य को मिलता है। कर्म अटल होते हैं, वह किसी को छोड़ते नहीं। जिसने जो किया है वह तो भोगना ही पड़ेगा क्योंकि भगवान सिर्फ दयालु और कृपालु नहीं है, वह न्यायकारी भी है, वह लॉ मेकर है। नियमबद्ध सृष्टि होती है और उस नियम के अनुसार सबकुछ होता है, न्याय होता है। दूध-दूध, पानी-पानी होता है। ऐसा नहीं कि भगवान की कोई सेवा पर उपस्थित है और उससे वह कोई लिहाज़ रखता है। उसकी मदद जरूर करता है। गाइडेन्स करता है, उसके ऊपर न्योछावर होता है, इतनी फैसल्टीज, इतना स्नेह उसको देता है कि उसको वह दुःख या कष्ट महसूस नहीं होता है, यह मैंने देखा है। अपना ही नहीं और बहन-भाईयों ने भी जो अनुभव किया है, उनको महसूस नहीं होता है। जितना और लोगों को होता है, उनको वह नहीं होता है लेकिन होता तो है। क्यों होता है? मम्मा को हुआ, बाबा को हुआ, गुल्जार बहन जैसे की परीक्षा हुई, सबकी होती है, यह क्यों होती है? बाबा को याद करते हैं, इतने वर्षों से हम बाबा के बने हैं। दुनिया के लफड़ों से हमारा कोई कनेक्शन नहीं है, बाबा की छत्रछाया में चल रहे हैं, फिर भी क्यों होता है, कोई ऐसे पूछते हैं? तो मेरे पास यही समझ थी, जितनी भी थी कि यह कर्मों की गति है, कर्म अटल हैं। मनुष्य को अपने किये कर्म भोगने पड़ते हैं। भगवान मदद करेगा लेकिन ऐसा नहीं कि बिल्कुल माफ कर देगा, थोड़ा बहुत तो अग्नि का शोक आयेगा, ऐसा समझता था।

आप जानते हैं जब कोई व्यक्ति किसी व्याधि के अधीन होता है तो उसको कई प्रकार से टाइम मिल जाता है। कई टर्चिंग्स भी होती हैं। मैंने कई सन्त-महात्माओं की जीवन कहानी पढ़ी थी, क्राइस्ट की भी पढ़ी थी औरों की भी पढ़ी थी। सबके साथ लगभग ऐसा ही हुआ। अभी इस जमाने में कलियुग के अन्त में भी जो अच्छे-अच्छे लोग मैंने देखे, उनके जीवन में भी कष्ट आये। तो यह सब कर्मों की गति से होता है। इसके अतिरिक्त कोई और राज भी हैं, जो अनुभव साधारणतया हम नहीं कर पाते



हैं, मैंने खुद इस दफा वह कई अनुभव किये हैं जो बहुत उत्तम प्रकार के, श्रेष्ठ प्रकार के अनुभव थे जिनकी मुझे इच्छा थी। मैं पहले करता था लेकिन इतना दीर्घकाल के लिये दो-अढ़ाई घन्टे तक वह अनुभव जारी रहे, वैसा नहीं किया था। काफी टाइम किया था लेकिन इतना नहीं, वह अनुभव मुझे हुआ। उस अनुभव से हमारी जो आध्यात्मिकता है, नैतिकता है, हमारी जो अनुभूति का स्तर है, जो नये नये अनुभव हमने पहले नहीं किये थे, वह अनुभव होते हैं।

दूसरा मैंने यह देखा, हम सब सुबह से शाम तक बिजी रहते हैं। इतना दुनिया वाले भी बिजी नहीं हैं, हम लोग उनसे ज्यादा बिजी रहते हैं। सेवा में रहते हैं। अगर कोई सेवा में बिजी नहीं रहते हैं, तो उनके मन में कई बातें चलती हैं। मनुष्यों के बारे में, व्यक्तियों के बारे में और परिस्थितियों के बारे में, वृत्तांतों के बारे में सोचते रहते हैं, मन कोई खाली तो होता नहीं। कोई ऐसा समय जीवन में हो जब भगवान के अतिरिक्त कोई और याद न हो। जिसको बाबा कहते हैं – ‘एक मैं दूसरा न कोई’। वह दीर्घकाल के लिये अनुभव हो कि हम और वह हैं और कोई नहीं। तो बीमारी के सदके अगर ऐसे अनुभव बाबा हमें कराता है तो आप क्या चाहेंगे, क्या सोचेंगे? कि यह बीमारी तो हमारे लिये एक गुप्त रूप से ब्लैसिंग लेके आयी, एक प्रकार से हमारे लिए वरदान हो गया। तो यह सिर्फ कर्मों की गति की बात नहीं है।

दो रात को ऐसा हुआ कि बिल्कुल नींद नहीं आयी। मैं वैसे भी जीवन में बहुत कम सोया हूँ। ब्रह्मचर्य में इतना बल है, शुद्ध आहार और संयम तथा नियम में। जब हमारा जीवन ऐसा हो, कोई चिन्ता नहीं, कोई फिक्र नहीं, कोई डर नहीं। तो हमारी इनर्जी कहाँ जायेगी। वह इतनी जबरदस्त इनर्जी होती है, हिम्मत ऐसी होती है कि हाथी भी आये तो उसको उठाके फेंक दूँगा। उस समय उत्साह-उमंग होता है कि मैं यह कर सकता हूँ। इतना अन्दर में स्टेमिना, इनर्जी होती है। तो जागता रहा हूँ लेकिन यह जागना और तरह का है। कुछ दवाइयाँ ऐसी दी होंगी या पता नहीं काफी एलर्ट हो गया, कोई नींद नहीं आयी। और जब नींद नहीं आयी, एक दिन तो रात को मैं कोशिश करता रहा सो जाऊँ। एक दिन तो मैं नींद का पुरुषार्थ करता रहा। दूसरे दिन मैंने कोई कोशिश नहीं की, बाबा की याद में रहने की कोशिश की। मैं इस समय



का सदुपयोग करूँ और मैंने देखा सुबह को भी मुझे कोई ऐसी थकावट, कोई ऐसी मुश्किलात नहीं थी, ऐसा लगता था – मैं एलर्ट हूँ जागती ज्योत हूँ।

डा. लोग पूछते थे कि रात को नींद आयी ? तो उनको मैं बताता था नींद तो आयी ही नहीं, मैंने समझा यह जो बाबा कहते हैं ४ घन्टे योग में रहो, हम कहते हैं टाइम नहीं है। बाबा कहते हैं बच्चे रात को कुछ टाइम निकालो, व्यक्तिगत पुरुषार्थ करो। मैं तुम्हारे से एपाईन्टमेन्ट करके अलग से तुम्हारे से बातचीत करूँगा, वरदान दूँगा हम उसके तरफ ध्यान देते नहीं। तो मैंने सोचा मेरा ध्यान गया कि खामखाँ हम लोग सोचते हैं कि इतने घण्टे तो ज़रूर सोना है, नहीं सोयेंगे तो आलस्य आयेगा। तो अच्छा अनुभव रहा !

कहने का भाव यह है कि हम लोगों के जो अनुभव हैं, उसमें ऐसा कोई नहीं कह सकता कि बाबा ने मुझे छोड़ दिया, Never, never एक मिसाल भी अभी तक मैंने सुनी नहीं। जिन्होंने शरीर छोड़ा है, जो हमारी पुरानी बहने हैं, दादियाँ है। बाबा ने कितनी मदद की है। खुशी से मुस्कराते हुए शरीर छोड़ा है। तो यह जो आखरी टेस्ट है, निश्चय का और देही-अभिमानि स्थिति का यह आता है। बाबा ने कहा है कि परीक्षा के टेस्ट पेपर बनते हैं, उसके प्रश्न आउट नहीं होते। आउट हो जायें तो कहते हैं, पेपर आउट हो गया, यह इम्तहान दुबारा होना चाहिए लेकिन बाबा कहते हैं कि मैं इसके दो प्रश्न, एक प्रश्न तो पहले से ही आउट कर देता हूँ जो शुरू से अन्त तक यह प्रश्न आयेगा कि आप आत्मा के स्वरूप में स्थित हो कि नहीं ? शुरू से लेकर अन्त तक यह टेस्ट तो आपका चलता रहेगा। यह हमारे ज्ञान की परिपक्वता है। हमारी स्थिति का अचल होना है। अच्छा - ओम् शान्ति।



निश्चय में विजय है, निश्चय बुद्धि सदा निश्चित रहता है

ज्ञानवान बहन-भाई 'निश्चय' के महत्व को तो जानते ही हैं। प्यारे बाबा ने कई बार कहा है कि निश्चय की विजय होती है। निश्चयात्मा की विजय क्यों होती है? कारण यह है कि निश्चयात्मा का मन डॉवांडोल नहीं होता बल्कि उसका संकल्प दृढ़ होता है। उसे आत्म-विश्वास और परमात्म-विश्वास होने के कारण वह जो-कुछ करता है, पूरी शक्ति से करता है। जिसके मन में संशय, सन्देह अथवा अविश्वास हो, उसके मन बुद्धि में ही एकता नहीं होती, उसकी बुद्धि एक बात कहती है और मन कुछ और ही करना चाहता है। गोया मन और बुद्धि में संघर्ष होता है। निश्चय वाला डट कर काम करता है। संशय रूपी शत्रु उसके उमंग-उत्साह और साहस को भंग नहीं कर सकता। निश्चयात्मा सोचता है कि मैं अच्छा ही कार्य कर रहा हूँ; किसी का भी बुरा करने का यत्न नहीं कर रहा, तब भला मेरी विजय क्यों नहीं होगी? होगी, अवश्य होगी! चाहे कितने भी विघ्न आयें, वे टिक नहीं पायेंगे, चूर-चूर हो जायेंगे, क्यों कि अच्छा कार्य करने वाले का चाहे सारी दुनिया विरोध करे, भगवान तो उसका साथ देता ही

है। जिधर भगवान स्वयं हो, उधर विजय होती ही है। इसी निष्कर्ष को बताते हुए श्रीमद्-भगवद्गीता का 18वाँ अध्याय समाप्त होता है।

बाबा ने यह भी कहा है कि निश्चय वाला निश्चिन्त होता है। वह निश्चित तो होगा ही क्योंकि जब उसे निश्चय है कि वह श्रीमत के अनुसार कार्य कर रहा है और पवित्रता की पक्की नींव पर मजबूत पाँव से खड़ा है तो फिर चिन्ता किस बात की? वह तो धर्मराज से भी नहीं डरता। सबसे पहला निश्चय तो यह है कि "मैं आत्मा हूँ", शिवबाबा सर्वशक्तिवान हैं और मेरा साथी, सखा तथा सहायक है। ऐसे निश्चय वाले



को चिन्ता की बीमारी तो हो ही नहीं सकती, क्योंकि वह तो शिवबाबा का वारिस है और उसकी छत्रछाया में है। फिर 'ड्रामा' में भी तो उसका निश्चय है। "जो कल्प पहले हुआ था, वही होगा"। बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाहि। पुरुषार्थ करना हमारा कर्त्तव्य है; निन्दा-स्तुति, जय-पराजय में हमें जाना नहीं है। हम योगी हैं, योगी को इनसे उपराम रहना है। इन सबको खेल समझ कर साक्षी होकर देखना है। यही तो हमारा पुरुषार्थ है। हमें तो वैजयन्ति माला में आना है, क्षणिक विजय की बात नहीं। हमें तो बाबा विजय का तिलक देंगे और बाबा ही कहते हैं कि तुम 'विजयी वत्स' हो। हे अर्जुन, तुम धनुष-बाण उठाओ; पुरुषार्थ करो; बाकी विजय तो तुम्हारी हुई ही पड़ी है। ग्यारह अक्षौणी सेना भी तुम्हारा कुछ नहीं कर सकती। तुम निश्चिन्त रहो। बस, यही निश्चय करो कि मैं भगवान की शरण में हूँ और कल्प पहले वाला विजयी वत्स हूँ।

निश्चय की बात हमने सार-संक्षेप में कही है परन्तु निश्चय की तरह 'भावना' का भी बहुत महत्व है। सूखा-सूखा निश्चय हो तो उसमें रस नहीं; खुशी नहीं; उछल नहीं। भावना का होना बहुत-बहुत ऊँची चीज़ है। किसी का यह प्रश्न हो सकता है कि 'भावना' क्या चीज़ है? क्या 'निश्चय' का दूसरा नाम 'भावना' नहीं है? उत्तर है कि 'भावना' में 'निश्चय' तो समाया हुआ है परन्तु भावना विशाल है। भावना में सम्मान, श्रद्धा, मन का गहरा प्यार, किसी के प्रति कुछ सेवा करने का भाव, उसे बहुत उच्च मानने का भाव इत्यादि भी समाये हुए होते हैं।

परमात्मा में निश्चय होना एक बात है परन्तु उसके प्रति भावना होना दूसरी बात है। यदि परमात्मा के प्रति अतुल प्यार, आदर भाव, सेवा भाव, न्यौछावर भाव तथा आत्मीयता हो तो हम कहेंगे कि परमात्मा में भावना है। भावना का अपना फल है। भावना अपने प्रियतम, आदरणीय, आदर्शमूर्त, मन के मीत के प्रति होती है। इससे ही परमात्मा के प्यार को आत्मा जीत लेती है।

एक व्यक्ति यह समझता है कि मेरी क्लास की जो टीचर है, छोटी बच्ची ही तो है, कल तक तो यह इसी क्लास की विद्यार्थी थी। मैं तो पुराना हूँ और ज्ञान को भली भाँति समझता हूँ, हमें यह क्या सुनायेगी? तो उसकी बुद्धि के किवाड़ पूरे



नहीं खुलेंगे और ज्ञान अन्दर पूरा नहीं घुसेगा। इसकी बजाय अगर किसी में यह भावना है कि 'यह तो शिव बाबा ने छोटी कन्याओं को भी शक्ति का वर्सा देकर शक्ति रूपा बना दिया है तो वह मुरली सुनकर गद्गद् होंगे।' यह शिव बाबा की मुरली है - केवल यह निश्चय होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके प्रति भाव-विभोर होना, उसे अमृत के समान समझना और टीचर को भी शिवबाबा की भुजा, शक्ति, ज्ञान गंगा इत्यादि मान कर उस भावना से उसे देखना - यह भावना श्रेयस्कर है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी न तो भोग में भावना होती है, न ब्रह्मा भोजन में, न प्रसाद में, न टीचर में, न ईश्वरीय कार्य में। उनका तो मानो कि आधा जीवन ऐसे ही चला जाता है। वे इस संगम युग में प्राप्त होने वाले अतीन्द्रिय सुख का पूरा लाभ नहीं ले पाते हैं और अपनी तकदीर को उच्च नहीं बना पाते हैं। उफ, ऐसे बहन भाइयों के प्रति मन में यह उद्गार आता है कि किसी प्रकार से भी भावना वाले बनें।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारी तो भावना है। परन्तु उनकी भावना का सबूत (प्रमाण) क्या? वे किसी भी प्रकार भावना को अभिव्यक्त तो करते नहीं। सेवाकेन्द्र के प्रति उनकी क्या भावना है? क्या वे उसे भगवान का घर समझकर कभी उसकी सफाई करते हैं? नहीं। अनेकानेक लोग अपने पद तथा अपनी उपाधि के चक्कर में ऐसा कार्य करना अपनी इनसल्ट समझते हैं। ऐसा भी नहीं है कि वे बीमार हैं, या बूढ़े हैं या कमजोर हैं। नहीं! उनकी यह भावना ही नहीं है कि भगवान ने यह यज्ञ रचा है। इसमें सेवा का चांस महान भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है। ऐसे ही अनेक प्रकार की सेवायें होती हैं। ये हमारे परमप्रिय परमपिता ने विश्वकल्याण के लिए यज्ञ रचा है। हम भी अपनी काया कांचन के समान बना लें, मन को सेवा से सुधार दें, धन को यथाशक्ति सफल कर लें और भविष्य के लिए कुछ तो कर लें। हमारे प्रियतम का यह कार्य है और हम, बस, केवल उनके प्रेम वचन, ज्ञान वचन सुनकर चले जाते हैं, यहाँ तक कि सप्ताह भर में कभी भी कुछ नहीं करते।

ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो स्वयं तो कुछ नहीं करते और जो करने वाले हैं, उन्हें वे बेवकूफ समझते हैं। वे नुक्ताचीनी करना ही जानते हैं। ऐसे व्यक्ति थोड़े से होते हैं - जो न करते हैं, न करने देते हैं। वे यह मान कर चलते हैं कि हम सबसे



ज्यादा समझदार हैं। उन सभी का भला हो, सब का कल्याण हो। हम किसी को भी भावना से कोई अच्छा कार्य करने से न रोकें।

कहते हैं कि भगवान भावना का भूखा है। अतः अब जबकि भगवान को पहचाना है तो उसमें बहुत भावना भी होनी चाहिये। उस सद्गुरु का पूरा रिगार्ड हो। उसकी आज्ञा सिर-माथे पर। वह कल्याण करने वाला स्वामी है। उस जैसा अन्य कोई नहीं। शिव बाबा सबको सद्बुद्धि दे। अच्छा। ओम् शान्ति।



बीमारी का पेपर भी टाइम को सफल करने का गोल्डन चांस

आज जब क्लास शुरू हुई तो गीत बज रहा था कि जीवन की यह नय्या कर दे प्रभू के हवाले, जैसे वह चाहे इसको सम्भाले... तो जब से हम ज्ञान में आते हैं, बाबा की जो शिक्षायें हैं उसके मुताबिक हम समझते हुए यही कहते हैं, कोशिश करते हैं कि यह जीवन की नैय्या बाबा के हवाले कर दे। मन में तो हरेक के यह होता है, भावना यही होती है लेकिन फिर भी जो व्यवहार होता है, उस व्यवहार में बहुत बार यह हवाले भी किया होता है और कभी-कभी ऐसा लगता है कि नहीं, हम इस जीवन को अपना समझ रहे हैं। जैसेकि बाबा के हवाले न किया हुआ हो। आप इसको अगर गौर से देखें, गहराई से देखें तो यह महसूस करेंगे कि हरेक एक्टिविटी में पूरी तरह से सारा टाइम, सारा जीवन जो हमारा अलौकिक है, इसमें १०० परसेन्ट यह जीवन की नांव बाबा के हवाले की हुई हो, इसमें कुछ कसर है। व्यवहार से तो ऐसा ही लगता है।

बहुत पहले मैं एक दफा इलाहाबाद गया था, यह ज्ञान में आने से पहले की बात है। यात्रा करने के विचार से वहाँ पर गया था, नाव में बैठा था उसमें और लोग भी बैठे थे। और जो नाविक था उसे त्रिवेणी दिखानी थी, गंगा, जमुना और सरस्वती वह कहाँ मिलते हैं, मुझे ऐसा लगा कि इसमें ज्यादा लोग बिठा दिये हैं। यह नय्या कहीं खतरे में है, ऐसा ना हो कि इसका क्या रिज़ल्ट हो तो वह ले गया हमें लेकिन मेरे मन में एक खिटखिट थी कि आज पता नहीं लौट के आऊँगा या नहीं आऊँगा क्योंकि पानी काफी चढ़ा हुआ था और जोर था और नांव का जो किनारा है लकड़ी का, उस तक आ जाता था। कभी कभी थोड़ा सा अन्दर भी आ जाता था, लेकिन वह डोलती तो थी और कई लोग उसको कहते



थे, अरे भय्या ख्याल रखो। तो हिलने-जुलने की कोशिश भी करते थे ताकि सेफ साइड पर बैठ जाँ लें किन्तु वह यह कहता था - आप घबराओ मत, भागो मत इधर उधर। 'यह डोलेगी सही डूबेगी नहीं', ऐसे कहता था। जब ज्ञान में हम आये तो बाबा भी यही बात कहते हैं कि सत् की जो नाव है वह डोलेगी परन्तु कभी डूबेगी नहीं। यह हमने जीवन में अनुभव किया है। कैसी भी परिस्थितियाँ आयी जिससे लगा कि झकझोर हो रही है, हिलोरा आ रहा है लेकिन बाबा ने हमेशा पार किया। वह अनुभव है हमारा और शुरू से जब ज्ञान के जीवन में आये, बाबा ने इतना प्यार दिया, इतना स्नेह दिया। सृष्टि के जो आदि पिता हैं प्रजापिता ब्रह्मा, जो जगदम्बा सरस्वती हैं जगत् की माता, उनसे मिलकर कितना गद्गद् हुए, कितना हर्ष हुआ, कितना प्यार मिला, उनकी डायरेक्ट पालना मिली। कोई कमी-कसर उन्होंने छोड़ी नहीं। इस जीवन को उन्होंने निहाल कर दिया, भरपूर कर दिया। अब अगर थोड़ी बहुत कोई ऐसी कठिनाई आती भी है, आयी भी है तो हमें लगता है यह कुछ भी नहीं है। जो हमें प्राप्ति हुई, जो उसने दिया उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है यह।

और वास्तव में अगर देखा जाए तो हमें कोई कष्ट नहीं, क्लेश नहीं, कोई कठिनाई नहीं कुछ और नहीं है, केवल एक थोड़ा सा यह जो लास्ट पेपर होता है, हरेक को आता है। यह भी देह-अभिमान को किस प्रकार से पूर्ण रूप से छोड़ना है और अपने स्वरूप में टिकना है, यह एक अभ्यास करने का और एक्स्ट्रा मौका मिलता है। एक प्रकार से वार्निंग मिलती है, टाइम को सफल करने की। तो मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि बाबा ने हमें गोल्डन चान्स दिया है और हम उस समय का सदुपयोग करके जो अपनी मंजिल है उस तक बढ़ते जा रहे हैं।

आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद जिनके आशीर्वाद से, जिनकी दुआओं से बाबा ने हमको हर प्रकार से सुरक्षित रखा और हम चल रहे हैं। जिनकी वायब्रेशन्स से हमें बल मिलता है, उमंग-उत्साह मिलता है, सबके प्यार की वायब्रेशन्स पहुंचती हैं, उसके लिए आप सबका बहुत-बहुत थैंक्स। ओम् शान्ति।



भगवान क्या करता है और क्या नहीं करता है

बाबा ने हमें एक बात विशेष ज्ञान के सम्बन्ध में यह बताई है जो सब जगह नहीं बताई जाती। और संस्थाओं में जहाँ प्रवचन होते हैं, चर्चा होती है - वहाँ हरेक चीज़ का नाम, रूप, देश, काल, गुण और कर्तव्य यह ज़रूर होते हैं, उसको ही हम कहेंगे कि किसी का परिचय है। जब किसी का परिचय होता है, तो हम कहते हैं कि इनका शुभ नाम यह है। यह फलाँ जगह के रहने वाले हैं, आजकल यहाँ आये हुए हैं। और यह काम फलाना करते हैं, यह बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं इत्यादि-इत्यादि... जो बातें हम कहते हैं वह इनमें आ जाती है। नाम, रूप, देश, काल के बाद अब उसकी आयु क्या है, कई जगह पर पासपोर्ट बनवाना, राशन कार्ड बनवाना है तो ऐसे कई जगहों पर आयु बतानी पड़ती है। तो काल और फिर उसके साथ गुण उसकी विशेषताएँ क्या हैं, यह डॉ० है या इंजीनियर है, यह बहन गृहिणी है या कोई कार्य करने वाली महिला है इत्यादि..। उसके गुण भी होते हैं और फिर उसका कर्तव्य होता है। तो मैं यह क्यों कह रहा हूँ, क्योंकि परमात्मा के सम्बन्ध में यह बहुत आवश्यक

है। अगर हम यह बात मान लेते हैं कि कोई भी चीज़ संसार में या कहीं भी तीनों लोकों में ऐसी नहीं है, न हो सकती है जिसका नाम, रूप, देश, काल, गुण, कर्तव्य न हो। अगर कोई कहता है कि नहीं जी, यह जरूरी नहीं है देखिए! फलानी चीज़ है उसका तो कोई नाम, गुण, कर्तव्य वगैरा नहीं है या इनमें से कोई एक चीज़ भी वह बता दे कि यह तो नहीं होती है, ऐसे कोई बता नहीं सकता है। आप में से कोई बता सकता हो तो बताये हमारी भी चर्चा कइयों से होती है, नहीं बता पाते हैं।

परमात्मा को कोई परमात्मा, ईश्वर, परमेश्वर, कृष्ण, राम... कोई-न-कोई नाम तो



देते हैं ना। चलो परमात्मा का नाम शिव है, हम उनका गुणवाचक नाम बताते हैं। वह वो नाम नहीं बताते हैं, परमात्मा है - यह भी तो नाम बताते हैं उसका, तो इसके बिना बात आगे बढ़ती नहीं है। अगर किसी की आप चर्चा करना चाहते हैं, किसी के विषय में कोई प्रसंग है तो यह बातें पता होना ज़रूरी हैं, परिचय होना ज़रूरी है इसको ही 'ज्ञान का फाउण्डेशन' कहते हैं। पहले-पहले हम जब ज्ञान में आते हैं, कोर्स कराते हैं तो हमें यह सब चीज़ें बताई जाती हैं कि हम वास्तव में आत्मा हैं शालीग्राम हैं। कहाँ के रहने वाले हैं, कब आये इस दुनिया में, कितने पार्ट बजाये? ऐसे हमारा भी बताते हैं और परमात्मा का भी बताते हैं, इसके बिना चर्चा आगे बढ़ नहीं सकती। तो परमात्मा के बारे में यह हमने देखा है जो ज्ञान में आते हैं, वह यह बात तो जल्दी समझ जाते हैं। नाम उसका शिव है, वह ज्योतिर्बिन्दु है, परमधाम का रहने वाला है और स्थापना, संहार और पालना कराता है, वह ज्ञान का सागर, शान्ति का सागरहै, उसके गुण वगैरा सब हम समझ जाते हैं। लेकिन वह स्थापना, विनाश, पालना तो संसार का करता है। हमारा जो पिता, शिक्षक, सद्गुरु है, हमारे साथ इस समय उसका विशेष कर्तव्य यह है। टोटल कर्तव्य यह है कि सतयुग की स्थापना होती है, कलियुग का विनाश होता है फिर पालना बाद में होती है यह तो हो गया संसार के सम्बन्ध में। लेकिन हमारा परसनल सम्बन्ध बाबा से जुटा है, उसमें बाबा ने बताया है कि मैं आपका परमपिता, परमशिक्षक और परम सद्गुरु है।

अब कई लोगों से हमारा सम्बन्ध नहीं है, उनके बारे में अखबार में आया कि भूचाल आया और वह मर गये तो जो लोग बहुत मोह-ममता में पड़े हुए हैं, उनको भी दुःख नहीं होगा। कहेंगे हमारा क्या कनेक्शन है? ऐसे तो संसार में कई मरते हैं, कई जीते हैं, जब उनको यह पता लगेगा, तुम्हारा एक जवान बेटा जो वहाँ गया हुआ था वह मकान गिर गया, उसके नीचे दब गया, उसका यह हुआ वह हुआ तब वह रोने लगता है - सम्बन्ध से। यह प्रेम का होना न होना सम्बन्ध से कनेक्शन है। व्यवहार भी जो चलता है सम्बन्ध से चलता है। तो सम्बन्ध हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता है।

तो परमात्मा से हमारा सम्बन्ध है, ऐसे नहीं कि आत्मा ही परमात्मा है फिर वर्रा



किससे मिलेगा ? उसको परमपिता मानोगे तो वर्सा मिलेगा। देखिए ! सम्बन्ध से कितना फ़र्क पड़ता है ! बच्चे, मैं आया हूँ आपको वर्सा देने। अच्छा, अगर आपका कोई सम्बन्ध नहीं है तो परमात्मा आपको ज्ञान कैसे देगा ! वह शिक्षक है, सद्गुरु है तब तो ज्ञान देगा। तो हमें जो बाबा ने बताया है कि मैं ज्ञान देने आता हूँ, जब यह प्रायः लोप हो जाता है तो बच्चे, दुःखी हो जाते हैं।

जैसे लौकिक जन्म दादा लेखराज फिर अलौकिक जन्म का नाम प्रजापिता ब्रह्मा फिर अव्यक्त ब्रह्मा, फिर भविष्य में श्री नारायण तो यह नाम रूप देश काल कई बता दिये उस आत्मा के। तो डिटेल परमात्मा बता देते हैं जो मनुष्य नहीं बताते हैं। हरेक के लिए नहीं सैम्पल के तौर से, एक का बताने से समझ लो कि हरेक का ऐसे है। जैसे आप चावल पकाते हैं, एक चमचे में कुछ निकाल लेते हैं अगर वह गले हों तो आप कहते हैं हाँ, गल गये। एक एक चावल सारे तो नहीं निकालते ना, सैम्पल निकालते हैं। तो सैम्पल बता दिये दो तीन, समझ गये कि औरों के सबके हैं। अब सबका क्या बताना। आप लोग अपना खुद समझ सकते हैं, तो यह एक बात जो सबकी समझ में नहीं आती। प्रश्न करते हैं, अपने भाई बहन भी पूछते हैं हम लोगों से कि भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं, हमारा साथी है। बाबा कहता है मैं बच्चों की मदद करता हूँ, यह सारी बात वह कहता है तो फिर हम लोगों को रोग क्यों होते हैं ? कष्ट क्यों होते हैं ? हमारे सामने समस्यायें क्यों आती हैं ? हम तो कोई भक्ति भी नहीं करते, हम तो भगवान के हो गये, पूरा समर्पण कर दिया उसको। जब पूरी तरह से उसके हो गये तो अब उसका फर्ज बनता है। हम कहते हैं हम उसकी छत्रछाया में है तो फिर वह पूरा हमारा करें। तो उसके जो कर्तव्य हैं – भगवान क्या करता है, क्या नहीं करता है ? यह ज्ञान में आने वाले भी सब नहीं समझते हैं। उनके मन में भी कई दफा प्रश्न उठता है।

मम्मा ने शरीर छोड़ा, उनकी तबियत ठीक नहीं थी, व्याधि थी तो उस टाइम भी कई लोग पूछते थे यह मम्मा है और इनको ऐसा क्यों हुआ ? बाबा ने क्यों नहीं इनको बचाया ? क्यों नहीं मदद की ? इनका तो रहना ज़रूरी था यज्ञ के लिए... क्यों, क्या, कैसे, कब... ऐसे पूछते हैं सब। तो भक्तिमार्ग में भी बहुत होता है, किसी के



पास बच्चा पैदा हुआ तो कहते हैं भाई! मुबारक हो भगवान ने आपको बच्चा दिया। काम विकार से बच्चा पैदा किया और कहते हैं भगवान ने आपको दिया। और जब मर जाता है, फिर रोते क्यों हो? भगवान ने ले लिया। जो दिया था वह ले लिया उस वक्त रोते हैं। और जब बच्चा पैदा होता है, अगर पैदा होते ही बहुत बीमार हो तकलीफ हो उसको तो फिर भगवान को कहेंगे हमें ऐसा बच्चा दिया जो दुःखी है, जन्म होते ही मुसीबत उसके ऊपर है। तो दयालु भगवान ऐसा बच्चा देगा? नहीं मालूम है। उन्होंने सुना हुआ है कि भगवान देता है सब कुछ, जन्म-मरण उसके हाथ में है तो वह भगवान क्या करता है क्या नहीं करता है, क्या देता है, क्या नहीं देता है। जैसे वह कहते हैं “तेरे काँटों से भी प्यार, तेरे फूलों से भी प्यार...” समझते हैं – दुःख-सुख देने वाला भगवान है। बाबा कहते कि अगर ऐसा है तो फिर भगवान को दुःख दाता क्यों नहीं कहते, दुःख हर्ता क्यों कहते हैं? सुखदाता क्यों कहते हैं? इसका मतलब है वह सुख देता है दुःख हरता है। तो क्या नहीं करता है, क्या करता है यह लोगों को पूरी तरह से मालूम नहीं है लेकिन आप भगवान की भी मजबूरी समझिए। क्या करे वह। आप उसकी जगह हो तो क्या करेंगे? किसी को कोई शारीरिक तकलीफ है, कोई व्याधि है, कोई बीमारी है अच्छा, आप कहेंगे कि भगवान उसकी मदद करे। ठीक है मदद करेगा, क्या मदद करें थोड़ा और स्पष्ट करो।

आप कहेंगे फला व्यक्ति जो है उसने बहुत सेवा की है, अच्छा जीवन जिया है, कोई लफड़े तो किये नहीं है उसकी बीमारी ठीक कर दे, वह तो कर सकता है सब कुछ। उसको हरेक चीज मालूम है, नॉलेजफुल है। ज्ञान का सागर है, वह एलोपैथी, होमियोपैथी, आयुर्वेदिक सब जानता है, कोई ऐसा वह नमक को भी फूक मार दे, वह भी दवाई का काम करेगा। तो वह क्या नहीं कर सकता है, तो भगवान जो है उसको यह मदद दे, उसका रोग दूर कर दे। कहते हैं ना इसको क्यों हो रहा है, कई दफा हम कई जगह गये किसी-किसी को आपस में कहते सुना – जगदीश भाई को यह तकलीफ क्यों हो गई? तो हमारा पता नहीं क्या होगा? ऐसे बोलते हैं। ओह! तुम्हारा क्या होगा, भला होगा। मेरा भी भला हो रहा है। कौन कहता है, मेरा बुरा हो रहा है। यह नहीं समझते हैं और डाउट करते हैं कि हमारा क्या होगा? तो



मेरी कोई गत तो नहीं बन रही है, मुसीबत में तो नहीं पड़ा हूँ, रो-चिल्ला तो नहीं रहा। बाबा ने इतनी मदद की है कि जरा भी मुझे कोई दुःख नहीं हुआ है। कोई तकलीफ नहीं हुई, इतनी मेरी रक्षा की है। और वह तो वार्निंग मुझे देता रहा है, मैं गफलत करता रहा हूँ मिसाल के तौर से –

अपनी तबीयत के बारे में ध्यान नहीं देता रहा, शुरू-शुरू में जब मैं यहाँ आता था। मैं दिन में एक ही बार खाना खाता था। मैं समझता था कि योगी लोग एक ही दफा खाना खाते हैं, यह बार-बार खाओ, बार-बार खाओ... नहीं खाता था। यहाँ तक कोई टोली भी दे दे, तो रख लेता था जब भोजन करता था तो उसके ही साथ खाता था, तब तक सम्भालके रख देता था। बार-बार खाना ठीक नहीं है, यह इन्सान का काम नहीं है। तो मुझे बाबा ने कहा बच्चे, सुना है तुम नास्ता नहीं करते, रात को भी खाना नहीं खाते, मैंने कहा जी हाँ, तो कहा कि नहीं। तुम खाने पर ध्यान दो। मैंने कहा बाबा, मुझे कोई तकलीफ नहीं है, मैं अपने में एनर्जी फील करता हूँ, आप कोई काम बताइये मैं कर दूँगा। मैं कोई कमजोर नहीं हूँ, जितना खाता हूँ उससे मेरा ठीक चलता है। और एक दफा भी जो खाना खाता था, लंच करता था वह भी कोई ज्यादा नहीं खाता था, दो रोटी मुश्किल से उस उम्र में। मैं समझता था जो ब्रह्मचर्य का पालन करता है, जिसको कोई चिन्ता नहीं है, दुःख नहीं है और कोई लफड़ा नहीं है उसकी इतनी एनर्जी है उसको गाय के तरह से टब भरके चारा खिलाओ इसकी क्या ज़रूरत है। दो रोटी बहुत है, ऐसे हम समझके चलते थे तो भी हमें कोई दिक्कत नहीं थी। लेकिन बाबा ने कहा बच्चे, बाद में जाके तकलीफ होती है इसलिए खाना ठीक तरह से खाओ। और यहाँ पर भोजन के बाद कई दफा बाबा जिसको पान-सुपारी कहते थे मौसमी और थोड़े बहुत अनार के दाने और कुछ देते थे बच्चों को, कि बच्चे खाओ। मेरे को भी देते थे मैं कहता था बाबा अब खा लिया है। एक दफा खाने के बाद और दांत साफ करने के बाद मैं दुबारा नहीं खाता था। खा लिया सो खा लिया, अब बढ़िया से बढ़िया चीज़ आप कह दो रब्ड़ी खा लो, यह खा लो वह खा लो। कुछ नहीं। खा लिया सो खा लिया। वो भी नहीं खाता था। तो बाबा मुझे कहते थे देखो, खाना चाहिए। खाने पर पूरा ध्यान दो, मैंने नहीं दिया। बाबा ने मुझे कई दफा मेरे



ख्याल में 5-6 दफा अपने साथ बैठके खाना खिलाया, जो बाबा का कमरा है एक छोटी सी टेबल रखी जाती थी। एक तरफ बाबा बैठके खाते थे अकेले ही। दूसरी तरफ मुझे बिठाके खुद अपने हाथों से मुझे खिलाया, मैंने खाया जो इतना प्यार से बाबा ने खिलाया। वह दालवाली खिचड़ी जो होती है, उसमें कुछ पापड़ घोलके बाबा मुझे ऐसे बनाके खिलाते थे, कभी कुछ, कभी कुछ। फिर भी मैंने ध्यान नहीं दिया, काम में लगा रहा और कुछ कठिनाईया थी, काम ऐसा था, दूर निकल गये काफी शहर से। अब वापिस आके खाना कैसे खायेगे, काम छोड़कर आयेंगे। और इतना तो यज्ञ में आर्थिक सम्पन्नता नहीं थी कि कोई साधन करके हम खाना खाके फिर दुबारा चले जायें। रात को पहुँचेंगे, भूख मर चुकी होगी, रात में भी कहेंगे हमें भूख नहीं है, कल खायेगे। तो सारा सारा दिन कई दफा खाना नहीं खाया, तो वह डाक्टर लोग कहते हैं, आपकी बीमारी जो है वह इसी वजह से है कि आपने खाना नहीं खाया।

दूसरों को बीमारी इसलिए होती है कि ज्यादा खाना खाया, आम तौर से बीमारी इसीलिए होती है, तुम्हारी बीमारी इसलिए है। लीवर तुम्हारा कमजोर हो गया, उसको तुमने कुछ दिया नहीं, उसने काम करना छोड़ दिया, स्ट्राईक कर दी उससे खराबी हो गई। ऐसा वह कहते हैं, फिर इन्फेक्शन हो गया। विदेश में गया था तो पानी वहाँ का पिया, वह पीने जैसा नहीं था तो भी पी लिया। मैं कोई लगभग 50 देशों में गया वहाँ म्युनिसिपल वॉटर पी लेता था। लोग कोका कोला, लिमका आदि पीते थे, मैं पानी पीता था तो एक दफा गलत पानी पी लिया, उससे नुकसान हो गया, फिर उससे बढ़ता गया। अब कई तकलीफें उसके साथ और एड हो गई, वह लीवर का तो मैं सम्भाल रहा था, वह कोई ज्यादा प्रॉबलम मेरे लिये नहीं था लेकिन उसके साथ और एड हो गये। उसके भी फिर कई मुझे इशारे बाबा ने दिये कि तुम ज्यादा खड़े मत हो, बैठके काम कर लो, कुर्सी पर बैठ जाओ किसी को डायरेक्शन भी देने हैं तो बैठके उनको डायरेक्शन दो, मुझे कोई थकावट लगती नहीं थी। मैं खड़ा होके उपर चढ़के नीचे उतरके चलके करता रहा वह भी नुकसान उठाया। लीवर की जिसको कठिन तकलीफ हो, जैसे मुझे है उसको सीढियां नहीं ज्यादा चढ़नी चाहिए। मैं और



ही तेज़ी से चलता था, लो मैं चढ़के दिखाता हूँ। अब यह ओम् शान्ति भवन की सीढ़ियाँ थी, लोग चढ़ रहे होते थे मैं सोचता था इनसे तेज चलूँ, मैं करता रहा तो कई चीज़ें ऐसी गफलत की थी, फिर भी बाबा ने मेरी इतनी मदद की है। मैं क्या बताऊँ आपसे तो यह हम सोचते हैं कि भगवान क्या करता है, क्या नहीं करता है जो हम उम्मीद रखते हैं कि वह जादू का डण्डा घुमाये ऐसे ऐसे और मेरा लीवर ठीक हो जाये।

प्रकृति के अपने नियम हैं और वह उन नियमों को तोड़ता नहीं, वह नियामक है। जो नियम है उनके अनुसार चलता है ड्रामा सारा। जो खराब हो गई चीज़, अब उसको ठीक कर सकते हो, जो पुर्जा बिल्कुल खराब हो गया हो, हो ही नहीं सकता ठीक, तो उसको चलाओ जब तक चलता है। उसके बाद देखा जायेगा क्या होता है, लेकिन बाबा की मदद नहीं मिली, ऐसा मैं नहीं कह सकता। पूरी मदद मिली, हर मौके पर मदद मिली भरपूर। बाबा ने मालामाल किया है, झोली भरी है, कोई कमी कसर नहीं रखी है। कोई बात मैं ऐसा नहीं कह सकता कि बाबा ने यह कर सकते थे, बाबा ने यह किया नहीं है, ऐसा नहीं है। सम्पूर्ण बाबा की कृपा रही है। तो क्या करता है, क्या नहीं करता है, वह न समझने के कारण कई लोग यह कहते हैं कि जो भी यह धर्म प्रचारक हुए उनको इतना कष्ट हुआ, अच्छे लोगों को। और खराब लोगों को नही होता यह क्या कारण है? ऐसे देखने में तो आता है जो ऐसे लोग हैं कुछ और टाइप के, वह कई प्रकार से ठीक चलते हैं। पैसे के बारे में भी ऐसे कहते हैं लोग कि जो भ्रष्टाचारी हैं, खूब पैसा कमा रहे हैं बिल्डिंग बनाई हुई है, कारे रखी हुई और जो अच्छे लोग है उन पर मुसीबत आती है तो भी लोग ऐसे कहते हैं। कहाँ है भगवान? अगर भगवान है तो उनको सज़ा क्यों नहीं देता? वह बढ़ते जा रहे हैं और अच्छे लोग जो हैं, वह दुःख पा रहे हैं। तो यह चीज़ नहीं मालूम लोगों को, वह क्या करता है, क्या नहीं करता है। यह अनुभव करने और समझने की महीन बात है।

अब मैं भी काम में लगा रहता था हमेशा लगा रहता था, धीरे-धीरे कम किया। मधुबन में बड़ों को मेरे ख्याल में 15 वर्ष से कहना शुरू किया था अब मेरी रिटायर्ड



लाइफ है। मैं जहाँ तक हो सकेगा करूँगा लेकिन अब दूसरे आने चाहिए, उनको चान्स मिलना चाहिए और मैं करूँगा लेकिन उस तरह से नहीं जैसे पहले करता था। तो धीरे धीरे कोशिश करता रहा लेकिन मुझे हर दफा यह कहा गया ऐसे कैसे हो सकता है? बाबा ने इतनी आयु में भी किया और तुम यह कह रहे हो? हमारे यहाँ रिटायर्ड नहीं होता है, तो यह बात ठीक भी है जब तक जीना है कार्य तो करना है। उससे ही हमारा भविष्य बनेगा, भाग्य बनेगा। सेवा है यह तो ऐसा नहीं कि हम करते नहीं थे, करते रहते थे लेकिन करते रहने से, सारा टाइम बिजी रहने से तो फिर कहाँ फुर्सत मिलती है? कि हम स्व उन्नति के लिए भी कुछ करें। अब वह क्या मदद बाबा करता है कि हमको स्व-उन्नति के लिए भी मौका मिलता है। समझो हम चारपाई पर लेटे हैं, अच्छा हमें ड्रिप्स दिये जा रहे हैं, कोई दवाई जो है वह जा रही है हमारे अन्दर और हम तो बेड पर लेटे पड़े हैं उस समय हम क्या कर रहे हैं? अब उस टाइम अगर हम चाहें हम बाबा की याद में रहके अपना टाइम सफल कर सकते हैं।

जितने दिन भी हॉस्पिटल में रहा, उस टाइम को मैंने इस तरह से सफल किया। डा. कहता है तुम रेस्ट करो, हमें कौनसा रेस्ट करना है। चला जाऊँगा अपने वतन में घर में बाबा के पास, साइलेन्स में, उस प्रकाश की दुनिया में और रेस्ट कर सकता हूँ। उनको क्या मालुम है कौनसा रेस्ट कर रहा है यह? वह तो मतलब ही है ज्यादा उठो बैठो मत और जफाकशी करने की ज़रूरत नहीं है, आप रेस्ट करो। तो यह सब चान्स भी हमें एडीशनल मिलता है। जिसमें मैंने देखा है हम ही सिर्फ भगवान को याद नहीं करते हैं, भगवान भी हमें याद करता है। बहुत दफा हमने देखा हम ऐसे ही बैठे हैं या लेटे पड़े हैं, बाबा जैसे हमको याद कर रहा हो, उस समय ऐसे आता है। फिर हमारी भी याद लग जाती है, बाबा की बात याद आती है। बाबा ने जो हमारे साथ अनुग्रह किया, वह याद आता है तो बाबा भी याद करता है। यह जीवन में मैंने बहुत अनुभव किया। और बाबा कई दफा कहते भी हैं – मैं बच्चों को याद करता हूँ। तो कितनी खुशी की बात है कि बाबा हमें याद करे, हम बाबा को याद करें और यह संगम का समय इसी में हमारा गुजरे, इससे ज्यादा और सुख



क्या है। तो हम उसी में अगर रम जायें तो हमें सुख ही सुख है। कोई कष्ट नहीं है लेकिन लोग समझते हैं कि जो धार्मिक लोग और अच्छे लोग हैं, उनको क्यों कष्ट होता है? आपने सुना होगा जो रमण महाऋषि जिसको बोलते हैं उसको कैन्सर हुआ था, स्वामी रामकृष्ण परमहंस जो था उसको कैन्सर हुआ था, कइयों को यह आर.एस.एस.के हेड जो थे उनको भी कैन्सर हुआ था, कितनों की मिसाल दें हम। अच्छा कईयों को कैन्सर नहीं हुआ तो कष्ट पूर्ण रोग हुआ, उनको तकलीफ काफी हुई। हमें तकलीफ कोई नहीं हुई, बाबा ने तकलीफों से हमें छुड़ा दिया और फिर कल को कुछ होता भी है तो हमारा किया हुआ हिसाब-किताब है, वह लगेगा किसी को कि भाई कष्ट हो रहा है लेकिन मैं समझता हूँ ऐसा होता नहीं है, फीलिंग नहीं होती है। वैसे भी जीवन में मैंने अनुभव किया है कि कोई कष्ट आये हैं लोगों ने हमको तकलीफ दी है, कोई रोग की बात नहीं है वैसे भी तो एक दफा की मैं बात आपको बताऊँ। एक वारी मैं कोर्ट में जा रहा था, एक बहन का केस था उसकी वजह से कोर्ट में छुट्टी हो गई, मुझे वह लोग देख रहे थे यह कहाँ है? जो दूसरी पार्टी थी, संस्था के खिलाफ जो केस था, जिन्होंने जवाब देना था, वह तो बहुत क्रोधी लोग होते हैं तो खूब पकड़के मेरी पिटाई किया। करीब 10-12 लोगों का युप था, सभी ने मेरे पर खूब वर्षा की, मैंने उनमें से दो आदमी पकड़ लिये जो सबसे कमजोर थे। उनको नहीं जाने दिया, बाकी भाग गये डर के मारे कि हमें न पकड़ ले। उन दो को पुलिस के हवाले किया। लेकिन मेरे कहने का भाव यह है कि उन्होंने चाहे जितनी भी पिटाई की मेरे को उस टाइम जरा भी महसूस नहीं हुआ। किसी ने मेरे को स्पर्श भी किया है, ऐसा भी मुझे नहीं लगा हालांकि उन्होंने तो पूरी तरह से कोशिश की अपना जोर दिखाने के लिये। और आपको पता है हम लोगों का यही रहता है, क्रोध नहीं करना है, हिंसा नहीं करनी है हम लोगों ने कुछ नहीं किया। ज्ञान में न होते तो कुछ गलत काम करते लेकिन अभी तो बाबा की सेवा में थे, शिक्षा में थे इसलिए कुछ नहीं किया। लेकिन जरा भी कुछ महसूस हुआ हो, मक्खी भी बैठती है तो पता लगता है कि मक्खी बैठी थी, यहाँ कुछ भी ऐसा नहीं लगा तो लोगों को तो लगा होगा कि आज हमने इसकी खूब पिटाई किया। याद करेगा। लेकिन हमको जरा भी महसूस नहीं



हुआ। उससे मैं समझता हूँ कि बाबा कितनी मदद करता है, बहुत मदद करता है। तो यह लोगों को नहीं मालूम है कि जब किसी के मन में यह है, हमने बुरा काम किया नहीं किसी को तकलीफ दी नहीं, किसी से हमारी दुश्मनी है नहीं। और कोई हमारे मन में इच्छायें नहीं हैं, यह पूरी हो जाएं, वह पूरी हो जाएं, दुनिया के लफड़े नहीं तो हमको क्यों कष्ट होगा? आप सोचिए जैसे वज्र का शरीर बना हुआ हो, उसका हाथ दर्द हुआ होगा जिसने हमको मारा होगा जैसे मेटल के बने हुए होते हैं हम। समझा। हमको कुछ कष्ट नहीं हुआ। कई मिसालें ऐसी हमने देखी।

तो यह जो कइयों के मन में प्रश्न उठता है कि भगवान ऐसा क्यों नहीं करता? ऐसे ही कई बिजनेसमेन हैं वह बिजनेस के लिये पूछते हैं, हम ज्ञान में आये उससे पहले बहुत कमाई होती थी, हमारा बिजनेस ठीक चल रहा था, ज्ञान में आने के बाद नुकसान हो गया... बाबा ने हमारी मदद क्यों नहीं की? लेकिन अगर बाबा तुम्हारा बिजनेस बढ़ाता जाए तो सारे ही बिजनेसमेन बन जायेंगे कि चलो ब्रह्माकुमारी संस्था में जाने से भगवान बिजनेस बढ़ायेगा, खूब कमाई होगी। हमेशा, लोग यह उम्मीद रखते हैं कि भगवान सब कुछ करेगा, हर तरफ से हर बात में समझते हैं कि भगवान हमारा करेगा। वह हिम्मत करने वाले की मदद करता है। कंडीशन यह है कि तुम थोड़ी सी भी हिम्मत करोगे तो मैं उसकी कई गुणा बढ़के मदद करूँगा, यह निश्चित है। कभी भी जीवन में इस बात को मत भूलना, थोड़ा सा भी कष्ट है, कभी भी नहीं सोचना कि बाबा मदद नहीं कर रहा है या नहीं करेगा, असम्भव है। उसका वचन अटल है, वह ऐसा है ही नहीं जो कि कहे मैं मदद करूँगा और ना करे। जब वह लौकिक वाले नहीं पहुँचेंगे, पैसा काम नहीं आयेगा, डा. की दवाई लगेगी नहीं, रोग बढ़ता जायेगा, तकलीफ आयेगी तो भी वह मदद करेगा। वह मदद करना नहीं छोड़ेगा। सब छोड़ देंगे, वह नहीं छोड़ेगा तो यह कितना बड़ा मनुष्य में एक साहस आता है, उत्साह बढ़ता है कि हमें कौन मिले हैं! लोग समझते हैं कि मेडिटेशन से टेन्शन दूर होती है, पीस ऑफ माइन्ड मिलता है। अरे! भगवान जिसका साथी बन जाए, जिस पर उसकी छत्रछाया हो जाए, वह गाइड करे, बुरे काम से बचा दे... तो यह बाबा की हमारे लिए बहुत बड़ी मदद है। टचिंग करता है। वह टचिंग क्या



करता है? हमने बहुत दफा अनुभव किया है, बाबा की आवाज़, आयेगी कि बच्चे ऐसा करो, बच्चे ऐसा करो, बच्चे ऐसा करो....., वह टलेगी नहीं आवाज़ जब तक आप उसको करेंगे नहीं। जो आपकी सोची हुई बात होगी, मनुष्यों की बात हुई होगी वह टल जायेगी, आप कहेंगे छोड़ो जी, छोड़ो। पता नहीं ठीक है या गलत है लेकिन जो बाबा की टचिंग है, कौन है भगवान? सर्वशक्तिवान। उस सर्वशक्तिमान की जो टचिंग है वह कोई मामूली नहीं है, उसमें शक्ति भरी हुई है। वह ऐसी शक्तिशाली किरण आपकी बुद्धि में डालेगा, वह कहीं जा नहीं सकती। जब तक आप उसको करेंगे नहीं वह आपके पीछे लगी रहेगी, यह मैं बता देता हूँ। आप कहेंगे यह क्या हो रहा है लेकिन उसको करना ही पड़ेगा। और आप अनुभव करेंगे कि उसी में सफलता होती है। ऐसे बाबा की कई तरह की मदद है। तो इसीलिए व्यक्ति को निश्चित हो जाना चाहिए। बाबा कहते हैं – निश्चय वाला निश्चित रहता है। सब चिन्तायें बाबा के हवाले करके निश्चित हो जाना चाहिए। वह कल्याणकारी बाप है, भूल गये क्या? लोगों को हम समझाते हैं कि शिव माना कल्याणकारी। वह कल्याणकारी है तो हमारा अकल्याण करेगा क्या! ऐसा हो सकता है! कभी भगवान किसी का अकल्याण करे तो वह भी मनुष्य जैसा ही हो गया। कभी कुछ करता है, कभी कुछ करता है, वह भी मूडी हो गया। मूड ठीक हो तो कल्याण कर दिया और मूड ठीक ना हो तो उसकी लुटिया डूबो दी, ऐसा तो नहीं होगा। वह तो कल्याण ही करता है। हमारा भी कल्याण ही होगा, घबराने की बात नहीं इसलिए यह बात भी सीखने की है, वह क्या करता है, क्या नहीं करता है। नाम, रूप, देश, काल, गुण, कर्त्तव्य और कर्त्तव्य में वह क्या करता है, क्या नहीं करता। स्थापना, विनाश, पालना वह तो करता है लेकिन बच्चों के साथ क्या करता है? वह अनुभव करते जाओ, यह भी अनुभव करने की चीज है, गॉड रियलाइजेशन से। आपके घनिष्ठ मित्र छोड़ जायेंगे, जिस वक्त पैसा भी काम नहीं आयेगा, जवानी भी नहीं रहेगी, सेहत जवाब दे जायेगी। कोई किसी का नहीं होगा, शिवबाबा आपकी मदद करेगा। निश्चित समझ लीजिए, करेगा। हो ही नहीं सकता कि ना करें। बुद्धि में यह ठोक दीजिए अच्छी तरह से, यह बात कभी भी जीवन में भूलने की नहीं है। अच्छा - ओम् शान्ति।



21-9-2000

इस निश्चित ड्रामा में बाबा का वण्डरफुल पार्ट है जो वह अपने बच्चों को गुप्त मदद करता है

मैं मधुबन में बाबा-मम्मा के साथ में काफी समय रहा हूँ, और बहुत दफा आया हुआ हूँ, आता रहता हूँ। इस बार मैं कई दिनों के बाद आज आया हूँ तो मुझे कुछ और अनुभव होता है, पहले जैसा नहीं लगता है, कुछ थोड़ा भिन्न लगता है। क्या भिन्न लगता है, क्यों लगता है, जाने पहचाने हुए भाई बहन यहाँ पर हैं, दादी जी भी हैं, वही नित्य प्रति की जो सारी दिनचर्या है वही चलती है, वातावरण बड़ा अच्छा है, सब चीज़ बहुत सुन्दर है। फिर भी भिन्न-भिन्न, कुछ अलग जैसा महसूस होता है। थोड़ा-थोड़ा समझ पाया हूँ, पूरी तरह से मैं भी नहीं समझा कि यह अलग-अलग क्यों लगता है!

इसी दौरान में जब से कुछ इस शरीर को व्याधि ने घेरा, शारीरिक रूप से कुछ परीक्षायें सामने आयी, इस

दौरान कई प्रकार के अनुभव हुए, जिस तरह से मैं पहले जीवन व्यतीत कर रहा था शायद उसमें वह अनुभव होते या न होते लेकिन जो अनुभव नये-नये प्रकार से, कई तरह से हुए वह एक लम्बी डिटेल् है। लेकिन एक बात, एक पहलू मैं लेना चाहता हूँ कि हम कहते हैं भगवान हमारा साथी है। बाबा हमारा मददगार है। आप सब भी इस चीज़ को मानते हैं और जीवन में यह अनुभव बहुत हुआ होगा कि बाबा कैसे हमारी मदद करता है। कई परिस्थितियाँ आपके सामने आयी भी होंगी जिसमें बाबा ने आपकी मदद की है, उससे आपको अनुभव हुआ होगा और निश्चय पक्का



हुआ है। बाबा से और गहरा गहरा सम्बन्ध जुड़ा यह अनुभव करने की चीजें हैं। जो लोग केवल थ्योरिटीकली मानते हैं, जिनको ऐसे अनुभव नहीं होते उनका जीवन और तरीके का होता है। हम लोग अनुभवी हैं इन चीजों के।

जब कोई शारीरिक समस्या या प्रॉब्लम हमारे सामने आती है तब बाबा हमारा मददगार कैसे बनता है, कैसे मदद करता है? मैंने देखा है कि बहुत अलग तरीके से मदद करता है। एक तो मैंने इस बात का अनुभव किया। जब दो तीन दफा मुझे ले जाया गया, एक मशीन में डाल दिया गया और उन्होंने अपना वह शुरू किया आब्जर्वेशन। तो ऐसे लग रहा था कि बाबा मुझे देख रहे हैं ऊपर से और मैं भी बाबा के पास हूँ। कभी यह महसूस करता हूँ कि – मैं बिल्कुल सूक्ष्म लोक में बाबा के पास हूँ। यह शरीर मेरे साथ नहीं है। मैं अव्यक्त हूँ और मैं सोचता हूँ कि बाबा की मदद थी क्योंकि वह तो इस शरीर को कुछ ना कुछ कर रहे थे। मेरा ध्यान शरीर के बजाए इस तरफ था। तो इसको क्या कहेंगे! केवल मेरा ही पुरुषार्थ नहीं था, मैं सोचता हूँ बाबा ने मदद की क्योंकि बड़ा अलौकिक, बड़ा विचित्र और सुहाना अनुभव था। कई दफा ऐसे अनुभव हुए हैं तो एक बात तो मैंने यह देखी कि बाबा हमें देह से न्यारा होने में मदद करते हैं। कई दफा हम अपने आप नहीं हो पाते हैं क्योंकि हमारा अभी इतना अभ्यास नहीं है, बाबा हमें बहुत सावधान करते हैं – बच्चे, योग लगाओ, याद में रहो, देही-अभिमानी बनो।

और यह देह की परीक्षा है। यह आयेगी। बाबा ने कहा हुआ है कि और जो परीक्षाएँ होती हैं, उसके पेपर्स पहले से आउट नहीं होते हैं। लेकिन मैं आपको पेपर के जो आने वाले प्रश्न हैं, वह भी पहले से ही बता देता हूँ। उनमें से एक पहला देह का आता, यह देह-अभिमान में है या देही-अभिमानी है। यह प्रश्न हरेक के सामने उपस्थित होना है। अभी से हम ऐसे कोशिश करें तो परीक्षा में पास होंगे। चाहे किसी बच्चों का अभ्यास ना के बराबर रहा हो, थोड़ा बहुत रहा हो, तो थोड़ा बहुत मदद बाबा उसको भी करते हैं। बच्चे हैं ना आखिर हम। माँ-बाप रहमदिल होते हैं। तो वह बच्चे से प्यार करते हैं और उसको मदद करते हैं। मैंने इस चीज का अनुभव कई दफा किया है। कोई कारण से दवाई उन्होंने ऐसे दी जिसका प्रभाव किसी और तरीके



से था लेकिन उस स्थिति में भी लौकिक स्थिति नहीं थी। पाँव पृथ्वी पर होते भी जैसे पृथ्वी पर नहीं थे। कुछ अलग-अलग जैसा लग रहा था। शरीर को कोई कष्ट नहीं मालूम होता था। जो यह सारा अनुभव ऐसा था, भूख नहीं रहती, कष्ट नहीं महसूस हो रहा था। वीकनेस होती थी, लेकिन कोई सीरियस वाली बात नहीं लग रही थी तो हर प्रकार से मैंने देखा कि बाबा हमें किस ढंग से मदद करते हैं।

दूसरा जो हमारी दादियाँ हैं, वरिष्ठ बहनें हैं, इनकी बहुत मदद मिलती है। यह बाबा के स्थान पर हैं और यह यज्ञ की व्यवस्था में जो कार्य कर रही हैं, वह तो महत्त्वपूर्ण है ही, अद्वितीय है, इसकी तुलना नहीं है संसार में। यह एक एक को जिस तरह से पूछती हैं, प्यार करती हैं, दुलार देती हैं, वह मैंने अनुभव पूरी तरह से किया। मेरा पहले से ही इनके साथ स्नेह था, बातचीत होती रहती थी पर इस बार उनके बात करने का तरीका ही कुछ और था। सब बहनों का ऐसा स्नेह और ऐसा प्यार और उनकी ऐसी बात जो मैं समझता हूँ, वह दवाई से ज्यादा काम करता है। ऐसा महसूस होता है कि बाबा जो मदद कर रहा है वह तो कर ही रहा है, यह जो यहाँ निमित्त निश्चित किये हुए हैं, इनके द्वारा भी बाबा हमें सम्भाल रहा है। हम कई दफा देह-अभिमान में हो और हमें बाबा का अनुभव न हुआ हो तो इन बहनों को देख करके कितना बाबा की कमाल है। कैसा दैवी कुटुम्ब बाबा ने बनाया है, कितना प्यार है इस कुटुम्ब में और सतयुग में कितना स्नेह आपस में होगा। लौकिक वाले कभी भी किसी को इस तरीके से पूछ ही नहीं सकते हैं। चाहे कितना गहरा नज़दीक का उनका नाता हो लेकिन यह तो बिल्कुल अलौकिक स्नेह और प्यार होता है। और वह भी कुछ उनके अभिव्यक्ति का तरीका ऐसा है कि आदमी झुक जाता है, झूम जाता है। लगता है कि यह अनुभव भी बहुत निराला है इस तरह से भी बाबा हमें मदद करता है।

तीसरा मैंने देखा कि जो कई चीज़ों से साधन हमें चाहिए, रहने की जगह चाहिए, आने-जाने का साधन चाहिए और कुछ चाहिए, बाबा सारे दरवाज़े खोल देता है। अभी से ही महसूस होता है कि बाबा कितना मेहरबान है। किसी चीज़ की कमी, कष्ट, कठिनाई अनुभव नहीं होती है। बहन-भाई पूछताछ करते हैं आकर मिलते रहते हैं, उन सबके आशीर्वाद मिलते हैं, पत्र आते हैं, फोन आते हैं या उनके तरफ से



एक कोई वरिष्ठ बहन या भाई हम तक सन्देश पहुँचाते रहे। जहाँ कहीं मैं रहा चाहे बाम्बे में, चाहे अहमदाबाद में, जहाँ कहीं भी, वहाँ भी मिलने आते रहे। लेकिन सबका जो प्यार था, उसने मेरे मन को बहुत घायल कर दिया। अभी जो बड़ी बहनों ने, दादियों ने जो प्यार दिया वह भूलने जैसा नहीं है। दादियाँ ऐसे बोलती हैं जैसे माँ अपने बच्चे को बोलती है - “कैसे हो मेरे मीठे भाई” इस ढंग से बोलती है। और भी इस ढंग से जो बातें करते हैं तो जो शरीर का कष्ट होता है वह दूर हो जाता है, यह बाबा की मदद कोई कम नहीं है। यह हम ब्राह्मणों के ही सौभाग्य में है, खुशी में है कि ऐसी बहनें हमें मिली हैं, जिन्होंने योग की इतनी कमाई की है, पवित्रता आपने इतनी उच्च कोटी की धारण की है, सेवा इतनी भरपूर की है, कितना प्यार है उन्होंने में... तो यह सब अनुभव बाबा की मदद के होते रहे। कोई कमी, कोई कठिनाई कुछ भी नहीं हुई, बाबा की मदद से सब काम सहज ही होता रहा। बाबा गार्ड करते रहे, अब क्या करना है, अब क्या नहीं करना है क्योंकि हम तो अपनी बात पूरी समझ नहीं पाते हैं।

फिर इसके अलावा मैंने देखा कि जो डाक्टर्स लोग हैं, नर्सज हैं उनका महत्वपूर्ण पार्ट है। अगर डॉ० को हमारे बीमारी का पता ही न लगे तो वह दवाई काम कैसे करेगी? और नर्सज का हमारे साथ कोई प्रयोजन ही न हो तो वह हमारे तरफ ध्यान कैसे देंगी? हॉस्पिटल में तो सब तरह के नर्सस होते हैं तो मैंने देखा कि सबको बाबा टच करता है लेकिन उस टच करने के लिये उनकी धरनी को हमें तैयार करना पड़ता है क्योंकि बाबा टच उनको करेगा जिनकी बुद्धि में कुछ ज्ञान होगा, कुछ रूहानियत होगी, आध्यात्मिकता में कुछ विश्वास होगा और आपके नज़दीक जो आयेगे कुछ आध्यात्मिकता में आगे बढ़ने के लिये, यह सेवा हमें करनी पड़ेगी। और जहाँ यह सेवा थोड़ी बहुत करते हैं उसके बाद हमने देखा है कि वह निमित्त बन जाते हैं बहुत सेवा करने के लिये। और बाबा उनको टच करता है - क्या दवाई देनी है, कितनी दवाई देनी है, कब दवाई देनी है, देनी है या नहीं देनी है। देखिए, हरेक के कर्मों का हिसाब-किताब अलग है जो भावी बनी हुई है, वह तो हरेक के जीवन में सामने आनी ही है।



बाबा कहते हैं मैं भी ड्रामा के बन्धन में बँधा हुआ हूँ तो ड्रामा तो निश्चित है। लेकिन उसके बीच में जो बाबा का पार्ट है, वह कितना वन्दरफुल बाबा बजाते हैं, यह मैं देखता रहा कि कितना भरपूर बाबा मदद करते हैं। लेकिन यह बात भी बीच-बीच में याद आती थी, जो बहरहाल मुरली में बार-बार कहते हैं बच्चे, समय बहुत कम है। बच्चे, विनाश सामने खड़ा है। बच्चे, जो आज इन आँखों से दिखाई देता है, वह कुछ भी बचने वाला नहीं है। बच्चे, जब इस भंभोर को आग लगेगी, यह सब भस्मीभूत हो जायेगा। बच्चे, यह इतना भयानक विनाश होगा, जो देख नहीं सकते हैं, इसीलिए पहले से ठीक हो जाओ, तैयार हो जाओ उसके लिये। वरना वह सहन नहीं कर पायेंगे, बड़ा दर्दनाक दृश्य होगा। बाबा कहते हैं, मैंने खुद देखा था और आपको मालूम है कि गीता में भी लिखा हुआ है कि हे भगवान! अब अपने मोहिनी रूप से प्रकट हो जाओ, यह विकराल रूप मेरे से देखा नहीं जाता। तो वह कैसा दृश्य होगा! बाबा हमें लगातार वार्निंग देते हैं, शिक्षा देते हैं। विनाश कोई एक दिन में नहीं होगा। कई समझते हैं कि विनाश जो है एटम बॉम्ब या हाइड्रोजन बॉम्ब का जब विस्फोट होगा तो विनाश हो जायेगा। उससे जो ज्वाला निकलेगी, सृष्टि जलमय हो जायेगी। और मनुष्य की जो आबादी है, वह बहुत कम रह जायेगी और सतयुग आ जायेगा। लेकिन विनाश को टाइम लगेगा। विनाश का प्रोसेस है, कई जगह एटम बॉम्ब से होगा, कई जगह पहाड़ों पर बर्फ पिघलेगी उससे फ्लड आयेंगे... बाबा ने कहा है यह जो बॉम्बे है, यह एक दिन डूबेगी। जो भी सागर के तट पर शहर बसे हुए हैं, पानी वहाँ इतना ऊँचा हो जायेगा वह जल में मग्न हो जायेंगे, वह बचेंगे नहीं उनका विनाश उस समय होगा। कहीं भूकम्प होगा। भारत के लिये बाबा ने तो कहा हुआ है कि हिन्दू-मुसलमान लड़ेंगे, खूब खून की नदियाँ बहेंगी। जब खून की नदियाँ बहेंगी, उसके बाद फिर दूध की नदियाँ बहेंगी। तो इसको समय लगेगा क्योंकि इतने हवाई जहाज, इतने एयरपोर्ट, इतने मकान कई ऐसे साधनों से संसार भरा पड़ा है, वह सारे ध्वस्त हो जायेंगे, उनके नाम-निशान भी न रहेंगे। सतयुग में जो लोग आयेंगे, उनको यह मालूम नहीं होगा कि यह क्या हुआ था, यह जो विनाश हुआ था। अगर वह ऐसा देखेंगे तो उनकी खुशी में थोड़ी सी कमी आयेगी। सोच चलेगा कि यह क्या



हुआ था। तो बाबा ने बताया है कि ऐसा नहीं होगा, उससे पहले यह सब मलियामेंट हो जायेगा। तो इतनी सफाई होगी और साथ-साथ बाबा ने यह कहा हुआ है कि मैं पहले से नहीं बताऊँगा कि विनाश कब होगा, डेट नहीं बताऊँगा, टाइम नहीं बताऊँगा। आपको तैयार रहना पड़ेगा, एवररेडी रहना पड़ेगा।

विनाश के बारे में तो बहुत सारी बातें बाबा ने समय-समय पर कही हुई हैं लेकिन उसमें से एक बात खास यह है कि विनाश जब होगा सो होगा, उससे पहले क्या हमारे कानों में यह आवाज़ गूँजती है कि बच्चे, समय बहुत कम है। बच्चे गफलत मत करो। बाबा कहते हैं अपना टाइम, शवाँस, अपनी इनर्जी का सदुपयोग करो। अपने विकर्मों पर योग का प्रयोग करो, विकर्मों का विनाश करो। हम करते नहीं हैं, आज हम ठीक हैं, कल किसी का एक्सीडेंट हो जाये या असाध्य रोग हो जाए या कोई और तरह से वह असहाय हो जाता है, माना कोई और प्रॉब्लम उसके सामने आ जाता है, तो तब वह वो पुरुषार्थ तो नहीं कर पायेगा। हम अगर यह समझे, हाँ, हाँ कर लें, कोई बात नहीं है। फलां डेट से हम शुरू करें, वह डेट नहीं आयेगी अगर हमने आदि से लेकर अभी तक सावधान होकर इस बात पर ध्यान नहीं दिया है कि हम अपना भाग्य ऊँचा बनाये, अपने ऊपर भी कुछ ध्यान दें, स्व उन्नति के लिये कुछ करें तो नतीज़ा उसका बहुत खतरनाक होगा।

मेरे साथ भी जो अभी हो रहा है जिसका मुझे थोड़ा सा आभास है। जो कुछ भी हो बाबा के हाथ मे है, बाबा कल्याणकारी है, कल्याण ही होगा। अकल्याण होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता लेकिन अगर मैंने अपने जीवन का समय व्यर्थ किया होता, लफड़ों में गया होता, झगड़े किये होते और टाइम अपना खराब किया होता, बजाये सेवा में लगे रहने के या पुरुषार्थ करने के, हमें वह समय जो सारे कल्प में एक बार मिलता है, अगर इस तरीके से हाथ से निकाल देता तो मैं समझता हूँ आज मुझे खून के आँसू आते कि पता नहीं कैसा टाइम निराला है, कितने दिन का जीवन और है या नहीं है, वैसे भी किसी को मालूम नहीं है। कब किसके प्राण छूट जायें।

तो अब जो हमारे मन में एक तसल्ली है, वह यह है कि बाबा की श्रीमत पर हम चले, सेवा की। टाइम खराब नहीं किया। हम परफेक्ट तो नहीं हुए, परफेक्शन



का काम नहीं किया लेकिन जितनी समझ थी, बाबा की बातों को जहाँ तक समझा, कोशिश की उसको जीवन में लाने की, औरों को सामने रखे, बड़ों-बड़ों को हमने फॉलो करने की कोशिश की। बाबा, मम्मा के साथ रहे, उनका जीवन कितना महान था, गगनचुम्बी था। वहाँ तक हम नहीं पहुँचे, शायद नहीं पहुँच सकते हैं लेकिन कुछ ना कुछ हमने कोशिश की। और उसका नतीजा अब यह है कि कुछ भी हो, बाबा ने तो हमारी झोली भर दी है। हमें अनमोल रत्न दिये हैं। हमारे शरीर के द्वारा बाबा ने ईश्वरीय सेवा ली है। हमने ऐसे टाइम गँवाया नहीं है, तो यह एक बहुत बड़ी सन्तुष्टता लाइफ में होती है। और अगर हमने ऐसा ना किया हो तो बहुत-बहुत-बहुत यह गलती है। गफलत है।

तो मेरे अनुभव से कहना चाहता हूँ कि ऐसे गफलत नहीं करनी चाहिए। अगर कोई गफलत कर रहा है और मेरा अनुभव सुनकर वह अपनी गफलत को दूर कर देता है तो मैं समझता हूँ - इस शरीर की रिस्क होते हुए भी मेरा आना सफल हुआ। बाकी मेरे बीमारी के व्याधि की मुझे कोई चिन्ता नहीं है, रिचक मात्र भी चिन्ता नहीं होती। किस बात की चिन्ता हो, क्यों हो चिन्ता? मैं बाबा की गोद में हूँ, मेरा हाथ बाबा के हाथ में है। बाबा की छत्रछाया मेरे ऊपर है, मुझे मालूम है - बाबा मुझ से कितना प्यार करता है। जब मैं उससे इतना प्यार करता हूँ, तो समझ नहीं सकता हूँ उसे कि वह कितना प्यार करता है! और मैंने साकार रूप में उसे देखा है, मुझसे वह कितना प्यार करते रहे तो वह प्यार कहाँ चला जायेगा। उनके कल्याण का हाथ मेरे ऊपर है, मुझे किस बात की चिन्ता है। जब मैंने बाबा के हवाले कर दिया, इस सब चीज़ को, मेरी अपनी कोई रही नहीं, अब मुझे किस बात का ख्याल होगा! मैं तो फारिग हूँ।

बाबा कहते हैं आपकी एकाग्रता की स्टेज, मन्सा स्टेज और मन्सा सेवा क्या होनी चाहिए? निरन्तर योग कैसे होना चाहिए? इत्यादि-इत्यादि... वह स्टेज तो नहीं आयी। वह शायद इस बीमारी के हालत में मेरे को टाइम मिल रहा है अभ्यास करने का। तो मैं उम्मीद करता हूँ कि इस शरीर को छोड़ने से पहले बाबा मुझे वह भी दे देंगे। जब बाबा ने इतना कुछ दिया है तो वह भी दे देंगे क्योंकि उनके पास यह



वरदान है और अगर वह चाहें कोई पुरुषार्थ करें तो उसको वह दे ही देते हैं। मुझे पूरी आशा है कि वह दे दौं क्योंकि मुझे और कोई इच्छा है ही नहीं। मैं उनसे कुछ चाहता नहीं हूँ, कभी कुछ उनसे मांगा नहीं है, कभी हाथ फैलाया नहीं, ना मैं अब कहता हूँ कि मेरी आयु बढ़ा दीजिए, मैं इतने साल और जिन्दा रहूँ, अभी मुझे यह करना है, वह करना है, कुछ भी नहीं...। हैण्डस् अप। मैंने हाथ उठा लिया है, मैं ना किसी सेन्टर का, ना ज़ोन का, ना विंग का, किसी का भी इन्चार्ज नहीं हूँ। एक कुमार हूँ, छोटा-सा। कुमार था कुमार हूँ, कुमार रहूँगा और कुमार की तरह से चल रहा हूँ। मेरे जैसा प्री फूल दुनिया में कोई नहीं। तो कोई बन्धन नहीं, कुछ नहीं, अपने को बन्धन में बाँधा ही नहीं है।

हमें यह भी नहीं कि शरीर छोड़ने के बाद उस प्रॉपर्टी का क्या होगा, पीछे बच्चों का क्या होगा, बीबी का क्या होगा...। हम उन चीज़ों से फारिग़ है।

तो बाबा से कोई चीज़ हम मांगते नहीं। बाबा ने कहा है – तुम बच्चे रॉयल हो, साहेबजादे हो। वह साहब है, हम साहबजादे हैं। उसको जो देना होगा वह देगा वरना हम मांगने वाले कुछ भी नहीं हैं, यह हमारा प्रण है, शुरू से लेकर। और बाबा ने कहा हुआ है – माँगने से मरना भला... क्या मांगेंगे हम! उसने कोई चीज़ ना दी हो तब तो हम मांगे। जब सब चीज़ उसने दे दी है हम क्या मांगे, अच्छा कोई चीज़ हमें नहीं भी दी है, अभी तक हमको मिली नहीं है, उसने दी होगी हमने ली नहीं है। गफलत हमारी है। जैसे बाबा कई दफा कहते हैं कि दाता दे और लेने वाला थक जाये। वह भगवान तो दाता है, वह तो देता है, हमने गलती की है अगर नहीं ली है। वही देगा अगर हमारा ध्यान गया है तो देगा, सोचने की, चिन्ता करने की बात नहीं है। अभी भी अगर हम अपना श्वाँस, समय सफल करें तो हमारा जीवन धन्य-धन्य हो जायेगा। और हमें इतनी सी बात की कोई यह शिकायत, शिकवा या मन में कुछ सोच-विचार कोई चिन्ता किसी बात की नहीं रहेगी क्योंकि हमको सबकुछ उसने दे दिया है। बाबा मिल गया तो सब मिल गया यह हम कहते हैं लेकिन प्रैक्टिकल में मिला कि नहीं मिला! यह समझने की बात है। मेरे ख्याल में बहुत पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है।



यह मधुबन बाबा की कर्तव्य भूमि है। हम तो यहाँ कहीं भी जाते हैं, तो बाबा हमें घूमते हुए दिखाई देते हैं। बाबा जब यहाँ से चलकर हमें पहाड़ी पर ले जाते थे तो क्या ठाठ थे, क्या फ़रिश्ते जैसी चाल थी, दुनिया में ऐसी किसी की चाल हो नहीं सकती। सृष्टि के आदि पिता, उनके हाथ में हाथ देकर हमें चलने का मौका मिला, वह आज हमें छोड़ देगा! ऐसे कैसे हो सकता है? हमारा भी निश्चय अटल है। यह हिस्ट्री हाल है, यहाँ बाबा संदली पर बैठते थे। बाबा का बैठना किस तरह था, हमने कई सन्तों, महात्माओं और योगियों, धर्म पिताओं को देखा है, हमारा दिमाग घूम जाता है जब हम बाबा का वह चित्र सामने लाते हैं कि वह ब्रह्मा बाबा कैसे बैठे हैं, गुरुओं के गुरु कैसे बैठते थे, किस प्रकार से निहारते थे, हम पर दृष्टि डालते थे, कैसे मधुर वचन बोलते थे, क्या गज़ब! हमारी हालत क्या होती थी... हमें ऐसा लगता था कि इन्होंने तीर मार दिया, गोली मार दी, वह गोली ऐसी नहीं जिससे दर्द हो। वह गोली तो ज्ञान की थी जिसके लग जाने से आदमी की बुराई, कमी-कमजोरी मर जाती थी। उसके मन में दृढ़ता आ जाती थी कि मैं यह करूँगा और करते रहूँगा। ऐसा उत्साह-उमंग दिलाने वाले वचन और वह बैठक-उठक, चलना-फिरना... कभी हम नक्की झील पर जाते। तो बाबा हमारे तरफ देखते, हम उनके तरफ देखते और गीत गाते कि – ना यह चाँद होगा, न तारे रहेंगे मगर हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे... तो आप जरा अंदाजा लगाइये, कैसा दृश्य होगा! फिर बाबा गोद में लेकर हमें प्यार करते हैं, गालों पर थप-थपाते हैं, सिर पर हाथ फेरते हैं, वह दिन कितने अच्छे दिन थे। वह दिन हमने देखे हैं फिर अब हमें क्या चाहिए, किस चीज़ की इच्छा है, क्या ज़रूरत है हमें? तो मैं अपने लिये समझता हूँ कि मैं सौभाग्यशाली हूँ, कोई कहे या ना कहे, माने या न माने, मैं खुद अपने आपको मिया मिठू बनके कहता हूँ – मैं सौभाग्यशाली हूँ क्योंकि मैंने बाबा से यह सब पाया है।

लेकिन मेरे दिल में एक अरमान अवश्य है कि बाबा की प्रत्यक्षता हम नहीं कर सके। अरे! विवेकानंद को संसार जानता है, आर्य समाज के स्वामी दयानंद को जानता है, रामकृष्ण परमहंस को जानता है और जो सारी सृष्टि को इतना ऊँच शिक्षा देने वाला, जो सतयुग की स्थापना करता है, हाय! हम उसकी प्रत्यक्षता नहीं कर



सके। मेरे मन में आता है, कितने गये-गुजरे लोग हम हैं और बाबा ने हमें तरीका बताया है कि बच्चे जब आप लोगों की स्थिति ऐसी होगी तब बाबा की प्रत्यक्षता होगी। हम वह स्थिति बनाते नहीं। वैसी स्थिति हम बनायें। जिससे लोगों को मालूम पड़े कि उसने तो एक शिष्य बनाया विवेकानंद को और यहाँ पर हजारों लोगों को बाबा ने इतना महायोगी बना दिया और वह फ़रिश्ते बन गये हैं, देखने में देवता, साइलेंस में घूम रहे हैं और उनकी दृष्टि इतनी पावरफुल, उनकी स्थिति भी इतनी महान तो वह लोग छिपे रहेंगे! वह हम कर नहीं पाये।

अपनी प्रत्यक्षता हम कर रहे हैं, आज जो हम नाम, मान, शान चाहते हैं, यह अपनी प्रत्यक्षता कर रहे हैं। यह फलां फलां विंग का इन्चार्ज है, चेयरमेन है। ठीक है। जो चेयर पर बैठता है, वह चेयरमेन ही तो है। हमें ऐसा बनाया किसने? यह दिया सब किसने? यह बाबा ने दिया, उसकी प्रत्यक्षता के लिए हम कुछ नहीं कर रहे हैं। यह प्रश्न है मेरे सामने कि मैं आज अगर इस संसार से जा रहा हूँ, यह काम करके नहीं जा रहा हूँ। मैंने लेखनी से कोशिश की, वाणी से कोशिश की भाग-दौड़ की, जहाँ तक मेरे से हो पाया भाई बहनों से सहयोग लिया, उनका संगठन बनाया, कोशिश करके बड़े-बड़े प्रोग्राम किये, कोशिश की लेकिन उस लक्ष्य तक पहुँचे नहीं। आज संस्था की प्रत्यक्षता हो रही है, लोग समझते हैं यहाँ की बहनें, यहाँ के भाई कैसे हैं, सेवा भाव से, स्वच्छता से, यहाँ के अच्छे भोजन सेप्रभावित होते हैं। लेकिन यहाँ पर कौन शिक्षा देने वाला है, इनकी बैकबोन कौन है, किसने इनको ऐसा बनाया? यह उनकी बुद्धि में नहीं आता है, ना देश में ना विदेश में। अन्त में ऐसी कुछ हलचल होने लगे, जैसे हम कहें लोग मान जायें, उसमें हमारी कोई बड़ाई नहीं है, हमने क्या किया? हमारी बड़ाई तो तब है, जब हममें से 2-4 भी ऐसे हों जिनको देखकर वह आश्चर्यचकित हो जायें। देखते ही रह जायें, वहाँ से उठें ही नहीं, जाने का नाम नहीं लें ऐसी स्थिति हमारी हो, चुम्बक की तरह से आकर्षण हो कि जो बैठने वाला है वह समझे जीवन है तो यही है। यहाँ से उठके कहाँ जाऊँगा। संसार में और ठौर कहाँ है? मेरे लिये स्वर्ग यही है, ऐसा हममें अभी तक कोई एक भी नहीं है। यह एक कमी-कमजोरी हमारी है। अच्छा - ओम् शान्ति।



राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी

त्याग एवं तपस्या की मूर्ति राजयोगिनी दादी जानकी जी, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका हैं। अनेक वर्षों से आपने राजयोग का गहन अभ्यास किया है तथा ईश्वरीय ज्ञान पर सतत मनन करने का आपको विशेष ईश्वरीय वरदान प्राप्त है। आपके महान जीवन से असंख्य

आत्माओं ने आध्यात्मिक जीवन अपनाने की तथा दृढ़ता से अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त की है। आपकी वृत्ति तथा वाणी आपके सम्पर्क-सम्बन्ध में आने वाली हर आत्मा में उमंग-उत्साह का संचार करती है। विभिन्न देशों-प्रदेशों में रहने वाली हर आत्मा बाप समान शक्तिशाली बनें - इस संकल्प का आप सच्चा स्वरूप हैं। आपने परमात्मा शिव के महावाक्य सुनकर उसी समय जो मनन-चिन्तन करके उसका स्पष्टीकरण अपने प्रवचनों में किया है, उसका सार संग्रह यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि इसे पढ़कर हर आत्मा को एक नई जीवन दिशा मिले तथा वह आत्मा स्वयं शक्तिशाली बन अन्य को शक्तिशाली बनाने के निमित्त बने।

निश्चय के आधार पर स्वयं को बाबा हवाले कर देना अर्थात् निश्चित बनना

मधुबन में सदा बाबा की मुरली बजती रही है, मुरली की आकर्षण ही सबको मधुबन में खींचकर ले आती है। यही आकर्षण बुद्धि को दिव्य, सतोगुणी बना देती है। सतोप्रधान बनने की इच्छा उत्पन्न कर देती है।

आज बाबा ने कहा कि निमित्त बनने में कितने फायदे हैं। समर्पण हुए तो स्वतंत्र हो गये। जो समर्पण हो जाते हैं कहने में आता है मैं समर्पण हुआ हूँ, परन्तु अपनी जवाबदारी बाबा को दे करके फ्री हो गये। कमाने की चिन्ता, खाने की, पकाने की, रहने की .. चिन्ताओं से मुक्त हो गये। तो समर्पण हुए माना चिन्ता से मुक्त हुए। कितना फ्रीडम मिली है सिर्फ अपने आपको बाबा के हवाले कर इस देना निश्चय के बल से। सेकण्ड में निश्चय हुआ बाबा के हो गये बस, फिर आगे भी निश्चय का बल ही बढ़ाता है। आगे बढ़ने और बढ़ाने का आधार ही है - निश्चय। बुद्धि जब निश्चय वाली है तो बड़ी शक्तिशाली है। निश्चय से अपनी निर्बलता को तो खत्म कर दिया दूसरे की भी खत्म करने

के निमित्त बन जाते हैं। निश्चय ने कमजोरियों को खत्म कर दिया, क्या करूँ, कैसे करूँ यह भाषा ही बदल गयी। निश्चय के बल से सफलता का सितारा चमकने लगा है। एक बल एक भरोसा क्या होता है, निश्चय यह अनुभव कराता है। निश्चय बुद्धि बनने से सच्ची भावना का भाड़ा कितना रिटर्न में मिलता है, वह निश्चय दिखाता है।

निश्चय वाला निश्चित रहता है। उसको निश्चित रहने की बाबा से गिफ्ट मिलती है। सेवा का भी फिक्र नहीं, एक सेन्टर तो क्या लेकिन 100 सेन्टर के निमित्त हो तो भी



फिक्र से फारिग है क्योंकि अलबेले नहीं हैं इसलिए निश्चित है। थोड़ा भी अलबेला रहने वाला कभी निश्चित नहीं रह सकता है। एक सेन्टर सम्भालने वाला अलबेला है तो उस सेन्टर की रूप रेखा, वह खुशबू नहीं होगी क्योंकि जिसे बाप में निश्चय है तो वह नज़र आता है। किसमें निश्चय रखा हुआ है, वह चला रहा है, घर बाबा का है, सेन्टर बाबा का है, दुकान बाबा का है, सर्विस भी बाबा की है इसलिए जो बाबा के घर आते हैं उनको यह भासना आती है, भगवान के घर आये हैं। नहीं तो भारी हो जायेंगे किसके इसके पास आये हैं। हम कहेंगे इतने मेहमान आये हैं सुबह से शाम तक आते रहते हैं तो शक्ल पर थकावट होगी, तो कौन बिचारा आराम करेगा, कौन खुशी से भोजन खायेगा ? तो यह देखा जाता है निश्चय बुद्धि और निश्चित रहने का जो बाबा ने भाग्य दिया है, बाबा को फालो करके अपने को पद्मापद्म भाग्यशाली समझना, यह है भावना का भाड़ा। जहाँ कदम वहाँ कमाई ही कमाई है।

जैसी दृष्टि है तो दृष्टि का आधार वृत्ति हो गयी है, वृत्ति से सेवा सहज होती रहती है। सच्ची भावना दिलों में पहुँच जाती है। अपना दिमाग नहीं चलाना है, न दूसरे को दिमाग चलाने की ज़रूरत पड़े। दिलों में छाप लगे। कहाँ बैठे हैं, पढ़ाने वाला कौन है ? इस पढ़ाई से कितनी प्रालब्ध बनती है, कल हम क्या थे, आज हम क्या बने हैं ! यह अनुभव हो जाये, यही है निमित्त बनना। अच्छा।



11.2.2000

अपनी पर्सनैलिटी में रूहानियत और सच्चाई हो तब राहत मिलेगी

बाबा के मीठे बोल बाबा की याद दिलाने वाले हैं। जो बोल कानों द्वारा सुने हैं, दिल में समा गये हैं वह याद आते ही बाबा की याद आती है। बाबा की एक ही धुन में हम रहें, यह बाबा की इच्छा है। पुराने शरीरों में रहते हुए अन्तिम जन्म में, अन्तिम स्मृति एक बाबा की रहे - यह बाबा की इच्छा हम बच्चों के लिए है। ऐसे लगता है बाबा को इस बात के बिगर और कुछ बात हमारे लिए कहने के लिए नहीं है। हम बच्चों में बाबा का इतना मोह है जो बस हमारी ही नज़रों के आगे रहें या नज़रों में समाये रहे, मतलब हम बाबा की नज़र से दूर न रहे। जब तक फरिश्ता नहीं बने हैं, तब तक सच्ची ब्राह्मण लाइफ में रहें। सत्यनारायण की कथा सुनें और सुनायें। याद और गुणों पर ध्यान रखने वाली यह लाइफ है। ब्राह्मण लाइफ में याद और सेवा से गुणवान बनना और गुण दान करना सहज हो जाता है।

हर बात को समेटने लगे तो छोटी बात बड़ी नहीं लगेगी, बड़ी भी छोटी हो जायेगी यानि कोई भी बात हमको नीचे नहीं खींचेगी। नीचे वाली बात नीचे ही चली जायेगी और हम अपनी उपराम स्थिति से सफलता स्वरूप का अनुभव करेंगे। संगठन की शक्ति को बढ़ाने में यह दो बातें बहुत मदद करती हैं। एक तो अपनी स्थिति मजबूत हो, दूसरा संगठन की शक्ति को बनाने का बहुत ध्यान हो। तो आजकल समय अनुसार जो बात हमारे ध्यान पर आती है, धारणा में लाने के लिए उसमें पूरा दृढ़ संकल्प है और वह धारणा आवश्यक लगती है इसलिए फिर उसको ढीला छोड़ना अच्छा नहीं लगता है क्योंकि इस धारणा में



हमारी उन्नति समाई हुई है। जैसे अभी हम अपने लक्ष्य तक पहुँच रहे हैं तो हम अपने पर्सनलिटी को भी देखें। तो हमारी पर्सनलिटी में अपने लिए भी अच्छा लगेगा और संगठन में भी बल भरेगा। और जिस सेवा के अर्थ निमित्त है उसमें भी सफलता मिलेगी।

एक रूहानियत में रहने वा देही-अभिमानि रहने की आदत डालें। आत्मा अपने निजी स्वरूप – आदि और अनादि स्वरूप को इमर्ज करे, देह-अभिमान जो आत्मा में घुस गया है वह सारा खत्म हो जाये, देह-अभिमान हमको कभी भी खीचें नहीं क्योंकि 84 जन्म देह, देह के सम्बन्धों में आ करके बाकी भी लास्ट जन्म में तो आत्मा ने अपने आपको खत्म कर दिया था, ज्योत बुझ गई थी। देह, सम्बन्ध और दुनिया के बिगर और कुछ पता ही नहीं था। मैं क्या हूँ, बाप क्या है... इतनी जागृति आ जाए, इतनी रूहानियत हमारे में आ जाए जो किसी प्रकार से कहाँ से भी देह-अभिमान अन्दर से छिपा हुआ काम न करे। अगर हमारे ऊपर काम किया तो अन्य आत्मायें भी उसका एडवान्टेज लेंगी। पहले वाला हिसाब-किताब चुक्त्तू करने के बजाए नया जोड़ लेंगे।

पास्ट के विकर्म विनाश करने का कॉट्रैक्ट जो बाबा ने उठाया है। बाबा कहते - बच्चे याद की अग्नि तेज होगी तो मैं तुम्हारे पास्ट के विकर्म विनाश करूँगा। तो बाबा ने एग्रीमेन्ट की है उस पर अगर हम नहीं चले हैं तो बाबा एग्रीमेंट कैन्सिल कर देता है फिर और बोझा चढ़ना शुरू हो जाता है। इसलिए हमारी पर्सनैलिटी में जब रूहानियत की राहत होगी तब वह खुशी होगी। रूहानियत में रहने से रूहानी बाप से बहुत शक्ति मिलती है। रूह को घर की याद और अपनी याद दिला करके, सर्वशक्तिवान बाप अपनी शक्ति दे करके अपने समान बनाता है। अभी जो हम बाप को सामने रख करके याद करते हैं, सतयुग में ऐसे याद नहीं करेंगे। भक्ति में तो भगवान को भक्त बन करके याद करेंगे, अभी बच्चे बन बाप को याद करते हैं। वह भी देही-अभिमानि बनने के लिए याद करते हैं। रूहानी राहत में रहने के लिए याद करते हैं। तो हमारी पर्सनैलिटी में रूहानियत और सच्चाई हो।

सच्चे बाप के बच्चे हैं तो हमारे अन्दर सच्चाई ऐसी हो जो हमारे चेहरे-चलन



से सत्य बाप कैसा है वह औरों को अनुभव हो। चाहे हमारे साथियों को भी यह अनुभव हो। बुद्धि से समझा है तो मुख से समझाना भी सहज है। याद में रहने की मेहनत है, बाबा बार-बार जो कहता है कि किसी देहधारी की याद न आये क्योंकि किसी देहधारी को याद किया माना जैसे भूतों को याद किया। यह पाँच तत्व जो हैं, वह पाँच भूत बन करके हमारी आत्मा में प्रवेश हो जाते हैं। इसलिए देहधारियों को याद तो क्या परन्तु जरा सा टच भी नहीं करना है। नहीं तो वह भूत हमको खींच लेंगे।

हम भाग्यशाली हैं जो भगवान ने बच्चा बना सब बातों को समझने की बुद्धि दी है। हम लक्की हैं कि भगवान की बात समझने की बुद्धि है। जो बुद्धि पहले हमारे पास नहीं थी, दुनिया में कोई कितने भी बुद्धिवान हो, कितने भी साधू साधना करने वाले हो, बाबा कहते हैं वह भले कितना भी घर-बार से वैराग्य रख करके ब्रह्म-तत्व को ही याद करेंगे। वह समझते हैं यही याद है परन्तु हमको बाबा ने कितना सब समझा दिया है – बच्चे, याद किसको कहा जाता है।

हम आत्मा ही पतित बने हैं, सो हम आत्मा को ही पावन बनना है। अभी ब्राह्मण सो फरिश्ता बनना है फिर घर जाना है फिर सुखधाम में आना है। तो पहले शुद्ध पवित्र ब्राह्मण आत्मा बनकर फिर फरिश्ता बनना है। तो अव्यक्त बापदादा ने इस बार सेकण्ड में साइलेन्स में जाने की प्रैक्टिस कराई लेकिन रिजल्ट हरेक अपनी देखें इस ड्रिल का इतना फायदा लिया है? हमें अपने अन्दर झाँकना चाहिए कि अपनी स्थिति कहाँ तक बनाई है। सेवायें की, लोगों के कानों तक आवाज़ पहुँचा, वह तो अच्छा हुआ सन्देश मिला इसमें हम खुश तो नहीं हुए। वह तो बाबा का काम है, बिछड़ी हुई आत्माओं को किसी-न-किसी तरीके से समीप लाना। लेकिन आत्मा अपने अन्तर-आत्मा की आवाज़ को सुनें और अपने आप से पूछे हम सेकण्ड में समेटकर उपराम वृत्ति में स्थित हो सकते हैं? सेवा के साथ-साथ हमारी वृत्तियाँ भी इतनी शुद्ध बनी हैं। हमारे संकल्प ऐसे शुद्ध, शुभ और श्रेष्ठ हों जो दूसरे के संकल्पों को भी शुद्ध, शान्त बनने की मदद करें। यह हमारी जो पर्सनल सेवा है, जो दिन रात की सेवा है, श्वाँसों-श्वाँस हर समय की जो सेवा है उसकी प्रोग्रेस कहाँ तक हुई? सफलता में बल चाहिए, हिम्मत और विश्वास चाहिए। सच्ची रियलाइजेशन चाहिए।



ऐसे भी नहीं कि चोट खाई रियलाइजेशन हुई फिर हम अलबेले मस्त हो जाएं, ऐसा महसूस करने से समाप्त नहीं होगा। क्योंकि अन्दर संस्कारों में जब तक पूरी सच्चाई और स्वच्छता नहीं आयी है, कोने में रहा हुआ किचड़ा भी है तो सम्पूर्ण पावन बनने की शक्ति नहीं होगी क्योंकि ज्ञान बहुत शक्ति देता है तो अगर वह शक्ति जो ज्ञानामृत पीने की है, वह नहीं है तो पावन कैसे बन सकेंगे? तो जब तक सच्चा अनुभव नहीं है सिर्फ सुनने तक अच्छा है क्योंकि और सब व्यर्थ सुनने से छूट गये यह तो बहुत अच्छा है। एक सच्चे बाप की बातें सुनना, स्व चिन्तन में रहने के लिए यह कितना अच्छा मार्ग मिला है। लोग क्या कहते हैं, लोग क्या करते हैं, उसमें न जाने की इच्छा है, न सुनने की इच्छा है। न उन द्वारा ऐसा सुनने और सुनाने के लिए हम पुरुषार्थ करें, इस तरह से सुनाने का जो प्रभाव पड़े वह भी इच्छा नहीं। इच्छा यही है जो बाप के दिल के बोल हैं वह अनुभव में आ जाएं। जैसे ब्रह्मा बाबा के चेहरे से दिखाई देते हैं। बाबा के रूम में जाते हैं तो कितना अच्छा अनुभव होता है। तो अभी भी बाबा को सामने रख करके सुनो तो वह अनुभव होगा। बुद्धि में और कोई सामने आयेगा तो अनुभव नहीं होगा। सुनते नीड आयेगी, सुनेंगे परन्तु मजा नहीं आयेगा। और बाबा सामने आयेगा तो अनुभव होगा। वह अनुभव की शक्ति हमको ऊँच उठाती है, नीचे खींचने वाली बातों से हटाती है क्योंकि नीचे खींचने वाली हजार बातें हैं, बड़े अच्छे-अच्छे रूपों से आती हैं जो ऊपर उठने ही नहीं देती हैं।

तो ऊपर जाना है तो उसमें एक ही बाप की आकर्षण चाहिए। हमारी दिल सच्ची हो और दिमाग में खुशी का पारा चढ़ा हुआ हो। दिमाग बिल्कुल साफ हो, बोझ नहीं हो। दिमाग हल्का भी जब तक नहीं है, किसी प्रकार का भी टेन्शन है या कोई भी प्रकार का दिमाग पर असर है, माना दिमाग से कोई बात अन्दर से भूलती नहीं है, बैठी हुई है तो बाबा की खींच नहीं होती है। और यह कुदरती नियम है, चुम्बक जंक उतरी हुई सुई को खींचता है। जंक वाली सुई को खींच नहीं सकता है तो यह चुम्बक का दोष नहीं है। तो हमको रियलाइजेशन की शक्ति से पहले जंक उतारनी है। अन्दर कुछ भी अलाए मिक्स न हो, हमें सच्चा सोना रहना है। फिर याद की जो शक्ति है वह हमारे ऊपर काम करेगी। तो थोड़े में खुश नहीं होना है कि सेवा में सफलता



मिली, वह तो बहुत अच्छा हुआ बाबा की मदद से। बाबा को अनेक आत्माओं का ख्याल है तो ज़रूर उन बच्चों को खींचेगा। वह तो बाबा का अपना काम है। बाबा तो अपना काम करता ही है। लेकिन पर्सनल मुझ आत्मा में आन्तरिक कितनी प्राप्ति हुई, यह देखना है। तो खूब अच्छी तरह से ध्यान रख करके अपनी प्राप्ति में कोई कमी नहीं रहने देना चाहिए तभी तो गायन होगा कि - ब्राह्मणों के खज़ाने में अप्राप्त नहीं कोई वस्तु।

अगर रूहानियत में रहने का, सच्चा बनने का ध्यान अब नहीं रखेंगे तो कब रखेंगे? तो सच्चाई को समझना माना सच्चा बनना। जो बाबा को भी लगे कि यह मेरा सच्चा बच्चा है, इसकी याद सच्ची है। औरों को भी फीलिंग आए - इसकी याद अन्दर की है, सच्ची है। यह सच्चाई का सर्टीफिकेट जब तक नहीं मिला है तब तक हमारे अन्दर चैन नहीं हो, अन्दर से इस बात की चिंता हो। तो जब भी मुरली पढ़ते या सुनते हैं तो साथ-साथ उसको अपने अन्दर में समाने का फिक्र भी हो क्योंकि हमने साकार में बाबा को देखा है कि बाबा को अपनी स्थिति को ऊँचा रखने का कितना फिक्र रहता था। जो सुना है उस प्रकार जीवन बनाकर उस स्थिति से सेवा करने का बहुत फिक्र बाबा करता था। ऐसे विश्व-कल्याणकारी तो वह खुद है। सब कुछ कराने वाला तो वह है लेकिन हम बच्चों के प्रति भी बाबा मुरली में कितना बार ध्यान खिंचवाते रहते हैं।

ज्ञान अलग चीज़ है, योग अलग चीज़ है। ज्ञान का सिमरण करेंगे और योग में सब बातों को फुलस्टॉप लगायेंगे, सिमरण को भी फुलस्टॉप क्योंकि सिर्फ सिमरण से भी खुश नहीं होना है लेकिन शान्त और शीतल कहाँ तक बने हैं, इसको देखते हुए उसके प्रति पुरुषार्थ करना - यह भी योग है। राज्य अधिकारी बनने के लिए अपने में कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए। अगर वह नहीं है तो अन्दर रूहानियत की शक्ति जमा नहीं होती है। और बाबा कहता इसी शक्ति को जमा करो क्योंकि यह शक्ति हमको प्रेजेन्ट टाइम में तो चाहिए परन्तु आने वाले समय में भी हमको अपने लिए, चाहे सेवा अर्थ यह शक्ति चाहिए। बाकी साधन भी बहुत सेवा करते हैं तो साथी भी बहुत सेवा करते हैं। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जाने न पहचाने वह भी आत्मायें सेवा



में हाजिर हो जायेंगी। लेकिन हमारे लिए, अपने लिए, चाहे सेवा के लिए, चाहे बाप का प्यार खींचने के लिए, बाप के समीपता की जो कशिश है हमको तो पर्सनली वह चाहिए। तो हमारी पर्सनैलिटी में रूहानियत और रूहानी बाप द्वारा पाई हुई शक्ति प्रत्यक्ष रूप में बाबा को प्रत्यक्ष करे। पहले हमारे पास प्रत्यक्ष हो। वह फीलिंग – वरदान अथवा वर्से के रूप में हो। थोड़े समय के लिए न हो, जो कहे आज बड़ा अच्छा अनुभव हुआ, कल गुम हो जाए। लेकिन सदा जैसे वर्से के रूप में, वरदान के रूप में हो जाये। तो वह हम ध्यान रखेंगे तो ध्यान रखने से बहुत फायदा है। और जब ऐसी ध्यान देने वाली बात हमारे से मिस हुई तो फिर से ध्यान पर लाना टाइम लग जाता है।

जैसे इमरजेन्सी में आक्सीजन देते हैं और उसको एक मिनट भी हिलाने नहीं देते हैं। इसी आधार पर आत्मा जिन्दा है, उसको चलने दो, ताकि हो सकता है कि शायद उसको नई लाइफ मिल जाए। तो यह भी इतना ध्यान रखना है, इसमें हमको गफलत नहीं करनी है। हम ध्यान रखते हैं तो एक दो को भी वह वायुमण्डल में वायुब्रेशन मिलते हैं, वह भी अपना ध्यान रखना शुरू करते हैं। एक अलबेले होते हैं तो दूसरे भी, वह भी लहर फैलती है। दोनों प्रकार की लहर होती है। तो हम किसमें निमित्त हूँ? उस लहर में हूँ या इस लहर में हूँ? मेरा कान बाबा किसमें पकड़ेगा? तुम भी यह कर रहे हो? तो ऐसा बाबा कान न पकड़े जो धर्मराज के आगे हमें ऐसे कान पकड़ना पड़े। तो बाबा हमारे से क्या चाहते हैं, यह ध्यान रखने से हमारे सड़के अनेकों का भला होगा। ओम् शान्ति।



जीवन को श्रेष्ठ बनाना है तो श्रीमत को सिरमाथे पर रखो, मनमत-परमत के प्रभाव से मुक्त रहो

नुमःशाम के समय शान्त में बैठना बहुत अच्छा लगता है। सवेरे सुस्ती आ सकती है, शाम को खींच होती है। कार्य व्यवहार को समेटकर याद में बैठ जाओ। भक्ति में कहते हैं शाम के समय देवतायें सैर पर निकलते हैं इसलिए भगवान को याद करो। अभी हमारे पुरुषार्थ का लक्ष्य ही है 'लाइट' बनना। प्योरिटी लाइट बना देती है। फरिश्ते हल्के होते हैं। जब हमारी उपराम वृत्ति बहुतकाल से होगी तब ऐसे लाइट बनेंगे। कार्य करते हुए, सम्बन्ध में रहते हुए सेकेण्ड में न्यारा बनने की शक्ति, फिर परमात्म प्रेम की शक्ति खींचते हम फरिश्ते बने हैं।

भोलेनाथ बाप की याद में रहते-रहते हम भी भोले माना इनोसेन्ट, शुद्ध प्युअर ऐसे बन जाएं जैसे इनोसेन्ट बच्चा। इनोसेन्ट लवली और स्वीट लगते हैं। जिसमें जरा भी चंचलता नहीं होती है वह इनोसेन्ट होता है। तो बाबा हमको ऐसी समझ

देता है जिससे हम सयाने भी बने हैं, इनोसेन्ट भी बने हैं। जितने सयाने उतने इनोसेन्ट। जितने इनोसेन्ट उतने सयाने। ज्ञान की गहराई में जाते-जाते सार रूप में इसेन्स जो बुद्धि में आया है उससे हम सेन्ट जैसे बन गये हैं। बुद्धि में ज्ञान का मंथन करके स्पष्ट रूप से देखें तो सब बहुत अच्छा लगने लगता है। तो जब अन्तरमुखी हो करके अन्दर में ज्ञान मंथन करते हैं तब मन में कोई भी प्रकार का व्यर्थ ख्याल नहीं आ सकता। और सब बातों से फारिग हो करके अटेन्शन से, मंथन करने से मक्खन निकलेगा। तो शान्त हो करके बैठने से ज्ञान का मंथन भी चलता है, बुद्धि भी स्थिर



होती है और एकान्त भी बड़ी प्यारी लगती है। अन्तरमुखी होकर बैठने से सुख का अनुभव होता है। ज्ञान से शान्त स्वरूप भी बन गये हैं, तो ज्ञान से ही विचार सागर मंथन भी करते हैं। ज्ञान से ही बाबा से प्रेम खींचकर प्रेम स्वरूप हो गये हैं।

ज्ञान के मंथन ने और सब चिन्तन और चिन्ताओं से फ्री कर दिया है। कारोबार में होते हुए भी निश्चिन्त रहने का रस बैठ गया है। कईयों को फिकर करने की आदत होती है, काम थोड़ा फिक्र ज़्यादा। और जो गृहस्थी नेचर वाले होते हैं उसको तो चिन्तायें बहुत लगती हैं - कैसे होगा, क्या होगा... के संकल्प वाले कभी निश्चिन्त नहीं रह सकते हैं। ऐसी आत्मा निश्चय के बल का अनुभव नहीं करती है। निश्चय है किसमें? स्वयं में, बाप में। आत्मिक निश्चय बुद्धि से, आत्म-अभिमानि स्थिति से परमात्मा बाप को जिसने अपना बनाया है, सर्व सम्बन्ध उनसे जोड़े हैं तो आत्मा में शक्ति आ जाती है। फिर करन-करावनहार बाप ने श्रेष्ठ कर्मों की भी समझ दी है, जिससे बल जमा होता है। बाबा कहते - बच्चे, कर्म तो करना है लेकिन श्रेष्ठ कर्म करना है जिससे बल जमा होगा।

शान्त में बैठ योग के टाइम योग करना है, परन्तु जिस घड़ी कर्म करना है उस घड़ी यह ध्यान रखो कि यह कर्म पुण्य के खाते में जा रहे हैं? पाप तो कर नहीं सकते हैं, उनसे तो छूट गये। साधारण कर्म यानि जिस कर्म से अच्छा फल निकलने वाला नहीं है, वह कर्म नहीं करना है क्योंकि कर्म की समझ मिली है इसलिए व्यर्थ तो छोड़ो परन्तु साधारण कर्म भी नहीं करने हैं। अपने शरीर निर्वाह अर्थ भी जो कर्म करो, खाओ पियो तो भी मन पर उसका प्रभाव न पड़े। कर्म - इच्छा वश नहीं कर रहे हैं, यह चाहिए, यह चाहिए... यह ख्याल रखकर कर्म नहीं कर रहे हैं। जो आवश्यक है वह करना है। तो समझ ने कर्म की भी समझ दी है। इस शरीर को जो आवश्यक है उसके लिए तो करना ही है। यह शरीर भी जैसे एक मन्दिर है, भगवान का घर है यह। भगवान को याद करने के लिए इस मन्दिर को हमें साफ रखना है। जैसे अच्छा पुजारी वह जो मन्दिर को बहुत अच्छी तरह से साफ रखे, वैसे हमारा यह मन, यह दिल बहुत साफ रहे - इतना ध्यान रखना है क्योंकि वह पुजारी हमारी मूर्ति को इतनी अच्छी तरह से और भावना से सम्भालता है। तो हमको पूजयनीय बनने के



लिए इतनी प्युरिटी धारण करनी है।

जब पुजारी थे तो विकार भी थे अभी पूजयनीय बनने वाले हैं तो निर्विकारी बनना पड़ेगा। पहले तो यह पाँच तत्त्वों वाला शरीर तमोप्रधान था, अभी ऐसा सात्विक आहार-विहार दे करके, अच्छे वायुमण्डल में रख करके इस शरीर को भी सतोप्रधान बनाना है। नींद को भी सतोगुणी बनाना है क्योंकि पहले हमारी नींद भी तमोगुणी थी, नींद के वश थे, तो अभी हम योगियों को निद्राजीत बनना है। योगी के लिए ऐसा कभी नहीं कहते हैं कि यह सोया हुआ है। हाँ, ऐसा कहेंगे कि विश्राम में है। यह खा रहा है, नहीं, भोजन स्वीकार कर रहे हैं। तो ज्ञान से बोल-चाल में फ़र्क पड़ता है।

मन-बुद्धि को इधर उधर व्यर्थ बातों में घड़ी-घड़ी भटकाने में व्यस्त न हो जायें। अगर बुद्धि यहाँ-वहाँ भटक रही है तो माया अच्छा सोचने में भी इन्टरफेयर करेगी। बुद्धि को शुद्ध बनने नहीं देगी। अच्छी ऊँची क्वालिटी वाले संकल्प सोचने नहीं देगी। तो कर्म करते मन-बुद्धि को सम्भालना है। कई समझते हैं - हम बहुत बिजी होने कारण थके हुए हैं, परन्तु देखा जाए तो हम न इतने बिजी हैं, न ही थके हैं। लेकिन हमको अपने खज़ानों को सफल कैसे करना है, इसका सहज तरीका निकाल करके अपनी कमाई जमा करनी है तो थकान नहीं होगी और स्थाई खुशी भी बनी रहेगी। बिजी रहने वाला, कभी खुश नहीं होता क्योंकि उसको मजबूरी से भी काम करना पड़ता है। जैसे हम योग मजबूरी से लगा रहे हैं या सेवा मजबूरी से कर रहे हैं? नहीं। सच्ची दिल से कर रहे हैं, खुशी से कर रहे हैं, कमाई समझ कर कर रहे हैं। भगवान के यज्ञ का खा रहे हैं और भगवान के यज्ञ की सेवा कर रहे हैं क्योंकि स्वयं भगवान ने यज्ञ रचा है। उस यज्ञ में इन हाथों से या इन पाँवों से जो भी कुछ कर रहे हैं, यज्ञ की सेवा कर रहे हैं। तो इस यज्ञ सेवा का फल भगवान ब्राह्मणों को देते हैं क्योंकि ऐसी सेवा ब्राह्मण ही कर सकते हैं।

तो हम ईश्वर के बालक हैं, उसने हमें कमाई करने की अच्छी बुद्धि दी है। भगवान के बच्चों की बुद्धि तो भगवान जैसी ही होगी ना। तो इतनी कमाई कर लो जो 21 पीढ़ी तुम सुखी रहो और जब तुम सतयुग में आओ तो तुम्हारे राज्य में सब सुखी रहें क्योंकि सतयुग में तो तुम्हारा ही राज्य होगा। हम आजकल के राजनेताओं



की तरह से नहीं हैं - कहें कुछ और करें कुछ। हम राज्य करने वालों की करनी ऐसी है, जो हरेक कहे कि अभी सृष्टि पर इनका राज्य होना चाहिए। जिसमें सत् धर्म की शक्ति हो और राज्य कारोबार में भी सत्यता हो। वह फिर रिहर्सल कर रहे है। सतयुग में जो आने वाले हैं वह अभी यहाँ पढ़ रहे हैं। इस पढ़ाई से वहाँ कैसे हम राज्य करेंगे तो उसके लिए पहले पढ़ाई चाहिए।

राज्य करने के लिए वहाँ जा करके नहीं पढ़ेंगे। यहाँ वह गुण भी धारण कर रहे हैं परन्तु गुण धारण तभी होते हैं जब पहले अन्दर सच्चाई हो। सतोगुणी वृत्ति हो। सतोगुणी वृत्ति माना सबके गुण, विशेषता देखने की दृष्टि हो तो उससे हमारी बुद्धि भी सतोगुणी हो जायेगी। मन शान्त हो जायेगा। जब चाहें तो आवश्यक संकल्प आये, नहीं तो मन शान्त में रहना पसन्द करता है। अगर हमारा मन थोड़ा रेस्टलेस (बेआरामी) में है तो वायुमण्डल भी ऐसा ही हो जायेगा। हमारे मन की शान्ति दूसरे को भी अभी थोड़ा-थोड़ा तो हेल्प कर रही है। तो बुद्धि अच्छी तरह से गुण उठाते-उठाते, गुणवान बन करके गुणदान करने से समय पर अच्छा काम कर लेती है। बुद्धि क्या सोचती है - गुणवान बनूँ, गुणदान करूँ, सबके गुण देखूँ, बुद्धि बड़ी सूक्ष्म हो गई। अभी मोटी बुद्धि नहीं है। अपने को ऊपर-ऊपर से नहीं देखते हैं, न दूसरों को देखते हैं। सूक्ष्म में ही बड़ी स्वच्छता होती है।

गीता में तो भगवान के इस ज्ञान को गुह्य, गोपनीय और रहस्ययुक्त कहा गया है। यह ज्ञान गोप-गोपियों की परमात्मा से लगन जोड़ने वाला है। परन्तु बड़ा रहस्ययुक्त है, यानि डीप नॉलेज है। तो जिस ईश्वर बाप से यह हमको ज्ञान मिला है तो बुद्धि भी गुह्य, गोपनीय, रहस्ययुक्त सोचने वाली हो क्योंकि हमको फरिश्ता बनना है। और यह भी लगता है कि हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा ? बाबा तो इतनी ऊँची बड़ी-बड़ी बातें सुनाते रहते हैं, अच्छी भी लगती हैं परन्तु क्वेश्चन उठता है कि यह बन सकेंगे ? यह कर सकेंगे ? यह सोचने की बात है। सोचने से यह निकला कि कोई तो बनेंगे। तो मैं ही क्यों न बनूँ! बाप जो इतना ज्ञान दे रहा है, टीचर जो पढ़ाता है तो उसमें पास विद ऑनर होने वाले भी होंगे ही ना। कोई कहे कि तुम तो लायक ही नहीं हो इसलिए तुम तो यह बन नहीं सकते हो। तो आप उसको शान्त हो करके



बोलो कि मैं बनके दिखाऊँगी। भले आज के पुरुषार्थ अनुसार सब कहें कि तुम वह क्वालिटी लगती नहीं हो, परन्तु बाबा मैं अवश्य बनूँ, बाबा कहेगा हाँ, आओ बच्ची मैं तुमको बनाऊँगा। सभी को आश्चर्य लगे, आ करके आपसे पूछें कि क्या तुमने किया जो नालायक से लायक बन गये हो।

भगवान क्या नहीं कर सकता ? बच्चे किसके हैं ? तो जो चाहें सो कर सकते हैं, परन्तु हम फिर उस करन-करावनहार के हाथ में आ जायें। अपनी मनमत न चलायें, परमत के प्रभाव में न रहें। श्रीमत को सिर माथे पर रखें, यह एक ही तरीका है। तो सच्चा, गुप्त और लगातार तीव्र पुरुषार्थी अपने पुरुषार्थ को कन्टीन्यु रखेगा। कभी पुरुषार्थ बड़ा अच्छा और तेज, कभी ढीला ऐसा वह कभी नहीं करेगा क्योंकि उसने बाबा से मिली हुई समझ से मनमत, परमत के प्रभाव से अपने को मुक्त किया है। श्रीमत क्या कहती है, वह अटेन्शन में रखा है। श्रीमत ही मेरी जीवन बनाने के लिए एक बड़ी भारी खुराक भी है तो दवाई भी है। पुरुषार्थ में अगर श्रीमत का आधार पकड़ लिया तो श्रीमत अन्धे को राह दिखाने वाली लाठी भी है और श्रीमत अन्धे को आँख देने वाली है, औरों को भी रास्ता बताने वाली है। तीन काम एक धक से होते हैं जैसे अन्धे को लाठी मिल गई, रास्ता देख लिया और रोशनी वाला नेत्र भी मिल गया। और दूसरे को भी इतने में रास्ता बताना शुरू कर दिया।

तो जैसा हमारा बाबा है ऐसा हम बच्चों को करना है बस। परन्तु नक्ल करने का भी अक्ल चाहिए। तो जिसकी बुद्धि में यह बात आयी कि मुझे बाप जैसा करना है। जैसे बाप करता है, जैसे बाप बोलता है, जैसे बाबा का चेहरा है, जैसे बाबा के नयनों (दृष्टि) में सबके लिए प्यार है। कैसी भी आत्मा बाबा के सामने आती है उसको अपना प्यार दे करके अपने जैसा बनाता है। तो उसका भी जी चाहता है कि बाबा को देखता ही रहूँ, बाबा कितना दया, रहम से प्यार करता है क्योंकि वह प्यार अन्दर पिघलाता है, सफाई करता है। बाबा का प्यार अच्छाई और बुराई को समझने की बुद्धि देता है। बुराई को निकालने का जी चाहता है, अच्छाई को अपनाने का जी चाहता है, यह बाबा का प्यार है।

प्यार में शिक्षा भी है तो बुद्धि क्लीयर हो जाती है। फिर कोई भी प्रॉबलम खत्म



हो जाती है। आने वाली प्रॉब्लम भी हमारे सामने आयेगी नहीं क्योंकि परे रहने का अक्ल आ गया। यह यहाँ है, मैं यहाँ हूँ, नजदीक आवे तो सही क्योंकि हम उस सर्वशक्तिवान के साथ में हैं। तो जितनी बाबा हमको समझ देता है उतनी समझ को साथी बनाना है। भगवान का साथी बनना माना उसने जो समझ दी है, उस समझ को हर कदम में, हर संकल्प में, वचन में यूँज करना। तो भाग्यवान वो जो भाग्य विधाता द्वारा मिली हुई समझ से अपना भाग्य बनाये और औरों को भाग्य बनाने में मदद करे। तो यह भी कोई पूछे तुम्हारा काम क्या है, कुछ काम नहीं है। सिर्फ भाग्य मैं बनाऊँ और औरों का भाग्य बनें। बस। मैं तो भाग्यवान हूँ और ही भाग्य बनता चले, बनता चलें और जो संग में आये वह भी मालामाल हो जाये। मन-वचन-कर्म से श्रेष्ठ भाग्य बना लेवे। बस। बड़ी बात नहीं है क्योंकि मन-वचन-कर्म श्रेष्ठ होगा तो क्या होगा? भाग्यवान बनेंगे। इससे ही हमारा भाग्य ऊँचा बनेगा तो हम यह नहीं कहेंगे कि हमारे पास समय नहीं है, हमारे पास तो पैसा नहीं है। शरीर ठीक नहीं है। भाग्य बनाने में पैसा क्या करेगा? भाग्यवान सिर्फ मन में श्रेष्ठ संकल्प ही रखता है, वह उसका भाग्य है। जिसका मन श्रेष्ठ संकल्प में रहता है, वह भाग्यवान है। जिसका साधारण संकल्प है, उसका कम भाग्य है। जिसका निगेटिव संकल्प है वह भाग्यहीन है।

भागीरथ के मस्तक से गंगा निकल आयी माना उसने मस्तक को देखा वहाँ बैठी, अनेकों को पावन बनाया। तो हमारी वाणी ऐसी हो जैसे गंगा बहती है। कर्म ऐसे हों जो अनेकों को बल मिले तो भाग्य है ना। तो क्या मेहनत है! कुछ नहीं है। सिर्फ वाणी, कर्म हमारा श्रेष्ठ हो फिर तो आज ही और अभी-अभी फरिश्तेपन का अनुभव करेंगे। श्रेष्ठ मन-वाणी-कर्म हमको बहुत हल्का बनाता है। जी चाहता है हम अन्दर ही अन्दर खुशी में नाचते रहें। ऐसी हमारी खुशी को देख दूसरे के दुःख दूर हो जायें और वह भी खुश हो जायें। ऊपर-ऊपर की खुशी न हो, अन्दर की खुशी हो। अन्दर किसी का भी कोई पेन हो तो वह भी हर जाए और मुस्कराना शुरु कर दे, इतनी हमारे पास खुशी हो। दुःखहर्ता बाप के याद की और सत् कर्म की खुशी - यह दोनों खुशी सबके अन्दर के दुःख दूर करके सुख देने वाली है।

मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ शीतल और बुद्धि की यादास्त शक्तिशाली, वायुमण्डल



अच्छा फैलाने वाली, यही हमारी पढ़ाई, यही हमारी लाइफ है। पढ़ाई का एक शब्द भी याद करो तो पढ़ाने वाले से योग आपेही लग जाता है। वहाँ पढ़ाने वाले से योग लग जाए तो खराब मानेंगे, यहाँ पढ़ाने वाले बाप से योग लग जाए तो अच्छा मानेंगे। तो अभी-अभी पढ़ाई, अभी-अभी प्रालब्ध माना प्रत्यक्षफल फरिश्ता, बिल्कुल क्लीयर व्हाइट लाइट। तो स्वप्न और संकल्प भी ऐसे आयेंगे जिससे लगेगा कि हम फरिश्ता बन ऐसे-ऐसे उड़ रहे हैं। प्लेन बुद्धि से बैठे हैं। जैसे प्लेन में बैठेंगे तब तो उड़ेंगे ना। भले सेवा के प्लान बनाओ परन्तु बाबा कहते बुद्धि को प्लेन रखो। प्लेन बुद्धि नहीं है तो जो भी प्लान बनायेंगे उसको प्रैक्टिकल लाने में सक्सेस नहीं होंगे। प्लेन बुद्धि प्लान को प्रैक्टिकल करा देती है और सबके स्नेह के सहयोग से हो जाता है। इसमें सिर्फ हम अपने दिल को सच्चा रख साहेब को साथी बनाकर रखें तो सब काम सहज स्वतः ही होते रहते हैं। तो बाबा हमको ऐसे सहज राजयोगी बना रहा है।



पवित्रता और सत्यता के आधार से स्वयं को स्वच्छ साफ़ बनाओ तो विजय माला में आ जायेंगे

बाबा कहते यह पढ़ाई जितनी ऊँची है उतनी सहज है। पढ़ाई अनुसार हर एक महसूस कर सकते हैं कि हमारा नम्बर कितना आगे जा रहा है। अच्छे नम्बर से पास होने की इच्छा है तो पढ़ाई पर ध्यान हो। जैसे बाबा ने कहा लक्ष्य को सामने रखो तो लक्षण आयेगे। लक्ष्य है लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना माना सूरत मनुष्य की सीरत सम्पूर्णता में आने की हो। इसके पहले हर बात में सम्पन्नता हो। सम्पन्नता भी तभी आयेगी जब पहले सम्पूर्ण निर्विकारी हो। वैजयन्ती माला में आने में थोड़ी मेहनत है, 16 हज़ार में आने वाले हार-जीत का खेल ज्यादा खेलते हैं। वैजयन्ती माला में आने वालों को यह अन्दर से निश्चय है कि हमारी विजय हुई पड़ी है। 9 लाख में आने वालों का तो एक पाँव अन्दर एक पाँव बाहर। सहयोगी रहना, सम्पर्क में रहना.. यह करना वह

करना जितना हो सकता है उतना करना। यह सतयुगी प्रजा में आने वालों का पुरुषार्थ है।

16 हज़ार वाले चाहते हैं वारिस बनें। 9 लाख वाले वारिस बनने की हिम्मत नहीं रखते हैं। वारिस बनाओ माना काँटों को फूल बनाओ, जो फूल होगा वही वारिस बनेगा। जिसको थोड़ा काँटा चुभता होगा या काँटा किसी को लगाता होगा, क्या वह वारिस बनेगा ? तो 16 हज़ार में आने वाले फूल तो होंगे। उनको काँटा न लगेगा, न किसी को लगायेंगे। इतना तो काम करेंगे तब तो बाबा से वर्सा लेने के पहले पात्र



बनें फिर अधिकारी बनें हैं। 16 हजार की माला सिमरी जाती है, उनके भी ध्यान में है हमको वर्सा लेना है वारिस बनना है, वह सोचकर बनते हैं लेकिन 108 वाले बिल्कुल सोचते नहीं हैं। सेकेण्ड में स्वाहा, उनको एक सेकेण्ड लगता है तब तो वह माला अच्छी सिमरी जाती है। तो वारिस बनाने के पहले यह सोचे कि हम कैसे वारिस बनें ? पहले सम्पूर्ण निर्विकारीपन की शक्ति से बाबा से यह वर्सा ले लो। पहले अपने को देखो, मैं वारिस हूँ ? निर्विकारी माना विकार निल हों। नाम-मात्र भी न हो क्योंकि विकार दुःख देता है। कोई भी विकार वश है - काम वश, क्रोध वश, लोभ वश, मोह वश, अहंकार वश तो दुःख देते हैं या अभिमान है तो दुःख ले लेते हैं। अपमान की फीलिंग भी दुःख देती है। कभी भी कहाँ भी अपमान हुआ होगा तो कहेंगे कि वह पुरानी सीन हमें भूलती नहीं है इसलिए क्या करें ? और यह पढ़ाई कहती है कि पहले वाली सब बातें भूल जाओ क्योंकि इस पढ़ाई में बुद्धि बड़ी साफ और सतोगुणी चाहिए, तभी यह पढ़ाई बुद्धि में बैठेगी। अगर बार-बार कोई बात याद आयी तो पढ़ाई भूल जायेंगे, दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते हैं। बाबा की बातों का सिमरण करने से रूहानी शक्ति बनती है और पुरानी बातों का सिमरण करने से कमजोर बनते हैं। वह कमजोरी हमको मीठा बनने में, बाबा के मधुर बोल को सिमरण करने में विघ्न रूप बन जाती है।

अभी हम सच्चे सयाने गम्भीर बनें। अभी हमारा बचपना, जवानी का समय पूरा हो गया। ज्ञान में पहले बचपना था इसलिए जल्दी अपसेट होते थे। जवानी में थोड़ा सा 'तू' 'मैं', 'ईर्ष्या' 'द्वेष' पैदा हो गया था। व्यर्थ चिन्तन चलने की चाबी लग जाती थी तो उसी व्यर्थ चिन्तन में नाचते रहते थे। लेकिन अभी तो बाबा के बड़े बच्चे बने हैं, छोटे नहीं हैं इसलिए अभी हमें तो आत्म-अभिमानि होकर, गम्भीर होकर रहना है। शान्त चित्त रहने का स्वभाव बनाना है। ऐसे अपने से प्यार से बात करके कितनी भी हलचल हो परन्तु अपने को उसमें हिलने नहीं दो। अपनी पर्सनैलिटी पर एक बार किसी भी प्रकार का दाग आया तो वह मिटाना फिर मुश्किल है। जो सयाने बुजुर्ग होते हैं और जो सच्चे होते हैं उसके अन्दर शक्ति होती है अचल-अडोल रहने की, हिलाने वाली बातें आयेंगी लेकिन अन्दर सयाना है तो समझ जाता है कि यह थोड़ी



हिलाने के लिए आयी है लेकिन बाबा की मदद है तो कोई बात नहीं है। बाबा का हम पर इतना नाज़ है कि यही बच्चे विजयी बनने वाले हैं। इसलिए कोई भी बात सामने हो भी रही है तो उसका इफेक्ट हमारी एक्ट में नहीं आयेगा इसलिए रिएक्ट से बच जाते हैं क्योंकि सयाना रिएक्ट नहीं करता है। जब तक सयानप की कमी है तो फौरन रिएक्ट करेगा। रिएक्ट करने वाला भी माला में आ नहीं सकता।

बाबा ने चुन-चुन करके मणके तो बहुत सारे इक्ठे कर लिये हैं परन्तु माला में पिरोने के लिए बाबा देखता है, यह आ सकता है? भले अपने को कितना भी अच्छा समझता हो परन्तु माला के नज़दीक तो आये। भले कई गुण और कई विशेषतायें भी हो, परन्तु विजयी बनाने वाली है – ‘सत्यता’। सत्यता भी पीछे आयेगी पहले पवित्रता। जहाँ पवित्रता की कमी है - वहाँ सुख शान्ति बिचारी ठहर नहीं सकती है। हमारा स्वधर्म शान्त है परन्तु इसका अनुभव थोड़े समय के लिए होगा, परन्तु सदा शान्त स्वरूप स्थिति हो, वास्तविक रूप हमारा यह है, उसमें स्थित रहना, जब तक सम्पूर्ण पवित्रता नहीं तब तक सदा उस स्वरूप में स्थित रहना पॉसीबुल नहीं है और रीयली आत्मा जो शान्त स्वरूप है, उस शान्ति में रूहानियत का प्रेम है। जरा-सा मिक्सचर प्रेम है तो भी शान्ति नहीं है। जिस्मानी प्रेम की जरासी भूख है तो वह शान्ति नहीं होगी। कहाँ से हमें स्नेह नहीं मिलता है, उसका दुःख है तो शान्ति नहीं है। कहाँ से कोई हमें इज्जत नहीं देता है तो शान्ति नहीं है। सच्चाई में जो शान्ति है, वह सच्ची शान्ति है, जहाँ ज़रा-सा मिथ्या है, झूठ है वहाँ शान्ति नहीं है। सेवा में सच्चाई नहीं है तो शान्ति नहीं है।

हम साथी सहयोगी हैं उसके बीच में भी हमारी सच्चाई और निःस्वार्थ भाव नहीं है तो शान्ति नहीं है। एक दो के सम्पर्क में आते, संगठन में रहते सहयोगी और योगी बनकर रहने का भाग्य कम न हो। वैरायटी संस्कार-स्वभाव से न डिस्टर्ब हो और न डिस्टर्ब करें। हमारी सेवा है शान्ति फैलाना। तो पहले हमारे पास सम्पूर्ण शान्ति हो। लेकिन शान्ति को घर वहाँ मिलेगा जहाँ पवित्रता होगी। अपवित्रता ने यहाँ से शान्ति को भगा लिया। हमने दुःख-अशान्ति को लिया है रावण के फोर्स या दबाव से। जो किसी भी प्रकार के दबाव में होता है वह बिचारा शान्त नहीं रह सकता है। यह कह



भी नहीं सकता है कि हम अशान्त है। कहेगा तो और दबाव बढ़ेगा। तो रावण माया को भगाने के लिए अन्दर में बहुत ताकत चाहिए। किसने हमको दबाया, किसने हमारी सुख-शान्ति को गँवाया, यह रियलाइजेशन हो तब कांटे से फूल बन सकेंगे। तो पहले देखो कि हमारी सेवाओं से किसी आत्मा को पूरा सुख मिला है! उसके अन्दर से दुआयें निकलती हैं! बड़ा गम्भीरता से, सयानप से अपने को भी सम्भालना है, सेवा में भी निमित्त बन करके निर्मान रहें।

अपने आपको देखें कि हमारी आंख कहीं डूबती तो नहीं है? हम निर्मोही हैं? जरा सा लोभ यानि आसक्ति, इच्छा रॉयल बनने नहीं देगी। किसी भी प्रकार की इच्छा हमको विजयी बनने में मदद नहीं करेगी। इसलिए शुरू शुरू के पुरुषार्थ में बाबा यह बहुत ध्यान खिंचवाता था कि – बच्चे, अनासक्त वृत्ति को धारण करो, कोई आसक्ति नहीं। और मोह बाप का बनने नहीं देता है, जिसमें मोह होगा - लौकिक हो पारलौकिक हो, इतना भी लगाव होगा तो वह लगाव भी बाबा के याद की लगन में मगन होने नहीं देगा। कितनी भी कोई मेहनत करे, लेकिन लगाव वैरी है। अनासक्त वृत्ति रॉयल बनायेगी। तो न व्यक्ति में मोह हो, न वैभव में लोभ हो। जब यह दो मरें तब निरहकारी बनें। कोई भी आत्मा हमको खींचती है तो ईश्वर की खींच हो नहीं सकती है। है अकेला परन्तु बड़ा विचित्र है, वन्डरफुल है। वह कहेगा मुझ एक को जब याद करना है तो कोई को मेरे सामने नहीं ला सकते हो, तुम भी अकेला बनकर यानि देह को भूलकर आओ। मेरे पास आते हो, मेरी याद में रहते हो तो देह, देह के सम्बन्ध सबको भूलो तब मेरी याद रहेगी। कितना कंडीशन बड़ा है। पढ़ाई माना पुरानी सब बातें भूल जाएं, तब पढ़ाई में पास होंगे। न हम किसी को याद आये, न मेरे को किसी की याद आये।

पतित-पावन बाप के संग में आ करके हम लोहे जैसे भी बदल करके सोना बनते हैं। बाबा ने कहा है मैं आया ही हूँ लोहे को सोना बनाने। बाबा अन्दर ही अन्दर अपने संग से ऐसा रंग चढ़ाता है जो हम बदलते हैं तो अन्दर से बुद्धियोग लगाना माना बाप के संग का रंग लग जाना। सम्पूर्ण निर्विकारी बन जाना। काम, क्रोध यह मोटे विकार हैं। काम जो दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनने नहीं देगा। उसकी वृत्ति अन्दर



से बड़ी चंचल और अशुद्ध यानि आसुरी होगी। फिर है क्रोध जो शीतल होने नहीं देगा, कितना भी ज्ञानामृत के छींटे डालते रहे तो भी बाबा कहते यह तो तपता तवा है। जैसे गरम तवे पर पानी डालो तो एक सेकेण्ड में सूक जाता है। परन्तु जिसने काम-क्रोध को मारा तो काम को मारने से क्रोध भी गया, वह चिन्ह दिखाई पडते हैं। फिर ज्ञान अच्छा लगने लगेगा, पुरुषार्थ करना भी अच्छा लगेगा। फिर परीक्षा आयेगी लोभ की, खान-पान की। खाना और पहनना उसमें चाहिए अनासक्त, तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ, जो बाबा आप खिलाओ उसमें बहुत सन्तुष्टी हो।

बाबा कहते थे जब कर्मैन्द्रियाँ वश में होगी तब बीमारियाँ जायेंगी। यह बीमारियाँ भी तभी आती है जब कर्मैन्द्रियाँ वश में नहीं है। तो कर्मैन्द्रियाँ हमारी वश में रहें। जिसको माला में आना है वह ध्यान रखते हैं कि मन हमारा इच्छा और ममता के वश में न हो। इच्छा और ममता होगी तो वह भी योगी बनने नहीं देगी। अन्दर से अपने आपको देखने नहीं देगी क्योंकि आंख वहाँ चीज़ों में जा रही है तो अन्तरर्मुखी कैसे बनेंगे ? तो जब तक अन्तरर्मुखी नहीं बने हैं तो योगी बन नहीं सकते। योगी माना ऐसे एकाग्रचित्त हो सकें, शान्तचित्त हो सके। क्योंकि हमें तो योग द्वारा बाबा से शक्तियाँ लेना है, बापसमान बनना है। अगर अभी ऐसा शान्त और शीतल रहने की आदत नहीं बनायेंगे तो फिर आगे चल करके क्या होगा ? तो जिसने काम, क्रोध को मारा फिर लोभ पर बहुत अटेन्शन। फिर लगाव तो कहाँ नहीं है, मोह भी हैरान करेगा। बाबा का बनने नहीं देगा। लगाव फिर ऐसी चीज़ है जो एक से छूटेगा दूसरे में जायेगा। एक से धोखा मिला है तो दूसरा ढूँढेगा या दूसरा उसके पास आ जायेगा फिर तीसरा आयेगा, क्या है उन्हों की। जिसको लगाव में रहने की आदत है, वह ऐसे ही धक्का खाते रहेंगे। मज़ाल है लगाव से मुक्त हो सके क्योंकि लगाव में रहने की आदत है। तो लगाव इतनी खराब चीज़ है जो 16 हज़ार में भी आने नहीं देगा। यह पढ़ाई है बहुत ऊँची, यहाँ कोई भक्ति या भावना की बात नहीं है। तकदीर बनाने वाला तकदीर तुम्हारे हाथों में दे रहा है, जिसके दिमाग में बैठता है वह अपनी ऐसी तकदीर बनाता है। दिमाग से पूछें इनसे कितना नुकसान है। फिर अहंकार मरेगा। निर्लोभी, निर्मोही फिर उसमें अहंकार की अंश भी नहीं होगी। अहंकार कोई एक धक से थोड़ेही



मरता है, टाइम लगता है लेकिन इसे भी मार, क्योंकि स्वच्छ सच्चा बनने से ही सुख-शान्ति-पवित्रता में सम्पन्न बनेंगे। यह बड़ी सम्पत्ति है। वह सम्पत्ति हमको रीयल और रॉयल बनाती है क्योंकि पता है कि यह खज़ाना बाबा से लेना है। तो ज्ञान बल और योग बल से अपने को और बातों से मुक्त करके लगावमुक्त बनें भी और सदा रहें भी।

तो अपने आपको इन कड़े बन्धनों से छुड़ाने का बाबा ने यह मधुबन का स्थान बहुत अच्छा बनाया है। यहाँ वायुमण्डल ऐसा मिलता है, शक्ति ऐसी मिलती है। तो बाबा ने हमारे ऊपर इतनी कृपा की है, हम अपने ऊपर कृपा करके यह महसूस करें। तो अपने आपको समझें और यह पक्का करें कि हमें चेन्ज होना है। तो अपने को समझने, खुद को सच्चा स्वच्छ बनाने की धुन लगी रहे। बाप हमारा सत्य है, टीचर हमारा सत्य है, सद्गुरु मेरा सत्य है, वह धर्मराज है, वह हमारी बुद्धि को कहता है तुम सत धर्म में रहो तो राज्य के अधिकारी बनेंगे। धर्म तुम्हारा सत्य है तो सतयुगी राज्य के अधिकारी बनेंगे। तो सत्यता ही हमारा धर्म है, उसमें शक्ति आती है। यह अभ्यास नहीं किया है तो वह लंगड़े पुरुषार्थी हैं। जो अभ्यास अच्छा नहीं करता है वह लंगड़ा है। जिसने मन-कर्मेन्द्रियों को नहीं जीता है वह लंगड़ा है, चल रहा है कोई बात चला रही है। किसी बहाने से चल रहा है परन्तु अपने आप अन्दर से जम्प लगाकर चले, उड़ने की कला आ जाये वह नहीं होगा।

सेवा में सफलता मिली उसमें खुश होना माना अपने को ठगना। सेवा तो औरों की हुई, भगवान ने कराई, अनेकों के सहयोग से हुई। हमने नहीं की, बाबा ने कराई। वह आत्मा भाग्यशाली थी जिसको बाबा के पास आना था, निमित्त कारण बना। हमने क्या किया? कुछ नहीं किया। कारण बना हुआ था, स्थान तैयार था, प्यास में भटकती हुई आत्माओं को आना ही था बाबा के पास। उसको रास्ते चलते कोई ना कोई तरीके से इशारा मिला, फिर उसमें भी जिसने जो पुरुषार्थ किया, हमने कुछ नहीं किया है उसके लिए। हमने किसको आप समान नहीं बनाया है। हमें तो अपना ध्यान रखना है। हमें बाबा जैसा सिखा रहा है, बाबा को मुझे रिटर्न देने के लिए एक सबूत बनकर रहना है। बस और कुछ नहीं है। एजेण्ट सिर्फ बताता है यह माल बड़ा अच्छा है,



आप ले लेंगे तो अच्छा है। सौदा तो वह उनसे करेगा। हम सिर्फ दिखायेंगे कि माल देखो कैसा है। तो बाबा कहता है - कि बाबा की दुकान का अच्छा सेल्समेन बनो। हट्टी एक ही है, तुम्हें सिर्फ एड्रेस देना है।

तो योग में बैठकर अपनी अन्दर की स्थिति को अच्छा बनाकर रखो फिर सामने जो आये मुस्कराते हुए चेहरे से उसको अन्दर से अच्छे वायब्रेशन से कम्पनी दो - यह भी मुख्य सेवा है। परन्तु खुद को पहले अच्छा सम्भालो। अच्छा - ओम् शान्ति।



अव्यभिचारी याद की शक्ति समस्या मुक्त बना देती है

बाबा का बनते ही सफलता हमारा अधिकार है, ऐसी स्मृति में रहने का नैचुरल स्वभाव-संस्कार बन जाये, तो विजय हमारी जन्म से ही हो जाती है। इसलिए हम तो देखते हैं कि जब से बाबा के बने हैं “वाह बाबा, वाह! वाह ड्रामा वाह! वाह रे मैं!” क्योंकि ‘मैं’ का अभिमान चला गया। फिर वाह हमारा भाग्य! जन्म से ही सफलता हमारा साथ देती आ रही है। बाबा ने सफलता को हमारी सखी बना दिया है और वह सखी बाप के स्नेह के डोरी को मजबूत रख करके वैजयन्ति माला का मणका बना रही है। फिर 9 रत्नों का भी बहुत गायन है, उनको यानि अष्ट रत्नों में आने वालों को अपना इष्ट देव मानेंगे। वैजयन्ति माला में आने वालों को कोई अन्दर से इष्ट नहीं मानेंगे। अष्ट रत्नों में आने वालों को दिल से अपना इष्ट स्वीकार करेंगे क्योंकि वह बहुतकाल से बाप के बहुत समीप रहे हैं, आदि से समीप रहे हैं। 108 वाले थोड़ा मेहनत करके विजयी बने हैं। उन्हें निश्चय ने विजयी बना दिया परन्तु 8 में आने वालों को यह तकलीफ नहीं लेनी पड़ी है। विजय उन्हें जैसेकि आदि से ही जन्म-सिद्ध

अधिकार के रूप में प्राप्त है।

तो निश्चय के बल से पहले स्वयं पर विजय पानी है। मन और कर्मेन्द्रियों का राजा बनना है। मन कभी पुराने संस्कारों वश अपना फोर्स नहीं चला सकता है। कर्मेन्द्रियाँ बिना आर्डर के नहीं चल सकती हैं। मन कभी फोर्स चलाता है तो कर्मेन्द्रियाँ उसके वश हो जाती हैं। वैजयन्ति माला में आने वाला यह ध्यान रखता है और वह खबरदार, होशियार, सावधान रहता है क्योंकि उन्हें अपना लक्ष्य सामने है कि हमें विजयी बनना है। तो खबरदार वह रहते हैं जो होशियार एलर्ट रहते हैं। जब जानते



हैं कि मंजिल ऊंची है तो सावधानी से सीढ़ी से चलना है। सावधान रहना माना इधर-उधर नहीं देखना। परचिन्तन करना माना इधर उधर देखना। जरा सा परचिन्तन है तो जैसेकि बुद्धि डल है और जो होशियार स्टूडेंट होगा वह परचिन्तन नहीं करेगा।

सहनशीलता की शक्ति, समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति यह तो बड़ी बात नहीं, यह तो पहले है। कोई कहे कि सहनशक्ति चाहिए तो समझो कि वह अभी तक माला में आने की तैयारी कर रहा है। मणके में सहनशीलता भी न हो तो उसको मणका माना नहीं जायेगा। उसमें समाने और समेटने की शक्ति न हो तो उस मणके की क्वालिटी नहीं माना जायेगा। वैजयन्ति माला में आने वालों के बोल में - कभी यह चाहिए, कभी वह चाहिए, यह होना चाहिए, यह करना चाहिए... ऐसे शब्द नहीं होंगे। जिन्हों में गुण और शक्तियाँ होंगे उन्हों का सिमरण करेंगे। तो निमित्त बने हुए को यह एक स्लोगन याद रखना चाहिए - “जैसा कर्म हम करेंगे, हमको देख और करेंगे।” जैसा हम सोचेंगे ऐसे ही वायब्रेशन औरों को जायेंगे। निमित्त बनने वालों को यह एक अच्छा बन्धन हो गया। ऐसे बन्धनमुक्त ही निमित्त बनते हैं परन्तु और बन्धन आया है जो पहले अनेक और बन्धनों से अपने को निर्बन्धन बना दिया, इसलिए अब कोई हमें दुनियावी बन्धन नहीं खींचता, इस प्रकार जिसे अपना शरीर और सम्बन्धों का भी बन्धन नहीं खींचता उसको बाबा निमित्त बनाता है। फिर निमित्त बने हुए को क्या बन्धन आया? अपने संकल्प, वाणी तथा कर्म को अच्छी तरह से चेक करो। खुद समझदार बन करके ऐसे करो जो आपको देखकर आटोमेटिक और करें क्योंकि निमित्त बने हुए हो।

बाबा ने तो कहा निराकारी स्थिति में रहना है लेकिन निराकारी स्थिति तब बनेगी जब निर्विकारी होंगे। निराकारी और निर्विकारी दोनों का आपस में बहुत गहरा कनेक्शन है। जरा सा भी कोई विकार की अन्दर से अंश है तो निराकारी बॉडीलेस स्थिति अर्थात् विदेही स्थिति बन नहीं सकती। निर्विकारी बनने से निराकारी स्थिति अच्छी बनती है, दोनों का मेल है। निराकारी और निर्विकारी बनने से सूक्ष्म अहंकार या सूक्ष्म कुछ भी है - वह अन्दर ही खत्म हो जाता है। फिर सेकण्ड में न्यारा बनना और बाबा से प्यार खींचना उसके लिए तो आसान है। यह भी भगवान ने हम बच्चों को निमित्त



बना करके बहुत कुछ सिखाया है। कोई निमित्त बनने से डरते हैं, कहते हैं भाई, हमारे से नहीं होगा। परन्तु कोई निमित्त बनने से डरे नहीं, निमित्त बाप ने बनाया है तो फिर उसके सामने जो बातें आती हैं वह अपने हर्षितचित्त से हर बात में पास होते जाते हैं। किसका भाव-स्वभाव हमारे चित्त पर न आये यानि अन्दर से याद ही न रहे।

स्व पर विजय प्राप्त करना माना सर्व पर विजय प्राप्त करना है। फिर होगी प्रकृति पर विजय। पहले स्व की कमजोरी स्वयं को कभी हार न खिलावे, तो खबरदार, होशियार रहना है। किसी भी प्रकार की कमी सूक्ष्म वा स्थूल हमारे ऊपर चढ़ाई न करें क्योंकि कई ऐसे होते हैं कमी, कमजोरी का और भी एडवान्टेज ले करके, कमी को साथ दे करके हमारे ऊपर चढ़ाई करते हैं। माया डाकू पहले बाप से कनेक्शन तोड़ देती है, फिर अन्दर घुसती है। तो कोई-न-कोई कारण बनता जायेगा, समस्या का रूप बनता जायेगा और हमको ढीला बनाता जायेगा। फिर जिस घड़ी घबराना शुरू किया तो उसका और ही चान्स लेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं बच्चे, तुम सर्व शक्तिवान बाप को सदा साथ रखो और संग बड़ा अच्छा रखो। कई संग में रहने से भी घबराते हैं पता नहीं, अकेला रहना अच्छा है। आत्मा अकेली है, वह तो अकेला शरीर से न्यारा रहना अच्छा है परन्तु ईश्वरीय परिवार के संगठन से माया दूर करती है, कोई ना कोई कारण बना करके। कहेंगे हम यहाँ नहीं रहेंगे, हमको अच्छा नहीं लगता है। यहाँ पर कोई प्राइव्सेसी नहीं है, कोई समय नहीं मिलता है, कहीं जाने को नहीं मिलता है, कुछ ठीक खाने को भी नहीं मिलता है, बस यही जो है वही रोज खाते-खाते, खाने से भी बोर हो गये हैं। यहाँ तो बोरिंग लाइफ है। यहाँ से कहाँ चली जाऊँ, यह ख्याल खतरनाक है। समझू, सयाना समझ जाता है यह ख्याल किस प्रकार के हैं और यह ख्याल कहाँ खींच करके ले जा रहे हैं। इसलिए बाबा का यह गीत बहुत अच्छा है - मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में... बाबा कहते हैं मरना तेरे गले में, जीना तेरे गले में। गले का हार बनना है तो बलिहार जाना है। बलि चढ़ जाना हैं। वे लोग जिस बकरे को बलि चढ़ाते हैं उसका श्रृंगार भी करते हैं। तो खुशी-खुशी से दिल से बलिहार जाना है। बलिहार जाने के बाद फिर है निभाना। सतिव्रत, पतिव्रत, अव्यभिचारी याद में शक्ति है, उसमें कोई समस्या नहीं आ सकती है। जहाँ



भी हूँ साथ निभाने वाली हूँ। ऐसे नहीं कि मुझे पता थोड़ेही था कि ऐसा दुःख भी आयेगा, अरे कोई विघ्न आया है तो तुम्हारी सतीव्रत देखने के लिए। न कि हाथ छोड़ने के लिए। वह तो सम्भालने के लिए तैयार है - जैसी हो वैसी हो, मेरी हो, उसने यह स्वीकार कर लिया है। वह यह कभी नहीं कहता है कि तुम कैसी हो? मुझे पता थोड़ेही था - तुम ऐसी होगी, यह भी नहीं कहता है, बड़े प्यार से सम्भालता है। देखा है सबको प्यार से, दिल से सम्भाला है। दिलवाला बन करके सम्भाला है, इसलिए कहता है कि तुम दिल की बात और किसी को नहीं सुनाना, दिल में कहाँ से भी कुछ आ जाए तो मेरे पास आ जाओ। और यह भी अनुभव है कि दिल की बात और किसी को सुनाई तो दिलाराम नाराज़ हो जाता है फिर दिल में आराम नहीं होता है। या दिल में दबाकर रखते हैं तो भी वह नाराज़ हो जाता है। कहते तुम मेरी हो करके दिल ऐसी रखी है!

बाबा कहते तुम भगवान के घर में बैठे हो तो तुम्हारे द्वार पर जो भी आए, वह कुछ लेकर जाये, खुश हो करके जाये, सुख-शान्ति, आनन्द और प्रेम से सम्पन्न हो जाये - यह बाबा के घर की शोभा है। यह सेन्टर है ऐसा कहने और सुनने में भी हमें अच्छा नहीं लगता है। दाता का दर है, भगवान का घर है इसलिए हमने कभी यह नहीं कहा होगा कि मैं फलाने शहर में फलाने सेन्टर में रही हूँ। छोटी से छोटी कुटिया भी होगी तो भी समझेंगे यह बाबा का घर है, भले कोई भी आवे क्योंकि शान्ति दाता का घर है। जहाँ प्रेम है वहाँ शान्ति है, जहाँ कोई मुस्कराता है वहाँ शान्ति है। इसलिए हम किसके सामने जायें तो वह मुस्कराये। अगर हम खुद ही मूँझे हुए हैं तो हमारे पास कौन आयेगा? इसलिए भगवान का द्वार सदा खुला हुआ है। किसलिए? शान्ति चाहिए, प्रेम चाहिए, खुशी चाहिए, शक्ति चाहिए जो चाहिए सो लो। चाहिए क्या? कुछ नहीं चाहिए या चाहिए शक्ति या चाहिए सच्चा प्यार या चाहिए समझ। बाबा के द्वार पर आते ही समझ में आ जाता है। यहाँ का वायब्रेशन, बाबा का प्यार मुँझाने वाली नेचर को समाप्त कर देता है।

तो सचमुच हमने देखा है कि जब बाबा याद है तो कुछ नहीं है जब और कोई बात याद आती है तो बाबा सामने दिखाई नहीं पड़ता है। तो बाबा कहते हैं - तुम



ऐसे समझो, हम दिलवाला बाप के बच्चे हैं इसलिए यहाँ दिलवाला मन्दिर का यादगार है। और हमारा अनुभव है, तपस्या अच्छी तभी है जब दिलवाला मन्दिर में बाप के साथ बैठो। जो सच्चे दिल वाले होंगे वही दाता होंगे, रहमदिल और फ्राखदिल होंगे, गिनती नहीं करेंगे। अभी इतना दिया है, अभी भी इसको देता ही रहूँगा क्या, फिर भी यह सुधरता थोड़ेही है.. यह तो कभी सुधरेगा ही नहीं, यह बोल वा संकल्प भी जैसे बाप की ग्लानि कराने वाला है। अरे! भगवान कैसें को भी क्या से क्या बनाने वाला है। तो जैसे बाबा की दिल है वैसे हमारी दिल बन जाये बस, और कुछ नहीं चाहिए। बाप जैसा दिमाग होना चाहिए। बाप के दिल में इतनी भी कठोरता नहीं है, ऐसे कालों का काल है, उसके पास हरेक की हर बात नोट होती है। फाइल नहीं है परन्तु फाइल जो है, जैसा है, भगवान के खाते में नोट होता है। कुछ नीचे ऊपर होता है तो जिस घड़ी हम बाबा के सामने जायेंगे तो एक सेकण्ड में हमारे से ही हमारी भूल भुलवा देता है क्योंकि भूल रिपीट करने से उदास, निराश और दिलशिकस्त हो जाते हैं। हाँ, भूल को एक बारी सेकण्ड में रियलाइज करके फिर उसको रिपीट न करके अभूल बनने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए। बाबा इतना सयाना बनाता है। ऐसे भूल कभी भूलती नहीं, परन्तु बाबा कहते कर्म से भूल जाओ। भूलते हैं तो उसकी क्षमा, उसका रहम, उसका स्नेह आगे से हमारे से भूल नहीं करायेगा क्योंकि स्नेह वश हम फिर नहीं कर सकते हैं। प्यार है बाबा से तो।

बाबा कितना निरंहकारी, निर्विकारी है... तो मैं भी ऐसी बनी हूँ? जैसे छोटा बच्चा तोतली भाषा में बोलता है तो प्यारा लगता है और सच्चाई से बोलता है। बाबा के सामने चालाकी नहीं कर सकते हैं, तोतली भाषा में यानि सच्ची-सच्ची बात बोलें। कोई बोल बनाने की ज़रूरत नहीं है, क्या बोलूँ, क्या न बोलूँ, क्या बताऊँ, क्या न बताऊँ... यह सोचने की ज़रूरत नहीं है। यह सोचना माना कुछ अपने को ठगना, बाबा से ठगी करना। कुछ बताऊँ, कुछ न बताऊँ यह ठगी नहीं चलेगी। जैसे हैं, ऐसे है क्योंकि वैजयन्ति माला में आने वाले सच्चाई से बड़ा काम लेते हैं। सच्चाई से काम लेने वाले, वफादार रहने वाले, इमानदार रहने वाले, आज्ञाकारी रहने वाले – अच्छे मणके बन जाते हैं। और ईश्वरीय स्नेह में वैजयन्ति माला में अपना नम्बर फिक्स कर



देते हैं। नम्बर में आगे लाने वाला है - ईश्वर से सच्चा प्यार। और बाबा ने कहा है— जिसका बाप से सच्चा प्यार है उसका ब्राह्मणों से भी सच्चा प्यार होगा। किसी से हो किसी से न हो, बाबा को यह पसन्द नहीं है। जरा भी किसी से एक्स्ट्रा हो, किसी से कम हो, बाबा को पसन्द नहीं है। किसी के स्वभाव को देख हमारा प्यार हो, किसी का कुछ अच्छा देख प्यार हो, किसका स्वभाव अच्छा न देख हमारा प्यार न हो, इसमें हमारा क्या जाता है। कोई कैसा भी हो परन्तु मेरे भाव से बदल जायेगा इसलिए मैं तो पहले शुद्ध भाव रखूँ।

वैजयन्ति माला में आने वालों को अन्दर ही अन्दर अपने आपको देखना चाहिए। बाप को देखना फिर चेक करके सेकण्ड में चेंज होना। बाप को देख करके चेन्ज होना आसान है। चेक करना मेरा काम है, बाप की दी हुई समझ है। तो वैजयन्ति माला में हम ब्राह्मण एक दो से आगे जा रहे हैं परन्तु लाने वाले मेरू-दाना यानि मात-पिता ही हैं। मणका एक दो को नहीं देखता है। एक दो के पुरुषार्थ में नजदीक आता है लेकिन देख रहा है मेरे माँ बाप कैसे हैं? उन्होंने हमको कैसे पालना दी है, उसने हमको कैसे पढ़ाया है, कैसे चलाया है। तो जितना बाबा को सामने रखो उतना हम अच्छे बनेंगे, सुखी बनेंगे। सुख देने का अक्ल आयेगा। किसी को किसी कारण से भी दुःख है, वह दुःख मिट जाये। यह कभी नहीं कहें कि इसने ऐसा कर्म किया तब ऐसे फल भोग रहा है, नहीं, ऐसे बोल नहीं बोलने हैं। तो कितना अच्छा हमको सीखने के लिए मिला है और जहाँ जीना है वहाँ सीखना है बस। ऐसे नहीं हम सीख गये हैं। तो जहाँ तक जीना है, जब तक आत्मा इस शरीर में है तब तक झुकना है, मरना है, सीखना है। कईयों को झुकना थोड़ा मुश्किल लगता है, सिद्ध करना अच्छा लगता है, सच को सिद्ध करना यह भी राँग है। आप राइट हो तो बढ़ो आगे, कईयों को झुकने में जैसे कांध में दर्द पड़ता है। वास्तव में दर्द नहीं पड़ता है, सिरदर्द चला जाता है। न झुकने वाले को सिर दर्द होता है। सोचते हैं यह बात सच्ची है इसलिए सिद्ध होनी चाहिए। झुकना तो बहुत अच्छा है और मरेंगे तब तो मीठे बनेंगे। पहले वाला संस्कार मरेगा नहीं तो हम मीठे कैसे बनेंगे? संस्कार को तो मारना ही है, अग्नि संस्कार करना है। योगाग्नि में सब जल जाये, उसकी राख भी न रहे। मुझे बदलना



है, मुझे मरना है, मुझे सीखना है तभी खुशानसीब बनेंगे। औरों की खुशी में हम खुश। ओ.के.।

वैजयन्ति माला में आने के लिए बाबा को सामने रखते चलते चलना है। तो उड़ने की कला भी आ जायेगी। कहाँ रुकना नहीं है, न किसी को रोकना है, न हम रुकेंगे न किसी को रोकेंगे। हम रुक जाते हैं तो पीछे क्यू लग जाती है। क्यों रुके, क्या हो गया ? तो औरों को भी आश्चर्य लगता है, क्या हो गया है, पीछे वाले लम्बी लाइन में खड़े हो जाते हैं। एक्सीडेंट हुआ परन्तु क्यों हुआ, कितनों को रोक लिया.. ऐसे कर्म हम नहीं करेंगे। इधर-उधर नहीं देखना है, सदा सामने भी देखना है और पीछे वालों को भी देखना है क्योंकि पीछे वालों को भी कोई तकलीफ न हो। आगे जाने वालों के लिए भी कोई तकलीफ न हो, भले जायें। अच्छा - ओम् शान्ति।



निमित्त बनने वालों को नियम, मर्यादा, नीति और सभ्यता का पूरा ध्यान रखना है

बाबा ने हम बच्चों को जितना दिया है, दिल कहता है उसका रिटर्न देवें। रिटर्न देने का ख्याल आता है तो बाबा और दे देता है। जैसेकि दाता का द्वार हमारे लिए खुल जाता है क्योंकि मैंने मन का द्वार बाप से मिले हुए खजानों के लिए खोलकर रखा है। तो ज्ञान-मार्ग में आने से दिल और मन दोनों का आपस में सम्बन्ध बड़ा अच्छा हो गया है। जब ज्ञान नहीं है तो दिल और मन का सम्बन्ध आपस में अच्छा नहीं होता है। दिल चाहे कि भगवान को याद करूँ लेकिन मन याद करने नहीं देगा, और दिल अगर सच्चा बनना चाहे तो मन बनने नहीं देता है। थोड़ा अभिमान या अहंकार वश, ईर्ष्या वश है। तो हम सबको इतनी समझ मिली है कि दिल को साफ, मन को शान्त कैसे रखना है। मन को इच्छाओं से मुक्त रखने से शान्त होने में बहुत मदद मिलती है। 'मन्मनाभव' तभी होते हैं जब 'मद्याजीभव' का लक्ष्य सामने है। ज्ञानी तू आत्मा और सच्चे योगी - स्व पर राज्य करने

के लिए सदा ही मन और कर्मेन्द्रियों को अपने वश में रखने वाले, उनके वश रहने वाले नहीं हैं। तो अन्दर गुप्त अन्तर्मुखता से चेकिंग करके, सर्वशक्तिवान बाबा के साथ से, स्नेह से चेन्ज होना बिल्कुल सहज है। चेकिंग होती है अन्तर्मुखता से, अन्तर्मुखता तब अच्छी लगती है जब हमको चेन्ज होना है। नित्य, निरन्तर हमारे में नवीनता आती रहे। नवयुग की स्थापना के निमित्त हैं तो स्थापना शुरू होती है अपने से, चैरिटी बिगेन्स एट होम माना पहले इस घर से (अन्दर से) सत्यता की स्थापना



शुरू होती है। असत्यता को खत्म करने का जोश है यानि तीव्र पुरुषार्थ की लगन है।

ज़रा-सा भी हिंसक विचार नहीं हो, शब्द भी नहीं। सत्यता की अन्दर से स्थापना है अहिंसा से। अन्दर जो नाराजगी होती है, गुस्सा होता है, या कोई भी पुराना संस्कार फिर से उत्पन्न हो जाता है, उसकी उत्पत्ति ही खत्म हो जाए। अहिंसा परमोधर्म है, तो हमारा बाबा यह सिखाता है। धीरे से, शान्ति से, प्रेम से अपने को भी सिखाओ तो सच्चाई की शक्ति सेवा में आयेगी। हमारी सच्चाई पर बाबा खुश है। औरों के लिए खुश होने या न होने की बात ही नहीं है। परन्तु खास हमारे लिए संगम पर बाप तीन रूप धारण करता है। तो बाप ज़रूर आज्ञाकारी, वफ़ादार बच्चों पर खुश होगा। आज्ञाकारी नहीं होगा तो क्या करेगा, शान्त हो जायेगा। तो हम बाबा का खुशी का रूप और शान्त रूप दोनों रूपों का दृश्य सामने लायें। अगर बाबा खुश होगा तो बल (दुआ) देगा। लेकिन बाबा जब देखेगा कि यह बच्चा सच्चा नहीं है या इसका ध्यान पुरुषार्थ में नहीं है तो बाबा शान्त हो जाता है। बाबा का जो शान्त रूप होता है वह हमें देख करके अच्छा नहीं लगता, क्योंकि बाबा सोचता है कि मेरा बच्चा और यह कर क्या रहा है? अलबेलाई, सुस्ती वश बहाना दे रहा है, तो वह बाबा को अच्छा नहीं लगता है। शंकर का रूप है शान्त, ब्रह्मा रूप से अच्छी तरह से पढ़ायेगा, पालना करता रहेगा और विष्णु समान लक्ष्य देता रहेगा। बाकी हमारी कथनी करनी में अन्तर देख अपनी तपस्या में शान्त रहता है। तो अभी बाप, टीचर, सतगुरु यह तीनों रूप हमारे लिए हैं। हम ही इन तीन रूपों को जानते हैं। ब्रह्मा बाप ने हमारे लिए पढ़ाई द्वारा पालना देने के लिए माँ रूप धारण किया हुआ है। जैसे हैं वैसे हैं, अपना बनाकर रखा है। बाप के रूप से हमको लायक बनाने की बहुत तमन्ना (इच्छा) है कि लायक बनें, वर्सा लेवें। इसलिए ध्यान से पढ़ें, धारणा पर अटेन्शन रखें। सिर्फ सेवा की मस्ती में मस्त न रहें। मर्यादा, नियम, नीति और सभ्यता इसको अच्छी तरह से समझ करके उसको कार्य व्यवहार में यूज करें। अमृतवेले से रात्रि तक जो नियम बनाके दिया है उसमें एक्क्यूरेट रहने वाला हो। मर्यादायें हैं भाई-भाई की दृष्टि, एक परिवार है, बहन-भाई है। नीति है ब्राह्मण कुल की रीति-रसम, क्षत्रिय वैश्य की रीति



रसम न हो। सभ्यता है बड़े छोटे समान वालों के साथ व्यवहार, ब्राह्मण कुल की सभ्यता बड़ी श्रेष्ठ है। जो सभ्यता हमें सतयुगी दैवी राज्य में रॉयल फैमिली में लायेगी।

पढ़ाई के चार सब्जेक्ट ज्ञान, योग, धारणा, सेवा यह तो सहज बात है। चारों में फुल मार्क्स लेने वाला सदा पढ़ाई पर ध्यान रखता है। चारों में फुल मार्क्स मिले तो यह शोभा है, मात-पिता का शो करने के लिए। इसलिए वैजयन्ति माला में ऊपर मेरू दाना दिखाया है। वैजयन्ति माला में आने वाले चारों सब्जेक्ट्स में फुल मार्क्स लेंगे। साथ-साथ यह चारों बातें नियम, मर्यादा, नीति और सभ्यता बतायेंगी कि कहाँ तक पुरुषार्थ में अटेन्शन देकर विकर्माजीत सो कर्मातीत बने हैं। मर्यादायें हमें कर्मातीत बनायेंगी। मर्यादा से ही हम पुरुषोत्तम बनते हैं। मर्यादाओं को इतफ़ाक से भी तोड़ा, भूल से भी तोड़ा तो पुरुषोत्तम बनने वालों की लिस्ट से बाहर चले जायेंगे।

कलियुगी कर्म-बन्धन कड़े हैं, वह अन्दर से न सिर्फ तोड़ना है परन्तु खत्म करना है, उसका अंशमात्र भी न रहे। कलियुगी कर्मों के बन्धन अन्दर आत्मा को अपना बनाकर रखते हैं। स्वभाव-संस्कार के अन्दर भी चले गये हैं। जो कडुवापन है यह कलियुग की, तमोगुण की निशानी है। डाउट हैं, अडोलता स्थिरता नहीं है तो रजोगुणी की निशानी है। सतोगुणी सयाना है। अन्दर ही अन्दर रजो तमो को खत्म करता है। तो एक तरफ अटेन्शन है चारों सब्जेक्ट्स में फुल मार्क्स लें, दूसरे तरफ चारों ही बातें नियम, मर्यादा, नीति, सभ्यता सर्टिफिकेट देंगी। हाथ की रेखाएं बतायेंगी। कर्म की रेखायें दिखायेंगी। चलन-चेहरा बतायेगा। फिर अन्दर से विकर्माजीत, कभी भूल से भी विकल्प आ नहीं सकता। कर्मातीत बन फ्री हुए हैं, मीठे बाबा, प्यारे बाबा आपने मुझ आत्मा को अपने समीप रख करके, अपने स्नेह की शक्ति से दूसरी सब बातों से फ्री कर दिया।

मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा लेने के लिए आपने गोदी में बिठाकर दिल तख्त पर बिठा दिया, अपनी पलकों में समा दिया। आपकी पलकों में ही हम समाये हुए रहें और हमारी पलकों में बाबा आप रहो। ऐसी हमारी अन्दर से अव्यक्त स्थिति और सम्पूर्णता हो। तब बाबा ने जो उम्मीदें रखी हैं वह पूरी कर सकेंगे। वह भी बाबा आपकी मेहरवानी से, आपकी कृपा-दृष्टि से, आपने हमारे में बहुत विश्वास रखा है।



बलिहारी बाबा की है जो हमारे से विश्वास नहीं छोड़ा है। बच्चों ने बाप को देखने, जानने में टाइम लगाया है। कभी आँख खोलकर रखी, कभी आँख बन्द कर दी। बाप को देखने से, जानने से, फिर पहचानने से बाबा क्या देता है, कितना देता है, उसका बहुत अनुभव होता है। बाबा जानता है हम बच्चे बाबा के पास कहाँ-कहाँ से आये हैं। तो बाबा का भी हमारे में शुद्ध ममत्व है, हमको अच्छा बनाने का।

बाप के रूप में उम्मीदें रखता है। जल्दी जल्दी होशियार हो जायें, लायक बन जायें। और माँ की ममता के रूप में जैसे हैं वैसे हैं, मेरे हैं। कहाँ से भी अपने प्यार में खींचता है ताकि हम पावन बन जायें। और पावन बनते हैं तो बाबा के द्वारा जो शिक्षा मिलती है, टीचर के रूप में जो अच्छी तरह से पढ़ाता है, तो बुद्धि में बैठता है। पावन नहीं बनते हैं तो बुद्धि में बैठता ही नहीं है। बुद्धि में बैठ जाये, समझ में आ जाये और समझ में जब आ जाता है तो भाग्यवान अनुभव करने लगते हैं। समझ में आया तो दिल में चला जायेगा, कब भूलेगा नहीं। बार-बार दिल में आयेगा - यही करना है। और कुछ करना ही नहीं है। जो हमारे काम का नहीं है वह हमारे से छूट जाता है। हमको करना ही नहीं है, तो कोई हमारे नजदीक आता ही नहीं है। न सोचने के लिए, न बोलने के लिए, न करने के लिए। परमधाम हमारा घर है, उस हंस मण्डली में हमें रहना है। हँसों का भी झुण्ड होता है। वह कभी बगुलों के संग जायेंगे ही नहीं, उनको कोई खींचेगा नहीं। वहाँ बैठेगा ही नहीं। और बगुला हँस के संग में बैठेगा ही नहीं। बगुला क्वालिटी वाला काँव-काँव करने बिगर रह नहीं सकता, फालतू-चिन्तन करने के बिगर रह नहीं सकता है। किचड़े की बातें सुनने-सुनाने के बिगर रह नहीं सकता, तो वह हँस मण्डली में कैसे आ सकेगा ?

तो बाबा हमेशा कहता था, जो हँसों के ग्रुप में रहने लायक नहीं होगा उसको वह बगुले का ग्रुप खींच लेगा इसलिए हम किस ग्रुप में रहने वाले हैं वह देखो। जिसमें रूहानियत और सच्चाई के साथ सीखने की भावना होगी, सेवा में भी बाबा-बाबा, तो याद में भी बाबा-बाबा होगा, वही हँस ग्रुप में रह सकेंगे। हर कार्य में, हर प्रभु लीला में बाबा को देखते और कोई संकल्प लाने की आवश्यकता नहीं, आता ही नहीं है। हँस बनने के बिगर हम शेरनी शक्ति, सच्चा प्रीत बुद्धि वाला पाण्डव



बन नहीं सकते हैं। भले कोई कितना भी कोशीश करता रहे। हँस में परखने की शक्ति बड़ी तेज होती है। हमारे काम की क्या चीज़ है? बस। वह ले ली, चान्स मिला आगे बढ़े याद की यात्रा में। और कोई बात न खींचती है, न उसको अच्छी लगती है, न कोई उसको ऑफर भी करता है क्योंकि कोई कहते हैं क्या करें उसको इनसल्ट महसूस होती है इसलिए उनकी सुननी पड़ती है, यह भी बहाना है, इन्ट्रेस्ट अपना है। संसार समाचार, फलाना समाचार यह सुनने का इन्ट्रेस्ट अपना है और कहेंगे क्या करें - सुनाते हैं तो सुनना पड़ता है। नहीं। जिसको अपनी धुन लगी हुई है उसका कोई टाइम ले नहीं सकता है। हमको अन्दर से पहले धुन लगी हुई हो। संगमयुग की यह घड़ियाँ भागती जा रही हैं, यह हीरे जैसी बनाने वाली घड़ियाँ हमें सफल करके हीरे जैसा बनना है।

भगवान ने निमित्त बनने के लिए स्टेज पर खड़ा कर दिया। अभी निमित्त बनने वाले खड़े हैं स्टेज पर तो उनको अपना अटेन्शन रखना है क्योंकि देखने वाले देख रहे हैं, साथ में पार्ट बजाने वाले साथी देख रहे हैं। हम अपना पार्ट एक्यूरेट बजाते रहेंगे तो किसी को भी कन्फ्यूज़न नहीं होगा। हम थोड़ा नीचे ऊपर करेंगे तो पार्टधारी साथी भी थोड़ा घबरा जायेंगे कि यह क्या हो रहा है क्योंकि अभी स्टेज पर खड़े हैं ना। स्टेज पर तो बहुत ध्यान रखना होता है। हमारे अन्दर की स्थिति हिलती रहेगी तो देखने वालों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? जिनके निमित्त बनें उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? उनके अन्दर का क्या हाल होगा इसलिए बाबा ने कहा है - यह स्लोगन याद रखो- जैसा कर्म हम करेंगे हमको देख और करेंगे। तो अभी हम इतना भी कुछ नीचे ऊपर नहीं कर सकते हैं क्योंकि निमित्त बन करके फँस गये हैं। भले खुशी-खुशी से हम सर्विस कर रहे हैं, अभी तो मैं सच बताती हूँ निमित्त बनने वालों को बहुत ध्यान रखना है। सर्विस में बहुत नाच लिया है। नाच में निमित्त बनना भूल गया है तो बैलेन्स नीचे ऊपर हो गया। जैसे नाचते-नाचते पाँव फिसल जाता है तो फिर बैठना पड़ता है। इसलिए अन्दर अच्छी तरह से रिहर्सल करना है निमित्त बनने वालों को। स्टेज पर अगर इधर उधर ध्यान चला गया तो अपना पार्ट ठीक से नहीं कर सकेंगे।

तो वर्तमान समय जितना निमित्त बनने वालों के लिए बाबा के इशारे हैं, उतना



ही वैजयन्ति माला में आने वालों के लिए भी स्पष्ट लिस्ट है। कैसी भी समस्या है, कैसी भी बात है, कोई भी हलचल है...लेकिन हमारा फाउण्डेशन कितना मजबूत है, उस पर सारा मदार है। दुनिया के हम आधार है। स्थापना के कार्य में हम उदाहरण मूर्त हैं। आज भी इस यज्ञ की वृद्धि हमारे और आपके उदाहरण से ही हो रही है। तो निमित्त बनने वाले इस सृष्टि का उद्धार तब करेंगे जब ऐसा उदाहरण मूर्त बनेंगे। लेकिन किसी का आधार बन करके तुम्हीं उसका आधार नहीं बन जाओ या वही हमारा आधार न बन जाए। निमित्त बने हैं उसे आगे बढ़ाने के लिए। इसलिए इसमें बड़ी खबरदारी और होशियारी चाहिए। उदारचित्त बनकर आगे बढ़ते और औरों को भी आगे बढ़ाते रहना है। सच्ची और साफ दिल वाला, भगवान से पाये हुए खजानों में उदारचित्त रह सकता है। दाता ने मंगतापन से छुड़ा करके सुख-शान्ति, प्रेम-आनन्द में सम्पन्न रहने का भाग्य दिया है क्योंकि भाग्यवान वह जो सदा सम्पन्न रहे। तो हम अपने को ऐसा पद्मापद्म भाग्यवान बनायें जो बाबा ने दिया है उसमें सम्पन्न बनें।

कोई बात की अन्दर से थोड़ी सी भी कमी महसूस हो तो इशारे से निकाल दें। इशारा तो कहीं ना कहीं से मिल जाता है। जिसको अपने अन्दर की कमी को निकालना होगा वह कैसे भी करके निकालेगा क्योंकि निमित्त बनने वालों की थोड़ी-सी भी शोभा नहीं देती है। इसलिए दिन प्रतिदिन निमित्त बनने वालों पर सबका बहुत ध्यान खिंचता जा रहा है। बाबा तो अभी साक्षी है कि बच्चे अभी क्या कर रहे हैं। और बाबा कभी-कभी तो साथी भी अच्छी तरह से बनता है, कभी साथ छोड़ करके साक्षी बन जाता है। कभी तो पूरा साथ देता है लाज़ रखने के लिए, कभी साक्षी हो जाता है देखने के लिए। परीक्षा में टीचर ऐसा करता ही है, पहले सिखाया फिर पेपर के समय साक्षी हो जाता है। उस घड़ी वह खातिरी नहीं कर सकता है, परीक्षा के समय छोड़ देता है। कहाँ तक पढ़ाई का सबूत दे रहा है, यह चेक करता है। तो बाबा हमारा भले साक्षी हो जाए लेकिन उसके साथ की शक्ति और समझ सेकेण्ड में पास करा ही लेगी। जैसे सतयुग में बाबा को ऐसे याद नहीं करेंगे लेकिन उसके याद से जो शक्ति भरी है वह सतयुगी राज्य चलाने में मदद करेगी। ऐसे ही बाबा ने अपने साथ से जो मास्टर सर्वशक्तिवान बनने की और साक्षी हो करके ड्रामा की हर सीन को



देखने की समझ दी वह समझ अन्दर से काम आती है। बाबा साक्षी है और हमको भी साथ दे करके साक्षी बनना सिखाया है ताकि लेप-छेप से न्यारे रहें, वह अन्दर से सिखाया है। किसी के भाव-स्वभाव-संस्कार से तुम न्यारे रहो, किनारा करके कहाँ चले नहीं जाओ।

तो अपने ईश्वरीय सन्तान के संस्कारों को इमर्ज करो, औरों को भी पुराने संस्कार खत्म करने में सहयोग दो। जैसे शंकर की तपस्या है ऐसे हमारी तपस्या का बल उन्हें मदद करें। यह है हम निमित्त बनने वालों का अटेन्शन। अच्छा - ओम् शान्ति।



हम ब्राह्मण बने हैं विकर्माजीत बनने के लिए इसलिए साधारण संकल्प, बोल, कर्म न हों

इतने बड़े संगठन के बीच साइलेन्स में रहने का अच्छा चान्स मिलता है, यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। शान्तिधाम जाना है तो बाबा ने कहा शान्ति चाहिए। लोग तो कहते हैं जीवन में शान्ति चाहिए तो शरीर छोड़ने से शान्ति मिलेगी। हम कहते हैं कि अपने को आत्मा समझो तो शान्ति क्या चीज़ होती है उसका पता चलता है। अपने को आत्मा समझना, अन्तर्मुखी होकर गहराई में जाना। बाबा ने बहुत अच्छी अन्तर मन की आँख खोली है, जिससे अपने को भी देख सकते हैं तो मीठे बाबा को भी जान करके पहचान सकते हैं। तो पहले बाबा को जाना है या अपने को जाना है? जितना अपने को जानते हैं उतना बाबा को जानते हैं, जितना बाबा को जानते हैं उतना अपने को जानते हैं।

‘मन्मनाभव’ होना अच्छा लगता है। गीता ज्ञान दाता ने श्रीमत दे करके आत्मा को मनमत-परमत से छुड़ा दिया। पहले आत्मा को एक तो अज्ञान, दूसरा मिथ्या ज्ञान था। अपने को ही परमात्मा समझकर बैठे थे या आत्मा निर्लेप समझकर बैठे थे,

अभी इतना अच्छा और सच्चा ज्ञान मिला है, जिससे अज्ञानता से तो छूट गये, मिथ्या ज्ञान का अभिमान चला गया। मैं आत्मा सो परमात्मा का स्वरूप हूँ या ब्रह्म रूप हूँ, उसमें भी बहुत नशा था वह सारा उल्टा नशा भगवान ने खत्म कर दिया। मनुष्यों में सबसे बड़ा मर्तबा श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का है। जिसका सबसे बड़ा मर्तबा है, उसकी समझ बाबा ने दी है, तो ऐसा मर्तबा पाने के लिए पढ़ाई पढ़ रहे हैं। ऐसे बाप से योग लगा रहे हैं, जो राजाओं का राजा बनाने वाला बाप है।



बाबा ने पहले योग की यथार्थ समझ दी क्योंकि समझ न हो तो योग लगेगा कैसे ? तो देह के सब सम्बन्ध भूल, एक मुझे याद करो, यह ज्ञान जिसको समझ में आया वही योगी बन सकता है। देह के सम्बन्ध तो भूल सकते परन्तु जिस देह में आत्मा बैठी है उसको कैसे भूलें ? बाबा इसको भी भुलाना सिखा रहा है। अहंकार तो जाये, अभिमान भी न रहे, देह का भान भी न रहे। पहले अशरीरी बनने का ख्याल आवे। आत्मा जो मन, कर्मेन्द्रियों की गुलाम हो गई थी, वह मास्टर बनें। यह समझ कितना काम कर रही है। इस पर न सिर्फ विचार करते हैं, परन्तु दिल से अभ्यास करते हैं कि बरोबर यह तो रीयल सच्ची बात है। मैं आत्मा पहले, शरीर पीछे। नहीं तो पहले शरीर फिर आत्मा। मैं आत्मा इस शरीर का मालिक हूँ, इस भान से अशरीरीपन का अभ्यास सहज हो जाता है। इस मालिकपन से गुलामी छूटती है। देह, सम्बन्ध, दुनिया के खींचातान और कड़े कर्मबन्धनों की खींचातान, स्वभाव-संस्कार की खींचातान, अचानक कोई हिसाब-किताब खड़ा हो जाए, पहले वाले ही चुक्तू नहीं हुए, अब कोई दूसरा भी शुरू हो गया तो यह सब खींचातान आत्मा को बेचैन कर देती है। बाप के पास बैठने नहीं देती है, शान्त रहने नहीं देती है।

मुरली में गीत आता है कि “इस पाप की दुनिया से और कहीं ले चल...”। आत्मा बाप को कहती है इस पाप की दुनिया में हम भी पापी बन गये हैं। तो आत्मा को अन्दर से यह लगा कि इस पाप की दुनिया से हम कहीं चले जाएं, जहाँ चित्त को चैन मिले, शान्ति मिले क्योंकि इस दुनिया में तो कहाँ भी साधू-सन्त, महात्मा के पास चले जाओ, तीर्थ यात्राओं पर चले जाओ या शास्त्र पढ़ने शुरू कर दो तो भी चित्त को चैन कहाँ ? लेकिन बाबा के पास आने से चित्त चैन में है। क्योंकि पाप की दुनिया से खींच करके हमको भी रियलाइज कराया कि तुमने यह-यह पाप किये हैं। अभी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और अब से बिल्कुल पाप करना बन्द कर दो।

अब तक एक तो देह-अभिमान वश अपने को आत्मा नहीं समझा था। देह-अभिमान से ही पाँच विकारों ने अच्छा दबा करके हमको पापात्मा बना दिया। अभी आत्मा सर्वशक्तिवान बाप को अपना समझती है इसलिए उसके अन्दर वह वह



शक्ति आ जाती है जिससे हम दबाव और प्रभाव से छूट जाते हैं। जब इस दबाव और प्रभाव से मुक्त हैं तो चित्त को चैन है, शान्त है। तब तो इतनी बड़ी सभा में सब शान्त से बैठ सकते हैं। नहीं तो घर में, फैमली में 10 आदमी इस तरह से शान्त नहीं बैठ सकते हैं। यहाँ इतने हजारों बैठे हैं, चैन से बैठे हैं, आराम से बैठे हैं। साइलेन्स में प्यार से बैठे हैं, तो यह किसकी कमाल है? बाबा की कमाल तो है ही, परन्तु बाबा ने जो समझ दी है उसकी भी यह कमाल है। बाबा ने शान्ति के पहले तो प्रेम दे दिया तब तो हम मछलियाँ फँस गई बाप के प्रेम में। तो मछली पानी बिगर यानि बाप के बिगर रह नहीं सकती। कितना बाप ने प्यार दिया है तो बाप के प्यार में हमको शान्ति मिल गई है। अभी हम यह नहीं कहेंगे कि शान्तिधाम में जाने से शान्ति मिलेगी, परन्तु हमें शान्ति दाता और शान्तिधाम का पता पड़ने से शान्ति मिल गई है। स्वयं को समझने से शान्ति मिली है। हम आत्मा इस शरीर के मालिक बनने से शान्ति मिली है। पाप कर्मों का बोझा उतरने से शान्ति मिली है। श्रीमत से श्रेष्ठ कर्म करने का बल मिला है तो शान्ति मिली है।

श्रेष्ठ कर्म (सेवा) करने से बल मिलता है, शान्ति मिलती है, खुशी मिलती है। बिना कुछ किये कुछ नहीं मिलता है। किसी ने दुआ तो दी नहीं, हिम्मत रख करके बाबा की मदद तो ली नहीं है, तो शान्ति कहाँ से मिलेगी। ऐसे ही आँख बन्द करके बैठने से शान्ति नहीं मिलेगी। झुटका खायेंगे। तो हमको शान्ति कैसे मिली है? अभी यह जो "कल्चर आफ पीस" का प्रोजेक्ट चल रहा है। अभी हमारा कल्चर ही पीस का है। जो लोगों को बताना है, दिखाना है। भिन्न-भिन्न कल्चर जो है, वह एक दो से बड़ा दूर कर देता है। हरेक देश, जाति, धर्म का कल्चर अपना-अपना है। और बाबा हम सबके भेद-भाव मिटा करके, शान्ति का कल्चर कैसा होता है उसका प्रैक्टिकल अनुभव करा रहे हैं। जिसमें पवित्रता है, सच्चाई है, निःस्वार्थ भाव है, सम्बन्ध में रूहानियत है, आत्मायें बाप को पहचानें यह भावना है और कोई बात मन में है ही नहीं। तो हमारे कल्चर में क्या है? भावना कैसी है? संकल्प और वाणी कैसे हैं? हमारे कर्म कैसे हैं? बाबा कहता है – इसमें तुम सब निमित्त बनो। शान्ति जो प्रेम स्वरूप नहीं है, तो शान्ति का अनुभव किसको नहीं होगा। अगर हम रूखे होंगे



तो किसको शान्ति का अनुभव नहीं करा सकेंगे। अगर हमारा ब्राह्मण परिवार के लिए प्यार नहीं होगा तो हमारे से किसी को भी शान्ति नहीं मिलेगी। जिसका बाप से प्यार है उसका सबूत यह है कि उसका ब्राह्मणों से भी बहुत प्यार होगा क्योंकि बाप का बच्चों से प्यार है और हम बच्चों का किससे प्यार हो, किससे न हो, तो हम बाबा के बच्चे हैं यह नहीं कहला सकते हैं।

न सिर्फ ब्राह्मणों से प्यार, परन्तु यह भी नहीं कहना चाहिए कि यह नॉन-ब्राह्मण है क्योंकि उनको दुःख हो जायेगा। जितने बाबा के ब्राह्मण बच्चे हैं, बच्चे बनने से ब्राह्मण बने हैं, हरेक क्या थे क्या बने हैं? बाबा के बच्चे बनने से, परिवार के संग में आ करके ब्राह्मण बने हैं इसलिए किसी को नॉन-ब्राह्मण नहीं कहना है। आत्मा अशान्त हो जायेगी। हमें अपनी ब्राह्मण कल्चर में बड़ा ही गम्भीर, सयाना और सच्चा बनना है तभी शान्ति फैला सकेंगे। शान्ति के गुप्त दान से महापुण्य बनने की घड़ियाँ है तो इतना हम बदल जायें क्योंकि समय बहुत फास्ट जा रहा है। और बाप हमारे स्नेह को देख, हमारे अलबेले को न देख चलाता आ रहा है परन्तु कब तक ऐसे चलाता रहेगा? बाबा ने कितना हमें शान्त करके चलाया है। जैसी पढ़ाई है, जितनी पालना है, उसी अनुसार पुरुषार्थ हो। और कोई चिंतन नहीं हो, मन और मुख का मौन हो।

यहाँ बाहर वालों के लिए तो कहेंगे कि बीड़ी-सिगरेट पीने के लिए मना है और हमको क्या मना है? मन में, चाहे मुख में अशुभ बोल, अशुभ संकल्प की मना है क्योंकि हम ही तो फ़रिश्ता बनने वाले हैं। ब्राह्मण बनने से भी नम्बरवार हो गये हैं। सर्वोत्तम श्रेष्ठ पुरुषार्थी ब्राह्मण – विकर्माजीत, कर्मातीत, अव्यक्त सम्पूर्ण फरिश्ता बनेंगे, यह धुन लगी हुई है। ब्राह्मण किसको कहेंगे? जिसका मन, वचन, कर्म श्रेष्ठ रहता हो। समर्पण हुए परन्तु जीवन में ऐसी श्रेष्ठ दिव्यता नहीं होगी तो ब्राह्मण नहीं कहला सकते हैं। हमारा श्वाँस, संकल्प पर ध्यान न रहा, वह सफल नहीं हुआ तो वह काहे का ब्राह्मण! क्योंकि ब्राह्मण बने ही हैं विकर्माजीत बनने के लिए। सेवा भी ऐसी करें जिसमें हमारा विकर्म कुछ न बनें, इतना ही नहीं बल्कि हमारा साधारण कर्म भी न हो। इतना बाबा ध्यान खिंचवाते हैं तो ब्राह्मण से फरिश्ता बनने वाली आत्मा,



अपने साधारण संकल्प, बोल पर फुल अटेन्शन रखेगी।

तो अपने प्रालब्ध को सामने रख करके, पुरुषार्थ को देखो कि हमने अपने पुरुषार्थ से क्या प्रालब्ध बनाई है? बाबा ने हमारी तकदीर ऊँची बनाने का कलम हमारे हाथ में दिया है और यही बाप, टीचर के रूप में लिखना भी सिखा रहे हैं। तो हम जब बाबा के बच्चे बनते हैं तो बाबा हमारी बुद्धि रूपी स्लेट (पाटी) को साफ करके देता है, इतनी मेहरबानी की है। उस घड़ी बाबा के सामने कितना अच्छा लगता है। दिल कहता है हाँ, हम सब कुछ कर सकते हैं, जो चाहे सो कर सकते हैं। फिर भी हरेक की तकदीर अपने-अपने हाथों में है। सच्चे दिल पर जब साहेब राजी है तो पुरुषार्थ की सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार है। यह भी हमको देखना है कि जब से बाबा के बने हैं, सफलता भी बाबा ने साथी बनाकर दी है - यह न भूलें और सफलता तब मिलेगी जब पहले हमारे अन्दर हो कि हमारा सब सफल हो। स्व स्वार्थ नहीं है, लेकिन अन्दर यह जरूर है कि जो कुछ करें वह इस अर्थ से करें कि सफल हुआ! ऐसे ही साधारणता से चलता तो कलम चलाने नहीं आता, कभी स्लेट पर मैल चढ़ जाती है।

अगर मन की स्लेट साफ नहीं है तो बाबा के कमरे में जाकर एक घण्टा बैठो फिर भी साफ़ नहीं हुआ, तो दस घण्टा बैठो, दस दिन बैठो। अपनी स्लेट साफ रखो, दूसरे की साफ़ है या नहीं, उसका फिकर नहीं करो। खुद की साफ करो। पुराना सब मिटा हुआ हो, अब का ऐसे अच्छा लिखता जाए जो और अच्छी तरह से पढ़ सकें, देख सकें क्योंकि जैसा कर्म हम करेंगे हमको देख और करेंगे। अभी कर्म तो क्या परन्तु संकल्पों को भी अगर हम छुट्टी देंगे तो वायुमण्डल, वायुब्रेशन में सामने वाले को तो क्या, हज़ार मील दूर वालों को भी पहुँचता है क्योंकि बाबा ने रूहानी कनेक्शन जोड़ दिया है। शरीर से कहाँ भी हैं परन्तु फिर भी रूहानी बाप ने रूहानी कनेक्शन ऐसा जोड़ा है तब तो अनेक रूहों को बाबा से मिलाने के लिए कहाँ-कहाँ से खींचकर आते हैं। कोई अचानक कहते हैं हम मधुबन में जाते हैं। और कईयों का मन खाता है हमने कुछ पुरुषार्थ किया नहीं, कोई सेवा नहीं की है, मधुबन में जाके क्या करूँ? क्या सबूत दिखाऊँ? तो उन्हें रहम वश कहते कि मधुबन के वायुमण्डल में आ जाओ



तो जो उदासी वा पुरुषार्थहीनता की लहर आ गई है, वह चली जायेगी। हमारी इस प्रकार की उदासी को भी बाबा देख नहीं सकता है। हम भी नहीं देख सकते हैं फिर भी संगठन का बल, ईश्वरीय स्नेह की शक्ति उम्मीदवार बनने में मदद करती है। फिर से पुरुषार्थ करने की हिम्मत आने से मदद बाप की मिलती है।

तो ऐसा भाग्यशाली बनने से, हमारी खुशी से दूसरे की कमी आपेही खत्म हो जायेगी। और हरेक बाबा के बच्चे का हक है – बाबा के सामने आना, सच्ची दिल से, दिल खोलकर बाबा के पास बैठे हैं तो दिलाराम बाप हमारे दिल की बात को जानता है। मुख से न भी बोलें लेकिन बाबा के सामने आने से ही वह अनुभव बाबा करायेगा। यह भी देखा है कि कोई बाबा के सामने आकर दृष्टि लेते भी कहते कि हमें इतना अनुभव नहीं हुआ, मैंने समझा था मुझे बहुत अच्छा अनुभव होगा, लेकिन हुआ नहीं, और कोई दूर बैठा था तो कहता – बाबा ने मुझे इतनी दृष्टि दी, ऐसी दी मैं क्या बताऊँ? तो जिसके अन्दर में यही तमन्ना है कि विकर्माजीत, कर्मातीत, अव्यक्त सम्पूर्ण बनूँ और कुछ नहीं। ईश्वरीय बचपन की जीवन, स्टूडेंट लाइफ और कुछ करना नहीं परन्तु अटेन्शन रखना है – जैसा कर्म हम करेंगे...। अगर वाणी से परे रहने की भी आदत नहीं डालेंगे तो मरने के समय थोड़ेही अशरीरी बनने का अभ्यास करेंगे? अगर पहले से ही अशरीरी रहने का अभ्यास नहीं होगा, तो मरने समय शरीर खींचेगा। सेकेण्ड में अन्दर जाओ फिर ऊपर चले जाओ। अन्दर जाना माना देखते, न देखो। पहले अन्दर जाने के बिगर ऊपर बाबा के पास नहीं जा सकते हैं।

तो अब कथनी का समय पूरा हो गया, बाबा कहता है – तुम्हारे अनुभव को जैसे गीत बड़ा अच्छा सुनाते हैं वैसे और माइक भी बहुत बोलेंगे, परन्तु उनमें भी वह शक्ति कहाँ से आयेगी? जिनको सर्वशक्तिवान बाबा से शक्ति मिली है वह शक्ति काम करेगी। तो आज का दिन स्लेट को साफ करने का, अपनी प्रालब्ध कहाँ तक बनाई है वह देखने का है, अन्तर्मुखी रह करके इतने संगठन के बीच में मुख और मन को प्रेम और शान्ति से भरपूर करके इसका प्रैक्टिकल अनुभव भी करना। ओम् शान्ति।



सेवा में सब साथी बनते लेकिन स्व-उन्नति के लिए खुद को ही सोचना है

भले ही पूर्व जन्म के संस्कार सूक्ष्म हैं लेकिन बातें भूलती है मरने से। कर्मों अनुसार संस्कार खींचते हैं परन्तु बातें याद नहीं आती हैं। वह व्यक्ति, वह घर-घाट तो याद नहीं है ना, ऐसे अगर हम जीते जी मर जाते हैं तो किसकी याद नहीं आनी चाहिए, तब मरने में मजा है। बाबा के पास जन्म ले करके जीने का मजा ही कुछ और है। बच्चा जब माँ बाप की गोद में होता है तो पालना के अन्दर होता है। वहाँ पालना मिलती है कर्मों अनुसार जहाँ जन्म हुआ, यहाँ पालना मिलती है हमारे कर्मों को बदलने के लिए। पुराने अनेक जन्मों के संस्कारों को खत्म करने के लिए यहाँ यह अलौकिक पालना मिल रही है। अन्तिम जन्म की भी अन्त लाने के लिए पालना मिल रही है, यह फीलिंग आती है।

स्व-उन्नति में अपनी सारी जिम्मेवारी अपने ऊपर है। सेवा में तो सबका सहयोग है, अकेला हम कुछ नहीं कर सकते हैं। सेवा ड्रामानुसार होने वाली है, सेवा में सर्व का सहयोग मिलने के बिगर सेवा नहीं होती है, और सेवा के लिए बाबा करन-करावनहार भी अच्छी तरह से मदद करता है। बाकी स्व उन्नति के लिए तो खुद को ही सोचना है, खुद को ही करना है फिर बाबा की मदद मिलेगी। खुद को पुरुषार्थ करने की तात-लात हो।

बाबा को गरीबों, अनाथों, बीमारों पर और पतित आत्माओं पर दया होती है। जो परवश हैं उन पर भगवान को दया आती है फिर पावन बनाने के लिए भगवान



ने कृपा की है। एक तो पतितपने से निकाला फिर बैठ करके उनको अच्छी तरह से स्वच्छ बनाया है, तो यह उसकी कृपा है ना। किचड़े से निकालना वह अलग काम है, परन्तु बिल्कुल जो निकम्मे हो गये थे उनको एकदम चेन्ज करे, पावन बनावे तो यह बाबा की बहुत मदद है ना। हमने तो समझा ही नहीं था कि हम पतित हैं, कितने बुद्धिहीन हो गये थे। आजकल के भगत भी अपने को पतित नहीं समझते हैं और हैं पतित। हर एक के अन्दर का पोल खोलकर देखो तो पावन कोई भी नहीं है।

तो इन सब पतितों को पावन बनाने का काम एक बाप का ही है तब तो सब पुकारते रहते हैं कि भगवान छुड़ाओ। हरेक व्यक्तिगत रूप से कहते हैं कि मेरे विषय-विकार मिटाओ लेकिन बाबा तो सबको छुड़ाता है। सबकी सद्गति करता है, तो सर्व की सद्गति करना यह तो बाबा का काम है, परन्तु हमको क्या करना है, इसमें हमारा क्या काम है? हमको पावन बनकर पाँच तत्त्वों को भी पावन बनाना है। मैं-पन को छुड़ाने के लिए ब्रह्माबाबा खुद ट्रस्टी बन गये। अपने आपको निमित्त बनाया, समर्पण होने में भी निमित्त और सेवा में भी निमित्त। निमित्त शब्द भी गीता में है - मैं निमित्त हूँ। तुम्हारा यह बहुत जन्मों के अन्त के जन्म का भी अन्त है। तो जो कल्प पहले भगवान ने सुनाया था वही सुना रहे हैं, वह दिल से लग गया तो दिल अन्दर से सच्ची बाबा को याद करने वाली बन जाती है। जो बात दिल को लग जाती है वह बात दिल से भूलती नहीं है। सो भी भगवान की बात तो कभी भूलनी नहीं चाहिए। कल्याणकारी बाबा की बात को कैसे भूल सकते हैं!

शिवबाबा इनके द्वारा कितना काम करा रहा है, फट से यज्ञ रचवाया। फट से हम लोगों को खींचा फिर भी इसका स्वरूप सामने दिखा करके खींचा। कईयों को ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार, मधुबन का साक्षात्कार हुआ, उसने ही सबको शिवबाबा की लाइट के तरफ खींचा हुआ है। बाबा का मन-वचन-कर्म से चलना भी ध्यान से। जो दिल कहे पीछे-पीछे बाबा के जाऊँ। सब बच्चे जब भोजन कर लेते, उसके बाद ही बाबा भोजन करते थे। रात को भी सभी बच्चों का हालचाल पूछ करके, सब बच्चों से गुडनाइट करके दृष्टि दे करके फिर रेस्ट करते। फिर रात को सारी विश्व को याद करते। बाबा के पास सवेरे जाओ, आधी रात को जाओ, तो सारी विश्व को लाइट



दे रहा है। अमृतवेले जाओ तो हम बच्चों को माइट दे रहा है। तो सवेरे अमृतवेले उठकर बाबा को याद करके शक्ति भर लो तो बन्धनमुक्त हो जायेंगे। कई बार हम सेवा पर होते थे तो बाबा हमको ऐसा एक्क्यूरेट टच करता था। तो बाबा ने स्व-उन्नति के लिए कितना अपने ऊपर ध्यान रखा है, हमारे ऊपर ध्यान रखा है, विश्व पर ध्यान रखा है, सारे यज्ञ पर ध्यान रखा है। परन्तु कभी ऐसे नहीं लगता है कि बाबा कभी टेन्शन में हो। बेगरी पार्ट हुआ तो भी बाबा कहते कि उसने तुम लोगों को यहाँ भेजा है इसलिए सम्भालने वाला वह है, मैं तो बेफिक्र हूँ, इतने बच्चे कहाँ से खायेंगे इसके लिए मैं बेफिक्र हूँ, उसने भेजा है तो उसे फिक्र होगा। तो कितना उसके ऊपर विश्वास है। तो जिम्मेवारी को निभाते हुए भी अपने को बेफिक्र रखने का आर्ट कितना बड़ा है।

सारी उम्र तो बाबा को सामने रखा है परन्तु अभी भी लिस्ट बड़ी लम्बी है। कितना हल्का है, अपने को स्मृति स्वरूप में रह करके स्मृति दिलाने का काम कितना वन्दरफुल है बाबा का। खुद बाबा की स्मृति में है अच्छी तरह से और हम सामने आते हैं तो ब्रह्मा बाबा भी लाडकोड़ प्यार की भासना देता है। तो जितना हम ब्रह्मा बाप को पहचानेंगे उतना शिवबाबा को पहचानेंगे। जितना दोनों को पहचानेंगे, उतना खुद को पहचानेंगे। जितना खुद को पहचानेंगे उतना एक दो को पहचानेंगे। फिर हमें न कोई पुरानी दृष्टि से देखेगा, न मैं किसको देखूंगी। कल की बात भी पुरानी हो गयी, सवेरे की बात भी पुरानी हो गयी। फिर याद आता है कि यह अन्तिम जन्म की भी अन्त है, उसकी भी अन्तिम घड़ियाँ हैं। जो अन्त में संस्कार भरेंगे वह आदि में काम आयेंगे। जितनी हमको यह अन्तकाल ख्याल में आयेगी, उतना हमारे अन्त और आदि का आपस में कनेक्शन है।

हम आदि सन्तान हैं, हमारी बुद्धि में यह समझ फिट है कि ड्रामा अनादि बना बनाया है। अनादि ड्रामा को समझते हुए भी ड्रामा में बाबा का पार्ट और फिर मुझ आत्मा का क्या स्टेज पर पार्ट है वह पार्ट एक्क्यूरेट बजाना है। आदि सो अन्त, सो आदि होगा इसलिए अपने को सम्भालो। आदि सनातन धर्म वाली मैं आत्मा हूँ यानि आदि सन्तान हूँ, ड्रामा में भी आदि में शुरू में हमारा पार्ट है। झाड़ में भी हम नीचे



बैठे हुए तपस्या कर रहे हैं। ऊपर सतयुग खड़ा है सिर पर विष्णु रूप सामने है, झाड़ में हम कहाँ बैठे हैं, जब ड्रामा को सामने देखो तो ऊपर में बुद्धि जायेगी। जब झाड़ को देखो तो बाबा के साथ देखेंगे। तो बाबा हमेशा शुरू शुरू में मिसाल देता था कि महात्मा गांधी के साथ जिन्होंने पार्ट बजाया उनका पार्ट कितना ऊँचा रहा ? जिन्होंने साथ-साथ त्याग में, भारत को स्वराज्य दिलाने में मदद की वह मुख्य गिने-चुने हैं। तो हम भी भगवान के साथ-साथ पार्ट बजाने में गिने-चुने हैं। जो सेकेण्ड में ऐसे स्थिर बुद्धि नहीं हो सकते हैं उसको कहाँ बिठायेंगे। तो हमको स्व उन्नति के लिए क्या करना है ? हम दो हैं या दस हैं या हजार हैं, सेकण्ड में वायुमण्डल बन जाए। यह हमारी रिजल्ट होनी चाहिए।

आजकल बाबा कहते हैं किसी से वाद-विवाद नहीं करो। ज्यादा आरग्युमेंट करना नुकसानकारक है। न खुद करना है न करने देना है, यह शोभा नहीं है। अभिमान की निशानी है। दिन-प्रति-दिन जितना हम शॉर्ट और स्वीट बनते हैं, एक दो के भाव को जल्दी समझते हैं तो स्वभाव और सभ्यता में दिव्यता आयेगी इसमें ही हमारा शान है। तो यह स्व पर ध्यान रखना है, यह हमको ही करना है अपने लिए। स्वभाव में सभ्यता तब आती है जब मेरे सामने जो सम्पर्क-सम्बन्ध में है उनके साथ मेरा व्यवहार रूहानी, दिव्य है।

हम ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी किसके बच्चे हैं, यह तो आजकल सब जानते हैं। भले ऐसे लाखों पुरुषार्थियों में से 108 में भी आये, परन्तु बाबा को कौन से पुरुषार्थी चाहिए ? बाबा हमें देख ऐसे नहीं करे (मुँह नहीं फेर ले) इसका बड़ा ध्यान हो। किसी को भी कुछ दो तो वह तिरस्कार करे तो अच्छा नहीं लगेगा। जितनी भावना से जितना प्यार से हम अपने आप ऑफर करेंगे तो बाबा भी हमको प्रेम से स्वीकार करेगा। यह जो अन्दर भावना है वह बाबा के पास पहुँचे। किसी ने कहा कि हम कैसे समझें बाबा हमें याद करता है या हम बाबा को याद करते हैं ? लेकिन उसका रेसपाण्ड मिलता है, उसके रिटर्न में बाबा हमें रेसपाण्ड देते हैं और हम भी समझते हैं कैसे यह बाबा को याद करता है। संगमयुग के घड़ियों की यह अन्तिम घड़ियाँ हैं, यह याद ज़रूर हमको करना है। आज की घड़ी भी फिर कल्प के बाद आयेगी इसकी भी



बहुत वैल्यु है।

जैसे बाबा सर्व का कल्याणकारी है, वह संस्कार हमारे में भरते जाएं, सबका कल्याण हो, सबका अच्छा हो। किसके लिए भी ग्लानि मन में नहीं रखना। गाली देने वाले का भी कल्याण हो। कोई बात नहीं है, ठण्डा दिमाग है। जरा सा नीचे ऊपर बोलने वाले के लिए मिज़ाज हमारा गरम हो जाए, तो यह अच्छी बात थोड़ेही है। जरा भी हमारा रूप रंग बदले नहीं, बहुत स्व पर ध्यान रखना माना ही है अपना रूप बाप के संग के रंग का हो, जो चेन्ज न हो। बाप के संग से जो रंग लगा हुआ हो वह हमारा हो। अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो ओटे सो अर्जुन। जो करना है सो अब कर लें। बाबा करा रहा है वही मुझे करना है, अब नहीं करेंगे तो कब नहीं करेंगे, इसलिए ख्याल रखना है। हरेक से गुणग्राही बनना है परन्तु प्रभावित नहीं होना है, न प्रभावित करना है इसमें खबरदार, होशियार रहना है। सदा बाबा को सामने रखना है और बाबा हमको अच्छी तरह से देख रहा है। बाबा भले कहता है – मुझे क्या पड़ी है मैं तुमको देखता रहूँ, मैं क्यों सोचूँ तुम क्या सोच रही हो। लेकिन हम कहते हैं भगवान हमारे लिए नहीं सोचेगा तो हमारे लिए कौन सोचेगा ? बाबा को हमारा फिक्र करना ही पड़ता है, करना ही पड़ेगा। तो बाबा तो जानी जाननहार है। तो हम भी उसको जानते हैं, वह कैसा है हम भी उनके साथ कैसे सम्बन्ध में, व्यवहार में आते-आते वह और हम, हम और वह जैसे एक हो गये हैं। जब फलक से कहो 'बाबा', तो माया फट से फूँक से भाग जायेगी। तो माया से डरना नहीं, घबराना नहीं है परन्तु उसका अन्त लाना है इसलिए ऐसा रूप अपना हो जिस रूप में ज़रा भी उसकी आकर्षण हमको खींचे नहीं। फिर माया नज़र के सामने भी नहीं आ सकती है। तो यह है स्व पर ध्यान रखना। पुराने अनेक जन्मों की अन्त लाना, संस्कारों की भी अन्त आ गयी तो ड्रामानुसार आदिकाल इमर्ज हो जायेगा। ओम् शान्ति।



हर बात में बुद्धि चलाना तो सहज है लेकिन बुद्धि को शान्त रखना यह बुद्धिवान का काम है

बाबा मुरली चलाने के पहले हम सबका अटेन्शन खिंचवाते हैं कि आत्म-अभिमानी होकर बैठो क्योंकि रूहानी बाप पढ़ा रहे हैं। पढ़ने वालों को आत्म-अभिमानी रहना है, पढ़ाने वाला पढ़ा ही रहा है आत्म-अभिमानी बनाने के लिए। आत्मा का अभिमान है अविनाशी, देह का अभिमान होता ही है विनाशी। शरीर भी विनाशी, धन भी विनाशी, पोजीशन भी विनाशी। स्वयं को आत्मा निश्चय करने से और उसमें रूहानी बाप की रूहानियत भरने से रूहानी अविनाशी नशा चढ़ता है क्योंकि हमारा रूहानी बाप और हम रूहानी बच्चे भी अविनाशी हैं तो विनाशी अभिमान से फ्री हो करके आत्म-अभिमानी स्थिति का अभ्यास करें।

सतयुग में देह-अभिमान है ही नहीं। अन्त में कोई भी प्रकार के अभिमान का अंश न रहे तब कर्मातीत स्थिति,

बन्धनमुक्त होने से विदेही स्थिति, शान्त और शीतल अवस्था का अनुभव होने लगेगा। स्वभाव में सरलता और मिठास आती रहेगी। जितना विनाशी अभिमान खत्म होगा, अपमान की फीलिंग दुःख देने वाली खत्म होगी उतनी खुशी होगी। तो अपनी स्व उन्नति के लिए भी आत्म-अभिमानी अविनाशी रहें। यह ध्यान रखें बाप के सिवाए और किसकी याद न आये, अगर किसी की भी याद आयी, हमारी दृष्टि गयी या किसकी दृष्टि हमारे ऊपर पड़ी तो सावधान, खबरदार रहना चाहिए। माया के इन्टरफियरेन्स को जब ग्रहण करते हैं अर्थात् उसको गलत समझ कर अन्दर ले लेते



हैं तो बाबा की बातें ग्रहण नहीं होंगी। बाबा की बातें ग्रहण नहीं हुई तो ग्रहचारी बैठ गयी। फिर बुद्धि में ज्ञान बैठेगा ही नहीं। कोई कितना भी उसके प्रति शुभ भावना रखें, परन्तु फिर भी उसे बाबा की बातें यथार्थ समझ में आयेंगी ही नहीं। इसलिए बाबा कहते – दे दान तो छूटे ग्रहण। सच्चाई से, बाप से क्षमा ले करके पीछे पश्चाताप करने के बजाए इसके लिए अभी पश्चाताप कर लेवें तो भी अच्छा है क्योंकि पीछे का पश्चाताप बहुत ही दुःख देने वाला होगा। अभी क्षमा के सागर का पार्ट हम बच्चों के प्रति रहम और स्नेह सहित है फिर वह पार्ट बन्द हो जायेगा। उस समय बाबा साथी बनने के बजाए साक्षी हो जायेंगे।

बाबा रोजाना इशारा भी देता है और स्पष्ट समझानी भी देता है कि – बच्चे यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं है तो फट से ऐसे इशारों को समझ करके आगे के लिए सावधान हो जाना चाहिए। अभी नहीं सावधान होंगे तो बाबा अन्त में कहेगा – बच्चे, मैंने तुम्हें डायरेक्ट भी कहा था और समय प्रति समय ऐसे इशारे भी दिये थे, युक्तियाँ भी बताई थी, अच्छा संग भी दिया था, अच्छे-अच्छे सेवाओं के चान्स भी दिये थे फिर भी तुम्हारे अन्दर जो माया की प्रवेशता हुई उसको तुमने न समझकर उसको तलाक नहीं दिया। इस तलाक देने में देरी नहीं करना चाहिए, सोचना नहीं चाहिए। तो अन्दर से इतनी गहरी रियलाइजेशन हो जो हम माया की ग्रहचारी को अच्छी तरह से समझ करके निकाल सकें।

ज़रा-सी किसकी दृष्टि हमारे ऊपर अच्छी नहीं रही या हमारी दृष्टि किसी के ऊपर अच्छी नहीं रही तो दृष्टि का वृत्ति से कनेक्शन है फिर संकल्प भी ऐसे ही होंगे और जिस घड़ी वह संकल्प चले, तो जब तक हम वाणी में, कर्म में नहीं आयेंगे वह संकल्प छोड़ेंगे नहीं, इन सब बातों के सब अनुभवी हैं। जैसे पढ़ाई शुरू हुई तो माया की लड़ाई भी शुरू हुई। जैसे ही साप्ताहिक कोर्स पूरा हुआ तो माया को जैलसी होती है कि मेरा मुरीद कहाँ झुक रहा है, क्या कर रहा है? भले लाखों में से कोई एक आयेगा, पर माया को तो डर लगता है कि एक के पीछे लाखों न चले जायें। सारे विश्व से हम थोड़े हैं जो बी.के. बने हैं और इतने बी.के. में से भी सच्चे कितने रहते हैं, कोई में कोई। अब अपने से पूछो कि हम कौन हैं? लाखों में कोई है या करोड़ों



में से कोई हैं।

लाखों में से कोई है तो ठीक है, यह भी अच्छा है परन्तु बाबा को भी नशा रहता है कि करोड़ों में से जो कोई हैं वो करोड़ों की आँख खोल सकते हैं। जिनके दिल का आवाज़, जिनकी नज़रे करोड़ों को बाप का दर्शन करा सकती हैं। यह तो हम अन्दाजा लगा सकते हैं कि परमधाम का दरवाजा खोलने के पहले इतना तो हर आत्मा को आना चाहिए कि बाप आया है, शान्तिधाम ले जा रहा है। यह तो होना चाहिए, होना ही है। भले वे बाप से पूरा वर्सा न ले पायें परन्तु सर्व आत्माओं का पिता है ऐसी उनको प्रसन्नता तो हो कि बाबा अभी शान्तिधाम लेकर जा रहा है। तो भले विनाश हो जाए परन्तु बाबा भगवान शान्तिधाम लेकर जा रहा है। सर्व का सद्गति दाता अभी हमें लेकर जा रहा है, क्योंकि नाटक में अब पार्ट पूरा हुआ। इतनी तो समझ (रोशनी) हर आत्मा को आनी चाहिए। जब सब आत्मार्थें नीचे आ गयी हैं और भी रही हुई होंगी तो आ जायेंगी परन्तु नीचे जो आयीं उनको इतना तो पता चले कि अब वापिस जाना है, जा रहे हैं। जब से नाटक शुरू हुआ है तब से हर आत्मा पार्ट बजाने के लिए आती रही हैं। वापस जाने का समय सिर्फ यही है, ले जाने वाला आया है वही पावन बनाकर ले जायेगा। भले किसी ने एक दो जन्म भी लिया, सुख-दुःख का पार्ट पूरा हुआ, अब जा रहे हैं इतना तो आयेगा। तो करोड़ों तक साक्षात्कार से भी यह मालूम पड़ेगा। टेलीवीजन का रिवाज़ तो अभी है। हम लोगों को तो शुरू में साक्षात्कार ने खींचा है। अभी भी ऐसे कई हैं जो साक्षात्कार के कारण ही यहाँ आये और बाबा के बच्चे बन गये। और जिन-जिन को साक्षात्कार हुआ है उन्हें पहले से ही पवित्रता में इन्ट्रेस्ट रहा था। तो पहले हमको बहलाने के लिए यह सब साक्षात्कार हुए लेकिन अभी अन्त में सारे विश्व को साक्षात्कार होंगे। तो हम लोगों के विचारों में बाप के मुआफ़िक इतनी कल्याणकारी वृत्ति और दृष्टि रखने की भावना हो, तो हमारी दृष्टि में कभी कोई खलल पड़ नहीं सकती। अगर यह विचार होगा कि मुझे करोड़ों में कोई आत्मा भगवान की नज़रों में आने वाली बनना है, जो करोड़ों पर बाप की नज़र पड़े, नज़रों में आये, यह अगर हमारे अन्दर की भावना होगी तो एक तो हमारे ऊपर ग्रहचारी नहीं आ सकती। अगर आ भी गई तो तपस्या करके



खत्म कर देंगे।

बाबा के इतने चे ज्ञान को ग्रहण करने के लिए हाज़मा ठीक चाहिए। हम सबको इतना बड़ा भारी भोजन मिलता है, जब उसको पचायेंगे तब तो वह ताकत आयेगी। ताकत होगी तो शरीर की हेल्थ अच्छी रहेगी और समस्याओं पर भी सहज विजय हो जायेगी। तो ऐसे स्व पर ध्यान रखने से हम सदा के लिए शीतल और शान्त रह सकते हैं। और जब मन में कुछ भी बात है तो शीतल और शान्त नहीं हो सकते हैं। खुद को समझाओ तो कहेंगे मुझे समझ में नहीं आता है और कोई समझावे तो कहेंगे हम समझा हुआ है, हमको सब मालूम है। तो अभी वह जमाना पूरा हो गया है, अभी है इशारों को, वायब्रेशन को, एक दो की भावनाओं को समझना। खुद को भी भगवान के इशारे पर चलाना है। बाबा के इशारों को समझने वाला या 108 की माला में आने वाला, निश्चयबुद्धि विजयन्ति बन जाता है। उसका निश्चय ही उसको विजयी बना देता है। वह कभी किसी बात में डाउट उठाता ही नहीं है। निश्चयबुद्धि वाले अपनी बुद्धि नहीं चलाते हैं क्योंकि वह अच्छी तरह से जानते हैं कि जो बाबा कहे उसमें ही फायदा है। तो बुद्धि चलाना, तो बहुत सहज है, लेकिन बुद्धि को शान्त रखना, निश्चय के बल से चलाना विजय उसमें होगी। तो बुद्धिवानों का बुद्धिवान बाबा कहते हैं कि तुम अपनी ज़्यादा बुद्धि नहीं चलाओ।

बाप और ड्रामा के निश्चय से बुद्धि में बल आयेगा। बुद्धि शान्त रहना सीखेगी, बुद्धि अपने को सिखाना भी सीखेगी। अपने को सिखाने के लिए बुद्धि में सीखने की भावना ज्यादा पैदा होगी। तो हर कदम यह ध्यान रखना है कि एक तो मुझे सीखना है, सीखना माना ही अन्दर से लाइट रहना। सीखना माना - इसमें क्या भला है, यह समझ जाना। तो बुद्धि को चलाना तो आसान है परन्तु बुद्धि को शान्त रखना, समझदार सयानेपन का काम है।

आपस में एक दो के साथ व्यवहार में स्नेह का बल है तो सेवा में सफलता है। हम किसी के भाव-स्वभाव के असर में न आये। और जैसे बाबा दया, रहम का सागर है वह संस्कार हमारे में भर जायें। तो दुःखियों पर रहम आता है, दया आती है, उनके दुःख कैसे दूर हो जाये। हम कभी भी किसी हालत में भी कठोर न बनें



क्योंकि ज्ञान भी कभी-कभी कठोर बना देता है। ज्ञान होने के कारण अन्दर से निकल जाता है कि इसके कर्म ही ऐसे हैं ना, अभी भोगे... तो ऐसे कठोर नहीं बनना है। चलो भूल-चूक से किसी से कोई ऐसा कर्म होता है तो हम उसमें नहीं जायें क्योंकि बाबा कहते इस प्रकार तुम बच्चे एक दो के प्रति कुछ नहीं कह सकते हो। हम मित्रता भाव रखें, स्नेह भावना रखें ताकि बाबा का वह बच्चा माया की परछाई से भी निकल आये। यह माया के प्रभाव में आ गया है - ऐसा हम कहें भी नहीं, सोचें भी नहीं, देखें भी नहीं। बड़ा गम्भीरता और सच्चाई से, सच्ची मित्रता क्या होती है उसकी एक दो को फीलिंग करायें। लेकिन उसके पहले अपना मित्र आप बनना है। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। फिर बाबा की हमारे साथ इतनी मित्रता है, बाबा जो हमें इतने प्यार से ऑफर करता है, तो हम भी उसको इतना सच्चा फ्रैन्ड बनाकर रखें। सखा होता ही है दिल का प्यार सुनाने के लिए। सखी और सहेली में भी अन्तर है। सखी होती है सच्ची, सहेली में स्वार्थ होता है, आज कोई सहेली होगी कल टूट जायेगी। इसलिए अभी ऐसी कोई सहेली नहीं चाहिए। बातें करने के लिए सहेली है, बाकी ईश्वरीय स्नेह में मैं बाबा की सच्ची सखी बनकर रहूँ। तो सच्ची सखी वो है जो खुद शुभचिन्तन में रहे, एक दो के प्रति शुभचिन्तक रहे। तो बाबा को अपना सखा बना लें।

अभी शिवबाबा से जो सखा और साजन के रूप में सुख मिल रहा है वह आगे सतयुग में थोड़े ही मिलेगा। तो वह जो मजा है उसका सुख हम अभी क्यों न लेवें? वहाँ तो एक लक्ष्मी नारायण को एक बेटा होगा, अभी मैं परमात्मा का बच्चा हूँ, यह हरेक अपना हक लगा सकता है। पहले सोचते थे लक्ष्मी-नारायण की बेटी कौन बनेगा, बेटा कौन बनेगा। वह सब तो ठीक है जो बनेंगे सो तो आगे देखेंगे ही, परन्तु अब सुख लो उस मात-पिता का क्योंकि वही जगतमाता जगतपिता तुम्हारा माँ-बाप है, वह सुख तो लो। भले बाबा कहता है यह कुछ नहीं देता है वह देता है, अगर यह पालना नहीं करता तो वह कैसे देता? यह हमको हन्टर मार करके सावधान और खबरदार करके पवित्र नहीं बनाता, खाना पवित्र नहीं खिलाता, इतनी शिक्षा समझानी नहीं देता तो योग कैसे लगता? वर्सा मिलेगा परन्तु कैसे मिलेगा?

हमको अपने लिए अन्दर से यह ख्याल रखना है कि मैं शान्त शुद्ध रहूँ। अगर



थोड़ी शुद्धि की कमी हुई है तो उसे शुद्ध करके शान्त रहूँ। थोड़े भी अशुद्ध ख्यालात होंगे तो अशान्त कर दूँगे इसलिए अपने ऊपर ध्यान रखो।

अभी एक दो को सावधान करके उन्नति को पाना वह जमाना पूरा हो गया, अभी एक दो को स्नेह दो, रिगार्ड दो। अभी यह नहीं सोचना है कि इसे कुछ सावधानी दें क्योंकि प्यार होता है तो सुनने की शक्ति होती है, नहीं प्यार होता है तो दुःख होता है। तो दुःख क्यों दें। परन्तु फिर भी स्नेह वश रूहानियत के वायब्रेशन से हम एक-दो को आगे बढ़ाने में मददगार बनें ताकि और कोई आकर्षण उसे खींच न लेवे। तो सावधानी देने का अभी समय नहीं है। एक तरफ बाबा खींचे, एक तरफ माया खींचे तो ऐसों को बहुत तकलीफ होती है क्योंकि बाबा भी छोड़ता नहीं और वह भी छोड़ती नहीं है। तो दोनों के बीच में हम क्या करें? हम जरा भी चिन्तन नहीं करेंगे, नहीं तो फालतू मोह हो जायेगा। वह फालतू मोह भी नुकसानकारक है, नींद फिटायेगा-इसको कैसे बचाऊँ, क्या करूँ, क्या नहीं करूँ। इसके लिए बाबा ने कहा शुभ संकल्पों का संगठन बहुत पॉवरफुल रखो तो वह पहुँचेगा। फिर वह आत्मा बाबा की तरफ खींचकर आ जायेगी। तो समय अनुसार अपनी उन्नति, ईश्वरीय परिवार की उन्नति और विश्व-सेवा में भी कैसे सबकी जल्दी-जल्दी ज्योत जग जाये, इन सबका एक ही आधार है - 'शुभ संकल्प'। किस तरफ से भी बाबा की तरफ खींच होगी तो सब धर्म, जाति, रंग भेद से दूर हो जायेंगे। ऐसे अपनी शुभ भावना, कल्याण की भावना, स्नेह की भावना का बल प्रत्यक्ष फल दिखायेगा। ओम् शान्ति।



कर्मातीत बनने के पहले विकर्माजीत बनना है

हर श्वाँस, संकल्प में बाबा के सिवाए और कोई नज़रों के सामने न आये, बाबा की इन मधुर शिक्षाओं को ध्यान में रखते हुए अनुभव कहता है, बाबा हमारा कितना ध्यान रखता है। मीठे बाबा ने साकारी, अव्यक्त और निराकारी पालना और पढ़ाई से अपने दिल में छाप लगाई हुई है।

बाबा ने मेरे लिए सन्देश में कहा कि आदि से दिल तख्तनशीन हो। बाप को दिल में समाकर रखा है, तो बाप ने तुमको दिल में समाके रखा हुआ है। बहुत बड़ी मेरी आसामी बच्ची हो तो ऐसे मीठे बाबा के बोल सदा ही स्मृति में रहे हैं और ऐसे स्मृति स्वरूप रहने का भाग्य जो बाबा ने हमको दिया है, हमारा सारा ईश्वरीय परिवार भी त्यागी, तपस्वी, सच्चे सेवाधारी हैं, तो जो भाग्य भागीरथ ने मुझे देकर अपने मस्तक पर बिठाया है। बाबा जो मीठे-मीठे बोल सुनाकर मुझे खुशी की खुराक खिलाते हैं, मैं चाहती हूँ कि उन्हें आप सबके आगे शेयर करूँ।

बाबा ने कहा बेफिक्र बादशाह रहो और औरों को बेफिक्र बादशाह बनाओ, उसके पहले लंदन में भी बाबा ने सन्देश भेजा, सदा बापदादा और यज्ञ की स्नेही हो। सबको बापदादा और यज्ञ के स्नेही बनाने के उमंग-उत्साह में रहती हो इसलिए जो पांच दीप या पाँच देश जिसको बाबा कहते हैं उसमें ऐसा संगठन तैयार कराओ जो माइक भल खुद न हो परन्तु माइक बनाने के लायक हों, तो ऐसों की सेवा भी हो। तो कोई ऐसे छिपे हुए बाबा के रत्न हैं जो निकलते रहेंगे। बाबा कहते – गुप्त दान और महापुण्य।

हमारे चन्द्रमणि दादी जैसी त्यागी और तपस्वी कोई नहीं। सच्ची सेवाधारी



मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप से सबको शक्ति देने वाली चन्द्रमणी दादी हमारे सामने रहती है। फिर हमारे दादा विश्व किशोर भाऊ जिनमें निश्चय का बल इतना था कि बाबा ने कहा तो बस हुआ ही पड़ा है, यह भाऊ से हमने बहुत सीखा है। कभी बाबा से कहलवाया नहीं, एक इशारे से कई कार्य करवाये। आज लाखों भाई हों लेकिन ऐसा बाबा का बच्चा जिसने सच्चे वारिस की अपनी सीट फिक्स कर ली, ऐसे अभी हम अपनी सीट से हिलें नहीं। स्वमान में रह करके हर बाबा के विशेष बच्चे की विशेषता को, सच्ची भावना को जान करके बहुत प्यार से ईश्वरीय स्नेह की डोर मजबूत करें।

1. एक ओम् शान्ति होती है हेलो करने के लिए, दूसरा अटेन्शन खिंचवाने के लिए। तीसरा बाबा कहते हैं स्वधर्म में टिको तो भी ओम् शान्ति। बाबा को याद करो तो भी ओम् शान्ति। ड्रामा को फुलस्टॉप लगाना तो भी ओम् शान्ति। ओम् शान्ति शब्द से ही जैसे धर्म की शक्ति आ जाती है। जो हमारा शान्ति का स्वधर्म सबसे ऊँचा है, शान्ति से पढ़ते और पढ़ाते शान्ति की शक्ति जमा करते चलें। बुद्धि इधर उधर न हो, तो अच्छी तरह से पढ़ेंगे। यह पढ़ाई है ही साइलेन्स बल जमा करने के लिए। पढ़ाई में ही कमाई हो। पढ़ाई में ही बुद्धि का विचार सागर चलता है, बुद्धि अच्छी तरह से चले तो पढ़ाई में मजा आयेगा, खुशी होगी। पढ़ते-पढ़ते पढ़ करके कभी थकेंगे नहीं, बोर नहीं होंगे। पढ़ते रहे, पढ़ते रहे, ज्ञानामृत पीते रहें, मीठा लगता रहेगा। बाबा ने इस पढ़ाई से शर्माँस, संकल्प को सफल करना सिखाया है, तो यह कमाई है ना। हम कभी भी अपना समय व्यर्थ नहीं गँवायें, भले खराब ख्याल भी नहीं परन्तु वेस्ट भी हैं तो परसेन्टेज है तभी इतना स्वच्छ, साफ दिल नहीं है, सम्बन्ध में भी सरलता, सन्तुष्टता नज़र नहीं आती है। जो बाबा ने कहा कि चीज़ की कोई वैल्यु नहीं होती है, तो वैल्यु किसकी होती है? चीज़ भले छोटी हो उसमें स्नेह समाया हुआ हो, प्यार समाया हुआ हो तो उस चीज़ को दिल से लगाते हैं। जिसमें स्नेह भरा हुआ होता है, वह ऐसे रख नहीं देते हैं, उसे दिल पर रखते हैं। तो जो बाबा ने हम बच्चों को दिया है, हमारे दिल को लगा है, दिल में समाने वाली बात है। दिल से सच्चाई से सेवा करने का अभ्यास पहले से ही है लेकिन अभी सबके दिलों को यह छाप लगे कि सच है तो यही है! सच्चा साहब किसी का भी कुछ नहीं



देखता है। बाबा हर बच्चे के लिए कितना रहमदिल है, किसी की भी मुश्किलात देख नहीं सकता। हम बच्चों को भी रहमदिल बनने में कितने फायदे हैं, उसमें किसी के अवगुणों को न देख, रहम दिल बनें। सभी बाबा की दया-दृष्टि से दुआयें लेने के लिए अधिकारी बनें। हर श्वाँस, संकल्प में निरहंकारी बनना है तो भी बाबा जैसा। निर्विकारी बनना है तो भी बाबा जैसा। निराकारी स्थिति में रहना है तो भी बाबा जैसा। बाबा सामने है तो भेट करते हैं कि बाबा जैसा कहाँ तक बने हैं। बाबा कैसा अचल-अडोल है। बाबा कैसा सदा मुस्कराता है, बाबा की मुस्कान भी हमें बल देती है, सकाश देती है, दुआयें देती है। जैसी हमारी स्थिति होगी ऐसा हम बाबा से खींचते हैं, बाबा देता तो बहुत गुणा ज्यादा है परन्तु अनुभव कहता है कि स्थिति अनुसार ही हम खींचते हैं। बाबा देने में दाता है, बड़ी दिलवाला है लेकिन दिखाई पड़ता है साफ और सच्ची दिल वालों में अन्तर होने कारण नम्बरवार हो जाते हैं।

जब विकर्माजीत बनना है, विकर्मों को विनाश करना है तो अन्दर से अपना रूप भी ऐसा रखना है, जो भूल से कोई विकर्म हो न जाए, और जो किया हुआ है वह विनाश हो जाए। पुराना कोई कहाँ रहा हुआ हो वह भी सदा के लिए विनाश हो जाए, उसकी अंशामात्र भी न रहे। संस्कार-स्वभाव के अन्दर छिपा हुआ न हो, इतना पावरफुल ज्ञान से योग है। ज्ञान है समझ, समझ सिर्फ बुद्धि तक नहीं परन्तु योगयुक्त रहने के लिए, योग से विकर्मों को विनाश करने के लिए, अपने आपको बदलने के लिए है। जब ख्याल आता है कि कर्मातीत बनने के पहले मुझे विकर्माजीत बनना है, तो पुरुषार्थ बहुत सूक्ष्म सच्ची लगन वाला हो जाता है, जिससे अग्नि बहुत तेज हो जाती है। अलाए (खाद) निकालने के लिए बहुत तेज अग्नि चाहिए। जब अलाए निकलती है तो रूप रंग बदलता जाता है। जब पूरी अलाए निकल जाती है तो खुद को और सबको पता चलता है। तो विनाश काल आने के पहले सारी अलाए निकल जाए, प्युअर सोना, हीरे मिसल बन जाए, कोई भी दाग अन्दर छिपा हुआ न हो। बाबा ने अन्दर आत्मा में जो शान्ति, प्रकाश, प्रेम, आनन्द भरा है वह इमर्ज रहे, बाकी सब कल्प की अन्त आने के कारण मर्ज हो जाए, इसकी बहुत गहरी सूक्ष्म चेकिंग चाहिए। ओम् शान्ति।



डर, निराशा और नाउम्मीदी को छोड़ सदा हिम्मत, सच्चाई और विश्वास से विजयी बनो

ओम् शान्ति, गुडमार्निंग बोला फिर क्या बोलें! मीठा बाबा, प्यारा बाबा। जो बाबा इतना सर्वशक्तिवान, बाबा ने कहा माया भी कम शक्तिवान नहीं है, लेकिन सर्वशक्तिवान का गायन बाबा का है। माया सुख हरने में और दुःख देने में बहुत शक्तिवान है। और बाबा दुःख को खत्म करके सुख देने में सर्वशक्तिवान है। हम कमजोरों में यानि निर्बल आत्माओं में बल भरने में, मायाजीत जगतजीत बनाने में बाबा हमारा सर्वशक्तिवान है, इसलिए कहते हैं मीठा बाबा प्यारा बाबा। रावण का तो नाम सुनने से ही डर लगता है, बाबा का नाम लेने से डर चला जाता है। रावण ने अभी तक भी हमारे अन्दर से अपना निवास छोड़ा नहीं है। डर, नाउम्मीदी, निराशा यह अन्दर में कितनी पूँजी बैठी हुई है? जब बाबा कहते तुम निर्भय बनो, निर्वैर बनो फिर डर क्यों? नाउम्मीदी किसमें? इतनी बड़ी लॉटरी मिलती है हिम्मत और विश्वास, सच्चाई के आधार से, कल्प पहले भी विन किया था, अभी भी करेंगे। पक्का याद आया है कि हमने ही विन किया था।

बाबा ने जन्म देते ही स्मृति दिलाई कि तुम वही हो और हम बच्चों ने भी कहा तुम वही हो। तो नाउम्मीदी किस बात में? चेक करो कि कभी नाउम्मीदी का ख्याल आता है? अगर आता है तो यह किसका संस्कार है? बाबा हमारे में उम्मीदें रख करके सफलता का चमकता हुआ सितारा बनाने वाला, वह बातें भूल हम नाउम्मीदी के संस्कारों के वश हो जाएं, हिम्मत और विश्वास का साथ न लें। और बाबा जो सिन्धी में कहते – सच तो बिठो नच। नाचने यानि डान्स करने से मजबूत होते हैं।



और डान्स हमेशा खुशी में होती है, निराश चेहरा होता है तो डान्स नहीं होती है। तो निराश होना माना अतीन्द्रिय सुख के झूले से उतर अनेक और झमेलों में चले जाना। या तो झूले में बैठना या झमेले में जा करके अपना माथा खराब करना है। तो हमारे सिरमाथे पर ईश्वर का हाथ है। बैकबोन हमारा बाबा है, दिलाराम हमारी दिल लेने वाला है। एक सिर, एक दिल, एक बैकबोन इन तीनों के आधार से यात्रा में सफलता हुई है, हो रही है। संगमयुगी हर सीन जो हमारे काम की नहीं थी; उनसे हम सदा न्यारे रहे हैं, बाकी सब जो प्यारी सीन है वह तो कम्प्यूटर से आटोमेटिक छप गई है, जब चाहें तब इमर्ज हो जाए।

बाबा कहते हैं यह जो अथाह ज्ञान है, वह ज्ञान प्रायः लोप हो जायेगा लेकिन हम कहेंगे कि ज्ञान की समझ से हमने सर्व दुःखों से मुक्ति पाई है और योग बल से शान्ति पाई है। सुख, प्रेम, आनन्द सम्पन्न बने हैं, उनसे जब संसार सारा सुखमय बन गया, शान्तिमय बन गया तो सर्व आत्मायें शान्तिधाम में चली गई, फिर बाबा ज्ञान किसको दे ? हम भी किसको देंगे ? तो ज्ञान प्रायः लोप नहीं हुआ है, ज्ञान अन्दर सारा समाया है। ज्ञान ने अमृत का रूप ले करके अन्दर ही अन्दर शीतल बनाया है। ज्ञान रत्नों का रूप लिया है जिससे मालामाल बने हैं। ज्ञान हमारे अस्त्र-शस्त्र हैं जिससे सर्व शक्तियाँ काम कर रही हैं। ज्ञान ने समझ दी है सतोगुणी बन सर्वगुण सम्पन्न बनने की। सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न ज्ञान से बनेंगे। योग से सारे विकर्म विनाश और सारे हिसाब-किताब चुक्तू हो जाते हैं। सेवा तो हमारा भाग्य है।

इतना बड़ा ईश्वरीय परिवार होते हुए भी हम सब यहाँ सुखी बैठे हैं। नहीं तो कई कहते हैं कि क्या करें मुझे सेफ्टी नहीं लगती, लगता है कि मेरा कोई नहीं है। हम कहते हैं हमारा सारा परिवार है। अकेली भी आत्मा हूँ तो भी बहुत खुश हूँ क्योंकि अकेले में ही एकान्तवासी बन सकते हैं, इससे एकाग्रचित्त रहने का अभ्यास आटोमेटिक चलेगा। बाबा ने देह सहित देह के सब सम्बन्धों से सेकेण्ड में न्यारा बनना सिखाया है। पुराने संस्कार तो सब मर गये, जिस संस्कारों वंश कर्म के हिसाब-किताब से अन्तिम जन्म हुआ था उसकी भी अब अन्त आ गई। बाबा ने यज्ञ रचा तो हमारा तन-मन-धन सफल हो गया, हमारा कुछ रहा ही नहीं। बाकी तो यह भी कोई फिकर



नहीं है, मैंने जो प्रालम्ब्य पाई है वह मुझे ही साथ लेके जानी है। आत्मा को जो बाबा ने कहा है – घर चलना है तो उसके पहले बाबा से सकाश लेकर आत्मा को शक्तिशाली बना कर एवररेडी रहना होगा क्योंकि बाबा के साथ जाना है, पीछे नहीं रहना है।

तो इतनी स्नेह भरी प्रीत बुद्धि से विजयन्ति माला में आने की विधि को छोड़ करके लम्बा रास्ता क्यों तय करें ? डर, नाउम्मीदी, निराशा - यह तीन अन्दर में बहुत विघ्न डालने वाले हैं इसलिए किसी से भी न हम डरें, न डरायें। बाबा कहते हैं – न दुःख दो न दुःख लो। अगर मेरे से कोई डरेगा, जैसे घोस्ट भी तो सूक्ष्म होते हैं परन्तु वह डराने धमकाने वाले होते हैं। आकारी हैं लेकिन डराने वाले हैं, भटकाने वाले हैं। ऐसे एंजिल भी सूक्ष्म हैं परन्तु हमारे रखवाले हैं। तो मैं आत्मा अपने आपसे पूछूँ अगर मैं किसको दुःख देती हूँ या दुःख लेती हूँ तो मैं क्या बनूँगी ? सदा सुख ले करके, सदा अतीन्द्रिय सुखमय जीवन में रहकर सुख में रहूँ तब तो गायन हो कि सुख पूछना हो तो 'गोप-गोपियों से पूछो'। ऋषि-मुनि बिचारों ने इतनी तपस्यायें की, साधना की, उन साधुओं का उद्धार कैसे होगा ? अगर हम अतीन्द्रिय सुख के झूले में नहीं झूलेंगे, जरा सा भी उदासी और भय और निराश वाले संस्कार होंगे तो न भक्तों का उद्धार होगा, न पाप आत्माओं का उद्धार होगा। बाबा आता ही है साधु, भक्त, पाप आत्माओं का उद्धार करने के लिये। तो बाबा कहते हैं कि जो बाप का काम है सो बच्चों का काम है। बाबा ने हमारा तो उद्धार कर लिया, लेकिन तीनों का उद्धार हो। कैसा भी पापात्मा हो वह बदल जाए तो नाम बाला हो जायेगा।

जो दुनिया में प्रसिद्ध हैं, अगर उन माइक को हम सामने रखते हैं तो लोग मानेंगे, कितनी भी हम अच्छी-अच्छी बातें सुनायें तो सुनेंगे, समझेंगे परन्तु मुख से बोलेंगे नहीं। जब तक उसमें पूरा परिवर्तन नहीं आया है, उसके चेहरे से, चलन से अगर परिवर्तन नहीं आया है तो वह कितना भी बड़ा माइक हो, वह बोल नहीं सकेगा और कोई मानेंगे भी नहीं। इसलिए बाबा कहता है उन्हीं की ऐसी सेवा करो, इतना उसका अच्छा अनुभव हो जो अपने आप उनके अन्दर का आवाज़ ऐसा हो जो लाखों करोड़ों कहें कि यह जो कह रहा है वह सच है। कोई साधु-सन्त, महात्मा या बड़ा



विद्वान हमारे बारे में बहुत अच्छा भाषण करते हैं। हम इतना नहीं कर सकते हैं जितना वह भाषण कर सकते हैं, परन्तु बाबा ने कहा था भाषण ऐसा हो जो अन्दर की भासना दे। उसके अन्दर ऐसा चला जाए जो पूरा मरे, आधे में नहीं रहे। न इधर का रहे, न उधर का रहे ऐसा हम किसको फटकायेंगे नहीं क्योंकि वह तो अपनी पोजीशन में, अपनी पढ़ाई में बड़े घमण्डी हैं। हमारे पास इतनी साइलेन्स की, सच्चाई की शक्ति हो जिससे बिचारे का घमण्ड तो टूटे।

फिर राजनेता हो, धर्म नेता हो, साइन्स का नेता हो – उसका घमण्ड टूटे, भगवान के आगे सिर झुकाये, दृष्टि ले, अभिमान को छोड़े और मान-शान की इच्छा न रखे। सब कुछ भूल जाए। आत्मा तू आई थी अपने घर से, अब बाप के सामने खड़ी है। ऐसा माइक हो तो बाबा उससे अपने आप बुलवायेगा। जैसे उस आत्मा ने सब कुछ स्वाहा कर दिया, आत्मा अकेली हो गई और बाबा मिला। रीयली मेरा बाबा है, विश्व-कल्याणकारी बाबा है। तो हम बोलेंगे वृत्ति से, वायब्रेशन से और वह बोलेंगा मुख से। हम लोगों की बहुतकाल की शुद्ध वृत्ति और वायब्रेशन उनके मुख से कहलवायेंगे तो कहेंगे अहो प्रभु तेरी लीला! जैसे शुरू में हम लोगों को खींच होती थी, पता नहीं करना क्या है लेकिन खींच होती थी तो फिर हम बाबा के पास आ करके पहुँच जाते थे। तो आँख खोलकर देखते हैं तो पता चलता है कि हम कहाँ पहुँच गये हैं और क्या करने का है। तो जो हम सबका अनुभव है अभी लास्ट में वह अनुभव अनेक आत्माओं के ऊपर गुप्त काम कर रहा है।

जैसे बाबा गुप्त है, ज्ञान गुप्त है, प्रालब्ध गुप्त है तो आजकल यह सेवायें बड़ी गुप्त हैं। अचानक ऐसे ऐसे बाबा हम सब बच्चों को अनुभव करा करके उन्हीं को दिखायेंगे। तो यह भी एक ड्रामा की वर्तमान सीन चल रही है। तो प्रायः लोप नहीं होता है लेकिन हमने जो कुछ किया वह हमारे अन्दर भर गया, वह सारे कल्प के लिए हमारे काम का हो गया। सुनना-सुनाना वह पूरा हो जायेगा। अभी तक सुनना भी बहुत अच्छा लगता है दिल कहता और कोई बात भले न सुनाई पड़े परन्तु बाबा के बोल कान में सदा सुनाई पड़े। सुनाने के लिए भल गूंगा बन जायें या कोमा में भी चले जायें कोई हर्जा नहीं लेकिन मुस्कराते हुए मुख से दाता ने जो दिया है वह



नयनों के इशारे से बता सकते हैं। तो यह सब अन्दर की हमारी स्मृति समर्थ रहे और धारणा पर पूरा ध्यान हो तब हम शीतल और शान्त रह सकेंगे। फिर लगेगा योग की मेहनत नहीं है।

ज्ञान और धारणा ने योगी बनाया है। ज्ञान माना समझ। ज्ञान सुनाने के लिए नहीं, मेरे लिए है, हरेक बात समझ से करने के लिए है। पुरुषार्थ में मेहनत लगती है तो जरूर है कि माया इन्टरफियर कर रही है। परन्तु जब अपने अन्दर ध्यान रखते हैं तो फिर माया इन्टरफियर नहीं करेगी। तो हमारा अनुभव कहता है कि ज्ञान को अच्छी तरह से पहले हम अपने लिए यूज करें। ज्ञानी तू आत्मा बाबा को प्रिय लगते हैं। तो ज्ञानी तू आत्मा में जो ज्ञान बाप ने भरा है, जिससे सुख-शान्ति पाया है, स्वर्ग के वर्से के अधिकारी बनने का दांव लगाया है। यह ध्यान रखने से, धारणा रखने से बाबा फिर अपने आप अपने जैसा बनाने के लिए प्रेरता है, खींचता है। तुम्हारा यह काम है बच्चे, यह काम तुम्हारा नहीं है। बच्चे तुम यह कर, यह न कर... ऐसे अन्दर ही अन्दर बाबा इशारों से चलाता है। तो हमारे अन्दर जो भर गया बाबा के बोल से, बाबा की श्रीमत और इशारों से, वह सदा के लिए समा गया है।

तो हम सब एक परिवार के कितने एक दो के नज़दीक आत्मार्थें हैं और बाबा ने इतना हमको परिवार में नजदीक लाया है, यह भी भाग्य है। तो ऐसे भाग्य का सवेरे-सवेरे लेन-देन करने से स्वयं को और सामने वाले दोनों को खुशी होती है।

2. बाबा की दृष्टि, प्यार और दुलार ने हम सबको अपना बनाकर रखा है। बाबा खुद त्याग तपस्यामूर्त रहे और हम सबको भी त्याग मूर्त तपस्वीमूर्त रहने की प्रेरणा दी। और अभी भी दे रहे हैं। हम ब्रह्मा मुख की सन्तान है तो हमारा मुख कैसा हो! जैसे बच्चे की आँख खुलती है तो वह पहले माँ को देखता, माँ फिर बाप की तरफ ध्यान खिंचवाती है, यह तेरा बाप है। ऐसे हमारी इस माँ ने पहले हमको अपना बनाकर शुद्ध पावन बनाया फिर ध्यान खिंचवाया यह तुम्हारा बाप है।

हमारे बाबा ने कभी भाषण नहीं किया है, लेकिन अपनी रूहानी पालना के वरदानी बोल से हमारे दिलों के अन्दर जो छाप लगाई है वह भूल नहीं सकती। बाबा जब पत्र लिखते तो लिखते मात-पिता बापदादा का नूरे रत्नों को यादप्यार। तो अभी अन्त



भी याद के रिटर्न में है ही बाप का प्यार। तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैटूँ, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं को दिल का हाल सुनाऊँ इस व्रत को लेंगे तो न कभी कोई बात का दुःख होगा, न किसी के धोखे में आयेंगे। बच गये हैं। दिल में सदा दिलाराम की याद होने के कारण साफ और सच्ची दिल वाले, बड़ी दिल वाले हैं। ऐसे बड़ी दिल वालों के अनुभव के गीत गाने वाले, बनाने वाले बहुत प्यार से गाते बजाते हैं। ऐसे बाबा का झण्डा लहराने कोई माइक खड़े हो जायेंगे तो हम चुप रहेंगे। चुप रहना अच्छा है इससे साइलेन्स पावर इकट्ठी होती रहती है। शुरू से ही मीठे बाबा के इशारे हैं, कभी किसी को रेसपान्ड नहीं करो तो चुप रहने में मुस्कराना बहुत सहज है। साइलेन्स में रहने से, आवाज से परे रहने से, बाबा के याद की शक्ति से मुस्कराना बहुत-बहुत नैचुरल हो जायेगा। सतयुग में तो मुस्कराने से सेवा नहीं होगी। वह तो राज्य भाग्य का स्वरूप ही ऐसा है। अब मुस्कराने में सेवा बहुत है। जो बाबा कहते हैं साक्षात् बाप समान बनकर अनेक आत्माओं को बाबा का साक्षात्कार कराओ, अनुभव कराओ तो जैसे मीठा बाबा सिखाता है, सिखाया हुआ है वही काम कर रहा है, करता ही रहेगा।



सहनशीलता को सखी बनाओ तो सब काम सहज हो जायेंगे

बाबा ने कहा है कि पुरानी बीती बातें कभी भी कोई ख्याल में आये या कोई ऐसी बात सामने आये तो पानी पर लकीर हो। पानी पर लकीर लगाने से एक सेकण्ड में मिट जायेगी। अगर कोई बात थोड़ा सा बुद्धि में नोट होती रहती है तो कागज़ पर लकीर है। कभी मिटा भी सकते हैं। लेकिन पत्थर पर लकीर लगी तो पत्थरबुद्धि बना देती है। पत्थर पर लकीर लगाने वाले उनकी बुद्धि पत्थर जैसी होती है, तो वह पारस बनेगी कैसे? पारसनाथ बाबा हमारे अन्दर ही अन्दर कितनी चेन्ज ले आता है। सचमुच बाबा के स्नेह और शिक्षाओं की कमाल है। जैसे कोई कीमती और सुन्दर सौगात देते हैं तो उसको इतना अच्छी तरह से सजाते हैं। उसके गहराई में जितना जाते हैं, उतना पता चलता है कि कितनी गहरी बात थी।

हमारी वाणी में मधुरता हो, दृष्टि में सच्चा प्यार हो वह कैसे होगा? जब बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी। अपने आप पर कृपा करने वाले दिल को बड़ा साफ रखते हैं। जरा भी किचड़ा मन में रखा, दिल भारी हुई तो विचार सागर मंथन भी नहीं होगा। जब

तक दूसरी अन्य कोई दिल में महसूसता भरी पड़ी है तब तक अतीन्द्रिय सुख में जाने के लिए वह रूकावट आयेगी। दिल में कोई भी फीलिंग और है तो वह सदा मुस्करा नहीं सकते हैं। परमात्म स्नेह की शक्ति से सदैव मुस्कराते रहना सहज है। सहनशीलता भी बहुत प्यारी है, धारण नहीं करना पड़ता है परन्तु यह सखी रूप में बहुत मदद करती है। जब सहनशीलता को सखी बनायेंगे तब सब काम सहज होते जायेंगे क्योंकि इससे परखने और निर्णय करने की शक्ति अपने आप काम करने लगती है। यह करना है, यह नहीं करना है बस, क्योंकि अभी तक भी निर्णय करने



में समय लगाना माना यह भी वेस्ट ऑफ टाइम है। करूँ न करूँ, यह पूछताछ करते रहना, फायदा होगा या नहीं होगा, इसमें अपना ही मन चलता रहे तो निश्चय की परिभाषा को समझा ही नहीं है।

जीवन में सदा सन्तुष्ट रहने का, सहनशीलता को धारण करने का गुण बहुत शक्ति देता है। कोई भी गुण को जब कर्म में यूज करेंगे तो वह शक्ति बन जाती है। सम्बन्ध-सम्पर्क में सयाना बनाता है। करके फिर ख्याल नहीं करते, यह नहीं... नहीं। इसमें टाइम यूँ ही चला जाता है, एनर्जी ऐसे ही चली जाती है। इसलिए बाबा कहते - गुणवान बनो माना सम्पूर्ण निर्विकारी बनने के साथ-साथ अपने ऊपर अटेन्शन रख करके जब टाइम का कदर करेंगे तब हम गुणवान बनेंगे। फिर बाबा कहते हैं कि बिल्कुल आफिशियल भी नहीं रहो परन्तु समय भी सफल करो। परिवार में मिलनसार के गुण को यूज करो। मिलनसार माना सच्ची दिल से एक-दो के प्रति शुभ भावना से अन्दर से सहयोगी रहें। एक मिलनसार होता है, अपने को चाहे दूसरे को खुश करने के लिए, दूसरा मिलनसार है - सार रूप में बाप से मिलन का जो हमने सुख पाया है, उस भाव से एक दो को सहयोग देना। किसी की कमजोरी पर ध्यान देना - यह हमारा काम नहीं है। इस ईश्वरीय परिवार में व्यक्तिगत हरेक का फर्ज क्या है? सबसे पहले तो अपनापन हो क्योंकि हमारा यह रूहानी कनेक्शन आपसी कर्मबन्धनों से भी छुड़ाने वाला है। किसी के साथ हमारा कर्म का बन्धन नहीं है, हमारे इस रूहानी परिवार में जो नियम और मर्यादायें हैं, वह बड़ों से, समान वालों के साथ कैसे चलना है, वह सिखाती हैं। जैसे हमारा बाबा छोटे से छोटे जैसा, बड़े से बड़े जैसा, बूढ़े से बूढ़े जैसा, जवान से जवान जैसा... चलता। साकार चाहे अव्यक्त रूप में बाबा को देखते हैं तो बाबा अपने स्नेह की शक्ति से अनेकानेक आत्माओं के दिल को पिघलाता है। बाबा के स्नेह और शिक्षा की वर्षा से पत्थर जैसी सूरत और सीरत भी चेन्ज हो जाती है। तो हमको भी ऐसे ही बेहद की भावना सबके प्रति रख करके चलना है।

स्वदर्शन चक्रधारी बनो माना अनादि, आदि, पूज्य, संगमयुगी और फरिश्ता के पार्ट की स्मृति को पक्का करना। अनादि माना ऊपर वाले को देखो। आदि माना मेरे



मीठे ब्रह्मा बाप को देखो। पूज्य अर्थात् अपने फ्यूचर को देखो। संगमयुगी ब्राह्मण रूप में आओ फिर फ़रिश्ता बनना है बस। कितनी सहज बात है क्योंकि हम ही तो वह हैं। अनेक बार ऐसा किया है, अनेक बार ऐसे बने हैं, बन रहे हैं। बनाने वाले ने सतयुगी स्थापना में आदि से ले करके एक को नहीं अनेकों को कल्प पहले की स्मृति दिलाकर फिर से अपना बच्चा बनाया है। वर्से के अधिकार को लेने लायक बनाया है। हमारे बाबा ने यह काम किया है तो बच्चे को करना बड़ी बात नहीं है। जो बाप का काम, वह बच्चे का काम है क्योंकि यह जन्म से ही देखा है और किया है इसलिए इसमें कोई बहुत सीखने सिखाने वाली बात नहीं है। जो बाप ने किया, वह बच्चे ने किया इसको ही कहा जाता है – फ़ालो फ़ादर। फ़ालो तभी कर सकते जब उसको देखते रहेंगे कि बाबा यह कैसे करता। बाकी यह क्या करता, वह क्या करता इसमें आँख नहीं जाये। अभी हमको यह भी अनुभव है कि हम नहीं चल रहे हैं, बाबा ही हमको आगे चला रहा है क्योंकि बाबा ने कहा है – साथ चलना है, साथ रहना है, साथ जायेंगे। यह साथ का सिर्फ संकल्प या सोच नहीं है लेकिन जाना ही है, यह बना बनाया हमारा पहले से ही फिक्स प्रोग्राम है, इसको कोई चेन्ज कर नहीं सकता है। इस प्रोग्राम को कोई बदल नहीं सकता है। जैसे बाप के साथ घर जाने का प्रोग्राम फिक्स है वैसे फिर ब्रह्माबाबा जब ऊपर से नीचे उतरेगा तब हम साथ में उतरेंगे, ऊपर बैठ नहीं जायेंगे। हमको आराम चाहिए ही नहीं। संगम पर ही बाप के साथ रहने की रेस्ट ले ली है। दुःखहर्ता बाबा ने हम सबका दुःख दूर करके शान्तिधाम में बिठाने की, बैठने की आदत अभी डाली है। और पीछे आने वाले तो बिचारे ऐसे ही शान्तिधाम चले जायेंगे। तो उनको ज्यादा रेस्ट चाहिए क्योंकि दुःख, दर्द में बहुत थके हुए होते हैं। और बाबा ने तो हमारी थकावट का नाम-निशान खत्म कर दिया है।

तो कितना अच्छा है बाबा के साथ रहना, पास रहना। सिर्फ साथ और पास ही नहीं रहना परन्तु उनके समान जो उनके दिल में वह मेरे दिल में हो। वह जानता है हमारी दिल में और कुछ नहीं है। तो दिल को जो आराम देने वाला दिलाराम है, उसके पास रहना है। हम अकेले नहीं रह सकते हैं सिवाए बाप के। देह का विस्तार



बहुत है, उस विस्तार को देखो ही नहीं, चुप रहो तो कितना आराम है। साइलेंस में रहेंगे तो बाबा को साथी बनाना अच्छा है। और साकार में भी बहुत बोलने वाला बाबा को अच्छा नहीं लगता है। जो काम के संकल्प नहीं उसको भी रोकना है। जैसे कोई काम हमें नहीं करना होता है तो हम क्या करते हैं? सीधा ना नहीं करते हैं। ना करने से फिर वह ज्यादा ही कहते रहेंगे इसलिए युक्ति से अवाइड करेंगे। तो ऐसे ही युक्ति से जो काम की बात नहीं है उसे अवाइड कर लो। तो हमारे लिए जो ज़रूरी होगी वह मिस नहीं होगी। जो मेरे लिए ज़रूरी है, चाहे अनेक आत्माओं के कल्याण के लिए ज़रूरी है वह मिस न होवे। जो न आवश्यक है, चल सकता है, कोई और भी कर सकता है तो छोड़ देना अच्छा है। सब मैं ही करूँ। नहीं। अच्छा है औरों को भी चान्स दो। भगवान को जो हमसे कराना है उसका हमको ध्यान रखना है।

बुद्धि की लाइन क्लीयर तभी होगी जब क्लीन होगी। कोई बात इशारे से नहीं समझी तो भी योग ठीक नहीं है। तो हमको अभी बहुत ही अच्छी तरह से अपने ऊपर आपेही दया कृपा करके बुद्धि को साफ रख करके क्लीयर रखना है, तो सदैव समझेंगे हमारे जैसा खुशनसीब कोई नहीं है। अभी भगवान ने जो खुश रहने की आदत डाली है उसमें बड़ा मजा है, उसमें कोई कम्पलेन्ट नहीं है। हमारे पास किसी की कम्पलेन्ट नहीं है अगर और किसी के पास हमारी कम्पलेन्ट हो तो हम माफी मांग लें। कोई कैसा भी है, नफ़रत नहीं रखें। यह हमारा अवगुण हमारे लिए ही नुकसानकारक है। कोई कितना भी खराब हो या कुछ भी हो, हम उसके प्रति घृणा करेंगे, नफ़रत रखेंगे तो वह हमारा अवगुण उनसे खराब हो जायेगा। अवगुण चाहे हमारे या अन्य किसी के, सबके लिए नुकसानकारक होते हैं। हम तो भाग्यविधाता के बच्चे हैं, जो भगवान ने दिया है वह हमारे से सबको मिलता रहे इसके लिए लाइन क्लीयर हो। इसके लिए हम सदा उदारचित्त रहें, दिल बड़ी हो। बाबा के भण्डारे से कोई खाली नहीं जाये, जितना चाहे उतना लेवे और हम बाँटते रहें। तो लेने के लिए भिखारी न रहें, पात्र रहें माना सुपात्र रहें तो अधिकारी बनेंगे। इस तरह से सपूत रहने वाले अपने आप सबूत देते हैं। वह बाप के और सबके प्यारे हो जाते हैं। तो सपूत जो होगा वह किसी को कभी कुछ नहीं कहता लेकिन उसकी जो सपूतपने की वाणी



है, दृष्टि है, भावना है, वह बहुत सहज काम करती है।

तो भगवान आ करके हमारी बुद्धि खोल करके, बुद्धिवान यानि समझदार बना करके धारणा करने की भी शक्ति दे देता है। तो कब के ऊपर नहीं रखे, अब करना है। करना ही है तो अब करना है। जब ऐसा बनना ही है तो अब से ही बनना है, जब ऐसी प्रैक्टिस हो जायेगी तो वह सम्पूर्णता आ जायेगी।

बाबा ने कहा - अलबेले नहीं बनना है परन्तु इजी बनना है यानि थोड़ा अपने संस्कार वश टाइट नहीं रहना है। लेजी भी नहीं रहना है। इजी माना बिल्कुल सरल सहज, तो बड़ी बात भी सहज लगेगी। तो ऐसी अगर हम अपने संस्कार में बातें डाल देंगे, तो वह स्वतः ही काम करती रहेंगी फिर पुरानी नेचर भी गुम हो जायेगी। वह बिचारी हो जायेगी क्योंकि वह पहले जैसा काम नहीं कर सकेगी।

स्वभाव से संस्कार का कनेक्शन है, तो जब अन्दर से संस्कार ही बदल गये, स्व के अन्दर की भावना ही दूसरी हो गई है तो पहले वाला स्वभाव कहाँ रहेगा ? नहीं रहेगा। अगर संस्कार ही ईश्वरीय सन्तान का है तो उसी भावना और भाव से स्वभाव होता है। स्व का भाव भावना अनुसार होता है। भावना अन्दर से बड़ी शुद्ध निःस्वार्थ भाव वाली सच्ची हो, ड्रामा में नूँधा हुआ है तो अच्छा ही होने वाला है। सिर्फ अन्दर से अपने आपको धीरज से, प्यार से समझ से चलाने से सब सहज है। तो हम स्वभाव वश नहीं हों। वह भी स्व की भावना से बदल जायेंगे, उसे जैसा संग मिलेगा जैसी भावना होगी वैसा फल निकलेगा। तो है सारा शुद्ध श्रेष्ठ भावना की बात, वह तब होगी जब सच्चाई होगी।

तो बाबा-बाबा करते, बाप से भेंट करते बाबा जैसा बन जायेंगे। अगर किसी दूसरे के साथ करेंगे या अपने संस्कारों को यूज करेंगे तो बाबा कहाँ और हम बच्चे कहाँ। तो हमारा कभी बचपना दिखाई पड़ेगा, कभी उतावलापन दिखाई पड़ेगा। बच्चे यही तो करते रहते हैं, और जवानी के जोश में कुछ ना कुछ बोलचाल ऐसे हो जाती है, अब हम वह नहीं करेंगे। बाबा जैसा करेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।



सुखमय जीवन का अनुभव करने के लिए सेवा के विस्तार में सार को देखो

बाबा ने जो एक्सरसाइज सिखाई है उसको करने से पूरी स्मृति आ जाती है हम अनादि शान्तिधाम निवासी बाबा के बच्चे हैं। आदि सनातन धर्म की आदि आत्मा हूँ फिर श्रेष्ठ पूज्य बनने से हमारी कितनी पूजा होगी, यह सब संगमयुग में अभी के पुरुषार्थ के संस्कार बतलाते हैं। फिर संगम पर आकर अभी धुन लगी है – फ़रिश्ता बनने की। बाबा पहले भी कहते थे कि किसी को सारा समझा करके संगम पर खड़ा कर दो ताकि उसको यह पता चले कि चक्कर पूरा हुआ है। अभी घड़ी का कांटा बस बाकी इतना है फिर ऊपर सबको उड़के जाना है। हम मच्छरों सदृश्य नहीं जायेंगे, हम स्टार मिसल आत्मा चमकती हुई जायेंगे, तो कितना अन्तर हो गया। सारी सृष्टि को खाली करके जब अच्छी तरह से सफाई करें तब तो पावन देवतायें उतरेंगे। इसलिए सबको कहते हैं कि अभी तुम्हारा नाटक में पार्ट पूरा हो गया, अच्छा जो कुछ किया....। हमको माफ नहीं करेगा उनको माफ कर देता है।

फिर से तुम आना जब तुम्हारा पार्ट हो। और हमको क्या कहता है? जिनको बाबा ने लाखों करोड़ों में से कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे चुन करके इतनी सारी पढ़ाई, पालना सबकुछ किया, तुमने भी उन्हीं जैसा ही पार्ट बजाया तो यह बात किसी को भी अच्छी नहीं लगेगी। इसलिए अभी इस दुनिया से लगाव आदि नहीं होना चाहिए क्योंकि यह दुनिया कोई हमारे लिए नहीं है। किसी के ऊपर आशिक होना या किसी को अपने ऊपर आशिक करना.. इन सब बातों से और ऐसी दुनिया से बाबा ने पहले ही न्यारा



बना दिया।

हम लोभ-लालच वश किसी को धोखा देने वाले नहीं हैं। न रूप का अभिमान है, न रूपये का अभिमान है, न पोजीशन का अभिमान है, आज की दुनिया जिस आधार पर रहती है, बाबा के बच्चे उसे सूक्ष्म में भी अपना आधार नहीं बना सकते। इस अन्तिम जन्म में ईश्वर ही एक मेरा है। वही मेरा रखवाला है। तो यह जो भी संस्कार हमारे बन रहे हैं, जो बात हमने अनेक बार की है, वह हमारे लिए बड़ी बात है ही नहीं। लोगों को प्योरिटी में रहना बड़ी बात लगती है, जिनको थोड़ा टाइम लगा है तो समझो वह देर से आने वाली आत्मायें हैं। ब्रह्मा माँ ने हमें अपनी गोद में बिठाया ही है पावन बनाने के लिये। हमने ब्रह्माबाबा से माँ का प्यार बहुत लिया है। माँ ने देखा यह लायक बन सकती है, ख्याल रहा कि ऐसे मेरे माँ बाप हैं तो मैं भी कुछ लायक तो बनूँ, उनके काम की तो रहूँ ना। तो बाप प्यार ऐसे नहीं करता है, जब तक उसके काम के नहीं बनते हैं। माँ तो कहेगी जैसे हो वैसे हो आओ, आओ मेरे बच्चे।

बाबा ने जन्मते ही हमको पवित्रता का बल दिया, तब सुख-शान्ति हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। पवित्रता में कितनी शक्ति है, पवित्रता में ही सत्यता है, इमानदारी है, ट्रस्टी होकर रह सकते हैं। हर बात में न्यारा रहना, शुद्ध रहना। संकल्पों को ऊँचा क्वालिटी वाला बनाना, किसी से रिंचक मात्र भी ईर्ष्या वश, वैर भाव न रखना - यह भी पवित्रता है। किसी के लिए अशुभ कटु-वचन बोलना यह पवित्रता नहीं है। जरा सा किसके लिए नफ़रत है, अन्दर घृणा दृष्टि है तो उसको भी स्वच्छ नहीं कहेंगे। हमारे से बड़े हैं, समान वाले हैं, कोई भी हैं, कितना भी कोई राँग काम करने वाले हैं - वह जानें, भगवान जाने। सच का कुछ पता नहीं चलता है, तो हम क्यों बुद्धि चलायें। हम क्यों बोलें कि यहाँ यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए अन्दर में यह जो ख्यालात हैं, वह भी शान्ति भंग करने वाले हैं। बाबा कहते हैं - बच्चे, तुम शान्त रहो... शान्ति फैलाओ।

तो अन्दर से अपने को शान्त, धीरज वाला बनाना माना अपने को सुखी बनाना। और बाबा भी कहते कि तुम शान्त रहो तो तुम्हारे से शान्ति आपेही फैलेगी। तुम



शान्त रहेंगे तो तुमको देख तुम्हारे आजू-बाजू वालों को भी अशान्त रहना अच्छा ही नहीं लगेगा, बल्कि शान्त रहने में मदद भी मिलेगी। नहीं तो आज के जमाने में स्वयं शान्त रह अन्य को शान्त करना - यह एक बहुत बड़ा कमाल का काम हो गया है। बी.के. भी बन गये परन्तु शान्त रहने का जो मज़ा है, वह बहुत थोड़ों ने ही इसका अनुभव किया है। बुद्धि की लाइन क्लीयर हो, एक बाबा के तरफ ही बुद्धियोग हो तब तो शान्त रह सकेंगे और शान्त रहना अच्छा लगने लगेगा। इसलिए सबसे पहले अपने बुद्धि की लाइन को क्लीयर रखो। तो कोई भी काम वा पुरुषार्थ मुश्किल नहीं लगेगा, हम यह सहन कर रहे हैं - यह फीलिंग ही नहीं होगी। ऐसा लगेगा सचमुच यह जीवन बहुत सुखमय है, शान्तमय जीवन है। और यही भावना रहती है कि सबको हमारे जैसी जीवन जीने की कला आ जाये। भले भाषण करना कोई जाने न जाने लेकिन किसी को ऐसी जीवन मिले तो कितनी बड़ी कमाल की बात है।

डाक्टर्स क्या करते हैं? किसी को जीवन दे देते हैं। तो हमको क्या करना है? हम भी किसकी ऐसी जीवन बनाकर उसे नया जीवन दें। इसके लिए अन्दर में थोड़ा सा भी किसके लिए ईर्ष्या वश वैर-भाव न हो। तुम छोटे, हम बड़े - इससे बचो और बचाओ। पहले खुद बचकर रहो फिर दूसरे को बाबा का बच्चा बनाकर उसको भी उससे बचाकर रखो। बच्चे वो जो ऐसी उतराई-चढ़ाई की सब बातों से बचकर रहें। हम कहाँ से उतरे, कहाँ गिरे। सतयुग के राज्य को याद करें, कितना सुख था। वह दिन याद करो तो खो जायेंगे। अभी हम इतने नहीं गिरे हैं जितना दुनिया गिरी हुई है क्योंकि फिर भी बाबा ने बचाके रखा है। परन्तु जब सीढ़ी में देखते हैं तो ऊपर से नीचे तो आ गये हैं, अब हम लिफ्ट में बैठना तो सीखें। लिफ्ट में बैठना माना क्या, यहाँ से वहाँ बैठना क्योंकि हमको फिर से ऊपर जाना है। एक सेकण्ड की बात है।

इस पुरुषार्थी जीवन में किसी के स्वभाव-संस्कारों का चिन्तन भी हमें बाप को याद करने नहीं देता है। सेवा के क्षेत्र में भी जो विस्तार में ज्यादा जाते हैं उनको भी बाप को याद करना कहाँ नसीब होता है, इसलिए सेवा के विस्तार में भी सार को देखो तो सबसे मुक्त और जीवनमुक्त सुखमय जीवन का अनुभव कर सकते हैं। शुरू से



ही ऊँचाई और निचाई का खेल हम देखते आ रहे हैं क्योंकि बाबा कहे एक, बच्चे करें दूसरी तो ऊपर नीचे तो होंगे ही। लेकिन हम बाबा से शिक्षा लेकर ऐसे मुस्कराते रहें। बाबा भी कहते थे कि हँ बच्चे, कल्प पहले जैसा ही हो रहा है। लेकिन कभी बाबा ने यह नहीं कहा, सोचा भी नहीं कि बच्चों को इतना समझाया फिर भी यह समझा नहीं है। बाबा के चेहरे पर कभी रिंचक मात्र भी ऐसी रेखा देखने को नहीं मिलती। हम कभी थकेंगे तो कहेंगे इतना इसको समझाया, यह समझता नहीं। और बाबा कैसों को भी प्यार से, सहज सरलता से समझाता है, जो गधा भी समझ जाये, इतना स्पष्ट करके समझाता है क्योंकि नहीं तो अन्त में उल्हना देंगे कि बाबा आपने हमको उस समय क्यों नहीं स्पष्ट रीति से कहा ? इसलिए बाबा सभी को एक जैसा ही सब बातें क्लीयर कर समझा रहा है। तो इतना तो हमारी बुद्धि में हो कि बाबा जो समझा रहे हैं वह किसलिए ?

जैसे बाबा ने हमें देख-देख करके लायक बनाया है, बाबा की दृष्टि से हमारी चढ़ती कला हुई है इसलिए अन्दर में यही समझ है कि हम बाबा की दृष्टि में रहूँ। और बाबा की दृष्टि महा सुखकारी है। साकार में भी बाबा के बाजू में जब बैठते थे तो अशरीरी रहने की करेन्ट आती थी। अभी भी बाबा ने कहा कि बाबा के भण्डारे में कोई चाबी-ताला नहीं है या कोई चौकीदार नहीं है। इसलिए अभी भी किसी को जितना लेना हो तो वह बाप के खज़ाने से ले लो। परन्तु कारण यह है जो किसी को दोषी बना करके, उसके दोष अन्दर नोट करके बाप से खज़ाना लेने की कोशिश करते हैं, तो वह फिर अपने को वंचित कर देते हैं। ऐसे देखा जाए तो किसका दोष नहीं है इसलिए कभी हमारे चिन्तन में कोई का दोष नोट न हो। सब अच्छा है, सब अच्छा है और अच्छा हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। अपने को व्यर्थ चिन्तन से प्री करना है क्योंकि चिंता तो चिंता के बराबर है। वह तो हम जानते ही नहीं है। सदा निश्चित जीवन में रहना यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। अच्छा। ओम् शान्ति।



तृतीय संस्करण :
जनवरी, 2001

प्रतियाँ : 5000

तृतीय संस्करण :
जनवरी, 2001

प्रतियाँ : 5000

